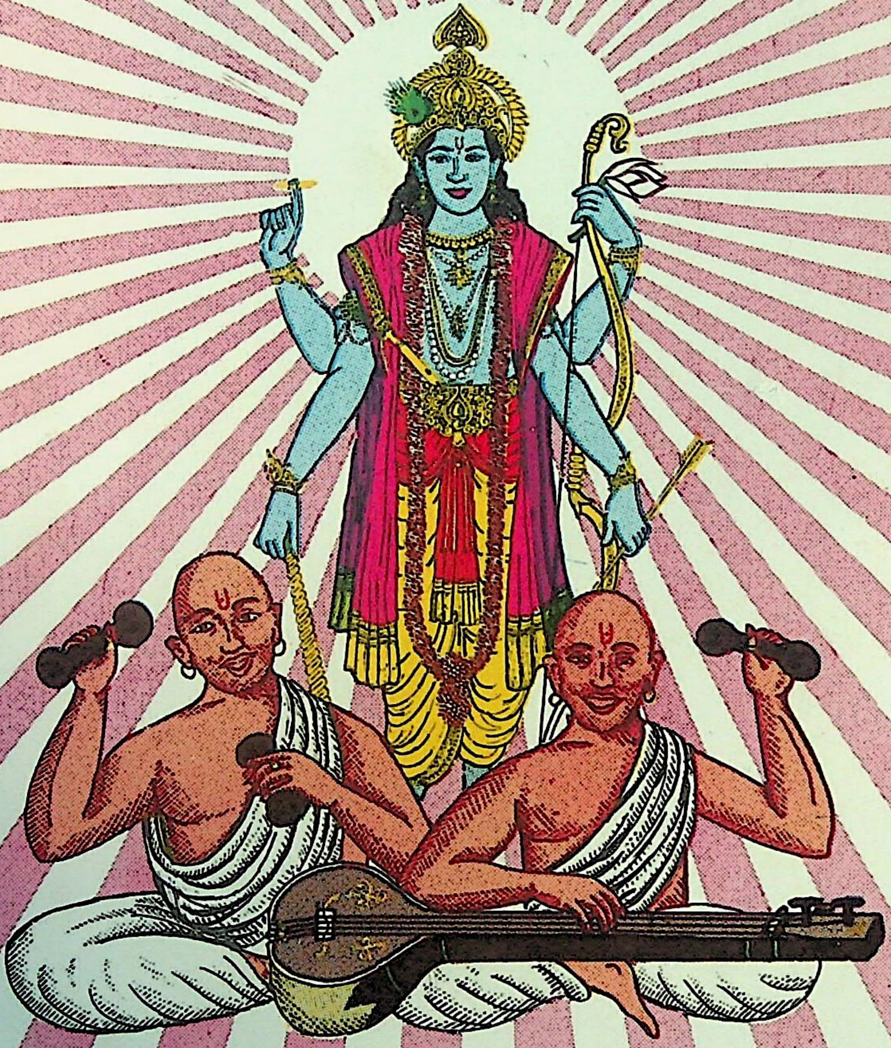
बृहत्
भजन रतनावली



श्रीरामचन्द्रो विजयतेतराम्

बृहत्

भजनरत्नावली

अथवा

भजनोंकी बड़ी पोथी.

जिसको

मुरादाबाद निवासी विद्वद्वर पण्डित व्रजरत्न भट्टाचार्यने
संपादन और संशोधन किया

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,

संस्करण : जुलाई २०१२, सम्वत् २०६९.

मूल्य : १५० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

श्रीः

भूमिका

★

हमारा देश हरिभजन, धार्मिक दृढता एवं मानसिक उदारताके लिये सदा से प्रसिद्ध हो रहा है। यों तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधाके अनुसार कुछ-न-कुछ देवाराधन अवश्य करता है परंतु—देशका एक विराट् दल जिसे जन साधारण संतसमाज कहते हैं भिक्षावृत्तिके द्वारा अपनी औदर्य ज्वालाको शांत कर निरंतर हरिभजनमें लौलीन रहता है। यदि यह हरिभक्तोंका रामादल संसारमें न होता तो सांसारिक माया मोहमें फँसे हुए अनेक गृहस्थोंको सत्संग करनेका अवसर ही अपने जीवनभरमें उपलब्ध न होता। इसी कारण इन महात्माओं की अर्चा पूजा करनेमें संसारी जीव अपना बड़ा ही सौभाग्य समझते हैं।

हिंदुओंके यहां देवाराधनकी प्रथा बहुत पुरानी है, हिंदू लोग अपने गृहनिर्माणके समय अन्यान्य आवश्यक स्थानोंकी भांति देवमंदिर या उपासना भवन भी निर्माण कराते थे। परंतु थोड़े दिनोंमें परिवारमें भिन्न-भिन्न रुचिके लोगोंकी सृष्टि होनेसे घरेलू देवालय गृहस्थीके कई कामोंमें बाधक समझे जाने लगे। तब परिणामदर्शी वृद्धोंने देवमंदिरोंको घरोंसे अलग-अलग बनाके देवपूजाका अखिल भार महंतों (गद्दी और स्थान धारी महंतोंके) हस्तार्पण कर दिया।

ब्रह्मादि स्थावरांत सकल पदार्थोंके ऊपर विष्टाकी निष्ठा रखनेवाले विरागियोंके हाथमें रामभोगका भार सौंप देना बड़े ही उत्तरदायित्वका कार्य है, बड़े—बड़े विचारशील विद्वानोंने विरागी महात्माओंके हाथमें रामभोगकी सामग्री क्यों दी? इसका कारण बड़ा ही गूढ है। इसमें साधु सुधारका महत्व ओतप्रोत हो रहा है इससे कहते हैं वह राग भोग और राजचिह्न नहीं किंतु जीवन्मुक्तिकी परीक्षामें उत्तीर्ण होनेके लिये परीक्षा पत्र हैं, सारांश यह है कि राजभोग उपस्थित रहते भी जो महात्मा उनमें लिप्त नहीं हो जाते वे ही वास्तवमें यथार्थ विरागी और जीवन्मुक्त हैं।

इन मठधारी महंतोंके द्वारा देशमें भगवद्भक्तिका बड़ा प्रचार हुआ है, इनके शिष्य वर्ग देशके भिन्न-भिन्न भागोंमें विचर विचर कर सांसारिक जीवों को निरंतर उपदेश,

भूमिका

सदाचारकी शिक्षा दिया करते हैं। किसी कुंभ अथवा इसी प्रकारके अन्य पर्वोंके ऊपर जब इनका जमघट लगता है तो ये लोग मिल-मिल के हरिभजन गाते हैं, तब बड़ा ही आनंद प्राप्त होता है। इनके गाने योग्य और उपासनाके सब तरहके पदों और भजनोंका एकत्र संग्रह करनेकी बहुत बड़ी आवश्यकता थी। कई साधु महात्माओंने ऐसे संग्रहकी पूर्ति करने के लिये हमसे अनुरोध किया था उन्हींके अनुरोध से यह अलौकिक संग्रह हम हरी-भक्तोंके समक्ष उपस्थित करते हैं आशा है कि यह प्रेमी पाठकोंको रुचिकर होनेसे हमारा परिश्रम सफल होगा।

पाठकोंका कृपाभिलाषी

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई

श्रीः

अथ भजनरत्नावलीकी विषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त

श्रीगणेशाय नमः

अथ
बृहद्भजनरत्नावली

★

श्रीमते रामचन्द्राय नमः

अथ प्रभाती

राग जंगला—आज सखी सपनेमें देखे राम लषणसिय जनकललली ॥ टेक ॥ वे दोउ ठाढे सिंहपौरिपै मैं अपने गृहसों निकसी ॥ रूप देखि व्याकुल भई सजनी मानौ काल भुजंग डसी ॥ १ ॥ कहा छबि वरणौं श्रीरामचंद्रकी अमृत पूर्ण घटा उमँगी ॥ मानो लक्ष्मण धनुष चढाये ज्यों बादल बिजुली चमकी ॥ २ ॥ क्रीटमुकुट मकराकृत कुंडल चंदन खौर ललाट लसी ॥ लाल कमान बान कर सोहे पीतांबर सों कमर कसी ॥ ३ ॥ ब्रह्मा जाको पार न पावें ध्यान धरे वाकों जती सती ॥ तुलसिदास गंधर्वगुण गावैं जन्म जन्म की बिपति नसी ॥ ४ ॥ १ ॥

राग भैरव—श्री जागिये रघुनाथ कुँवर पंछी वन बोलैं ॥ टेक ॥ शशिकिरण शीतल भई चकई पीय मिलन गई ॥ त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव द्रुम डोलैं ॥ १ ॥ प्रात भानु प्रगट भयो रजनीको तिमिर गयो ॥ भृंग करत गुंज गान

कमलन दल खोलैं ॥ २ दुखको पट दूरि करो मंद बिहँसि मोद भरो छगन मगन प्यारे राम अंगनमें कलोलैं ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिक धरत ध्यान सुर नर मुनि करत गान ॥ जागन की बेर भई नयन पलक खोलैं ॥ ४ ॥ तुलसिदास अति अनंद निरखिके मुखारविंद ॥ दीननको देत दान भूषण अनमोलैं ॥ ५ ॥ २ ॥

भोर भयो सब हिलमिल नागरि कौशल्यापै आई ॥टेक॥ हमरो प्रीतम तुमरो ढोटा बेगि जगावो माई ॥ १ ॥ चकई मिलन चहैं चकवासों हमहुँ चहत रघुराई ॥ भानुउदय बिन कमल न फूलै भँवर रहै मुरझाई ॥ २ ॥ कनकभवनमें रतनसिंहासन जहां सोवत चारों भाई ॥ रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन शोभा बरणि न जाई ॥ ३ ॥ इतनो वचन सुन्यो नागरिको हरषि उठे रघुराई ॥ उठि पीतांबर टान्यो मुखसों मधुर मधुर मुसकाई ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावैं निगम नेति यश गाई ॥ कान्हर लाडु कहां लगि बरणौं शेष सहस्र मुख गाई ॥ ५ ॥ ३ ॥

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पयजनियां ॥ टेक ॥ किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय ॥ धाय मातु गोद लेत दशरथकी रनियां ॥ १ ॥ अंचल रज अंग झारि विविध भांति कारि दूलारि ॥ तन मन धन वारि डारि बोलत मृदु वचनियाँ ॥ २ ॥ मोदक मेवा रसाल मन मानै सो लेहु लाल ॥ और लेहु रुचिर पानि

कंचन रुनझुनियां ॥ ३ ॥ विद्रुमसे ललित अधर बोलत मुख वचन मधुर ॥ नासा अरु अधर बीच लटकतलटकनियां ॥४॥ रेखा कंबु कंठदेश सुख मानिधि कुटिल केश ॥ कमलवदन मंदसे हसनियां ॥ ५ ॥ दृग विशाल भृकुटि भंग कछनि कसे कांटे निषंग ॥ रेखा त्रय उदय बीच सिंहसी ठवनियां ॥ ६ ॥ अदभुत छबि अति अपारको कवि जो बरणै पार ॥ कहि न सकत शेष जाके सहस्र दुई रसनियां ॥७॥ तुलसिदास अति अनंद निरखके मुखारबिंद ॥ रघुबरके छवि समान रघुबरछबि बनियां ॥ ८ ॥ ४ ॥

सीतापति रामचंद्र रघुपति रघुराई ॥ टेक ॥ रसना रस नाम लेत संतनको दरस देत बिहँसत मुख मंद मंद सुंदर सुखदाई ॥१॥ ऐन मैन दृग विशाल दशन बीच चमतकार भृकुटि बीच अनलपक्ष नासिका सुहाई ॥ २ ॥ केसरको तिलक भाल मानो रविप्रातकाल श्रवन कुंडल झलमलात रतिपति छबि छाई ॥ ३ ॥ मोतिनकी कंठ माल तरागण उर विशाल मानों गिरिशिखर फोरि सुरसरि चलि आई ॥४॥ सुर नर मुनि सकल देव शिव विरांचि करत सेव कीरति ब्रह्मांड खंड तीन लोक छाई ॥ ५ ॥ संग सखा सरयु तीर विहरत रघुवंश वीर हरखि निरखि तुलसिदास चरणन रज पाई ॥ ६ ॥५ ॥

राग भैरव भीर भये पंछी वन बोले जागी जनककिशोरी ॥ टेक ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता परस्पर जोरी ॥ चो-

वा चन्दन और अरगजा मुख मलिबेकी रोरी ॥१॥ बन्दी-जन गन्धर्व गुण गावैं कारि मृदंग टंकोरी ॥ पाट पीतांबर खासा मलमल रतनजडावकी चोली ॥२॥ रुनक झुनक महलन बिच विहरैं नूपुर शब्द करोरी ॥ शब्द सुनत मुनिजन मन मोहैं अस्तुति निगम करो री ॥ ३ ॥ बेंदी भाल विशाल विराजै रवि शशि द्युति निन्दो री ॥ घूंघरवारे बार सुसोहैं मधुकर भूलि रह्यो री ॥ ४ ॥ कोउ सखी अलंकार सँवारैं कोउ दरपन लै दौरी ॥ तुलसिदास छवि देखि मगन भये कहा वरणै मति थोरी ॥ ५ ॥ ६ ॥

जागीं श्रीजनककुँवरी अयोध्या पटरानी ॥ टेक ॥ जन्म जन्म रमारूप अगम निगम जानी ॥ सनकादिक धरत ध्यान परमहंस ज्ञानी ॥ १ ॥ कोटि सखी चँवर ढोरैं प्रेमरससानी ॥ निकट सरयु गंग बहै मुक्ति भरै पानी ॥ २ ॥ तीन लोक प्रतिपालक शरणे तुम्हारी ॥ संतनको दरस देत असुरन भयकारी ॥ ३ ॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान योगेश्वर ज्ञानी ॥ दास तुलसी शरण आये भाव प्रीति जानी ॥ ४ ॥ ७ ॥

जगमगाय उठे महल जागी मातु जानकी ॥ टेक ॥ जानकीके महल ऊपर किरण उगैं भानुकी ॥ १ ॥ सर्व देव करत सेव चौकी हनुमानकी ॥ कोटि सखी चँवर ढोरैं सेज सीता रामकी ॥ २ ॥ आसपास चंचरीक लिये पीकदानकी ॥ मानो चमेलि फूल रही सुनो रस भानुकी ॥ ३ ॥ अवधपुरकी सरस नारी अपने अपने भवनानकी ॥ सीयाजीको

रूप निहारैं कोटि शोभा भानुकी ॥ ४ ॥ चित्रकोट सुखविलास शोभा बनी रामकी ॥ प्रातकालकी विनति तुलसीदास गुलामकी ॥ ५ ॥ ८ ॥

रुनुक झुनुक चलति चाल जनकनंदिनी ॥ टेक ॥ दामिनीद्युति चपलगात चरण धरत डगमगात मधुर वचन तोतरी त्रयतापभंजनी ॥ १ ॥ शोभित शुभ नीलवसन मंदहास रुचिर दशन झलकत उर माल जाल जगतदेववंदिनी ॥ २ ॥ नूपुर पग बाजत जात मानो सामवेद करत गान क्षुद्रघंटि रुचिर नाद उर अनंदिनी ॥ ३ ॥ मंगल सब करत गान शारद शशि संग फिरत देखो अतिराजति मिथिलेशनंदिनी ॥ ४ ॥ जगतमातु सखिन संग विहरति बाहुकरति रंग बलानंद छबि निरखि निरखि भवनिकंदिनी ॥ ५ ॥ ९ ॥

भोर भयो भूपतिके द्वारे नौबत बाजन लागी ॥ टेक ॥ भयो कुलाहल कनकभवनमें जनकनंदिनी जागी ॥ १ ॥ द्रुमन द्रुमन पक्षी वन बोलैं तिमिर निशाचर भागी ॥ अरुण भयो रविकिरण प्रकाशित कोक शोक भय त्यागी ॥ २ ॥ अरुणशिखा धुनि करत परस्पर प्रेमप्रीति रसपागी ॥ सरयूतीर चले मज्जनकी गुरु भूसुर वैरागी ॥ ३ ॥ दासी दास चले दर्शनको चरणकमल अनुरागी ॥ प्रथमहि जाय कमलमुख निरखें सोई कान्हर बडभागी ॥ ४ ॥ १० ॥

जगमगात कनक महलमें जागी मातु जानकी ॥ कौशल्याके पाँव लागु जीवो जनकरायकी ॥ टेक ॥ आसपास सब सखि

खडी धुनि नूपुरकी ॥ चंपेकी कली मानों असमानकी ॥१॥ सकल देव करत सेव चौकी हनुमानकी ॥ लक्ष्मण कुँवर चँवर ढोरैं सेज सीतारामकी ॥२॥ श्याम प्रीतम अपने महल राम लक्ष्मण जानकी ॥ साधु संत करत सेव और बात ज्ञानकी ॥ ३ ॥ अयोध्याकी सरस नारी अपने अपने ॥ सीयाजीको रूप मानो उगी किरण भानुकी ॥ ४ ॥ चित्रकोट सुखविलास अधिक महिमा रामकी ॥ उठत प्रात विनति करत तुलसीदास सियारामकी ॥ ५ ॥ ११ ॥

श्रीरामानुज अवतार मनोहर सुंदर शुभग शरीरं ॥टेक॥ अखिल लोकके शोकविनाशन भये करुणाकर गभीरं ॥१॥ खलखंडित रणमंडित पंडित कररुचिदंडत्रिदंडं ॥ तिलक श्रीचूरण शशिमुख झलकै कुंडलमंडितगंडं ॥ २ ॥ अरुण भँवर धरे चरण भुजायुत सरस सुवर्ण उदारं ॥ शांति दांति वेदांत क्रांति महिमा अगम अपारं ॥ ३ ॥ तिमिर प्रचंड वितंडविखंडन मंडनद्रविडविकासं ॥ आदि सुब्रह्मसहोदर भूधर मुक्ति प्रतिपाल विनीतं ॥ मायावाद विवादविशारद मुक्तिप्रतिपालविनीतं ॥ सेवक राम निष्काम स्वस्तिकृत भक्तविभूषित गीतं ॥ ५ ॥ १२ ॥

श्री जागिये कुँवर नन्दके दुलारे ॥ टेक ॥ मथुरामें जन्म लियो गोकुला सिधारे। जोइ २ हम पतित सुने सोइ २ तुम तारे ॥१॥ यमुनामें गेंद परी ग्वालबाल हारे ॥ कालिनाग नाथ लाये कृष्ण भय कारे । २ ॥ ग्राहते गज

राखि लीन्हों देवता उबारे ॥ धन्य धन्य तुलसीके स्वामी ध्रुव प्रहलाद तारे ॥ ३ ॥ १३ ॥

जागो हो तुम नंदकुमार ॥ टेक ॥ बलि बलि जाऊं मुखारविंदकी गो सुत मिले और कंस भुआर ॥ १ ॥ आज कहां सोवत त्रिभुवनपति और बार तुम उठत सबार ॥ २ ॥ वारंवार जगावति माता कमलनयन भयो त्रिभुवन उज्यार ॥ ३ ॥ दधि मथिहौं माखन तुम्हैं देहौं ॥ संग सखा ठाढे सब द्वार ॥ ४ ॥ उठिकै मोहन वदन देखावहु सूरदासके प्राणअधार ॥ ५ ॥ १५ ॥

मोहन जाग हों बलि गई ॥ टेक ॥ ग्वाल बाल द्वारे ठाढे बेर वनको भई ॥ १ ॥ ॥ पीत पट कारि दूर मुखते छोड़ दे अलसई ॥ २ ॥ अति आनंदित होत यशुमति देख द्युति नित नई ॥ ३ ॥ जागे जंगम जीव पशू खग और व्रज सब मई ॥ ४ ॥ सूरके प्रभु दरशन दीजै अरुण-किरण छई ॥ ५ ॥ १५ ॥

झांझके संग गानेकी प्रभाती

प्रात समय रघुवीर जगावै कौशल्या महतारी ॥ टेक ॥ उठो लाल जीभोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी ॥ १ ॥ इंद्रादिक ब्रह्मादि देवता सनकादिक ऋषिचारी ॥ बाणी वेद विमल यश गावैं रघुकुलयश बिस्तारी ॥ २ ॥ बंदी जन गंधर्व गुन गावैं नाचत दै दै तारी ॥ सेनसहित द्वारे ठाढे होत कुलाहल

भारी ॥ ३ ॥ जागे भरत लखन रिपुसूदन जागीं जनक दुलारी ॥ अवधपुरी नर नारी जागे सरयूपंथ निहारी ॥ ४ ॥ भरत शत्रुहन चँवर छत्र लिये जनकसुता लिये झारी ॥ मेवा पान लिये कर लक्ष्मण भरि कंचनकी थारी ॥ ५ ॥ सुनि प्रियवचन उठे रघुनंदन नयनन पलक उघारी ॥ चितवनिमें किये अभय चराचर मुदित भये नर नारी ॥ ६ ॥ करि अस्नान दान नृप दीन्हों गो गज कंचन झारी ॥ रतनसिंहासन मध्य विराजैं सुंदर अवधविहारी ॥ ७ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै कुण्डलकी छबि न्यारी ॥ जयजयकार करत जन माधो तन मन धन बलिहारी ॥ ८ ॥ १६ ॥

प्रातसमय सरयूतट देखो, बिहरत राजदुलारे ॥ टेक ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, प्रातहि तुरँग सँवारे ॥ झटपट झटपट चढे वाजिपर, संग सखा ललकारे ॥ पीतांबरकी कछनी काछे क्रीट मुकुट सिर धारे ॥ भाल तिलक वैजंती माला धनुष बाण कर धारे ॥ संग सखा सब परम भक्त हैं प्रभुगति लखी न पारे ॥ सन्मुख पवनकुमार विराजैं परम रामके प्यारे ॥ गोदनामें गौतमके आश्रम रहहिं मुनिन सुखकारे ॥ राम कृपानिधि परम दरश दिये, पूरण भाग्य हमारे ॥ गोकुलदास छबि निरखि रामकी, तनकी सुरति बिसारे ॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत शंभु भये मतवारे ॥ १७ ॥

प्रातसमय उठि जनकनंदिनी, त्रिभुवननाथ जगावैं ॥ टेक ॥

उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावैं ॥ १ ॥ हस्तकमलसों चरण पलोटैं ले ले दृगन लगावैं ॥ जो पद परसि नारि गौतमकी अभय परम पद पावैं ॥ २ ॥ उरझी माल गले मोतियनकी कर अँगुरी सुरझावैं ॥ घूँघरवारी अलक वदनपर पागकी पेंच बनावैं ॥३॥ कनक कलश सरयू जल झारी दाँतुन दान करावैं ॥ कमलनयन मुख निरखि रामको आनँद उर न समावैं ॥४॥ संत जननकी ऐही विनती, आरत वचन सुनावैं ॥ कान्हरदास सिया रघुवरको,हरषि निरखि गुण गावैं ॥ ५ ॥ १८ ॥

प्रात समय कौशल्या रानी,अपनो पुत्र जगावैं ॥ टेक ॥ नील अंगपर पीत झँगुलियां, हरषि निरखि पहिरावैं ॥ सुंदर श्याम कमलदललोचन,निरखि परम सुख पावैं ॥ १ ॥ नेति नेति कहि वेद बखानै ब्रह्म ध्यान लगावैं ॥ सोई करुणामय राम दयानिधि, दशरथपुत्र कहावैं ॥ २ ॥ कबहूँ पलना घालि झुलावैं, कबहूँ गोद खिलावैं ॥ कबहूं पाँयन चलन सिखावैं, मातु सबै सुख पावैं ॥३॥ धन्य धन्य रानी कौशल्या, दशरथ धन्य कहावैं ॥ धन्य अयोध्या नगर निवासी, तुलसी दरशन पावैं ॥ ४ ॥ १९ ॥

लक्ष्मण राम कौशल्या माई, अँगनामें गोद खिलावैं ॥ टेक ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, पलना माहिं झुलावैं ॥१॥ घरसों पौरि पौरिसों बाहर, पांयन चलन सिखावैं हाथ लिये बून्दीके लडुआ, काक भुशुण्ड चुगावैं ॥ २ ॥

जरकस पाग केसरिया जामा, हरषि निरखि पहिरावैं ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, उर बनमाल सुहावैं ॥ ३ ॥
कटि किंकिणी नूपुर धुनि बाजैं ठुमुकि चाल मन भावैं ॥
शेष सहस्र मुख रटत निरन्तर, सोऊ पार न पावैं ॥ ४ ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नारद ध्यान लगावैं ॥
तुलसिदास धनि२कौशल्या,मुख चूंमत लाड़ लड़ावैं॥५॥२०॥

भयो प्रभात कहत कौशल्या, जागो राम पियारे ॥टेक॥ ऊगे भानु कमलदल खोलै, मधुकर करत गुँजारे ॥ चरण-कमल मुख निरखि रामके हरषत नयन हमारे ॥१॥ जननी वचन सुनत उठि बैठे, नयनन पलक उघारे ॥ गावैं गुण गंधर्व गुनीजन, द्विजवर निगम उचारे ॥ २ ॥ शिव सन-कादि भेष धरि आवैं, दरशन हेतु तुम्हारे ॥ अनुज सखा सब द्वारे ठाढे, सोहत न्यारे न्यारे ॥ ३ ॥ करि अस्नान दान नृप दीन्हों, भूषण वसन सँभारे ॥ तुलसी दास आश रघुबरकी, लै संतन उर धारे ॥ ४ ॥ २१ ॥

इति श्रीरामप्रभाती

अथ रामकृष्णयुगुलप्रभाती

राम कृष्ण दोउ नाम मनोहर, प्रातहि उठि कर ध्यान धरो ॥ टेक ॥ गुरूनामको खड्ग बनाई, रामनामको धनुष करो ॥ कृष्णनामको बाण चढाई, मारि पाप सब दूरि करो ॥ १ ॥ रामचन्द्र दशकन्धर भंज्यो, असुर मारि मुनिशोक हरो ॥ यहां व्रजवासिन बहु सुख दीन्हों, कृष्ण कंस विध्वंस

करो ॥ २ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नामहि सब परमाण कर्‍यो ॥ ध्रुव प्रहलाद महातप करिके, नाम पकरि भवसिन्धु तर्‍यो ॥ ३ ॥ वेद पुराण बखानत महिमा, शेष आदि नहिं पार पर्‍यो ॥ गोकुलदास कहां लगि वरणै, नाम सुमिरि संसार तर्‍यो ॥ ४ ॥ २२ ॥

प्रात होत यमुनातट देखो, विहरत नन्ददुलारे ॥ टेक ॥ देवकिसुत भये कृष्णचन्द्रजी, रोहिणीसुत बलभारे ॥ नन्द यशोदहि बहु सुख दीन्हों, पूतनाप्राण संहारे ॥१॥ पीताम्बरकी कछनी काछे, मोरमुकुट सिरधारे ॥ भाल तिलक तुलसीकी माला, मूरति मद ननिहारे ॥ २ ॥ इन्दर कोपि चढ़े व्रज ऊपर, मेघ सकल ललकारे ॥ यमुना पैठि नागको नाथे, नखपर गिरिवर धारे ॥ ३ ॥ कंस आदि सब थर २ कांपे कालरूप प्रभु धारे ॥ ग्वाल बाल सब मुख छबि निरखैं, निकटहि हलधर ठारे ॥४॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता, सुस्तुति विमल उचारे ॥ गोकुलदास छबि देखि मगन भये तनकी सुरति बिसारे ॥ ५ ॥ २३ ॥

इतिरामकृष्णयुगलप्रभाती

कौन हरै प्रबल पाप गंगा बिनु मेरे ॥टेक॥ गंगाको ध्यान करत सुमिरि सुमिरि पाँव धरत मज्जनसों पाप हरत, कालफाँस तोरे ॥१॥ सुर नर मुनि सकलदेव, गंगाकी चरण सेव, पावत नहि शेष भेव शंभू शिर धारे ॥२॥ हरिद्वार प्रयागराज वाराणसि मुक्ति साज, प्रविशि आप सिन्धुराज सगरवंश

तारे ॥ ३ ॥ ऋषिन मुनिन संत भीर, बैठे बहु तीर तीर हरति सबकी त्रिविध परि तनक पल फेरे ॥ ४ ॥ तीर तारि तीन लोक हरण करति संत शोक, गोकुलदास पद बिलोकि, कवन न चहत चेरे ॥ ५ ॥ २४ ॥

क्यों सोवे गफलतके मारे, जागजाग नर जाग रे ॥ टेक ॥ हरी भज सोइ हंस कहावे, कामी क्रोधी काग रे ॥ मानस चोला बड़ा अमोला लगा दागपर दाग रे ॥ तन सराय बिच बसत मुसाफिर, करता है उन्माद रे॥ समुझाये समुझत नहिं सज्जन बिना ज्ञान वैराग रे ॥ मोहनिशामें सकल भुलाना, नहिं कछु लागा हाथ रे ॥ निशा सिरानी उठ गया डेरा चला सवेरा ठाढ रे ॥ सुत वनितादि देखि जनि भूलें, सर्प कैसा साथ रे ॥ गोकुलदास कहै गुरु ज्ञानी; लगी गलेमें फाँस रे ॥ २५ ॥

इतिवैरागप्रभाती

राम विहाग--कर मन नन्दनदँनको ध्यान । यह अवसर तोहि फिर न मिलैगो मोरि कही अब मान॥ घूंघरवारी अलकैं मुखपर कुंडल झलकत कान । नारायण अलसाने नयना झूमत रूपनिधान ॥ २६ ॥

गंगा भंजहु पाप हमारो ॥ टेक ॥ हौं अपराधी बहुत जन्मको, पावन नाम तुम्हारो ॥१॥ सुरपुर नरपुर नागलोकपुर, तिहुँपुर सुयश तुम्हारो ॥ २ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुस्तुति करत तुम्हारो ॥ ३ ॥ दामोदर जन दीन दुखित अति आयो शरन तुम्हारो ॥ ४ ॥ २७ ॥

दांतुन करानेकी प्रभाती

दांतुन कीजै लाडिले, रघुनाथ दुलारे ॥ टेक ॥ सरजू जीको जल भरि लाई जनकदुलारी॥ १॥रत्नजडितकी चौकी पर प्रभु आप पधारे ॥ सुर नर मुनिजन मोहिं रहे सब रहे सब कौतुक हारे ॥ २ ॥ कर दर्पण लक्ष्मण लिये, विधिसों पाग सँवारे ॥ तुलसिदासपर येही कृपा, नित्य दर्शन तिहारे ॥ ३ ॥ २८ ॥

आज राम जानकी, कृपालु सुंदर सोहैं ॥ निरखत सुर नर वर मुनि शिव विरंचि मोहैं ॥ टेक ॥ राम जीके शीश क्रीट रत्नजटित धारी ॥ सियाजीके शीश फूल कोटि चंद्रवारी ॥१॥ रामजीके पीतांवर धनुष बाण राजैं ॥ सियाजीके करकमलमुद्रिकाविराजै ॥ २ ॥ रामजीके कुण्डलकी कोटि-कोटि शोभा ॥ सियाजीके करणफूल रामजीको मन लोभा ॥ ३ ॥ रामजीके उर सोहै मुतियनकी माला ॥ चारु हार रुचिर पहिरे जनककुँवरिबाला ॥ ४ ॥ रामजीके कटि किंकिणि रुनुक झुनुक बाजे ॥ सियाजीके क्षुद्रघंटिका मदन मंत्र लाजे ॥ ५ ॥ रामजी घनश्याम वर्ण छबि अभिराम ॥ सियाजी हैं कनकवर्ण लाजत रतिवामा ॥ ६ ॥ सियाजीकी नखसिखछबि कहत नहीं आवै॥कोटि शेष शारदा श्रुति पारहु न पावै॥७॥एहि ध्यान हीयते टरत नहिं टार्‌यो॥ दास अग्र युगलचरणपर वारि फेरी डार्‌यो ॥ ८ ॥ २९ ॥

इति प्रभाती ।

अथ मंगलसमय मंगल आरती ।

आरती जगन्नाथस्वामी मंगलकारी ॥ टेक ॥ निरखत मुखारविंद परसत चरणारविंद आपदा हरी ॥ १ कञ्चन-मणि दीपदान ज्योति जगमगी ॥ लजत धूप अगरबाती पावके जरी ॥२॥घनन् घनन् घंट बाजे, बाजै वेणु बांसुरी ॥ ताल तो मृदंग बाजे, और नाद खञ्जरी ॥ ३ ॥ इंद्रदमन सिंधु गाजै, रोहिणिया खड़ी ॥ मारकण्डे सेतु गंगा आनन्दकी भरी ॥ ४ ॥ संतनकी भारभारी, जात्रा सब जुरी ॥ बेंतनकी मार पडे, कबकी खडी ॥ ५ ॥ सुर नर मुनि द्वारे ठाढे ब्रह्मा वेद उच्चरी ॥ धन्य धन्य माधोदास,आजुकी घरी ॥ ६ ॥ १ ॥

इति जगन्नाथजीकी मंगलआरती सम्पूर्ण ।

अथ सातों वारोंके बालभोग

अथ रविवारके बालभोग

बाल लीला खेलैं रघुवीर ॥ टेक॥ भोर होत उठि भोजन मांगे, मुख धोवनको सरयू नीर ॥ १ ॥ दाख वदाम खोपरा केला दूध दही मेवा रसखीर ॥ २ ॥ रुमक झुमक पग नूपुर बाजें, गजपति चाल चलें रघुवीर ॥ ३ ॥ रत्नजटित सिर मुकुट विराजै गलै विराजै मुक्ताहीर ॥ ४ ॥ इन २ चाल चलें चारों भइया, भरत शत्रुहन लक्ष्मण वीर ॥ ५ ॥ सुन्दर वदन कमलदललोचन, सोहत रघुवर श्यामशरीर ॥ ६ ॥ सारँगधनुष बाण कर राजे, पीताम्बर पहिरे पटचीर ॥ ७ ॥

संग सखा सरयूतट विहरैं भरत शत्रुहन लक्ष्मणवीर ॥ ८ ॥ सुर नर मुनि दरशनको आये; दशरथ द्वारे हो रहिं भीर ॥ ९ ॥ तुलसिदास हरिरूपनिहारे, नित उठि गावत गुण गंभीर ॥ १० ॥ १ ॥

बालभोग कीजै कौशलचन्द ॥ टेक ॥ कंचनथार सुधारि सुमित्रा, ले आई मधुरे फल कन्द ॥ १ ॥ व्यंजन सकल सँवारे सजनी, पावत देत सरस रसगन्ध ॥ २ ॥ चारौं भइया मिलि जेमन बैठे, दशरथ सुत प्रभु आनँदकन्द ॥३॥ पाय अघाय चले खेलनको रंगमहलमें चारों बन्धु ॥ ४॥ राजकाज गज वाजि सँवारे, सकल सुधारे श्रीरघुनन्द ॥५॥ रामदास भजो पूरण प्रभु, कौशल्यासुत आनँदकन्द ॥ ६ ॥ ॥ २ ॥ इति रविवारके बाल भोग समाप्त ।

अथ सोमवारके बालभोग

बालभोग कीजै श्रीमहाराज ॥ टेक ॥ सुवरणवेदी रतनसिंहासन तापर बैठे श्रीरघुराज ॥ १ ॥ कंचनथार मेवादिक भोजन, जानकि लाई भरि भरि थार ॥ २ ॥ भरत शत्रुहन चँवर छत्र लिये, पान सँवारे लक्ष्मण युवराज ॥ ३ ॥ रत्नजटितके बने बिछौना, तापर बैठे महाराज ॥ ४ ॥ हनूमान कर झारी लीन्हे अचवन कीजै श्रीमहाराज ॥ ५ ॥ लक्ष्मीनारायण स्वामी राखु मेरी चरणकमल सेवककी लाज ॥ ६ ॥ ३ ॥

करत कलेउ आय प्रातहीं, मिलि चारौं भाई हां हां हां ॥ टेक ॥ कंचनथार सवारिके ले आई हां० ॥ १ ॥ व्यंजन बने बहु भांतिके, दधि दूध मिठाई हां० ॥ २ ॥ खेलत खात दुरायके, झगरे चारों भाई हां० हां ॥३॥ राजा दशरथजीके पौरिमों, कुमकुमा उडाई हां० ॥ ४ ॥ रुमकझुमक पग पयँजनी, कछनी छबि छाई हां० ॥ ५ ॥ उर मणिहार विरजहि मोतियन छबि छाई हां० ॥ ६ ॥ अवधपुरीके कुंजमें विहरैं चारों भाई हां ॥ ७ ॥ दर मधुरे बोलही, मोहिं लगत सोहाई हां ॥ ८ ॥ राम लषन लीला रचें, भक्तन सुख दाई हां ॥ ९ ॥ अग्रदास श्रीरामको, मानो लेत बुलाई हां० १० ॥ ४ ॥

इति सोमवारके बालभोग संपूर्ण

अथ मंगलवारके बालभोग

बालभोग कीजै हनुमानजी लला ॥टेक॥ तुम मेरे प्राणजीवन धन वारे, नेक न न्यारे होउ लला ॥१॥ बहु मेवा पकवान मिठाई, खाजा खुरमा और फला ॥ २ ॥ बहुत सुगंध मलायके मिसरी, औरो निरमल गङ्गजला ॥ ३ ॥ जन अनूप रामहितकारी लीला हनुमत अनंतकला ॥ ४ मातु अञ्जनी करत आरती रामदास बलि जात लला ॥ ५ ॥ ५ ॥

बालभोग कीजै अञ्जनी कुमार ॥टेक॥ सुवरण वेदी रतन सिंहासन, तापर आय विराजे महाबीर ॥ १ ॥ कञ्चनथार मेवादिक भोजन, ले आये संत सम्हार ॥ २ ॥ दाख

बदाम खोपरा केरा, दूध दही मेवा और अनार ॥३॥ मातु अञ्जनी करत आरती, रामदासके प्राण अधार ॥ ४ ॥ ६ ॥

इति मंगलवारके बालभोग सम्पूर्ण

अथ बुधवारके बालभोग

बालभोग कीजै कृष्णलला ॥ टेक ॥ श्रीव्रजपूरण श्रीपुरुषोत्तम, नेक न न्यारे होउ लला ॥ १ ॥ मोतीचूर मगदके लड्डू, माखन मिसरी और फला ॥ २ ॥ दोनों भैया मिलि जेंवन बैठे, गौर श्याम मुख झलकझला ॥ ३ ॥ संग सखा परसादी लीन्हे, अचवन कीजै यमुनजला ॥ ४ ॥ राधा कृष्ण दास हितकारी, बीरी पावो सुगंध मिला ॥ ५ ॥ मातु यशोदा करत आरती, सूरदास बलिजात लला ॥ ६ ॥ ७ ॥

बाल भोग कीजै गोकुलचन्द ॥टेक॥ खोवा मेवा माखन मिसरी, पेडा किसमिस मीठे कंद ॥ १ ॥ दोनों भैया मिल जेंवन बैठे, रोहिणिसुत अरु बालमुकुन्द ॥ २ ॥ पाय अघाय चले खेलनको, जमुना तट गये ग्वालन संग ॥ ३ ॥ ग्वाल बाल सब करत कोलाहल, कंस पछारे श्रीयदुनंद ॥ ४ ॥ रत्नजटित सिर टोपी सोहै, कौस्तुभमणि अरु बाजूबन्द ॥ ५ ॥ सूरदास हरिको रूप निहारे, भक्तिदान दीजै गोविंद ॥ ६ ॥ ८ ॥

बालभोग कीजै नंदकिशोर ॥ टेक ॥ भांति भांतिके व्यंजन मोहन, केरा नरियल मीठे बोर ॥ १ ॥ उत भैया

मुख धोवन आई, हलधर कर अरु माखनचोर ॥ २ ॥ हल-धर गिरिधर जेंवन बैठे ग्वालबाल बैठे चहुँ ओर ॥ ३ ॥ माखन खावत मुख लपटावत, केलि करत श्रीनन्दकिशोर ॥ ४ ॥ रतनजटितकी बनो झिंगुलिया, मुरलिं देखि मोहे अनमोल ॥ ५ ॥ परमानन्द दास हितकारी, रोहिणिसुत अरु जुगुलकिशोर ॥ ६ ॥ ९ ॥

कनक कटोरा प्रातहि दधि घृत मिठाई हां हां ॥ टेक ॥ चौकी रत्नजडावकी, बैठे दोउ भाई० ॥ १ ॥ दो लडुआ अनमोलके, मैया लै आई० ॥ २ ॥ खेलत खात दुरायके, झगरैं दोउ भाई ॥ ३ ॥ नंदबाबाजीकी पौरिमें दधिकी कीच मचाई० ॥ ४ ॥ महा ढीठ माने नहि कछु लहुर बडाई० ॥ ५ ॥ अरसपरस चुटिया गहैं, हँसि बरजै माई० ॥ ६ ॥ घरघर की सब गोपिका दरशनको आई० ॥ ७॥ इतसों आई मैया रोहिणी, यशोदा बलि जाई० ॥८॥ राम कृष्ण लीला रची, संतन सुखदाई० ॥ ९ ॥ जगन्नाथ धरणीधरे, माधो बलि जाई० ॥ १० ॥ १० ॥

इति बुधवारके बालभोग संपूर्ण

अथ गुरुवारके बालभोग

बालभोग कीजै रामजी लला ॥ टेक ॥ तुम मेरे प्राण-जीवनधनवारे, नेक न न्यारे होउ लला ॥ १ ॥ बहु मेवा पकवान मिठाई, खाजा सुरम और फला ॥ २ ॥ बहुत सुगंध मिलायके मिसरी, औरहु सरजू गंगजला ॥ ३ ॥

ल्योने लक्ष्मण कुँवर लाडिले, भरत शत्रुहन चपलकला ॥ ४ ॥ जन अनूप संतन हितकारी, लीलानटवर अनंत-कला ॥ ५ ॥ मात कौशल्या करत आरती, अग्रदास बलि जात लला ॥ ६ ॥ ११ ॥

बालभोग कीजै सिय रघुवीर ॥ टेक ॥ अवध पुरीमें रतनसिंहासन, बहुत सुहावन सरजूनीर ॥ १ ॥ दाख बदाम खोपरा केरा दूध दही मेवा अरु खीरा ॥ २ ॥ बैठी राम वाम दिशि सीता, दहिने विराजे लक्ष्मणवीर ॥ ३ ॥ चारों भैया मिलि जेंवन बैठे, गले विराजै मुक्ताहीर ॥ ४ ॥ रघु-वर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, दो सांवर दो गौर शरीर ॥५॥ सारंगधनुष बाण कर राजे, पीतांबर पहिरे पटजीर ॥ ६ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, गले विराजै मुक्ताहीर ॥ ७ ॥ कौशल्या बलि जात रामको, पावत ओट करै पटचीर ॥ ८ ॥ सन्मुख पवनपुत्र कर जोरे, अग्रदास झारी भरि नीर ॥ ९ ॥ १२ ॥ इति गुरुवारके बालभोग सम्पूर्ण ।

अथ शुक्रवारके बालभोग

बालभोग कीजे वेंकट भोर ॥ टेक ॥ दूधै न्हानो दूधै पानो, दूधैके नाना रस भोग ॥ १ ॥ दाख बदाम खोपरा केरा, माखन लागै नित्य उठि भोग ॥ २ ॥ घनन् घनन् धुनि घंटा बाजै शंख शब्द होय सुन्दर घोर ॥ ३ ॥ देश देशके साधू आये, दरशन पावैं नित उठि भोर ॥ ४ ॥ फूलनको जामा अति सोहै, केसर तिलक सोहै सिर और

॥ ५ ॥ जन हाथिरामजी वेंकटजीके शरणे, चरणकमलपर चित रहै मोर ॥ ६ ॥ १३ ॥

बालभोग कीजै लक्ष्मणमहाराज ॥ टेक ॥ लक्ष्मीजी भोजन आप सँवारें नारद लाये निरमल नीर ॥ १ ॥ मेवा दाख बदाम छोहारा, सेव रसाल धरे फलसीर ॥ २ ॥ इजय विजय दोउ पोरिया विराजैं, सन्मुख है श्रीहनुमतवीर ॥ ३ ॥ जन हाथिरामजी वेंकटजीके शरणे, नित उठि गुण-गंभीर ॥ ४ ॥१४॥ इति शुक्रवारके बालभोग समाप्त।

अथ शनिवारके बालभोग

बालभोग कीजे नरसिंहलला ॥ टेक ॥ तुम मेरे प्राणजी-वन धनवारे नेक न न्यारे होउ लला ॥ १ ॥ बहु मेवा पक-वान मिठाई, खाजा खुरमा और फला ॥ २ ॥ बहुत सुगन्ध मिलायके मिसरी, औ पुष्करणीगंगजला ॥ ३ ॥ जल अनूप भक्तजन हितकारी लीला नरहरि अनन्तकला ॥ ४ ॥ जन प्रहलाद आरती साजे, अभयदान मोहिं देव लला ॥ ५ ॥ १५ ॥

बालभोग कीजै नृसिंह महाराज ॥ टेक सुवरणवेदिका रतनसिंहासन, तापर बैठे नृसिंहमहाराज॥ १ ॥ कञ्चनथार मेवादिक भोजन, लक्ष्मीजी ले भरि आई थार ॥ २ ॥ शिव सनकादिक चँवरछत्र लिये, पान लिये नारद महाराज ॥ ३ ॥ रतनजडितके बने बिछौना, तापर बैठे नृसिंह महाराज ॥ ४ ॥ हनूमान कर झारी लीन्हें, आचमन कीजे नृसिंहमहाराज ॥ ५ ॥

लक्ष्मी नारायण स्वामी राखु मेरी, चरणकमल सेवककी लाज ॥ ६ ॥ १६ ॥

करत कलेवा प्रातहि मिलि चारों भाई हां हां ॥ टेक ॥ कञ्चनथार सँवारिकै मइया ले आई ॥ १ ॥ व्यंजन बने बहुत भांतिनके बहु दधि दूध मिठाई ॥ २ ॥ खेलत खात दुरावहिं झगरे चारों भाई ॥ ३ ॥ राजा दशरथकी पौरिमें कुमकुमा उडाई ॥ ४ ॥ रुनक झुनक पग पैंजनियां अरु कछनी छबि छाई ॥ ५ ॥ अवधपुरीके कुञ्जभवनमें विहरैं चारों भाई ॥ ६ ॥ उर मणिहार विराज मुतियन छबि छाई ॥ ७ ॥ सुन्दर मधुरी बोली बोलहिं, मोकहँ लगत सुहाई ॥ ८ ॥ राम लषन लीला रचें, भक्तन सुखदाई ॥ ९ ॥ अग्रदास श्रीरामचन्द्रको, मानो लेत बुलाई ॥ १० ॥ १७ ॥ इति शनिवारके बालभोग समाप्त ।

अथ सातों वारोंकी मंगल आरती

अथ रविवारकी मंगल आरती

मंगल आरति, रामकृष्णकी राधावर अरु श्रीसीतांवरकी ॥ टेक ॥ मंगल अवधपुरी सरयूजल, मंगल मथुरा जमुना-जलकी ॥ १ ॥ मंगल कौशल्या दशरथसुत, मंगल यशोदा-नन्दकुंवरकी ॥ २ ॥ मंगल क्रीट मुकुट सिर सोहै, मंगल शोभा मोर मुकुटकी ॥ ३ ॥ मंगल धनुष बाल कर राजे, मंगल मुरली मुख मोहनकी ॥ ४ ॥ मंगल केशर भाल तिलक छबि, मंगल गोरोचन सिर छबिकी ॥ ५ ॥ मंगल

सीता वाम विराजै, मंगलराधा शोभाधरकी ॥ ६ ॥ मंगल चरण अहिल्या तारी, मंगल रुचिर रूप कुबजाकी ॥ ७ ॥ मंगल रावण असुर सँहारे, मंगल कंस पछारन करकी ॥ ८ ॥ मंगल भक्त विभीषण थापे, मंगल छत्र धरि उग्रसेनकी ॥ ९ ॥ मंगलरूप बसो यह जोरी, रामदास निरखैया छबिकी ॥ १० ॥ १ ॥ इति रविवारकी मंगल आरती स० ॥

अथ सोमवारकी मंगल आरती

मंगल आरति राघोजीकी कीजे रामजीकी कीजै, तन मन धन सब अरपण कीजे ॥ टेक ॥ मंगल आरति सदा सुख साजै, राजा दशरथ गृह नौबत बाजे ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै, जनक सुता लिये आरति साजै ॥ २ ॥ भरत शत्रुहन लक्ष्मण भाई, रामजीकी शोभा वरणि न जाई ॥ ३ ॥ सनक सनंदन पार न पावै, नारदादि मुनि गुणगण गावै ॥ ४ ॥ शेष सहस मुख रटतनिरंतर, शिव चतुरानन ध्यान न आवै ॥ ५ ॥ मोहन दास द्वार झुकि गावै, विमल भक्ति श्रीरामजीकी पावै ॥ ६ ॥ २ ॥

मंगल आरती रामकुँवरकी संकटमोचन सारंगधरकी ॥ टेक ॥ कनक थार मणि मानिक मोती, कोटि शशिसम ति होती ॥ १ ॥ मंगल आरति साजै सुनयना, परम सुधारस बोलि बैना ॥ २ ॥ परम उदार दीन दुख मोचन करुणा सिंधु कमलदल लोचन ॥ ३ ॥ वाम भाग मिथिलेशकिशोरी यह छबि वरणि सकै कवि को री ॥ ४ ॥ छत्र

लिये कर लक्ष्मण सोहै, अंजनिसुत सन्मुख कर जोडै ॥५॥ भरत सत्रुहन चँवर दुरावैं, नारदादि मुनि गुणगण गावैं॥६॥ तुलसिदास रघुवर छबि निरखें पुलकित गात लोचन जल बरखे ॥ ७ ॥ ३ ॥ इति सोमवारकी मंगल आरती ॥

अथ मंगलवारकी मंगल आरती

मंगलआरती सजनी साजे, मंगल मोद अनंद बढावै॥टेक मंगल पिय प्यारी सुख पावै, मंगल वचन रचन उर लावै ॥ १ ॥ मंगल केलि वेलि सरसावै, मंगल कर कपोल परसावै ॥ २ ॥ मंगल कोक केलि दरसावै, मंगल उर लै हृदय लगावै ॥ ३ ॥ मंगल मंद मंद मुसकावै, मंगल अंग अंग लपटावै ॥ ४ ॥ मंगल दशन कपोल विराजै, मंगल अलकैं मुखपर राजैं ॥ ५ ॥ मंगल अधर अरुणता भ्राजै, मंगल मुखमंडन शुभ राजै ॥ ६ ॥ मंगल अचवन उमँगि करावै, मोहनदास अधिक सुख पावै ॥ ७ ॥ ४ ॥

इति मंगलवारकी मंगल आरती समाप्त

अथ बुधवारकी मंगल आरती

मंगल आरती नंदकुँवरकी, यशुमतिसुत श्रीराधावरकी ॥ टेक ॥ मंगल जन्म कर्म कुल मंगल, मंगल यशुमति माखनचोरकी ॥ १ ॥ मंगल और मुकुट कुंडल छबि, मंगल मुरली बजे घनघोरकी ॥ २ ॥ मंगल व्रजवासी सब मंगल मंगल गान करैं चहुँ ओरकी ॥ ३ ॥ मंगल गोपी ग्वाल सब मंगल मंगल राधा नंदकिशोरकी ॥ ४ ॥ मंगल नन्द

यशोदा मंगल, मंगल सुतहि खिलावै गोदकी ॥ ५ ॥ मंगल गिरिगोवर्द्धन मंगल, मंगल वृन्दावनकिशोरकी ॥ ६ ॥ मंगल कुंजवासी सब मंगल, मंगल शोभा है चहुँ ओरकी ॥ ७ ॥ मंगल श्याम जमुनजल मङ्गल मंगल धार बहै अघहरकी ॥ ८ ॥ मंगल श्रीहलधर सब मंगल मंगल राधा जुगलकिशोरकी ॥९॥ मंगल या मूरति मन मोहै, चन्द्रसखी बलि जाउं चरणकी ॥ १० ॥ ५ ॥

मंगल आरति कीजे भोर ॥ टेक ॥ मंगल मथुरा मंगल गोकुल मंगल राधा नन्दकिशोर ॥ १ ॥ मंगल लकुट मुकुट वनमाला, मंगल मुरली है घनघोर ॥ २ ॥ मंगल नन्दग्राम बरसाना, मंगल गोवर्द्धनगिरि मोर ॥ ३ ॥ मंगल बंसीवट तट यमुना, मंगल लता झुकी चहुँ ओर ॥ ४ ॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि, मंगल व्रजवासिनकी ओर ॥५॥६॥

इति बुधवारकी मंगल आरती समाप्त ।

अथ गुरुवारकी मंगल आरती

मंगल आरती सिया रघुवरकी, रामरघुवरकी, गौरवरण घनश्यामसुंदरकी ॥ टेक ॥ मङ्गल रूप भूप दशरथके, सुरहित देहधरी नरहरिकी ॥१॥ मङ्गल क्रीट मुकुट सिर राजै, मङ्गलमाल बनी मुतियनकी ॥ २ ॥ मङ्गल भाल तिलक सिर सोहै, मङ्गल खौर बनी चन्दनकी ॥३॥ मङ्गल अशन वसन अभूषन, मंगल बान सरासन हरिकी ॥ ४ ॥ मंगल धनुष बान कर राजै, मंगल शोभा राजकुँवरकी ॥ ५ ॥

मंगलभरत लखन रिपुसूदन, मंगल सिय शोभा सब घरकी ॥ ६ ॥ गान करें सुर वनिता मंगल हरषि सुमन सुर वरषे ॥ ७ ॥ मंगल थार लिये कौशल्या, आरति करन चली रघुवरकी ॥ ८ ॥ मंगल नीर वहै सरजूको, मंगल बीथी श्रीअवध नगरकी ॥ ९ ॥ मंगलरूपसो तुलसी उर, हरहु सकल दुख दारुण जनकी ॥ १० ॥ ७ ॥ इति गुरुवारकी मंगल आरती समाप्त ।

अथ शुक्रवारकी मंगल आरती

मंगल आरति श्रीवेंकटकी, श्रीलक्ष्मणकी शेषाचलपर आप विराजै ॥ टेक ॥ मंगल शेषाचल अति राजे, मंगल श्रीहरि आप विराजे ॥ १ ॥ मंगल पांयन नूपुर बाजे, मंगल पीत पितांबर राजे ॥ २ ॥ मंगल कटिपर किंकिन राजे, मंगल मुक्तामणि छबि छाजै ॥ ३ ॥ मंगल शंख चक्र कर राजे, मङ्गलकीट मुकुट सिर राजे ॥ ४ ॥ मङ्गल अधर दशनकी शोभा, मङ्गल हास देखि शशि लाजे ॥ ५ ॥ मंगल माल गले मुतियनकी, मंगल श्रवणमैं कुण्डल विराजे ॥ ६ ॥ मंगल रूप देववर शोभित, मंगल सकल जगत् छबि राजै ॥ ७ ॥ रामचरण छबि देखि मगन भये, मंगल शरण गये प्रतिपालै॥८॥८॥ इति शुक्रवारकी मंगल आरती समाप्त ।

अथ शनिवारकी मंगल आरती

मंगल आरती श्रीनृसिंहकी, श्रीनरहरिकी, मंगल मोद उठै तरंगा ॥ टेक ॥ मंगल जन प्रहलादके कारण, प्रगट भये

श्रीकरुणाकन्दा ॥ १ ॥ मंगलझांझ और करतालैं, मंगल शब्द उठैं बहुरंगा ॥ २ ॥ मंगल ढोल मृदंग बजावैं, मंगल बांसुरि अरु मुरचंगा ॥ ३ ॥ मंगल धूप दीप कर जोरैं, मंगल मिल गावैं सारंगा ॥ ४ ॥ मंगल भोजन थार सँवारे, मंगल झारी भरि जल गंगा ॥ ५ ॥ मंगल आरति करमें लीन्हें अरपण करहिं सच्चिदानंदा ॥ ६ ॥ मंगल करहिं प्रणाम सबै मिलि दंडवत् करहिं परहिं जिमि दंडा ॥ ७ ॥ मंगल उदय अमंगल नाशै, मंगल प्रभु मिले परमानंदा ॥ ८ ॥ ९ ॥ इति शनिबारकी मंगल आरती समाप्त। इति सातों बारकी मंगल आरती संपूर्ण ।

अथ सातोंबारके मंगल

अथ रविवारके मंगल

गडकि नन्दन श्यामसुन्दर भजु । पूरणब्रह्म अनन्ता ॥ टेक ॥ मुक्तनाथ हरिजन्म लियो है, अवधपुरी विचरन्ता ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावैं, दीनबन्धु भगवन्ता ॥ २ ॥ शेष सहसमुख रटत निरन्तर, सो जाको न पावै अन्ता ॥ ३ ॥ चरणोदक लिये पाप हरत है, जरा मरण भव अन्ता ॥ ४ ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती, तुलसी पुष्प चढन्ता ॥ ५ ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यंजन, नित प्रति भोग लगन्ता ॥ ६ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, रूपराशि भगवन्ता ॥ ७ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नारद ध्यान धरन्ता ॥ ८ ॥ माधवदास आस रघुवरकी, भवसागर उतरन्ता ॥ ९ ॥ १ ॥

जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकन्तम् ॥ टेक॥ नाम अनन्त कहाँलगि बरणौं, शेष न पावत अन्तम् ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक, नारदध्यान धरन्तम् ॥ १ ॥ मच्छ कच्छ शूकर नरहरि प्रभु, वामन रूप धरन्तम् ॥ पर-शुराम सोइ रामचन्द्र भये, लीला कोटि करन्तम् ॥ २ ॥ जन्म लियो वसुदेव देवकी, जसुमति गोद खेलन्तम् ॥ पैठि पताल कालिनाग नाथ्यो, फणपर नृत्य करन्तम् ॥ ३ ॥ हलधर होयके असुर सँहारे, कंसके केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगमग चिंतामणि बैठ रहे निहचिंतं ॥ ४ ॥ कलियुग हरण कल्कि प्रभु ह्वइ हैं वेद पुराण भनंतं ॥ दशमस्कंध भागवत गीता सूर सरण भगवंतं ॥ ५ ॥ २ ॥

सरजूवेद बखानी ॥ पूरणब्रह्म सनातन कहिये ॥ टेक ॥ ब्रह्मलोकसों धारा आई ॥ उचरत जय जय बानी ॥ १ ॥ निश दिन सरजू बहत दूधकी मूरख जाने पानी ॥ २ ॥ स्वर्गद्वारपर अगणित धारा ॥ मुक्ति भरे जहां पानी ॥३॥ निशि दिन सरजू लहर लेत हैं ॥ बोलत मधुरी बानी ॥ ४ ॥ राम घाट असनान करनको ॥ आये हैं मुनि ज्ञानी ॥ ५ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन ॥ हनूमान अगवानी ॥ ६ ॥ सरजूतीर अयोध्यानगरी ॥ अवधपुरी रजधानी ॥ ७ ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक ॥ सेवत हैं मुनि ज्ञानी ॥ ८ ॥ तुलसीदास सरयूकी महिमा ॥ श्रीमुख आप बखानी ॥ ९ ॥ ३ ॥

श्रीराम कृष्ण उठि कहिये भोर ॥ वही अवधेश वही व्रज-जीवन ॥ धनुष धरन और माखन चोर ॥ १ ॥ इतमें अयोध्या निरमल सरयू ॥ उतमें जमुना करत किलोर ॥२॥ इतमें दशरथ कुँवर कहाये ॥ उतमें कहाये श्रीनंदकिशोर ॥ ३ ॥ इतमें कौशल्या गोद खिलावै ॥ उतमें जसोदाजी झुलावैं हिंडोर ॥ ४ ॥ इतमें क्रीट मुकुट सिर राजै ॥ भरत शत्रुहन लक्ष्मण जोरे ॥५॥ उतमें लकुट मुकुट वनमाला ॥ गोधनके संग नंदकिशोर ॥ ६ ॥ इतमें धनुष बाण कर राजै ॥ उत मुरली धरी मुखकी ओर ॥ ७ ॥ इतमें जानकी वाम विराजैं उत राधेवर युगलकिशोर ॥ ८ ॥ इतमें चरण अहल्या तारी उत कुबजा सँग कियो है किलोल ॥९॥ इतमें सागर शिल उतराई उत गिरिवर धरें नखकी कोर ॥ १० ॥ इत लंकापति मार्यो उत कंशको मारि कियो झकझोर ॥ ११ ॥ इतमें राज बिभीषण दीन्हों उत उग्रसेन कियो अपनी ओर ॥ १२ ॥ नन्ददासजीके ये दोउ ठाकुर दशरथसुत अरु नन्दकिशोर ॥ १३ ॥ ४ ॥

खेलत हैं अंगनामें रघुवर जननी लेत बलैया री ॥ टेक॥ शुभ अवतार देव मुनिवंदित राजिवलोचन भाये री ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहाये री ॥ २ ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक इंद्र पुष्प झरि लाये री ॥ ३ ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन मुनिमन लेत चुरायेरी ॥ ४ ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे चरणकमल चित लाये री ॥ ५ ॥ ५ ॥

चलो सखी रघुवर छबि निरखैं रंगभवन हरि आयो री ॥ टेक ॥ इक श्यामल इक गौर मनोहर सङ्ग महामुनि आयो री ॥ १ ॥ साँच कहो सखि झूँठ न बोलो समाचार सुनि पायो री ॥२॥ देश देशके भूपति आये कहु न चाप चढायो री ॥ ३ ॥ तोर्‍यो धनुष राम सुनि सजनी भूप सबै मुरझायो री ॥ ४ ॥ आईं सीता सङ्ग सहेली वरमाला पहिरायो री ॥ ५ ॥ हरे हरे गोबर अङ्गना लीपाये मुतियन चौक पुरायो री ॥ ६ ॥ हरे हरे बांसन मंडप छाये कंचन कलश भरायो री ॥ ७ ॥ राम सिया दोउ चौकमें बैठे ब्रह्मा वेद उचार्‍यो री ॥ ८ ॥ राम सियाजीकी फ़िरत भाँवरी सखियन मङ्गल गायो री ॥ ९ ॥ धनि धनि भाग सियाजी तुम्हरे रामचन्द्र वर पायोरी ॥ १० ॥ धनि धनि भाग्य जनक राजाके दशरथ समधी पायोरी ॥ ११ ॥ धनि धनि भाग्य नगरवासिनके रामचन्द्र पुर आयो री ॥१२॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर सबहि प्राणप्रिय पायो री ॥ १३ ॥ ६ ॥

कौशल्या प्यारे रामको लिये गोद खेलावै हां हां हां ॥ टेक ॥ सुंदर रूप निहारिकै मन मोद बैठावै हां० ॥ १ ॥ चलन सिखावे रामको पग नूपुर बाजै हां० ॥ २ ॥ कुँडल बने हैं जडावके मणि माणिक मोती हां० ॥३॥ शशिमंडलके मध्यमें उडुगणकी ज्योति हां० ॥ ४ ॥ पित झिंगुलिया अधिक बनी है कोटिन छबि लाजै हां० ॥५॥ शीश सुभग

कलँगी बनी शिर तिलक विराजै हां० ॥ ६ ॥ नील कंज कटि केहरि कर कंचन राजै हां० ॥ ७ ॥ बाललीला रघुनाथकी सुर नर मुनि गावैं हां० ॥ ८ ॥ तुलसीदास पर येहि कृपा नित्य दरशन पावै हां० ॥ ९ ॥ ७ ॥

पलना झुलावै श्रीरामको कौशल्या माई हां० हां हां ॥ टेक ॥ रतनजटितके पालना रेशम डोरि लगाई हां० ॥ १ ॥ जननी हरखि झुलावही झूलैं रघुराई हां० ॥ २ ॥ रुमक झुमक पग पैंजनि धुनि अधिक सोहाई हां० ॥ ३ ॥ बालसखा लै संगमें सरयूतट जाई हां० ॥ ४ ॥ कौशल्या श्रीरामको बोलनको जाई हां० ॥५॥ आवत देखी मातुको प्रभु चलहिं पराई हां० ॥ ६ ॥ बार बार श्रीरामको तुलसी बलि जाई हां० ॥ ७ ॥ ८ ॥

कनक मुरलिया किते धरी दै दै मेरी माई हां हां हां ॥ टेक ॥ भोर होत हरि खेलन गये सब सखा बोलाई हां० ॥ १ ॥ अपने अंगनामें खेलिये मिलि दूनो भाई हां० ॥ २ ॥ खेल रच्यो बहु भांतिको जमुना तट जाई हां० ॥ ३ ॥ गृह गृहकी सब गोपिका दर्शनको आई हां० ॥ ४ ॥ इतमें सुता वृषभानुकी मेरि वंसा चुराई हां० ॥ ५ ॥ दधि माखन मेरो खायके नहिं देत दिखाई हां० ॥ ६ ॥ दधि गोरस ऊंचे धऱ्यो पहुँचौ नहिं माई हां० ॥ ७ ॥ मातु यशोदाकी गोदमें बोले तुतराई हां० ॥ ८ ॥

घूंघट वदन छिपायके बंशी ले आई हां० ॥ ९ ॥ श्रीभटके आनंद भये हरि बंशी पाई हां० ॥ १० ॥ ९ ॥

वेद पुराण विमल यश गावै जय यमुनामहरानी ॥टेक॥ गऊलोकसे धारा आई बोलत मधुरी बानी ॥ निशि दिन यमुना बहत दूधकी मूरख जानै पानी ॥ १ ॥ कालीदहपर सहस्र धारामुक्ति भरैं जहँ पानी ॥ निशि दिन जमुना लहर लेत हैं बोलत जय जय बानी ॥ २ ॥ चीर घाट स्नान करनको आये हैं मुनि ज्ञानी ॥ हलधर गिरिधर मदन मनोहर विनतासुत अगवानी ॥ ३ ॥ धीरे समीरे यमुना तीरे जहँ विहरैं रजधानी ॥ सूरदास यमुनाजीकी महिमा श्रीमुख आप बखानी ॥ ४ ॥ १० ॥

अवध छोड कहुँ अंत न जैहौं रामनाम गुण गैहौंजी॥टेक॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, नित उठि दरशन पैहौं जी ॥ १ ॥ सारंग धनुष बाण कर राजै पीतांबर पहिरैहौं जी ॥ २ ॥ रतन सिंहासन आप विराजै तुलसी पुष्प चढैहौं जी ॥ ३ ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यंजन नित उठि भोग लगैहौं जी ॥ ४ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल उर वन-माल पहिरैहौं जी ॥ ५ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नारद ध्यान लगैहों जी ॥ ६ ॥ तुलसीदास आश रघुवरकी चरणकमल चित लैहों जी ॥ ७ ॥ ११ ॥

सीताराम अवधपुरवासी नित उठि दरशन पैहों जी ॥ टेक ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन शोभा वरणि न जावै

जी ॥ १ ॥ संग सखा सरजूतट बिहरैं राम लषन दोउ भाई जी ॥ २ ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन उर वनमाल सुहावै जी ॥ ३ ॥ अवधपुरी नरनारि निहारैं निरखि परम सुख पावैं जी ॥४॥ मातु कौशल्या करत आरती अग्रदास बलि जावै जी ॥ ५ ॥ १२ ॥ इति रविवारके मङ्गल सं० ।

अथ सोमवारके मङ्गल

दशरथसुत अरु जनकनंदिनी चितवनमें चित चोरे री ॥ टेक ॥ नन्हि नन्हि बून्द पवन पुरवैया बरषत थोरे थोरे री ॥ १ ॥ हरि भूमि घटा झुकि आई सरजू लेत हिलोरे री ॥ २ ॥ उपवन बाग विहंगम बोले दादुर मोर चकोरे री ॥ ३ ॥ हयदल पयदल गजदल रथदल कोटि बनै चहुँ ओरे री ॥ ४ ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ शंखएकी घनघोरे री ॥ ५ ॥ नागरि नाम लियावै पियको सिया हँसे मुख मोरे री ॥ ६ ॥ अग्रदास हरिरूप निहारै चरण-कमल बलिहारे री ॥ ७ ॥ १ ॥

सो मुख उमा कहाँलगि वरणौं सीता राम अयोध्या आये री ॥ टेक ॥ बगसर जाय असुर संहारे देव सबै सुख पाये री ॥ १ ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो काटे पाप शिलाके री ॥ २ ॥ जाय जनकपुर धनुष उठायो भूप सबै मुरझाये री ॥ ३ ॥ जानकि हाथ लिये वरमाला रघुवर उर पहिराये री ॥ ४ ॥ सीता व्याहि अवधपुर आये घर घर बजत बधाये री ॥ ५ ॥ लंका जयके रावण मारे राज बिभीषण पाये री ॥ ६ ॥ पुष्प विमान चढे रघुनन्दन नगर

निकट हरि आये री ॥७॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादिक देवता पुष्पनकी झरि लाये री ॥ ८ ॥ बरषत पुष्प देव मुनि हरषैं आनँद मंगल गाये री ॥ ९ ॥ सीता सहित सिंहासन बैठे भरत चँवर ढुराये री ॥ १० ॥ मातु कौशल्या करत आरती आनँद उर न समाय री ॥ ११ ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे चरणकमल चित लाये री ॥ १२ ॥२ ॥

छैल छबीले राजा दशरथके राज कुँवर दोउ बाँके ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल तापर कलँगी झलके री ॥१॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो असुर मारि सुर राखे री ॥ २ ॥ बाहू मारि सुबाहू मारे काटे पाप शिलाके री ॥ ३ ॥ तोरे चाप शरासन सजनी भूप सबै मुरझाये री ॥ ४ ॥ सखी सयानी मिथिलापुरकी भाग्य उदय भये बाके री ॥ ५ ॥ चारों कुँवर व्याहि राजा दशरथ अवधपुरी रथ हाँके री ॥ ६ ॥ अवधपुरीकी वधू निहारैं निरखि परम सुख पाये री ॥७॥ मातु कौशल्या करत आरती ॥ सखियन मंगल गाये री ॥ ८ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर वेद बहुत यश गाये री ॥ ९ ॥ ३ ॥

बाँकी चाल प्यारे राघोजीके बांकी चितवन पर बलिहारी ॥ टेक ॥ बाँके शिर जरकसीकी पगिया बाँकी कलँगी मोहिं लगे प्यारी ॥ १ ॥ बाँके भाल तिलक शिर सोहै बाँके भृकुटी मोहित प्यारी ॥ २ ॥ बांके हार गले मोति-

यनके बांकी कुंडलकी छबि न्यारी ॥ ३ ॥ बाँके धनुष बान कर राजैं बाँकी कछनी मोहिं लगे प्यारी ॥ ४ ॥ बाँके चरण कमलकी शोभा बांके नूपुरकी छबि न्यारी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर बांके लक्ष्मण मोहे नर नारी ॥ ६ ॥ ४ ॥

आजु जनकपुर मंगल माई ॥ टेक ॥ दधि दूर्वा लोचन फल फूला जहँ तहँ वंदनवार बँधाई ॥ १ ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता आनंद उर न समाई ॥ २ ॥ जहँ तहँ बाजे बाजन लागे गावहिं नौतम नारि बनाई ॥ ३ ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन सुहाई ॥४॥ करि स्नान दान नृप दीन्हौ गो गज बाजी भूसमुदाई ॥५॥ जोइ जोइ भावै सोइ सोइ दीन्हों बिदा किये बहु भाँति बनाई॥६॥जनकनंदिनी वदन विलोके तुलसिदास पुनि-पुनि बलि जाई ॥ ७ ॥ ५ ॥

आजु जनकपुर मोहनी डारी ॥ टेक ॥ सुंदर श्याम राम रघुनंदन मोहि लिये सुरपुर नर नारी ॥ १ ॥ देश देशके भूपति आये उठै न धनुष महा अति भारी ॥ २ ॥ गुरु आज्ञा लै राम चले हैं तोरयो धनुष महा अति भारी ॥३॥ सब भूपनको मान मथन कियो तोरे धनुष रघुनाथ खरारी ॥ ४ ॥ जानकि हाथ लिये वरमाला जयमाला सिय पिय उर डारी ॥ ५ ॥ तुलसीदास दूल्है रघुनंदन दुलहिनि महारानी जनकदुलारी ॥ ६ ॥ ६ ॥

रंगमहल सिय जनकदुलारी ॥ टेक ॥ प्रगट भई मिथिलापुर अद्भुत, रूप धरे सुन्दर महरानी ॥ १ ॥ भँवर केश शिर सोहै सुन्दर सुरंग चूनरी प्रेम पियारी ॥ २ ॥ रुमुक झुमुक पग नूपुर बाजैं मोहिं लिये सुर पुर नर नारी ॥३॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक, बरनत शेष शारदा हारी ॥ ४ ॥ तुलसिदास सेवै रघुनन्दन दशरथसुत अरु जनकदुलारी ॥ ५ ॥ ७ ॥

दोऊ राजकुमार, महाराजसुत मुनि सँग मिथिला आये हैं ॥ टेक ॥ सखी क्रीट मुकुट माथे बन्यो, घूंघुरवाले केस ॥ वैजंती माला गले, अच्छे सुन्दर वेस ॥ १ ॥ सखी भाल तिलक माथे बन्यो भौंह चढ़ी है कमान ॥ सुर नर मुनि सब मोहि गये हैं, अच्छे सरस निधान ॥ २ ॥ सखी अग्रमुख बनी नासिका, मुख है चन्द्रसमान ॥ जगमग ज्योति बिराजहीं, मानो कोटिक भानु ॥ ३ ॥ सखी कर कोदंड बिराजहिं, कटिमें भाथातीर ॥ मन हरि लियो माई माधुरी, मोहै रघुवीर ॥ ४ ॥ सखी अनव्याही तुलसी फिरें व्याही लेत उसाँस ॥ गौनेकी मौने रहीं, लागी रघुवर आस ॥५॥ सखी वचन सबन ऐसो कह्यो, गुरु पुरजनलोक ॥ नाहक वैद बुलाइये, जावै नाहीं रोग ॥ ६ ॥ सखी शिवधनु कठिन कठोर है, दोऊ अति सुकुमार ॥ भरी सभामें मार्‍यो है सब भूपनकेर गुमान ॥ ७ ॥ सखी नयननमें बसबो करो, नित्य दिना अरु रात॥ वीर भजो रघुनाथको, जाचौ नाहीं आन

॥८॥ सखी रामलखन दो भ्रात हैं,सीया अधिक सोहाय ॥ तुलसीदास हृदय धरे, चरणन चित लाय ॥ ८ ॥ ८ ॥

सीता राम विराजहीं, अवधेशकुमार, महाराजकुमार ॥ टेक ॥ सखि कीट मुकुट शिरराजहीं, हीरा रतन जडाय॥ श्रुति कुंडल छबि राजहीं, मोतियन छबि छाय ॥ १ ॥ सखि कटिपर पीत लपेटि है, कर सारंग बान ॥ चितवनमें चित चोर है, मानो कँदर्पबान ॥ २ ॥ सखि संग सखा राजहीं, सरयूतट जात ॥ चपल तुरंग नचावहीं, मोहैं नर नारि ॥ ३ ॥ सखि सुमन बाग बिच राजहीं, संग चारों भाई ॥ पवनकुमार कर जोरिकै, करें मधुरी बयार ॥ ४ ॥ सखि ब्रह्मा विष्णु महेश हैं सनकादिक चारों भाई ॥ अस्तुति करैं कर जोरिकै, बिनवौ सनमान ॥ ५ ॥ सखि कुम्भज ऋषि अरु आवहीं नारद करें गान ॥ रामसखे हय धरे, चित्त लियो है चोराय ॥ ६ ॥ ९ ॥

आजु महामंडल मिथिलापुर घर घर बजत बधाई री ॥ टेक ॥ रमा रूप गुणधाम जानकी सुर नर मुनि सुखदाई री ॥ १ ॥ चोवा चन्दन और अरगजा केसर कीच मचाई री ॥२॥ घूँघुरवारे अलक बदनपर मधुकर रहे लुभाई री ॥३॥ कटि किंकिणि पग नूपुर बाजै मुनिमन रहै लुभाई री ॥ ४ ॥ हरषे देव सुमन बहु बरषे आनँद उर न समाई री ॥ ५ ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं नारद ध्यान लगाई री ॥ ६ ॥ शेष सहसमुख रटत निरंतर सो वाको पार

न पाई री ॥ ७ ॥ मातु सुनयना करत आरती तुलसीदास गुण गाई री ॥ ८ ॥ १० ॥

भूप कुमार नदान सखी री तात कठिन प्रण ठानो री ॥ टेक ॥ बाल मराल लाल अति कोमल अंग पुष्पदल भीनो री ॥ १ ॥ प्रेम विवश जल भरे नयनमें चुनरी अंचल भीनो री ॥ २ ॥ कोइ समुझावै जाय पिताको कौने अस मत दीनो री ॥ ३ ॥ कुलिश कठोर पिनाक शंभुको, रावण बल हरिलीनो री ॥४॥ देखत हाल बिहाल जानकी, नाथ धनुष कर लीनों री ॥ ५ ॥ तोऱ्यो धनुष सियासुख दीनो, भाँवरि सिय सँग लीनो री ॥ ६ ॥ सीता व्याहि अवधपुर आये, दशरथ द्रव्य लुटायो री ॥७॥ याचक सकल अयाचक कीनो, तुलसिदास वर माँग्यो री ॥ ८ ॥ ११ ॥

रँग भीने रघुनाथकुँवरको इन गलियन कोइ लावो री ॥ टेक ॥ अटा चढीं सब छटा निहारैं तनकी तपन बुझावो री ॥ १ ॥ मिथिलापुर नर नारि निहारें घरि इक कोउ बिलमावो री ॥ २ ॥ जरकसि पाग केसरिया जामा पैंजनियां झमकावो री ॥ ३ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहावो री ॥ ४ ॥ सिया सखी गोरवन मन जो है रस भरि गारी गावो री ॥ ५ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुख सागर हँसि हँसि कंठ लगावो री ॥ ६ ॥ १२ ॥

रतन जटित मंडप तर राजे रघुवर श्याम सलोना री ॥ टेक ॥ मिथिलापुर नर नारि सबन पर डारि दियो पढि टोना री ॥ १ ॥ इक श्यामल इक गौर मनोहर मुनिजनके मन हरना री ॥ २ ॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन उर वनमाल सोहावना री ॥३॥ चंदवदनपर अलकैं ढुलकैं मानहु नागके छोना री ॥ ४ ॥ कृपानिधान कहां-लगि वरणौं छवि ऊपर बलिहारी री ॥ ५ ॥ १३ ॥

सुभग चाल सुंदर अति प्यारी भरत राम मोहि भावै री ॥ टेक ॥ राजा दशरथजीके चार पुत्र हैं शोभा वरणि न जावै री ॥ १ ॥ राम लषन अरु भरत शत्रुहन वेद विमल यश गावैं री ॥ २ ॥ सरयूके तीर खेल रच्यो है सुंदर बाण चलावे री ॥ ३ ॥ सरयू न्हाइ चले रघुनंदन चपल तुरंग नचावैं री ॥ ४ ॥ अवधपुरीकी वधू अटा चढि निरखि परम सुख पावैं री ॥ ५ ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता इंद्र पुष्प झरि लावैं री ॥ ६ ॥ मातु कौशल्या करत आरती आनँद उर न समावे री ॥ ७ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर चरणकमल चित लावै री ॥ ८ ॥ १४ ॥ इति सोमवारके मंगल सं० ।

अथ मंगलवारके मंगल

आये हो सिया रघुनंदन आये अवधपुरी सुख देन राम रघुनंदन आये ॥ टेक ॥ सीता सहित सुमित्रानन्दन अरु सुग्रीव सुहाये ॥ जांबवंत हनुमान नील नल औ

अङ्गद मन भाये ॥ १ ॥ हनुमान जाय भरतसों भेंटे समाचार सुनि पाये ॥ रावण मारि असुर सब मारे राज बिभीषण पाये ॥ २ ॥ श्रवण सुनत भरत उठि धाये दरशन पावन पाये ॥ पुष्पविमान दूरिते देखे इकटक ध्यान लगाये ॥ ३ ॥ पाँयन परत अनुज दोउ भेंटे, हरि हँसि कण्ठ लगाये ॥ उत्तम नारि अयोध्यापुरकी, कञ्चन कलश भराये ॥ ४ ॥ बरषत पुष्प देव मुनि हरषे गुरुजीके आश्रम आये ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता देवन दुन्दुं[1] बजाये ॥ ५ ॥ पुनि गृह आय मिले मातनसों, मुतियन चौक पुराये ॥ गृह गृहते बनिकै बहु वनिता, मङ्गल गावत आई ॥ ६ ॥ मंदिर भीर भई बहुतेरी, आनन्द उर न समाये ॥ फूले फिरत अयोध्यावासी, घर घर बजत बधाये ॥ ७ ॥ बहु मेवा पकवान मिठाई, सिया रामको भोग लगाये ॥ मात कौशल्या करत आरती, मनवांछित फल पाये ॥ ८ ॥ सीता सहित सिंहासन बैठे, भरतजी चँवर ढुराये ॥ तुलसिदास तिहँ लोक अनँद भये चार वेद यश गाये ॥ ९ ॥ १ ॥

सखि रामजी अयोध्या आये आज महामंगल कोशलपुर ॥ टेक ॥ पुष्पविमान चढे रघुनन्दन साथ विभीषण लाये ॥ १ ॥ नगर अयोध्या होत कोलाहल घर-घर बजत बधाये ॥ २ ॥ हनुमानसे पायक उनके लंका जीति घर आये॥३॥

---

[1] नगारा

विप्रनको बहु दान देत हैं अक्षय भँडार लुटाये ॥ ४ ॥ फूले भरत शत्रुहन फूले फूलि कौशल्यामाये ॥ ५ ॥ सीतासहित सिंहासन बैठे भरतजी चँवर ढोराये ॥ ६ ॥ माधोदास संत सब फूले आनँद उर न समाये ॥ ७ ॥ २ ॥

लंका जीतिके आये रघुपति रणधीर ॥ टेक ॥ सखि जांबवन्त सुग्रीव नल, हनूमान रणधीर ॥ अवधनगर आनँद भयो है सरयू निरमल नीर ॥ १ ॥ सखि सुवरण कलश सँवारिये, पुरजन बहु भीर ॥ सखियन मङ्गल गाइये, सुन्दर सुभग शरीर ॥ २ ॥ सखि रतनसिंहासन सोहिये, सुखसागर क्षीर ॥ बाम अङ्ग सोहै जानिकी, दहिने लक्ष्मण वीर॥३॥ सखि सुर नर मुनि जय जय करैं,बरषैं सुरवर फूल ॥ सरयूदास शरणे गये, सुमिरे श्रीरघुवीर ॥ ४ ॥ ३ ॥

जल कैसे भरौं सरयू गहिरी, सनमुख राजाराम खडे ॥ टेक ॥ अवधनगरसे चलि मेरी सजनी हाथ घडा शिरपर गगरी ॥ १ ॥ अपने अपने भवनते निकसीं कोउ श्यामल कोउ है गोरी ॥ २ ॥ ठाढे भये राजा राम देखत हैं बैठि भरौं भीजै चुनरी ॥ ३ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन सनमुख हैं हनुमान बली ॥ ४ ॥ धीरे चलौं मोहिं बार लगत है उमँग चलौं छलकै गगरी ॥ ५ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर चेरी होयके चरण परी ॥ ६ ॥ ४ ॥

आये अवधपुरी अभिराम, राम निज धाममें आये ॥ टेक ॥ पुण्यपुंज पावन यह नगरी, निरखत हृदय जुडाये॥

जरा मरण दुख मिटत पलकमें राम दरश जब पाये ॥ १ ॥ रामभक्ति उपजी यह मनमें दिन दिन आनन्द अघाये ॥ सुर मुनि सन्त ताहि परशंसत, महिमा लखे न पाये ॥२॥ कोटिन अधम गये हरिपुरको, अवध देह तजि गाये ॥ फेरि कबहुँ भवजलधि न आवै, रामचरणवर पाये ॥ ३ ॥ तुलसी भक्ति मुक्ति जो चाहै, अवध बसो सोइ आये ॥ परम धाम वैकुण्ठ नगरमें, होइ है तेहि मन भाये ॥ ४ ॥ ५ ॥

आये श्याम सुन्दर रघुनाथ, राम फुलवारीमें आये ॥ टेक ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो, ऋषिपत्नी मन भाये ॥ सुरसरि कथा बूझि कौशिकसों, जनकनगर हरि आये ॥ १ ॥ जयजयकार भयो सुरपुरमें, देवन दुंदुभि बजाये ॥ गुरु अनुशासन पाय कृपानिधि, तुलसी लेन सिधाये ॥ २ ॥ तेहि अवसर सिय सखिन संग लै, सर मज्जन करवाये ॥ हरषसमेत पूजि गिरिजाको, मनवांछित फल पाये ॥ ३ ॥ एक सखी सिय संगसे बिछुरी रघुनन्दन लखि पाये ॥ देखत रूप मगन भइ सजनी, आनँद उर न समाये ॥ ४ ॥ तेहि पुनि आय कही सखियनसों, दरश-लागि अकुलाये ॥ तुलसिदास प्रभु सियहि लखाये, देखि परम सुख पाये ॥ ५ ॥ ६ ॥

आये एक सखी हरखाय कहत, दोऊ नृपसुत आये ये हो सखी दोऊ ॥ टेक ॥ श्याम गौर किमि कहौं बखानी

कोटि मनोज लजाये ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुँडल, माथे तिलक बनाये ॥ सुन्दर अधर कपोल नासिका, भृकुटि कुटिल सुहाये ॥ सुभग ग्रीव मुतियन छबि छाये, धनुष बाण मन भाये ॥ उर भृगुलता मनोहर राजै, कटि किंकिणी सुहाये ॥ उदर रेख त्रिभुवन छबि छाये, चरण नेह अनुहारे ॥ अवतरे हैं जग मंगल हेतुन, निरखि राम मन भाये ॥ हरीदास छबि कहँ लगि वरणौं, शेष पार नहिं पाये ॥ ७ ॥

आये मिथिलापुर सुख देन राम कौशिक सँग आये ॥टेक॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुँडल, उर बनमाल सुहाये ॥ प्रगटत दुरत मगन मन कौतुक, कौशिक तपनिधि आये ॥ मारग चलत ताडका मारी, गौतमनारि उधारी ॥ केवट तारी सुरसरी उतरे, मगवासिन सुख पाये ॥ मुनि पद पूजि राउ सनमाने, कौशिक कुँवर बुलाये ॥ बालमराल बंधु दोउ निरखत, जनक परम सुख पाये ॥ श्याम वरण सुंदर तन सोभा, कटि तूणीर सुहाये ॥ पीछे गौर मनोहर भ्राता, शरद इंदु छबि छाये ॥ केहरि ठवनि चलत दोउ ढोटा, विथियन पुष्पबिछाये ॥ सुनि नर नारि हरषि उठि धाये, निरखि परम सुख पाये ॥ मुनि अनुशासन पाय बन्धु दोउ, सुमनवाटिका आये ॥ रघुबर छबिको देखि जानकी, गौरीसों वर पाये ॥ सब भूपनके मान मथन को, धनुषै ढिग प्रभु

आये ॥ तोरे धनुष भूप सब हारे, देव सुमन झरिलाये ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, मंजीरा सहनाये ॥ जानकि हाथ लिये वरमाला, रघुवर उर पहिराये ॥ तोरे धनुष शब्द भय भारी, भृगुनायक चलि आये ॥ टूट पिनाक देखि तेहि अवसर, भृकुटी कुटिल बनाये ॥ मधुर वचन लक्ष्मण प्रभु तापे, अनल आहुती पाये ॥ देतहि धनुष आप चढि गयऊ, बदरी विपिन सिधाये ॥ मुनि अनुशासन पाय जनक नृप दूतन अवध पठाये ॥ दूत वचन सुनि दशरथ हरषे, नगर निशान बजाये ॥ दूत वचन सब भरत सुनाये, पुनि उठि गुरु गृह आये ॥ दूत वचन सब गुरुहि सुनाये, पुनि पुर बात जनाये ॥ गुरु अनुशासन पाय सचिव सब तुरत बरात बनाये ॥ गुरुसमेत दशरथ रथ चढिकै, जनक नगर नियराये ॥ भरि भरि थार हेम भरि भामिनि रघुवंशिन पहँ आये ॥ गावत गीत मनोहर बानी, कोकिल कंठ लजाये॥ गजमुतियनके पुराये, पुष्पन मंडप छाये ॥ राम जानकी फिरत भाँवरी सखियन मंगल गाये ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारों कुँवर विवाहे दायज भूरि जनक नृप दीन्हों, दशरथ बिदा कराये ॥ मंगल गान करें नर नारी, आनन्द पूर समाये॥ बंधुसमेत विलोकत जननी, विप्रन दान दिवाये॥ मातु कौशल्या करत आरती, त्रिभुवन मंगल गाये ॥ गिरिधरदास आश रघुवरकी, चार वेद यश गाये ॥ ८ ॥

यान चढे रघुनंदन आये हनुमत चँवर ढुरायो री ॥टेक॥ जांबवंत सुग्रीब विभीषण अरु अंगद मन भायो री देखत प्रभुहिं देव सब हरखैं दंडकवन प्रभु आयो री ॥ देखि सिया दंडकवन शोभा ऋषि विचरैं भय त्यागो री ॥ चरित्र पुनीत कियें रघुनंदन अवधनिकट हरि आयो री॥उतरे पुष्प निकट सरयूके रघुपति आज्ञा पायो री ॥ व्याकुल अंध अवध जेहि कारण उदित अरुण होय आयो री ॥ होत अवध आनन्द बधाई सखियन मंगल गायो री ॥ मुख अवलोकि लोक जेहि लाजै रघुपति पुरी सुहायो री ॥ चर अरु अचर हरष भये जहँ तहँ रघुपति कीरति गायो री ॥ ९ ॥

ये लंक जीति रघुनंदन आये हनुमत दास कहायो री ॥ टेक ॥ अंजनीके नन्दन महाजगवंदन तीन लोक यश गायो री ॥ बाग उखारि समुद्र बिचडारे जनकसुता सुधि लायो री ।। जो सागरको गर्व करतु है तापर शिल उत-रायो री॥सेतु बाँधि उतरे रघुनंदन कपिलदल किये सहायो री ॥ रावणके दश मस्तक छेदे राज विभीषण पायो री ॥ पुष्पविमान चढे रघुनंदन अवध नगर नियरायो री ॥ नर नारी सबरी सुकृत मनायेरामसियाघर आयो री ॥ सिंहासन सिय बैठि रामसँग द्विजन दान बहु पायो री ॥तुलसिदास-को भक्ति दान दियो दीन जान मन भायो री ॥ १० ॥

देखो री दोउ दशरथनंदन नगर अयोध्या आये री ॥ टेक ॥ पुष्पविमान चढे रघुनंदन भक्त विभीषण साथै

री ॥ लक्ष्मणसहित अयोध्या आये जानकी बायें अंगे री ॥ हनूमानके पायक जिनके लंक जीत घर आये री ॥ चरण धोय चरणामृत लीन्हों सिंहासन बैठाये री ॥ सीता सहित सिंहासन बैठे भरतजी चँवर ढुराये री ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता पुष्पनकी झरि लाये री ॥ नगर अयोध्या होत कोलाहल शोर भये अति भारे री ॥ विप्रनको बहु दान देत हैं अक्षय भँडार लुटाये री ॥ फूलैं बरत शत्रुहन भाई फूली कौशल्या माई री ॥ माधोदास संतजन फूलैं आनँद उर न समाई री ॥ ११ ॥

आये हो कृष्ण यदुनंदन आये मथुरापुरी सुख देन ॥ टेक ॥ गोपिन सहित रोहिणीनंदन, औ अक्रूर सुहाये ॥ सखामंडली राजत मोहन, नटवर भेष बनाये ॥ रथ पर बैठि चले यदुनंदन, सखियन मदन जगाये ॥ विलपत रुदत नयन जल बरषत, विरहानल तन ताये ॥ गोपी ग्वाल करत कौतूहल, यमुनातट प्रभु आये ॥ सुफलकसुत जब मज्जन कीन्हों, जल बिच रूप दिखाये ॥ उतरत पार वसन हरि लीन्हों, सबहि आप पहिराये ॥ सिरको तनमें तनको गहनों, अद्भुत रूप बनाये ॥ कुबजा तहँ चंदन घसि लाई, चरचित रुचिर बनाये ॥ परसत चरण रूप भइ अद्भुत, रवि शशि कोटि लजाये ॥ गजके दंत उखारि कृपानिधि दस विधि रूप दिखाये ॥ मुष्टिक चाणूर युगल गहि मारे, मृगपति ठवनि लजाये ॥ केश पकरि हरि कंस पछारे, देवन दुंदुभी

बजाये ॥ विपुल सुभग ब्रह्मा शिव नारद, जय जयकार मनाये ॥ उग्रसेनको राज तिलक दिये, यदुवर अधिक सुहाये ॥ उडत निसान भेरि सहनाई, घर घर बजत बधाये ॥ पुनि गृह आय मिले मातनसों, पितु कर जोरि जताये ॥ भूसुरवृंद विपुल श्रुति गावैं नर नारिन मन भाये ॥ माता पिता हरषि उर लाये; बंदीगार छुड़ाये ॥ मथुरा हरष भयो बहुतेरो, कामिनि मंगल गाये; ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक, अहिपति पार न पाये ॥ चेतनदास धन्य ब्रज-मंडल, चार वेद यश गाये ॥ १२ ॥

आये मथुरापुरी सुख देन कृष्ण अघमोचन आये ॥ टेक ॥ नंदभुवन आनंद भयो है, निरखत सुख नंद आये ॥ घर घर गोकुल बजत बधाई, जनमें प्रभु यदु-राये ॥ यशुमति गोद लिये वनमाली, मंगल मोद बढ़ाये ॥ देत अशीश चुंब मुख भामिनि आनँद उर न समाय ॥ जाकी दृष्टि परे बनवारी, तेहि नहिं भवन सुहाये ॥ देखि सुरासुर पलक न टारे, रहे चरण लपटायें ॥ माधो समय जानि ब्रह्मादिक, गोकुल धाये आये ॥ सुर नर मुनि इंद्रादिक देवता, अस्तुति करत बनाये ॥ १३ ॥ इति मंगलवारके मंगल समाप्त ।

अथ बुधवारके मंगल

चलो सखी वृंदावन चलिये मोहन बेनु बजाये री ॥ टेक ॥ बेनु सुनत ब्रह्मादिक मोहे वेद पढ़न नहिं पाये

री ॥ बेनु सुनत शिव शंकर मोहे ध्यान धरन नहिं पाये री ॥ बेनु सुनत इंद्रादिक मोहे राज करन नहिं पाये री ॥ बेनु सुनत सुर नर मुनि मोहे भजन करन नहिं पाये री ॥ बेनु सुनत यमुना जल मोहे नीर बहन नहिं पाये री ॥ बेनु सुनत गौ बछरा मोहे दूध पियन नहिं पाये री ॥ बेनु सुनत व्रजवनिता मोहीं घर अँगना न सुहाये री ॥ बेनु सुनत सब गोपी मोहीं झुण्ड झुण्ड उठि धाईं री ॥ बेनु सुनत खग पंछी मोहे चुगा चुगन नहिं पाये री ॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिचरणन चित लाये री ॥ १ ॥

मदनमोहनजीसे लगन लगी है ये तन डारूँ मैं वारी ॥ टेक ॥ करुणासिंधु हैं जगतबन्धु सन्तनके हितकारी ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहैं कुण्डलकी छबि न्यारी ॥ गल सोहै बैजंतीमाला निरखत राधा प्यारी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावैं ओढे कामरि कारी ॥ पैठि पताल काली नाग नाथ्यो फणपर नाचैं गिरिधारी ॥ इंद्र कोपि चढे व्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारी ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमें निरत करै गिरिधारी ॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणकमल बलिहारी ॥ २ ॥

श्रीराधा मोहनजीको रूप निहारो ॥ टेक ॥ छोटे भैया कृष्ण बडे बलदाऊ चंद्रवंश उजियारो ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीतांबर पटवारो ॥ हलधर गिरिधर मदनमनोहर यशुमति नंददुलारो ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजै असुरन

भंजनहारो ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावैं ओढे कामर-
कारो ॥ निरमल जल यमुनाजी को कीन्हो नाग नाथि
लियो कारो ॥ इंद्र कोपि चढे ब्रज ऊपर नखपर गिरिवर
धारो ॥ कनकसिंहासन यदुवर बैठे कोटि भानु उजियारो॥
मातु यशोदा करत आरती बार बार बलिहारो ॥
सूरदास हरिरूप निहारो जीवन प्राण हमारो ॥ ३ ॥

आज महामंगल गोकुलमें पुत्र यशोदा जायो री ॥ टेक ॥
पूरे सकल मनोरथ मनके भयो अनंद मन भायो री ॥
गावत चलीं सकल ब्रजबनिता नंदभवन चलि आयो री ॥
पाँव लागि उठि आदर कीन्हों यशुमति निकट बोलायो
री ॥ नामकरण शुभ धरो गर्गजी रोचन दूब मँगायो री ॥
गुरुजन पुरजन सकल संतजन सबको शीश नवायो री ॥
घरी नक्षत्र परे शुभ नीके यह सुनि सब अनुरागे री ॥ धन्य
धन्य ब्रजकुल नर नारी नंद परम बड़भागे री ॥ वासुदेव भग-
वान कृष्णजू नाम तिहारो गायो री ॥ नाम अनंत कहांलगि
वरणौं वरणत पार न पायो री ॥ नाचत गोप कुलाहल पुरमें
भीर न काहु समायो री ॥ यह सुनि मुनिने विरति बिसारी
हम न भये ब्रजवासी री ॥ जा कारण हम जप तप कीन्हों
प्रगट भये अविनाशी री ॥ देखें अमर विमानन चढि चढि
आनँद बजत बधाई री ॥ ढाढी गावत ढाढीहि नाचत पावत
मुतियन माला री ॥ देत अशीश पसारत अंचल चिरजीवै

नँदलाला री ॥ कंस विध्वंस भूभार उतारन तीन लोक सुख-दाई री ॥ मानदास प्रभुके गुण गावत बार बार बलि जाई री ॥ ४ ॥

गागरिया जनि फोरो न लालजी तोहिं देऊंगी गारी ॥ टेक ॥ हम यमुना जल भरन जात रहीं बीच मिले गिर-धारी ॥ गागरि फोरि मोरि बहियां मरोरी मुतियनकी लर तोरी ॥ तुम हो ढोटा नंदरायके हम वृषभानु दुलारी ॥ जाय पुकारों कंसरायपै खडे रहो गिरिधारी ॥ लेकर चीर कदम चढि बैठे हम जलमाहिं उघारी ॥ चीर तुम्हारो जब हम देंगे जलसे हो जाव न्यारी ॥ जलसे अलग होयँ हम कैसे तुम हो पुरुष और हम नारी ॥ पुरइनि पात पहिरिकै निकसीं कृष्ण हँसे दे तारी ॥ मथुराके सब लोग हँसत हैं गोकुलकी सब नारी ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि तुम जीते हम हारी ॥ ५ ॥

परम धाम गोलोक छोडिकै वृंदावन हरि आयो री ॥टेक॥ कृष्ण पुत्र वसुदेव देवकी नंदभवन पहुँचायो री ॥ धन्य भाग्य हैं नंद यशोमति जिनहिं परम सुख पायो री ॥ फूले फिरत सकल व्रजवासी आनंद उर न समायो री ॥ खबर भई जब कंसरायको पुतना वेगि पठायो री ॥ मारन आई आप नशाई जननीकी गति पायो री ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक

देवन दुंदु बजायो री ॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिके चरण चित लायो री ॥ ६ ॥

आजु सखी नँदनंदन प्रगटे गोकुल बजत बधाई री ॥टेक॥ रोहिणी नक्षत्र मास भादोंकी योग लगन तिथि आई री ॥ गृह गृहसे वनिता बनिके मंगल गावत आई री ॥ जो जैसे तैसे उठि धाये आनँद उर न समाई री ॥ चोवा चन्दन और अरगजा दधिकी कीच मचाई री ॥ यमलाअर्जुन वृक्ष उपारें यशुमति सुत उर लाई री ॥ बंदी जन गंधर्व गुण गावैं शोभा वरणि न जाई री ॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरण-कमल चित लाई री ॥ ७ ॥

आजु महामंगल गोकुलमें कृष्णचन्द्र हरि जन्म लियो ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है जगत पहरुवा सोय गये ॥ जननी जाये जल अन्हवाये लै वसुदेवकी गोद दिये ॥ लै वसुदेव चले गोकुलको उमँगी जमुना चरण लिये ॥ भादौ मास रैनि अँधियारी शेषनाग फन फेरि रहे ॥ लै वसुदेव द्वार भये ठाढे हरषि यशोदा गोद लिये ॥ उलटी रीति भई गोकुलमें कन्या दैके पुत्र लिये ॥ सूरदास हरि रूप निहारे नंदके घर आनंद भये ॥ ८ ॥

आजु महामंगल गोकुलमें कृष्णचंद्र अवतार लिये ॥टेक॥ गृह गृहसे सब गोपी आई मधुरे स्वरसे गान किये ॥ मारन कारन चली पूतना दूध पियत हरि प्राण लिये ॥ अघासुर मारि बकासुर मारे दावानलको पान किये ॥ यमलाअर्जुन

वृक्ष उखारे यादवकुलको तारि लिये ॥ पैठि पताल कालिनाग नाथ्यो फनपर नृत्य कराय लिये ॥ सात दिवस गिरि नखपर धारे इन्दरको मद मारि लिये ॥ केस पकरि हरि कंस पछारे उग्रसेनको राज दिये ॥ चन्द्रसखी भजु बाल-कृष्ण छबि चरणकमल चित लाय लिये ॥ ९ ॥

आजु सखी श्रीनंदमहरघर आनंद बजत बधाई री॥टेक॥ प्रगट भये गोपाल लालजी संतनके सुखदाई री ॥ गृह गृहसे सब गोप ग्वालिनी मङ्गल गावत आई री ॥ बाजा विविध नन्दघर बाजैं ढोल मृदंग सहनाई री ॥ दधि दूर्वा रोचन फल फूला केसर कीच मचाई री ॥ जयजयकार भयो सुरपुरमें इन्द्र पुष्प झरि लाई री ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं नारद ध्यान लखाई री ॥ सूरदास हरिरूप निहारैं वेद विमल यश गाई री ॥ १० ॥

आजु महामंगल गोकुलमें ढोटा यशुमति जायो री॥टेक॥ जाको ध्यान धरत ब्रह्मादिक नंदमहर घर आयो री॥बाजा विविध नंद घर बाजैं घर घर शब्द सुनायो री ॥सुनि सुनि नगर नारि नर धाये तन मन अति पुलकायो री ॥ बार बार विप्रन बुलवाई जन्मकर्म करवायो री ॥ विधिवत करि नवग्रहकी पूजा देवन समन मनायो री ॥ दधि दूर्वा रोचन फल फूला केसर कीच मचायो री ॥ जयजयकार भयो सुर पुरमें इन्द्र पुष्प झरि लायो री ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न

पावैं नारद ध्यान लगायो री ।। सूरदास हरिरूप निहारे वेद विमल यश गायो री ॥ ११ ॥

आजु कहांते या गोकुलमें, अद्भुत बरषा आई री ॥टेक॥ मणिगण हार हेमके धारा, ब्रजपति अति उर लाई री॥बानी विमल पढत द्विज द्वारे, होय हर्ष हषाई री ॥ दधि घृत खीर नीर नाना रंग, बहि चलैं पतारि पनारे री ॥ घुमड़ि निशान भेरि सहनाई, महा गरजकी घोरे री ॥ मागधसूत बंदिजन बोलत, चातक बोलत भोरे री ॥ आनँद भरे नचहिं नर नारी, पहिरि सुरंग रंग सारी री ॥ बरन बरन बादर झुकि आये बरषत न्यारी न्यारी री ॥ भूषण बसन अमोल नंदजू, नर नारी पहिरायो री ॥ शाखा दल फल फूल नये नये, उपवन झालर लागे री ॥ दारिद दमन मिले हैं सबको याचक मन प्रभु पूरे री ॥ बाढी सुभग सुजलकी सरिता, बहत तीर तरु तोरे री ॥ उर लखि माल गले मुतियनकी देखि सबन मन फूले री ॥ दया हेत अकुलात गदाधर, ताके चरण चित लागे री ॥ १२ ॥

सुंदर वदन कुंवरि काहूकी, नित दधि बेंचन आवे री ॥टेक॥ कबहुंक आवै दधी लुटावै कबहुंक मुख लपटावै री ॥ कबहुंक मुरली छीन लेति है, कबहुँक आप बजावै री ॥ कबहुँक पीतांबर छीन लेति है, कबहुंक आप उढावै री ॥ चन्द्रसखी भजु बाल कृष्ण छबि, यह लीला मोहिं भावै री ॥ १३ ॥

मोर मुकुट बंशीवारेने, मन मोरो हरि लीनो ॥ टेक ॥ मंदिरसे इक सुन्दरि निकसी, ओढि पितांबर झीनों ॥ रत्नजटित शिर इँडुरी सोहै, जमुना मारग लीन्हों ॥ मैं जमुनाजल भरन जात थी, बीच मिल्यो रँगभीनो ॥ मोहिं देखि मुसक्यात साँवरो, चितवनमें कछु कीन्हों ॥ विकल भई जल भरन बिसरि गई, घड़ा धरणि धरि दीन्हों ॥लोक-लाज कुलकी मरजादा तन मन अरपन कीनो ॥ वृंदावनकी कुञ्जगलिनमें, ग्वालिनि झगरो कीनों ॥ ग्वालबाल सब सखा कृष्णके, दान दहीको लीनो ॥ रूपा सखी भइ रूप दिवानी, प्रेम सुधारस पीनो ॥ श्रीगोपाल लाल हृदय धारि, जन्म सुफल करि लीनो ॥ १४ ॥

सखि जबसों नँदलाल निहारे॥टेक॥ तबहींसों बौरी भइ डोलूँ इत उत गली गिरारे ॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुँघरारे ॥ खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख सम्हारे ॥ कुंडल लोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे ॥ मानो रूप सिंधुमें खेलत मन करके द्वै बारे ॥ मंद हँसन मुख श्याम वरन छवि शशि मनोज लख हारे ॥ दशनपांति ज्यों मुतियनकी लर अधर सोहैं अरुणारै ॥ नाक बुलाक कुटिल वर भृकुटी वचन रचन अति प्यारे ॥ नारायण नख शिख श्रृंगार कर ठाढे भवनके द्वारे ॥ १५ ॥ इति बुधवारके मंगल समाप्त ।

अथ गुरुवारके मंगल

हे आजु महामंगल कौशलपुर, सुनि नृपके सुत चार भये ॥ टेक ॥ सदन सदन सोहिलो सुहावन, नभ अरु नगर निसान हये ॥ सजि सजि यान अमर किन्नर मुनि, जानि समय शुभ गान ठये ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये ॥ अति सुख बेगि बोलि गुरु भूसुर, भूपति भीतर भवन गये ॥ जातकर्म करि कनक बसन मणि, भूषित सुरभि समूह दये ॥ दल रोचन फल फूल दूब दधि, युवतिन भरि भरि थार लये ॥ गावत चलीं भीर भइ बीथिन, वंदिन बाकुर विरद बये ॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज, जहँ तहँ वंदन वार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक इक रंग रये ॥ उमँगि चल्यो आनंद लोक तिहुँ, देत बसन मंदिर रितये ॥ तुलसिदास पुनि भरे देखिये, रामकृपा चितवन चितये ॥ १ ॥

हे अवधनगर चलि देखो मेरि सजनी, राजा दशरथजीके रामजी भये ॥ टेक ॥ कौनि घरी भरत भये सजनी, कौनि घरी राजा रामजी भये ॥ भोर होत भरत भये सजनी, मध्य दिवस राजा रामजी भये ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ औ, नोबतपर चोप दिये ॥ तंबुवन तंबुवन नचत तारफा सब रघुवंशी मगन भये ॥ हरे हरे गोबर अँगना लिपाये, मोतियन चौक पुराय रहे ॥ अपने अपने भवनते निकरीं गजमुतियनके थार लिये ॥ चैत्र मास नौमीकी पूजा, सुखै

सरोवर नीर भरे ।। कहत कबीर दया सतगुरुकी, घर घर मंगलचार भये ॥ २ ॥

हे सुभग सेज सोहत कौशल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये ॥टेक॥ बार बार विधुवदन विलोकति, लोचन चारु चकोर किये ॥ कबहुँ पौढि पय पान करावति, कबहुँ राखति लाइ हिये ॥ बालकेलि गावति हुलरावति, पुलकित प्रेम पियूष पिये ।! विधि महेश मुनि सुर सराहत, देखत अंबुद ओट दिये ।। तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति काहू तो पायो न पिये ॥ ३ ॥

हे नौमिके दिन नौबत बाजे सुत कौशल्या जायो री ॥ टेक ॥ सात घरी दिन बीति गयो है सखियन मंगल गायो री ।। दशरथके आनंद भयो है रघुवंशी गृह आयो री ।। विप्र बोलाय सोधना कीनी अक्षय भँडार लुटायो री ।। कंचनके बहु कलश भराये मुति-यन चौक पुरायो री ।। धारि इक सोचि निगम यौं भाख्यौ रामचन्द्र गृह आयो री ।। घरघरते कुल वधू बुलाईं मंगल गावत आईं री ।। राय अंगनमें डारि दुलीचा आदर करि बैठायो री ।। कंप्यो सिंधु कंगुरा थरहरे लंका अगम जनायो री ।। सब लंकामें सोच भयो है राजकुँवर कहँ जायो री ।। दशरथ उठि भंडार पधारे सारी सुरंग मँगायो री ।। जो जैसो जिनके मन भावै तिन तैसो पहिरायो री ।। खासा झीना चीर पितांबर हरषित जन पहिरायोरी ।। कमलानंद कहांलगि वरणै तीन लोक यश गायो री ॥ ४ ॥

सुंदर राम पालने झूलैं, कौशल्या गुण गायो री ॥टेक॥ बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी राजिवलोचन भावै री ॥ दशरथ पलना सरस गढायौ सब चंदनको साज्यो री ॥ हीराजटित पाटकी डोरी रेशम बान बुनायो री ॥ राते चरणकमल कर राते सुभग श्याम तन सोहै री ॥ सब सखियाँ मिलि मंगल गावैं दशरथ पलना झुलावें री ॥ घूँघुरवाली अलक विराजै मधुर हास मन मोहेरी ॥ घर घर मंगलचार अयोध्या राम जन्म मन वसो री ॥ कहत सुनत सब होत कृतारथ अवधनगरके वासी री ॥ तुलसिदास हरि रूप निहारे चरणकमल मन लागे री ॥ ५ ॥

अँगनामें गोद खिलावै लक्ष्मण राम कौशल्या सुत माई ॥टेक॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन पलना माहिं झुलावैं ॥ घरते पौरि पौरिते बाहर पाँवन चलन सिखावैं ॥ हाथ लिये बुँदियाँके लड्डू काग भुशुंड चुगावैं ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहावैं ॥ कटि किंकिनि नूपुर धुनि बाजैं ठुमुक चाल मन भावैं ॥ इंद्र कुबेर शेष सनकादिक गंध्रव लीला गावैं ॥ जाहि जपत सुर नर मुनि शंकर ब्रह्मा पार न पावैं ॥ ओंकाररूप अविनाशी ठाकुर पलना माहिं झुलावैं ॥ दशरथपुत्र परम बड़ भागी हंसि हंसि कंठ लगावैं ॥ जरकसि पाग केसरिया बाना हरषि निरखि पहिरावैं ॥ शेष सहस मुख रटत निरंतर जाको पार न पावैं ॥ तीन लोक अरु भुवन चतुरदश ठाकुर आप कहावैं ॥ तुलसिदास हरि रूप निहारे हरषि निरखि गुण गावैं ॥ ६ ॥

ए नृप दशरथके पुत्र भयो सखि सुरपुर बजत बधाई री ॥ टेक ॥ घर घर मंगलचार अवधपुर वंदनवार बँधाई री ॥ चतुर सखिन मिलि साथ आदि ले विधिसों कवन बनाई री ॥ चन्दन चौक रच्यो आंगनमें रतनन भूमि जडाई री॥ करत कुतूहल कोशलवासी याचक भूषण पाई री ॥ कई लक्ष धेनू संकल्पी हस्तिसमूह लुटाई री ॥ अग्रदास रघुपतिके आगम सब संतन सुख पाई री ॥ ७ ॥

आजु सुनी सखि अद्भुत लीला कौशल्या सुत जायो री ॥ टेक ॥ सुन्दर श्याम कमलदललोचन निरखत नयन जुडायो री ॥ सब सुखसदन वदन अति राजे, कोटि काम छबि लाजे री ॥ मानौं तिमिर नाशके कारण, रविसुत आप विराजे री ॥ घर घर मङ्गल बजत बधाई, आनँद उर न समाये री ॥ गायक गुण गावत सुर मधुरे, बाजें विविध बजाये री ॥ आनँदसिंधु बढ्यो राजाके, बहु विधिके सुख पाये री ॥ राम लषण पर करी निछावरि,दियो जाहि जेहि भाये री ॥ राम सुयश गावैं पुरवासी, दियो प्रेम मगन लौ लाये री ॥ गोकुलदास कुँवर रघुवरके चरणकमल मन भाये री ॥ ८ ॥

हंससुवंश राय दशरथके देह धरी अविनाशी हो ॥ टेक ॥ अंशन सहित करन सुख सन्तन भंजन भवकी फाँसी हो ॥ मधूमास दिन भौम नौमि तिथि, शुक्ल पक्ष परकासी हो ॥ युगल यामवर परम पुनरवसु प्रगटे विश्व-

विलासी हो ॥ प्रेममगन मुनि भये महामुनि सकल कौशलावासी हो ॥ नाचत गावत लाज बिसारी वस्तु अगोचर भासी हो ॥ ध्वजा अवलि फहरात सुनौबत मृदु घहरात घण्टासी हो ॥ देत बाजि गज रतन अमोले खोले कोष जो खासी हो ॥ जे सुखसिंधुन लहत वेदविधि कंतसमेत उलासी हो ॥ मन सुख नाथ अनूपदासके अमित रूप रसरासी हो ॥ ९ ॥

अवधनगर वर नृप दशरथ गृह देह दयानिधि धारी हो ॥ टेक ॥ निर्गुण नित्य निरंजन जनहित हरण भार भुवि भारी हो॥अति पुनीत मधुमास लगन गृह नौमी शुभ उजियारी हो ॥ युगल यामवर चढत पुनर्वसु प्रगटे राम खरारी हो ॥ बिसरे सबै सदनके कारज महामगन नर नारी हो ॥ सोहै भूरिभाग्य कौशल्या नाचत लाज बिसारी हो॥ बाजे बजत पढत गुणगायक पढन सुभाट पुकारी हो ॥ हय गज रथन लुटावत नृपजू रतनजटितकी झारी हो ॥ सुर नर मुनि जाको पार न पावैं शंभु समाधी टारी हो ॥ चिरजीवो मन सुखके स्वामी जल थल अवधविहारी हो ॥ १० ॥

चारौं भाई पलना झुलैं जननी हरषि झुलावै री ॥ टेक ॥ देव मुनीगण ध्यान धरत हैं ध्यान हुँ आवत नाहीं री ॥ ब्रह्मा शिव सनकादिक नारद निरखि परम सुख पावैं री ॥ धन्य भाग्य राजा दशरथके पुत्रन गोद खिलावैं री ॥ पूरन ब्रह्म अखिल अवि-

नासी नृपसुत आप कहावैं री ॥ भक्तवत्सल भक्तन हितकारी बल गुण रूप दिखावैं री ॥ देखि चरण भन भयो है कृतारथ बलि परमानँद दासी री ॥ ११ ॥

आज अवध महराज सदन सखि बाजत विविध बधाई री ॥ टेक ॥ कुँवररूप धरि नृप गृह प्रगटे चार पदारथ आई री ॥ प्रमुदित फिरत सकल पुरवासी मनहुँ महानिधि पाई री ॥ हँसि हँसि मिलत उठे नर नारि छाँडि क्रोध अरिताई री ॥ कहि न जात सुंदर अवसर बहु विधि पुरी सुहाई री ॥ आइ साँझ दिन माँझ सुनो सखि प्रभुहि मिलन जनु आई री ॥ अगर कपूरकि होत धूप गृह अंधकार अधिकाई री ॥ उडत अबीर गुलाल मही सब सहज सदन अरुणाई री ॥ गृह मणि गण उडुगण शुभ सोहै कलश इंदु छबि छाई री ॥ मागध वेद बंदि मधुर ध्वनि मनु खगरव सुखदाई री ॥ शिशुको वदन विलोकि हरषि उर इक टक रहे लुभाई री ॥ संध्या समय करत वंदल मुनि देहदशा बिसराई री ॥ चिरंजीव महराजकुँवरवर चरणदास बलि जाई री ॥ १२ ॥

आजु सुदिन सुभग घरी सुहाई कहा कहौं अधिकाई ॥ टेक ॥ रूप शील गुणधाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ अति पुनीत मधुमास लगन गृहवार योग समुदाई ॥ हरषवंत चर अचर भूमि सुर तनुरुह पुलक जनाई ॥ बरषहिं विबुधनिकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौशल्यादि

मातु सब हरषित यह सुख बरणि न जाई ।। सुनि दशरथ सुत जन्म लिये सब गुरुजन विप्र बुलाई ।। वेदविहित करि क्रिया परम सुचि आनँद उर न समाई ॥ सदन वेदधुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बजत बधाई ।। पुरवासिन प्रिय प्राणनाथहित निजि संपदा लुटाई ॥ मणि तोरण बहुकेतु पताकन पुरी रुचिर करि छाई ॥ मागध सूत द्वार बंदीजन जहँ तहँ करत बड़ाई ॥ किय शृंगार सहज वनिता चलि मंगल विपुल बनाई।। गावहिं देहिं अशीश मुदित चिर जीयो तनय सुखदाई ॥ वीथिन कुमकुम कीच अरगजा अगर अबीर उडाई ॥ नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि देहदशा बिसराई ।। अमित धेनु गजतुरँग बसन मणि जातरूप अधिकाई देत भूप अनरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई ॥ सुखी भये सुर संत भूमिसुर खलगण मन मलिनाई॥ सबहि सुमन विकसत रवि निकसत कुमुदविपिन बिलखाई॥ जो सुख सिंधु सुकृत सीकरसे शिव विरंचि प्रभुताई ॥ सो सुख उमँगि अवध रह्यो दश दिशि कौन जतन कहौं गाई॥ जो रघुबीर चरण चिंतक हैं तिनकी गति प्रगट दिखाई ॥ अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ तुलसिदास तब पाई ॥१३॥

आजु सखि महाराजगृह आनँद बजत बधाई री ।। टेक ॥ प्रगट भये रघुनाथजी सुर नर मुनि सुखदाई री ।। शुभ नक्षत्र समय अति सुंदर योग वार समुदाई री ॥ जयजयकार भये तिहुँ पुरमें देवन दुन्दु बजाई री ॥ चोवा

चन्दन और अरगजा केसरकीच मचाई री ॥ दधि दूर्वा रोचन फल फूलाबन्दनवार बनाई री ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन अबिर गुलाल उडाई री ॥ हरषें देव सुमन बहु वरषें आनंद उर न समाई री ॥ बाललीला रघुनाथलालकी शेष सहस मुख गाई री ॥ तुलसिदास छबि कहँ लगि बरणै निगम पार नहिं पाई री ॥१४॥

रामजन्म आनन्द बधाई ॥ टेक ॥ सुरतरु कामधेनु चिंतामणि अवधपुरीमें घर घर आई ॥ प्रफुलित रहैं नगरके वासी बाल रुदन सब भांति सुहाई ॥ भई भीर नाचत नर नारी बाजे बहुत कही नहिं जाई ॥ सुवरण कलश चौक मुतियनके द्वारे वन्दनवार बनाई ॥ शिशुको वदन निहारि नारि सब आरति करि करि लेत बलाई ॥ रतन लुटाये कौशल्या रानी धन्य भाग्य कीरती बडाई ॥ दशरथ राय भये ठाढे कनक वसन अरु धेनु मंगाई ॥ परम पुनीत देव पद वंदित दान मानसों देत बधाई ॥ मागध सूत भाट बन्दीजन आजु निधी मनवांछित पाई ॥ तुलसिदास आनंदमगन नृप खुशी किये पुर लोक लुगाई ॥ १५ ॥

आजु अवधपुर भारी भीर ॥ टेक ॥ निर्गुण ब्रह्म सगुण वपु धारे सन्तनके हित लायो री ॥ रामजन्म दशरथ गृह लीन्हों कौशल्या गुण गायो री ॥ बडे भाग्य राजा दशरथके जासु परम सुख पायो री ॥ घर घर मङ्गल बजत बधाई ध्वज पताक छबि छायो री ॥ केसर कुमकुम और अरगजा

गलियन माहिं सिंचायो री ।। सङ्ग सखा सरजूतट विहरैं चलत तुरङ्ग नचायो री ।। रामचरण छबि देखि मगन भये बार बार बलि जायो री ।। १६ ।।

आजु महामंगल कौशलपुर रामचन्द्र अवतार लिये ।। टेक ।। अवधपुरीमें रतनसिंहासन भूतल भार उतारि लिये।। आवत तुरत ताडका मारी एक बाण हर प्राण लिये।। जयजयकार भयो सुरपुरमें देवन दुन्दु बजाय रहे ।। विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो गौतमनारि उधारि लिये ।। सब भूपनको मान मथन कियो परशुराम मद मारि लिये ।। सीता ब्याहि अवध हरि आये घर घर मंगलचार भये ।। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाय रहे ।। मातु कौशल्या करत आरती तुलसिदास गुण गाय लिये ।। १७ ।।

आजु अवधपुर भारी भीर ।। टेक ।। इक आवत इक जात बटोही इक ठाढे सरयूके तीर ।। इक न्हावत इक चंदन चढावत इक सुमिरत रघुवीर ।। एकनको नृप दान देत हैं एकनको पहिरावत चीर ।। इक रघुपतिको रूप निहारैं इक गावत हैं गुण गंभीर ।। इक दोउ कर जोरे ठाढ़े इक ढारत हैं नयननसे नीर ।। तुलसिदास कर जोरे माँगैं भक्तिदान दीजै रघुवीर ।। १८ ।। इति गुरुवारके मंगल ।। समाप्त ।।

अथ शुक्रवारके मंगल

आजु महा मंगल शेषाचल घरघर बजत बधाई री ।। टेक ।। जयजयकार भयो सुरपुरमें देवन दुंदु बजाई री ।।

चोवा चंदन और अरगजा केशर कीच मचाई री ॥ दधि दूर्वा रोचन फल फूला वंदनवार बँधाई री ॥ क्रीट मुकुट मकराकृतकुंडल उर वनमाल सुहाई री ॥ कंबुकंठ कौस्तुभ-मणि राजै शोभा वरणि न जाई री ॥ आठ पहर फूलनको जामा पीतांबर छवि छाई री ॥ शेष सहस मुख रटत निरंतर पार न जाको पाई री ॥ हाथिराम वेंकटजी शरणे चरणकमल चित्त लाई री ॥ १ ॥

आजु महा मंगल शेषाचल श्रीवेंकटईश पधारे री ॥टेक॥ मंगल शेष गिरी शुभ राजै मंगलपद हरि धारे री ॥ मंगल कटिपर किंकिनि राजै उर वनमाल सुहाये री ॥ मंगल पाँयन नूपुर बाजैं वसन पितांबर धारे री ॥ मंगल शंख चक्र कर राजै भृगुपद अधिक सुहाये री ॥ मंगलमाल गले मुतियन की श्रवण कुँडल झलकाये री ॥ मंगल अधर दशन मुख सोहैं शशि द्युति तिलक लजाये री ॥ मंगल क्रीट मुकुट शिर सोहै मंद मंद मुसकाये री ॥ मंगल ताल पखावज बाजै मंगल सुर पद गाये री ॥ रामचरण वेंकट शरणागत अभय परम पद पाये री ॥ २ ॥

चलो सखी शेषाचल चलिये लक्ष्मण जहाँ विराजै री ॥ टेक ॥ बरषत पुष्प देव मुनि हरषैं प्रीति सदा उर छाये री ॥ त्रिपतीमें सीतारामजी विराजैं लक्ष्मी अधिक सुहाये री ॥ शेषाचलपर आप विराजै शोभा वरणि न जाई री ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं पुष्करणीमन भाये री ॥

क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहाये री ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजै श्याम मूर्ति मन भाये री ॥ भोग मढीमें भोग लगत है वेदनकी धुनि लाये री ॥ राम दास वेंकटजीके शरणे चरणकमल चित लाये री ॥ ३ ॥

है कं कं कं शुभ क्रीट मुकुट शिर शिर धारी लिये श्रीव्यंकटजी ॥ टेक ॥ चं चं चं चं चक्र विराजै शं शं शंख सुहायो री ॥ गं गं गदा हाथमें लीन्हों पं पं पद्म सुहायो री ॥ जं जं जं कर जोरे ठाढे झं झं झाँझ बजायो री ॥ घं घं घंटा करमें बाजे भं भं भोग लगायो री ॥ छं छं रंभा नृत्य करत है इंद्र पुष्प झारि लायो री ॥ दं दं दं दं दया तुम्हारी बं बं वेद सुनायो री ॥ मं मं माया मोह सब त्यागै शं शं शंकर गायो री ॥ हं हं हाथीरामजी खेलैं सं सं संग तुम्हारे री ॥ ४ ॥

प्रात समय मधुवनके भीतर मोहन बेनु बजायो री ॥ टेक ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहैं मधुर मधुर धुनि लायो री॥ तनं तनं तन मोरवा बोलत सोवत मदन जगायो री ॥ वंशी टेर सुनी व्रज वनिता करि शृंगार उठि धायो री ॥ झनं झनं झं झननं झननं नूपुर शब्द सुनायो री ॥ हिमऋतु बीत बसंत लाग है रसना वचन न आयो री ॥ सनं सनं सं सननं सननं पवन माधुरी बायो री ॥ सरं सरं सं सररं सररं आरत वचन सुनायो री ॥ सूरश्याम व्याकुल व्रजवनिता ढूंढत श्याम पायो री ॥ ५ ॥

भक्तिदान मोहिं दीजिये वेंकट महराज लक्ष्मण महराज ॥ टेक ॥ सखि क्रीट मुकुट माथे बन्यो, हीरारत्न जडाव ॥ केसरतिलक विराजहीं कुंडल छबि छाय ॥ सखि कमल नयन मुख चन्द्रमा, अति ललित कपोल ॥ चितवनमें चित चोर है मधुरे मीठे बोल ॥ सखि रत्नजटित गले गुंज है, मुक्तामणि हार ॥ वैजंती माला गले, अच्छे सरस शृंगार ॥ सखि बाजूबंद विराजहिं अच्छे बाहु विशाल ॥ कर कंकन पहुँची बनी, मुँदरी हीरालाल ॥ सखि भृगुलक्षण उर राजही, नाभि रुचिर गंभीर ॥ नील कंज मणि राजही, अच्छे गौर शरीर ॥ सखि कटि किंकिनी पग पैंजनि, धुनि अधिक सुहाय ॥ ठुमुकि चाल ठगिनी बनि, मन लियो है चुराय॥ सखि चरण कमल पर गुंज है संतन मन भृंग ॥ रामदास हिरदय बसो स्वामी परमानन्द ॥ ६ ॥

व्रजराजकुमार, महाराजकुमार, गोपीनाथ विराजहीं ॥ टेक ॥ सखि मोर मुकुट माथे बन्यो, मुख मुरली बजाय ॥ चितवनिमें चित चोर है, मोहै व्रजनारि ॥ सखि कृष्ण वरण तन श्याम है, अंबुजसे नयन ॥ केशरतिलक विराजही विद्युत छबि देत ॥ सखि कटिपर पीत लपेटि है, कंकन घन घोर ॥ कर गहि कमल फिरावही, मानो रवि भोर ॥ सखि, भक्ति चरण अनपायनी, राखो दृढ ज्ञान॥चेतन सुनो समाजमें, देखो धरि ध्यान ॥ सखि वृंदाविपिन सुहा-

बने, यमुनाके तीर ॥ संग सखा लिये बिहरैं, हलधर दोऊ वीर ॥ सखि गोकुलते मथुरा गये, श्रीपति बलवीर ॥ नर नारि मोहीं फिरैं, मन धरत न धीर ।। सखि कुबजापर कृपा करि प्रभु, दीनदयाल ॥ यदुकुल सब पावन किये, दुष्टनके काल ॥ सखि कृष्ण भक्ति जाने बिना, उपजै नाहीं ज्ञान ।। मूरख जन्म गमावहीं, भूले हैं भ्रमजाल ॥ सखि अग जग व्यापक नाम है, रसना गुण गाय ।। दास गोवर धन ध्यावहीं मन लियो है, चुराय ।। ७ ।।

सन्तसमागम दीजिये, बाँके महाराज, टीकमहाराज ।। टेक ।। वामन होई बलिको छल्यो, बलिसों लीनों दान॥ तीन पाँव वसुधा करी, अतिशय हरषान प्रभु ब्रह्मलोक लगि शीश है, गये चरण पाताल ॥ बलिराजा ऐसो कहै, तुम सम नाहीं आन ॥ प्रभु भक्तवत्सल महाराज हो, आरत-हर नाम ।। बलि द्वारे ठाढे रहे, तीन लोक परमान।। प्रभु सन्तजनन हिरदय धरे, कोई पावै न पार श्रुति शारद सब थकि रहे, जय २ जगदाधार।। प्रभु ब्रह्माविष्णु महेश हैं, नारद धारैं ध्यान ।। राम दास हृदये धरे, पावैं सुखधाम ।। ८ ।।

छगन मगन श्रीवेंकटजीकी, यह छविकी बलिहारी।।टेक।। रुनुक झुनुक पग नूपुर बाजैं लगत है मोहिं प्यारी ।। तृपतीमें सीताराम विराजैं लक्ष्मण आज्ञाकारी ।। शेषाचल पर आप विराजैं हनुमत आज्ञाकारी ।। इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं विजय घंट धुनि भारी ।। आठपहर फूलनको

जामा पीतांबर छबि भारी ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै कुंडलकी छबि न्यारी ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजै कटि-पर किंकिन धारी ॥ ब्रह्मा जाके करत रसोई इन्द्र भरैं जहँ पानी ॥ भोगमढीमें भोग लगत है वेदनकी धुनिभारी ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं सनकादिकऋषि चारी ॥ आस पास गिरिवरकी शोभा बीचमें कोयल भारी ॥ जन हाथी-रामजी वेंकट शरणे चरणकमल बलिहारी ॥ ९ ॥

आये हैं दोउ राजकुँवर वर सुन्दर श्यामल गोरे ॥ टेक ॥ आगे विश्वामित्र महामुनि, सङ्ग मरालन जोरे ॥ कहा कहूँ गुण रूप आगरे लगत दिननके थोरे ॥ बड़े बड़े लोचन अघ मोचन शोभासिंधु हिलोरे ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर जोरे ॥ आय जनकपुर मोहनि डारी नर नारी सब मोहे ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो कठिन धनु-षको तोरे ॥ जयजयकार भयो त्रिभुवनमें भूपनके मुख मोरे ॥ उड़त गुलाल लाल भये बादल राय जनककी खोरे ॥ अग्र अली प्रभुकी छबि निरखें चितवनिमें चित चोरे ॥ १० ॥

जुरि आये जादो सबै भूपति दरबार ॥ टेक ॥ सखी कृष्ण द्वारका दूरि है, पातीको लेजाय ॥ मेरी सुधि पहुँचा-इये फिरि आवै धाय ॥ सखी चहुँ दिशि सिंधु विराजही, वेगि लगै ना पार ॥ किस विधि पार उतारिये, कीजै कौन उपाय ॥ सखी रुक्मिणिजी विनती करैं, सुनिये चितलाय ॥ जैसे जल बिनु मीन दुखित हो तलफि तलफि

मरि जाय ॥ सखी जैसे गजकी टेर सुनि, सुनतैं उठि धाय ॥ गरुड छाँड़ि पहुँचे तहाँ, धरि चक्र सुधार ॥ सखी हलधर संग विराजहीं, रथके असवार ॥ गिरिजा पूजन जातहीं, रथहीं लिये चढाय ॥ सखी भक्तवत्सल भगवान हैं, संतन रखवाल ॥ श्रीभटके हिरदय वसो, श्रीयादौराय ॥ ११ ॥

चलो सखी लक्ष्मण छबि निरखें, पंचवटी हरि आयो री ॥ टेक ॥ सुखसागर रघुवंश उजागर, धन्य जननि जिन जायो री ॥ एक श्याम इक गौर मनोहर, अरु सिय संग सुहायो री ॥जटा मुकुट मुनिवेष धऱ्यो है,उर बनमाल सुहायो री ॥ शूर्पनखाको रूप हऱ्यो है, खरदूषण संहारे री ॥ सिवरीको निज धाम पठाये, गिद्ध जटायू ताऱ्यो री ॥ एक बान बालीको माऱ्यो, पुष्पमाल पहिरायो री ॥ सागर सेतु नामसे बांधो,कपिदल पार उताऱ्योरी॥ रावणके दश मस्तक छेदे, राज विभीषण पायोरी ॥ रावण हनि महिरावण मारे, सखियन मंगल गायो री ॥ लंका जीति राम घर आये,घर घर बजत बधाई री ॥ सीता सत सिंहासन बैठे, भरतजी चँवर दुरायो री ॥ मातु कोशिला करत आरती, तुलसिदास गुण गायो री ॥ १२ ॥

रूप निहारो अली रूप निहारो सिया रघुवरजीको रूप निहारो ॥ टेक ॥ छोटे लक्ष्मण बड़े रघुनंदन सूर्यवंश उजियारो ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, दशरथ राजदुलारो॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गल बिच मुक्ताहारो॥ जरकसि

पाग केसरिया जामा पीतांबर पटवारो ॥ हाथ धनुष कटि भाथा सोहै, असुरन गंजनहारो ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो, कौशल्याको प्यारो ॥ रतनसिंहासन रघुवर बैठे, तीन लोक उजियारो ॥ शारद शेष निगम मुनि गावैं शंकर ध्यान लगावै मातु कौशल्या करत आरती, बार बार बलिहारो ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे,जीवन प्राण हमारो॥१३॥

बान धनुइयाँ कितै धरी, दैदे मोरी माई हां हां ॥ ॥ टेक ॥ प्रात होत हरि खेलन गये, सब सखा बोलाई हां हां० ॥ अपने अंगना खेलिये मिलि चारौं भाई हां हां० ॥ खेल रच्यो बहु भांतिको, सरयूतटमाहीं हां हां० ॥ विविध भांति बैठक बनी फुलवारी लगाई हां हां० ॥ भांति भांति पंछी बोलहीं, मोहिं लगत सोहाई हां हां०॥ एक तीर मेरो खोय गयो, सरयूतट माईं हां हां० ॥ नीरनिकट हम नहिं गये, बाबाकी दोहाई हां हां० ॥ बूझो भरत बुलायके लक्ष्मणके भाई हां हां० ॥ मातु कौशल्याकी गोदमें, बोले तुतराई हां हां ॥ गृह गृहकी सब सुन्दरी देखन चलि आई हां हां० ॥ तुलसी दास हरि मगन भये, सर धनुहीं पाई हां हां० ॥ इति शुक्रवारके मंगल समाप्त ॥

अथ शनिवारके मंगल

आजु महामंगल त्रिभुवनमें, खंभ फारि हरि प्रगट भये ॥ टेक ॥ देवन मुदित निशान बजाये, सुख उपजे दुख दूर गये ॥ असुर मारि प्रहलाद उबारे, संतनके आनंद

भये ॥ श्रवणन सुन्यो नयनहीं देखे, अद्भुत रूप अनूप भये ॥ नरहरि रूप धन्यो अविनाशी, भक्तहेतु अवतार लिये ॥ ब्रह्मादिक जाके निकट न आवैं, लक्ष्मी देखैं चकित भये ॥ खंभ फारि हिरणाकुश मारे जन प्रहलाद उबारि लिये ॥ संत दास नरसिंह आंसरे बार बार बलिहारि गये ॥ १ ॥

गोविंद गुना गोपाल गुना गायलेरे गोविंद गुना ॥ टेक ॥ ऐसो समय बहुरि नहिं पैहै फिरि पछितै है मेरे मना ॥ जिन तुमको तन मल धन दीन्हों नयन नासिका मुख रसना ॥ जाको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिरे एक छिना ॥ बालापन हँसि खेल गमाये तरुण भयो तब रूप घना ॥ वृद्ध भये पर आलस उपजै उठ गइ हाट कछू न बना ॥ अधम तरे अधिकार भजनते जे जे आये हरि शरणा ॥ न मानो तो साखि बताऊं अजामील गनिका सधना ॥ धन जोबन अँजुरीको जल जस घटत जात छिन पलहि पला ॥ अस जिय जानि भजो रघुनंदन नामदेव आये हरिशरना ॥ २ ॥

आजु सखी हरि जन्म लियो है भक्तवत्सल नरसिंह सही ॥ टेक ॥ पाहनते परमेश्वर प्रगटे सार भक्ति प्रहलाद गही ॥ काम क्रोध ममता अरु तृष्णा इनको मारिकै दूर दही ॥ हरिके चरण प्रीति अति बाढी राम नामकी टेक गही ॥ घुरत निसान देव सब हरषे पुष्पन छाई सकल मही ॥ संतदास आनंद सन्तजन जय जय जय तिहुँ लोक सही ॥ ३ ॥

श्रीनृसिंह प्रगट भये जनहित देव बजावत बाजे जू ।।टेक।। हिरनाकुश प्रहलाद भक्तसों बूझत कहाँ सहाये जू ।। मोमें तोमें खड्ग खंभमें व्यापि रहे रघु राये जू ।। हिरनाकुश नख उदर बिदारे असुर डरे सब भाजे जू ।। लपकि लियो नहिं जान न पावै कोइ न परे मुख आगे जू ।। जन प्रहलाद गोदमें बैठे चाटन पुनि पुनि लागे जू ।।ब्रह्मादिक जाके निकट न आवैं लक्ष्मी पतिको त्यागे जू ।। जय जयकार भयो त्रिभुवनमें सिंहासनपर राजे जू ।। कुंजबिहारी प्रभुके यश गावै सकल अमंगल भागे जू ।। ४ ।।

आजु सखी हरि प्रगट भये हैं भक्तहेतु नरसिंह सही ।।टेक।। अद्भुतरूप धर्‍यो अविनाशी काहूतौ देख्यो न कहीं ।। ब्रह्मा आदि शेष शिव नारद लक्ष्मी रूप निहारि रहीं ।। संतनको आनंद भयो है असुरनके मन संक भई ।। संत दास तिहुँ लोक मुदित भये सदा भक्तकी टेक रही ।। ५ ।।

सुकल पक्ष वैशाख मासमें चौदशि नरहरि जन्म लिये ।। टेक ।। खंभ फारि हिरनाकुश मारे जन प्रहलादहि अभय किये ।। चोवा चन्दन और अरगजा वीथिन कीच मचाय रहे ।। दधि दूर्बा रोचन फल फूला घर घर वंदनवार नये ।। सुर नर मुनि सब प्रेमविवश भये सुख संपति सब छाय रहे ।। शेष सहस मुख रटत निरंतर वाको पार न पाय रहे ।। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गाय रहे ।। संत-दास नरसिंह चरणपर बार बार वर मांगि रहे ।। ६ ।।

याचकजन नरसिंह जन्म सुनि याचन आये द्वार घने ।। टेक ।। उतसे आवत महारंक होइ, इतसे जावत भूप बने।। एकहि आवत एकहि जावत बिदा होत नहिं चिह्न परे ।। सुर नर मुनि सब प्रेमविवश भये बोले हँसि आनंद घने ॥ जब प्रहलाद बोल भंडारी द्रव्य लुटाये सर्व घने ॥ जब माणिक मुक्ता अरु हय हस्ती संतदासजी कौन गिने ॥ ७ ॥

अवधपुरी आनँदको रूप ॥ टेक ॥ ठाढे मुनिजन वेद बखानैं दशरथराय बडे कुल भूप ॥ जाको निगम नेति यश गावैं योगेश्वर सेवैं निज रूप ॥ सोइ खेलैं दशरथके अँगना अँगन भरे सुधारस कूप ॥ नृप दशरथके चारि पुत्र हैं तिनमें रघुवर श्याम स्वरूप ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन जोरी सुन्दर मंगलरूप ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गले विराजे मोति अनूप ॥ सारँग धनुष बान कर राजे शैर करनको निकसे भूप ॥ अवधपुरीमें रतनसिंहान जहँ बैठे दशरथ कुल-भूप ॥ घर घर कामधेनु चिंतामणि कल्पवृक्ष अरु नगर अनूप ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नारद ध्यान धरें निजरूप ॥ तुलसिदास सेवैं रघुनंदन कनक कलश पंचायन धूप ॥ ८ ॥

अवधपुरी बिहरैं रघुवीर ॥ टेक ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखनकी सोहै भीर ॥ पीतांबरकी कछनी काछे करमें सोहै सारंग तीर।। चपल तुरंग चढे रघुनंदन चले जात सरयूके तीर ॥ भरत शत्रुहन दोउ दिशि राजैं पीछे लक्ष्मण

हैं रणधीर ॥ विहरत फिरत प्रमोद विपिनमें केलि करत हैं श्रीरघुवीर ॥ सरयूदासपै किरपा कीजै भक्तिदान दीजै रघुवीर ॥ ९ ॥

आजु सखी नरसिंह जन्म लै भकतनको आनन्द दियो ॥ टेक ॥ हिरनाकुश प्रहलाद भकतको लैकै खंभमें बांधि दियो ॥ कहँ तेरे राम जो मोहिं बतावसि ऐसो कहिके खड्ग लियो ॥ मोमें तोमें खड्ग खंभमें सबमाहीं परतीत कियो ॥ खम्भ फारि हिरनाकुश मारे देवन जयजयकार कियो ॥ लियो गोद प्रहलाद भकतको हस्तकमल शिर फेरि दियो ॥ माधोदास आश नरहरिकी सकल अमंगल दूरि कियो ॥१०॥

श्रीरघुनाथ जन्मकी सेवा वेद विमल यश गायो री ॥टेक॥ पौढे प्रभु क्षीरसागरमें ब्रह्मा आइ जगायो री ॥ अवनी दुखित देखि सब देवन लोकपाल दुख पायो री ॥ चलो देव तुम वनचर होइ हो हम पीछे चलि आवो री ॥ भूको भार उतारन कारन शेष संघ ले आवो री ॥ रावण कुंभकरण अपराधी देवन बहुत सतायो री ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहायो री ॥ पीतांबरकी कछनी काछे धनुष बाण कर धारे री ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नारद ध्यान लगायो री ॥ शेष सहस मुख रटत निरंतर सो वाको पार न पायो री ॥ धर्मप्रधान कियो युग त्रेता लिखिया फेरि मिटायो री ॥ माधोदास आशा रघुवरकी सूरजवंश कहायो री ॥ ११ ॥

आजु सखी हरि जन्म लियो है भक्तनके हितकारी री ॥ टेक ॥ शुभ नक्षत्र समय अति उत्तम योग वार सुखदाई री ॥ खंभ फारि हिरनाकुश मारे नखसे उदर विदारे री ॥ गह गह गगन दुंदुभी बाजी आनँद उर न समाई री ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन सुरन पुष्प झरि लाई री ॥ चोवा चंदन और अरगजा केसर कीच मचाई री ॥ संत-दास नरसिंह आसरे बार बार वर पाई री ॥ १२ ॥

इति शनिवारके तथा सातों वारके मंगल संपूर्ण

भजन

भजु मन रामचरण दिनराती ॥ रसना कस न भजो तुम हरि पद, ध्यावत क्यों अलसाती ॥ रामचन्द्रको नाम अमीरस सो रस काहे न खाती ॥ श्रोता सुमति सुशील सुहरि जन देत सलाह सुहाती संवत सोरहसौ इकतीसा, जेठ मास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत हैं, प्रथम अरजकी पाती ॥ १ ॥

अथ सीतारामकी धुनि

जय बोलो सीतारामकी, जय बोलो हनुमानकी सिया राम अरु लखण जानकी, जय बोलो हनुमानकी ॥ टेक ॥ भरत लखन रिपुदलन सुजानकी ॥ रघुपति राघव राजाराम पतितन पावन सीताराम ॥ जय रघुवरकी श्यामसुन्दरकी, सीतावरकी बलिहारी ॥ जय रघुनंदन जय सियाराम, जानकि वल्लभ सीताराम ॥ जय रघुनंदन अवधविहारी, जोरी सुंदर

मंगलकारी जय रघुनंदनलालकी, सब संतनके रक्षपालकी ॥ जय रघुनंदन जानकि नाथा, सीताराम सकल सुख दाता ॥ जय रघुनंदन जनककिशोरी, सीताराम मनोहर जोरी ॥ जय रघुनंदन जनकदुलारी, जोरी, सुन्दर मंगलकारी ॥ कमला विमला मिथिला धाम अवध रु सरयू सीताराम ॥ रघुनंदन राघोराम सियावर रामा । रघुनंदन राघोरामसियावर रामा ॥ श्रीराम राघव राम राघव राम राघव पाहि मां ॥ श्रीजानकीवर मधुरी मूरति राम राघव रक्ष मां ॥ श्रीराम सीताराम सीताराम रामराम, श्रीराम सीताराम सीताराम रामराम ॥

इति सीतारामकी धुनि सम्पूर्ण

अथ रामजन्मका छन्द

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला, कौशल्याहितकारी ॥ हर्षित महतारी, मुनि मनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥ लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा, निज आयुध भुज चारी ॥ भूषण वनमाला, नयन विशाला, शोभासिंधु खरारी ॥ कह दुहुँ कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनंता ॥ माया गुणज्ञाना, तीत अमाना, वेदपुराण भनंता ॥ करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ॥ सो मम हितलागी, जनु अनुरागी, प्रगट भये श्रीकंता ॥ ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया, रोम रोम प्रति वेद कहैं मम उर सो वासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै ॥ उपजा

जब ज्ञाना, प्रभु मुसकाना चरित्र बहुत विधि कीन्ह चहै ॥ कहि कथा सुनाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥ माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा ॥ कीजै शिशुलीला, अति प्रियशीला, यह सुख परम अनूपा ॥ सुनि वचन सुजाना, रोदन ठाना, होई बालक यह भूपा ॥ यह चरित्र जो गावहिं, हरिपद पावहिं ते न परहिं भव कूपा ॥ ८ ॥

दोहा—विप्र धेनुसुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार ॥
निज इच्छा निरमित तनु, मायागुण गोपार ॥
बार बार वर मांगिहूँ, हरषि देउ श्रीरंग ॥
पद सरोज अनपायिनी, भक्ति सदा सतसंग ॥

इति रामजन्मका छंद समाप्त

अथ राधेश्यामकी धुनि

जय बोलो राधे श्यामकी, जय बोलो यादवनाथकी ॥ माधो पुरुषोत्तम कुँवर कल्याणकी ॥ टेक ॥ यदुपति यादव राधे श्याम, पतित पावन हरिको नाम ॥ जय यदुवरकी श्याम सुन्दर की राधावरकी बलिहारी ॥ जय यदुनंदन राधे श्याम, रुक्मिणि वल्लभ शोभाधाम ॥ जय यदुनंदन कुंजबिहारी, शोभाधाम अद्भुत मंगलकारी ॥ जय यदुनंदन जय गोपाल, संतनके तुम हो रक्षपाल ॥ जय यदुनंदन लाडिली नाथा, राधे श्याम सकल सुखदाता ॥

जय यदुवर वृषभानुकिशोरी, राधे श्याम मनोहर जोरी ॥ जय यदुवर वृषभानुदुलारी, जोरी सुंदर मंगलकारी ॥ श्री कालिंदी मथुराधाम, वंशीवट श्री राधेश्याम ॥ श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहिमां ॥ श्रीराधिकावर माधुरी मूरति, कृष्ण केशव रक्ष मां ॥ ११ ॥ इति राधेश्यामकी धुन समाप्त ।

अथ कृष्णजन्मका छंद

भये प्रगट गोपाला दीनदयाला, यशुमतिके हितकारी ॥ हर्षित महतारी, रूप निहारी, मोहन मदन मुरारी ॥ कंसासुर जाना, मन अनुमाना, पूतना वेगि पठाई ॥ तहां मन मुसकाई, हर्षित धाई गई जहां यदुराई ॥ तेहि जाय उठाई हृदय लगाई, पै धरि मुखमें दीन्हों ॥ तब कृष्ण कन्हाई, मन मुसुकाई, प्राण ताहि हरि लीन्हों ॥ तब इंद्र रिसाये, मेघन ल्याये, बसि करो तेहि मुरारी ॥ गौअन हितकारी, सुर मुनि झारी, नखपर गिरिवर धारी ॥ कंसासुर मारी, अति हंकारी, बच्छासुर संहारी ॥ बक्कासुर आयो, बहुत डरायो, ताको वदन विदारी ॥ तेहि अति दीन जानी, प्रभु चक्रपाणी, तिनको दीन्ह निज लोका ॥ ब्रह्मा सुरराई, अति सुख पाई, मगन हुइ गये शोका ॥ यह छन्द अनूपा है रस रूपा जे नर याको गावैं ॥ तेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन सोई, मनवांछित फल पावैं ॥ ७ ॥

दोहा—नन्द यशोदा तप करो, मोहीसों मन लाय ॥
देख्यो चाहत बालमुख, रहों कछुक दिन जाय ॥१॥
जेहि नक्षत्र मोहन भये, सोई पहुँचो आय ॥
चारु बधाई रीति सब, करत यशोदा माय ॥२॥

इति कृष्णजन्मका छन्द संपूर्ण

अथ जेंवनकी गारी (राजभोग)

मिलि जेंवत जानकी रामजी सखी, हरषें निरखें मिथिलापुरकी ॥टेक॥ पंच शब्द बैजन्त बजावैं, गावत गारी पंचम सुरकी ॥ जनकभवनमें डारि गलिचा ओट करी पीतांबरकी ॥ कुँवरी कुँवर गारि देत परस्पर, हँसत नारि नृपके कुलकी ॥ श्रीलालजी मंद मन्द मुसुकाने, सिय लाडिली घूंघटमें मुसकी ॥ ये उरझे सुरझे न परे अलि, मोहनि दृटि परी उनकी ॥ हास विनोद सुधारस सींचत, आनँद बेलि बढी उनकी ॥ चारों भइया जेंवन बैठे, राय जनक जोरी निरखा ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, श्याम-घटा बिजली चमकी ॥ रतनसिंहासन रघुवर बैठे, मुतियनकी कलँगी झलकी ॥ गरुड विमान चढे रघुनंदन, पुष्पनकी वरषा बरखी ॥ अग्रदास बलि जात सुनयना, बार बार सीतावर की ॥ १ ॥

चरणकमल बलिहारी, रघुनाथ कुँवरकी ॥ टेक ॥ दशरथसहित और नृप बैठे सादर चरण पखारी जेंवन बैठे राजा दशरथ, वाम दहिन सुतचारी ॥ रतनजटित मणि

कनक कटोरा, षटरस भोग लगा री ॥ छबि निहारि रनि-
वास मुदित भये, देन परस्पर गारी ॥ तीनसौ साठि मातु
रघुबरकी सोवहिं कनक अटारी ॥ सत सुकृत कैसे करि
निबहै, बरस दिननकी बारी ॥ तीनसौ साठि मातु
रघुबरकी एक पुरुषकी नारी ॥ तामें एक जनकको दीजै,
ह्वै है सुयश तुम्हारी ॥ जब बोले दशरथ पुरोहित, सुनहुँ
जनककी नारी ॥ दैहो गारि कस रामललाको बोलहु वचन
सँवारी ॥ जो चाहो सो लेहु परीक्षा, राखहु अपनी अटारी॥
निरमल जल सरयूको अँचवन, रतन जडावकी झारी ॥ करि
आचमन सिंहासन बैठे, राजत अवधबिहारी ॥ हितकर
बीरा जानकी लाई, देत हैं हाथ पसारी ॥ तुलसिदास
ऐसी छबि रघुबर, हरषत गात निहारी ॥ २ ॥

आरोगो नृसिंह महाप्रभु आरोगो ॥ टेक ॥ नार-
दमुनि पनवारो लायो, जल भरि लाई श्रीगंग ॥
लक्ष्मीजी भोजन आप सुधारैं, मनमें करत अनंद ॥
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन नाना विधिके कंद ॥
भाव प्रीति करि भोजन कीजे, तुम मेरे प्राण अधार ॥
अंतर घटके अंतरजामी, सब विधि जाननहार ॥ आरति
साजि इंद्र ले आये, खोलि दियो पट चार ॥ सनक
सनंदन चँवर ढुरावैं, गारी गावत दास अनंद ॥ ३ ॥

प्यारी प्रेम लुभानी, पियाजी परम सुख पाइयां ॥टेक॥
आज्ञा प्रभु पाऊं, रुचि करि व्यंजन बनाइयां ॥ सीरा सरस

सोहारी, मूँग भात फुलकारियां ॥ घृतपाक मिठाई खाजा खुरमां जलेबियां ॥ दूध दही लै आऊं भाजी अनेक कटोरियां ॥ रुचिथार सम्हारूं आनि धरूँ प्रभु आगियां ॥ जेंवोप्रभु प्यारे, देत सखी सब गारियां ॥ निरमल जल सरयू, रतनजडावकी झारियां ॥ अचवन प्रभु कीजे, रंगमहल पग धारियां॥रुचि सेज सँवारूं, रतनजडावकी सेजियां॥ जापर हरि पौढऊ कर गही बिंजना डोलाइयां ॥ चापूं पायँ लालके, हित करि बिरियां पवाइयां ॥ हंसि बोले प्रीतम प्यारे, नैनसों नयन मिलाइयां ॥ जब नींद झुकि आई ब्रह्मा विष्णु महेसियां॥जागै सोई पावै, मुकुंददास बलि जाइयां॥४॥

भोजन समय जानि मिथिलापति दशरथ बोलि पठायेजू ॥ टेक ॥ सुतन समेत संग प्रिय परिजन द्विजनसहित नृप आये जू ॥ सहित सनेह जनक बैठे नृप मंदिर लै आये जू ॥ कनक कलश भरि लिये गंगजल निज कर पांव पखारे जू॥ चंदनकी चौकी शुचि सुंदर तापर नृपहिं पधारेजू॥ जन जन प्रति कंचनकी थारी जन प्रति बिलग कटोरे जू ॥ व्यंजन विविध परोसन लागे चतुर सुवारन थोरे जू ॥ खाजा खुरमा तपत जलेबी पापर पुआ सुहारी जू ॥ खोवा खीर चिरौंजी पेडा दूध दही लै आये जू॥ झुकि झुकि परसत दोऊ ओरी झुकि झुकि झांकत नारी जू॥ भोजन चारि प्रकार सुधारैं षटरस स्वाद सुहाये जू॥पंच कवर करि जेंवन लागे देत नारि सब गारी जू ॥ उमा रमा शारदा ब्रह्माणी सुरवनिता पुरनारी

जू ॥ निरखि रामसुख पावैं महासुख पावत गारी गावैं जू ॥ लै लै नाम पुरुष मिथिलापुर अवधपुरीकी नारी जू ॥ लै लै नाम जनकराजाके नृप दशरथकी नारी जू ॥ गारी तुमहिं सुनाये भूपति गारी परम सुहायी जू ॥ सुनि महिपाल विलग जनि मांनो कहिये बात बनायी जू ॥ सुन्दर सुखद सुशील सुलोचनि सुरपति नारि पियारी जू ॥ तुम गोरे कौशल्या गोरी श्याम कुँवर कस जाये जू ॥ तरुणी वयमें नहिं सुत उपजे मखहित मुनिहिं बुलाये जू ॥ भीतर भवन महामुनि राखे तित ऐसे सुत जाये जू ॥ रामकि मातु भरतकी जननी दोउ मुनि नयन लगाये जू ॥ पति देवता सुमित्रा रानी तिनके बालक गोरे जू ॥ यद्यपि तुम समरथ सब लायक सुरपति सखा कहाये जू ॥ जनकरायकी कन्या व्याही अवगुण सकल दुराये जू ॥ सहित समाज हँसत नृप दशरथ रस रस भोजन पाये जू ॥ सहित राम सुनि वचन व्यंगयुत प्रेमसुधारस साने जू ॥ हास विलास परस्पर सुनि सुनि बिनु गथ मोल बिकाये जू ॥ भोजन करि उठि अँचवन कीन्हे पान सुभग शुचि पाये जू ॥ दोउ जन प्रीति पुनीत देखिकै तुलसिदास सुख पाये जू ॥ ५ ॥

जा दिन राम जनकपुर आये देखन धाईं सब सखियाँ जू ॥ टेक ॥ कोउ सखि ठाढी कोउ सखि बैठी कोउ सखि फिरत दिवनियाँ जू ॥ अशन वसन सब भूलि गईं हैं उठि

उठि चितवन आई जू ॥ माथे मुकुट गले वैजंती विप्रचरण उर धरियाँ जू ॥ जनक भवनमें कनक वेदिका बिच बिच हीरा मणियाँ जू ।। जेंवन बैठे मिलि चारों भाई पियरी पहिरि केसरियाँ जू ।। पीतांबरको ओढे दुपटा हाथन पंच-रतनियाँ जू ।। झुकि झुकि झाँकैं संग सहेली सुख पावैं सब सखियाँ जू ।। कदलीखंभ जानकी सोहै लौंदी धरे रसकनियाँ जू ।। केहरि ऐसी कमर पातरी नाभी गहिरि गुनियाँ जू ।। कीर चोंच सम नासा जिसकी रतन जडाव झुलनियाँ जू ।। शीशफल मुकताकी शोभा वेणी गुँथी नगिनियाँ जू ।। सारी सबज कुसुमको लहँगा अँगिया केसर तनियाँ जू ।। दुइ दुइ चढ़ि चौतनियाँ सोहैं मुँदरी बनी अँगुलियाँ जू ।। विविध रतनकी पहुँची सोहै बाधा अधिक लवनियाँ जू ।। अष्ट रतनकी सोहैं कटारी घुंघुर अधिक बजनियाँ जू ॥ गारी गावैं प्रेम पियारी सारी सरहज रनियाँ जू ॥ श्रीरामललाकी मातु कौशल्या सब रनियां सिरमानियां जू ॥ लखन लालकी मातु सुमित्रा करि नहिं सकैं बखनियां जू ॥ भरतलालकी मातु कैकेई उन पटतर नहिं रनियां जू ॥ तीन सौ साठ मातु हैं तुम्हरे एक पुरुषकी रनियां जू ॥ नित-प्रति धर्म रहत है कैसे वरष दिवस इक बरियां जू ॥ तामें एक जनकको दीजै सेवा करन हंसनियां जू ॥ तबै पुरोहित उठिकै बोले सुनहु जनककी रनियां जू ॥ नृप दशरथकी लेहु परीक्षा अपनी राखो महलियां जू ॥ भोजन करि उठि

अचवन कीन्हो पान सुभग शुचि पाये जू तुलसिदास आशीश सियावर भक्ति पाइ सुख करियां जू ॥ ६ ॥

आरोगो रघुवीर, महाप्रभु आरोगो ॥ टेक ॥ प्रफुलित होय परोसै जननी ढोरत शीत समीर ॥ कनकथार अरु जटित कटोरा मेवा और मिठाई खीर ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यंजन नाना विधिको सीर ॥ राम लखन अरु भरत शत्रुहन राजत चारों वीर ॥ जनक सुता झारी भरि लाई सरयूजीको नीर ॥ चोवा चंदन केसर घोरी चरच्यो श्याम शरीर ॥ अचवन करके बीरी लीजै गावत दास कबीर ॥ ७ ॥

भोजन कीजै सीताराम सारग्राही भावग्राही प्रीतिग्राही राम ॥ टेक ॥ दक्षिण लक्ष्मण अनुज सुशोभित जनकसुता लिये वाम ॥ पवनपूत तो सन्मुख सोहै रटत निरंतर नाम॥ चारों विधिको भोजन कीजै रुचि रुचितैं अभिराम ॥ मेवा मिसरी पूप रु चावल खोवा दाख बदाम ॥ भक्तहेतु आरोगियो स्वामी हो प्रभु पूरणकाम ॥ दास विठ्ठलहि दर्शन दीजै हौ तुम करुणाधाम ॥ ८ ॥

मिलि जेंवत राम जनकमंदिरमें सब मिलि नारि जिमावैं जू ॥ टेक ॥ चारों वीर मिलि जेंवत रुचि रुचि कवर लेत सुख पावैं जू ॥ नवल बंधु नव नेह नेहसों सहित कुटुमजुरि आये जू ॥ कुँवरहि निरखत अति मन हरषत रस भरि गारी गावैं जू ॥ शेष महेष निगम नारद मुनि उनहुँके

ध्यान न आवैं जू ॥ जन हरिया धनि तरिया जनकपुर हास हँसि लाड लडावैं जू ॥ ९ ॥

मिलि जेंवत लाडिली लाल दोउ षट् व्यंजन चार सबै सरसें ॥ टेक ॥ मनमें रसकी रुचि जो उपजै माधुरि कुंज सुधा बरषें ॥ हटके मन मोहन हार रहै झट हाथे जिमावनकूं तरसें ॥ कर कंपत बीचहि छूटि परें कबहूँ गरसों मुखलों परसें ॥ सखि थार लिये चहुँ ओर खडी हरखैं निरखैं दरसें परसें ॥ सुखसिंधु अपार कह्यो न परै अवशेष सखी हरि-वंश लसें ॥ १० ॥

नँदनंदनजीको भोग लागे महाशंख धुनिघंटा बाजै ॥ टेक ॥ अमृत भोक्ता श्रीयदुराई छप्पन भोग श्रीलक्ष्मी लाई ॥ सतिभामाजी जेंवन कीन्हों हरि हलधरको नेवता दीन्हों ॥ चंदन जलसे भवन सिंचाये सखा सहित हरि जेंवत आये दूधपाक पकवान मिठाई छप्पन भोग जेंवै दोउ भाई ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यंजन रुचि रुचिसों जेंवैं यदुनंदन ॥ सागपात जो जिनके होई अमृत करि जेंवैं हरि सोई ॥ हरि जेंवैं हरिजन यश गावैं ललिता विशखा चँवर दुरावैं ॥ जन नामदेव द्वारे यश यश गावैं सो हरिको पत्नवारो पावैं ॥ ११ ॥

बैठे लाला कुंजन में जो पाओं ॥ श्यामा श्याम भावती जोरी, अपने हाथ जेवाओं ॥ टेक ॥ दूधपाक पकवान मिठाई रुचि रुचि भोग लगाओं ॥ सखा सहित हरि जेंवन

बैठे वेद विमल यश गाओं ॥ चंदन चरचि पुष्पकी माला हरषि निरखि पहिराओं ।। श्री भट देत पानकी बीरी युगल-चरण चितलाओं ॥ १२ ॥

रामप्रसादी पावो पवनसुत ॥ टेक ॥ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण चारों दिशासे आओ ।। जहं जहं भोग लगै रघुवरको श्रवण सुनत उठि धाओ ॥ लै लै नाम सकल व्यंजनको आपुसमें बरताओ ॥ खट्टे मीठे और चरफरे रुचि रुचि भोग लगाओ ॥ जो कनिका ब्रह्मादिक ललचें शंकर ध्यान लगावैं ।। जनकसुताको अपने पतिको शीतल पवन ढुरावैं ॥ श्रुति कीर्ती उर्मिला मांडवी सरयू जल अचवावैं ।। यह छवि देखि मगन भये तुलसी आनँद उर न समावैं ॥ १३ ॥

इति जेंवनकी गारी समाप्त

अथ आचमनके भजन

अचवन कीजै कृपानिधान ॥ टेक ॥ जल झारी ब्रह्मादिक लाये, खिरचा इंद्र सुजान ॥ इजय विजय लाये लौंग इलाची पानी सरस सुख मान ॥ पनवारो संतन-को दीजै गावत जन भगवान ॥ १ ॥

अचवन कीजै श्रीकृपानिधान ॥टेक॥ जल झारी ललिता ले आई, खिरच विशाखा पान ॥ खैर सुपारी लौंग इलाची बीरी चतुर सुजान ॥ श्रीभट देत पानकी बीरी महिमा व्यास बखान ॥ २ ॥

अचवन करत किशोर किशोरी ॥ टेक ॥ कोउ सखि झारी भरि लाई कोउ दरपन लेकर दौरी ॥ कोउ सखि पानदान लिये ठाढ़ी कोउ चद्दर ले दौरी ॥ कोउ सखि बागा ले आई सीता पीत पिछौरी ॥ कोउ सखि प्रभुकी छबि निरखत कोउ हँसे मुख मोरी ॥ करि आचमन सिंहासन बैठे भली बनी यह जोरी ॥ सेवा सखी युगुलछबि निरखें बीरा देकर जोरी ॥ ३ ॥

अचवन करत सिया रघुराई ॥ टेक ॥ कंचनझारी जल सरयूको सखी सुशीला लाई ॥ चंद्रकला शखि देत अंगोछा रति खिरचा ले आई सुधामुखी सखि बिरिया पवावें सुंदर अतर लगाई ॥ रूप शील शोभा निधि जोरी निरखत दृगन अघाई ॥ रामसेवकके प्रभु सुख सागर शेष प्रसादी पाई ॥ ४ ॥

युगल किशोर किशोरी अचवत युगल किशोर किशोरी ॥ टेक ॥ भोजन करन बैठि सिंहासन मिलिये विराजत जोरी ॥ कोउ सखि चरण पखारत ठाढी कोउ सखि करत निहोरी ॥ कोउ सखि लाई कुंदन खिरचा युगल चरण हित जोरी ॥ कोऊ सखि प्यारे जूको बागो लाई, राधे सुरंग पटोरी ॥ एक सखी दर्पण ले आई, देत विरी भरि झोरी ॥ निज मंदिर बैठे पिय प्यारी, कोउ डारत तृण तोरी ॥ सेवा सखी श्रीवल्लभजीकी, झूठे करत निहोरी ॥ ५ ॥

अचमन कीजै अवधबिहारी ॥ टेक ॥ शीतल सुंदर जल सरयूको, निकट धरी भरि कंचन झारी ॥ खासा झीना अमल अंगोछा, लिये ठाढी है जनकदुलारी ॥ सो लैके कर वंदन अंगोछो, वचन कहे निज मात उचारी ॥ कत्था चूना लौंग इलाची लखन लगाये पान सुपारी ॥ पाइ पान पौढे त्रिभुवनपति रामसेवकके प्रभुसुखकारी ॥६॥

इति अचवन करानेके भजन समाप्त

अथ पानकी बीरी धरानेका भजन

बीरी देऊंगी बनाय रसपानकी पानकी पान पचासकी ॥ टेक ॥ कत्था चूना लौंग सुपारी ऐसी लगाऊं सनमानकी ॥ आवो जी कृष्ण आ चौपड खेलो बाजी लगाऊँ जिय जानकी ॥ तेरी बंसीने कान्हा सब जग मोहे बेटी मोही वृषभानकी ॥ कृष्ण जीवन लछिरामके प्यारे जोडि बनी राधे श्यामकी ॥ १ ॥

सिंधुसुता महरानी खवावत सिंधुसुता महरानी ॥ टेक ॥ पान पुरान मसालन संयुत साची सुगँध सुजानी ॥ श्रीजगन्नाथ मुसक्यात खात हैं प्यारी लखि मुसक्यानी ॥ परमानंद अपार परस्पर काहे सो जात बखानी ॥ श्रीबलदेवजीको देत रेवती सुभद्राजीको बानी ॥ सुदरशनको सखीये खवाये चारों युगकी खानी पूँगीफल गरी लौंग जायफल कपूरकी अरघानी ॥ पीकदान रत्नमय कर लीन्हें वल्लभ सखी सयानी ॥ २ ॥

सखावत कर कर बीरी पान खवावत कर कर बीरी री ॥ टेक ॥ इकटक होय मोहन मुख निरखत देत परस्पर बीरी री ॥ हँसत निहारत बदन श्यामको तनकी सुधि बिसरी री ॥ रसिकराय मोहनके ऊपर अंग अंग बलि जाई री॥३॥

बीरी लेवो मेरे करसे रंगीले लाल ॥ टेक ॥ नागर वेल अरु सुगँध सुपारी तुमहींको लाई घरसे ॥ मुक्ताको चूना कत्था लाई लौंग इलायची भरके ॥ संतनको दीजे उवार विनती करत हूँ डरके ॥ ४ ॥

पान खवावत मोहन प्यारीजीको पान खवावत मोहन ॥ टेक ॥ सुंदर मुख सुख देख्योई चाहत नंदनंद पिय सोहन ॥ यद्यपि करते न लेत लाडिली करत विनय पद गोहन ॥ श्रीभट निपट दीन तन देखत मुसकी मुसकी दियो ठोहन ॥ ५ ॥

बीरी देत ब्रजनारी लालजीको बीरी देत ब्रजनारी ॥ टेक ॥ पान सुपारी कत्था गुलाबी लौंगन खील सँवारी॥ मृगनयनी खंजनसी ठाढी कंचनबेल सँवारी ॥ कमलकरन बिच लैकर बीरी ठाढि करत मनुहारी ॥ कहत लाडिली बीरी लो प्रभु श्यामसुन्दर शुभकारी ॥ कृष्णदास गिरिधर आरोगो श्रीवल्लभ प्राण अधारी ॥ ६ ॥

इति पानकी बीरी धरानेके और
चौपडके भजन समाप्त

अथ पतंगकी धुनि

अवध सुहावन अति मनभावन तले बहै सरयू नीर ॥ सुमिरौ मन जय जय रघुवीर ॥ टेक ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखनकी भीर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गल बिच मुक्ताहीर ॥ सारंग धनुष बान कर सोहै पहिरे पीतपट चीर ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजै सोहत श्याम शरीर ॥ संग सखा सरयूतट विहरैं राम लखन दोउ बीर ॥ वाम अंग जानकी विराजैं दहिने लक्ष्मण वीर ॥ रूप निहारी चकित भयो रतिपति शारद शेष मतिधीर ॥ नामप्रताप तरे जल थलमें गिद्ध व्याध कपि कीर ॥ जिन चरणनको ध्यान धरत हैं हरत संत जन पीर ॥ बालानँद रघुवरके शरणे गावत गुण गंभीर ॥ १ ॥

सुमिरो मन जय जय जय व्रजराज ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है सब भक्तनके काज॥मथुरासे हरि गोकुल आये कंसहि भई अवाज ॥ दावानलको पान कियो है नाथ्यो कालीनाग ॥ डूबतसे व्रज राखि लियो है नखपर गिरिवर साज ॥ केसी मारे कंस पछारे उग्रसेन दियो राज ॥ जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन साज ॥ शरणपाल प्रभु नाम तिहारो राखि द्रौपदी लाज ॥ जन व्रजनंद गोपालके शरणे गावत गुण तजि लाज ॥ २ ॥

सुमिरो मन राम सच्चिदानंद ॥ टेक ॥ जो सुमिरे त्रयताप हरतु है परत न यमके फंद ॥ ऋषिमख

राखि निशाचर मारे अभय किये मुनिवृंद ॥ पद-रज परसि शिला भइ नारी धाय उबारे गजेंद्र ॥ जनक स्वयंवर पावन कीन्हों तोडो धनुष प्रचंड ॥ सिया विवाह अवध हरि आये घर घर भयो अनंद ॥ मात कौशल्या करत आरती निरखत सुखके कंद ॥ जयजयकार भयो सुरपुर में गावत बालानंद ॥ ३ ॥

भजो हो मन सीताराम, मिटे दुखद्वंदना ॥ टेक ॥ जाकी माया जगत भुलाया, ताताथेई तंदना ॥ ब्रह्मा जाको पार न पावैं, गावैं सनक सनंदना ॥ देवकीके गृहमें प्रभु आये, जैसे पूरण चंद्रमा ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यान करत हैं साधु करत हैं वंदना ॥ हिरणाकुश नख उदर विदारे, श्रीप्रहलाद को राखना ॥ बलिराजाके द्वार पधारे, वेष धरे हैं वामना ॥ मथुरामें हरि कंस पछारे लंकापति रावना ॥ द्रुपदसुताको चीर बढ़ायो काली नागहि नाथना ॥ औरनकूं हरि येढेटेढे, नंद यशोदा लालना ॥ साधुनको हरि ऐसे लागें, जैसे शीतल चांदना ॥ भनत नामदेव सुनो सुलोचन साधू निंदक नाशना ॥ ४ ॥

आछे रामजी लाल कौशल्यानंदन सुर नर मुनि गावैं जय जय जगवंदन ॥ टेक ॥ पुरी अयोध्या सरयूतीर हरि बाललीला खेलैं रघुवीर ॥ कीट मुकुट कुण्डल वनमाल हरि-भाल तिलक सोहै नयन विशाल ॥ कटि किंकिनि पीतांबर राजै हरि चारु निगम धुनि नूपुर बाजै ॥ ब्रह्मादिक जाको

पार न पावैं ताहि कौशल्या गोद खिलावैं ॥ तोतरि बानी अधिक सुहावै हरि निरखि कृपा सखि ताहि बलि जावै॥५॥

सुमिरो मन जय वेंकट बलवीर ॥ टेक ॥ ऊँचे परबत कोयल विराजै झाड़ी है गहिर गंभीर ॥ त्रिपतीमें सीताराम विराजैं चौकी है लक्ष्मणवीर ॥ शेषाचलपर आप विराजैं चौकी हनुमतवीर ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं ढिग पुष्पकरणी नीर ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजैं सोहत श्याम शरीर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गल बिच मुक्ता हीर ॥ वाहन शेष सवारी सोहै संग संतनकी भीर ॥ हाथी-राम जन वेंकटके शरणे गावत गुण गंभीर ॥ ६ ॥

सुमिरो मन जय जय जय अवधेश ॥ टेक ॥ अवध नगर कञ्चनपुर राजै बिहरत श्रीसीतेश ॥ भाल तिलक गल हीरा सोहै शिर घुंघुरवाले केश ॥ कटिपर पीत पितांबर राजै रूप धरे नृप भेश ॥ शुक सनकादि नारदमुनि गावैं सेवत शंभु गणेश ॥ सुर नर मुनि जयशब्द करतु हैं वरषत पुष्प हमेश ॥ रामचरण रघुवीरको दरशन हरै मनोहर वेष ॥७॥

इति पंगतकी धुनि समाप्त

अथ चारों धामकी बड़ी जय

जेंवत संत हरि हरि करैं धन्य पुरुषके भाग ॥ तिनके गृह पावन भये संत पधारे आय ॥ बोलियो सन्तो मधुरीसी बानी प्रेमसे श्रीहरे श्रीमन्नारायणकी । स्वयं ब्रह्म नारायणकी । पूरणब्रह्म नारायणकी । सच्चिदानन्द नारायणकी । ज्योति-

स्वरूप नारायणकी । अव्यय पुरुषनारायणकी । श्रीलक्ष्मी-नारायणकी । अवधपुरीकी । अवधसरयूकी । श्रीसर्यूकी ॥
॥ १० ॥ आयसरयूकी । सरयू विरजाकी । रामकोटकी । जन्मभूमीकी । जन्मस्थानकी । सीता रसोईकी । कनक भवनकी । सुमित्रा भवनकी । कैकेई भवनकी । रत्नसिंहासनकी । ॥ २० ॥ हनुमानजी महाराजकी । सुग्रीवटीलाकी । अंगद टीलाकी । क्षीरसागरकी । वसिष्ठमुनिकी । वसिष्ठ कुण्डकी । वामदेवजीकी । धनंजय तीरथकी । चक्रतीरथकी । ब्रह्मघाटकी ॥ ३० ॥ लक्ष्मणघाटकी । स्वर्गद्वारघाटकी । जानकी घाटकी । रामघाटकी । हनुमानकुंडकी । स्वर्णखर-कुण्डकी । अग्नीकुंडकी । सीताकुडकी । विद्याकुण्डकी । तिलोदकी गंगाकी ॥ ४० ॥ मणिपर्वतकी । खजुहा कुण्डकी । सूर्यकुंडकी । सूर्यनारायणकी । बिल्वहारि घाटकी । भरत-कूपकी । नंदग्रामकी । निर्मली कुण्डकी । गुप्तारघाटकी । यमथला तीरथकी ॥ ५० ॥ दाशरथी रामकी । दशरथ-नंदनकी । कौशल्यानंदनकी । केकइनंदनकी । सुमित्रानंद-नकी । रघुवंशमणिकी । रघुवंशभूषणकी । रघुवंशभूषण राम रघुनाथकी । रघुवंशदुलारे राम रघुनाथकी । रघुवंश राम रघुनाथकी ॥ ६० ॥ दाशरथी राम रघुनाथकी । दशरथ नंदन राम रघुनाथकी ॥ कौशल्यानंदन राम रघुनाथकी । कैकेईनंदन राम रघुनाथकी । सुमित्रानंदन राम रघुनाथकी । अवधविहारी राम रघुनाथकी । अवधेश राम रघुनाथकी ।

अवधमंडल राम रघुनाथकी । अवधरमण राम रघुनाथकी । अवधेशकुमार राम रघुनाथकी ॥ ७० ॥ जानकीपति राम रघुनाथकी । जानकीरमण राम रघुनाथकी । जानकीविहारी राम रघुनाथकी । जानकीविनोदक राम रघुनाथकी । जानकीवल्लभ राम रघुनाथकी । गंगामनोरमाकी । त्रिवेणीगंगाकी मुक्तनाथ क्षेत्रकी । सालग्रामदेवकी । सालग्रामीगंगाकी ॥ ॥ ८० ॥ सालग्रामपरमात्माकी । नरसिंहखोलाकी । दामोदरकुण्डकी । पशुपतिनाथकी । जनकपुरक्षेत्रकी । जनकविदेहकी । जनकमहाराजकी । जनकनंदिनीकी । जनकदुलारीकी । जनककिशोरीकी ॥ ९० ॥ जनकलाडिलीकी । जनकजामहारानीकी । जनककन्यामहारानीकी । जानकी मंदिरकी ॥ रघुनाथजीमहाराजकी । जनकके जमाईकी । भरतके भाईकी । अरगजाकुण्डकी । दशरथतलावकी । धनुसाकी ॥ १०० ॥ गिरिजाकी । आदिवाराह स्वामीकी । कालीयाकंत भगवानकी । कन्तविलासीकी । ब्रह्मपुत्रकी । चटगांव बालवाकुंडकी । हयग्रीवभगवानकी । हयग्रीव माधोकी । कामाक्षा देवीकी । परशुरामकुंडकी । कपिलमुनि भगवानकी ॥ ११० ॥ कपिलमुनि ददियाईकी । गंगासागरकी । रामकुंडकी । सीताकुंडकी । लक्ष्मणकुंडकी । रामानुज स्वामीकी । छाछकामिनीकी । क्षीरचोरा ठाकुरकी । साखी गोपालकी । श्रीजगन्नाथधामकी ॥ १२० ॥ श्रीजगन्नाथ स्वामीकी । श्रीबलभद्र सुभद्राकी । श्रीमहाप्रसादकी ।

नीलचक्रकी । सुदर्शनचक्रकी । इंद्रद्युम्न तीरथकी । मारकंडेय तीरथकी । महोदधि सागरकी । श्वेत गंगाकी । रोहिणी कुण्डकी ॥ १३० ॥ वटेकृष्ण भगवानकी । सिद्ध हनुमानकी । वीर हनुमानकी । अतुलित बल हनुमानकी । मच्छोद्री हनुमानकी । सिंधु उल्लंघन हनुमानकी । सिंहिका संहारण हनुमानकी । मैनाकपावन हनुमानकी । लंकिनी दहन हनुमानकी । विभीषण प्रबोधक हनुमानकी ॥ १४० ॥ सीता प्रबोधक हनुमानकी । कानन विध्वंसक हनुमानकी । लंका दहन हनुमानकी ॥ अक्षय मर्दन हनुमानकी । कालनेमिमर्दन हनुमानकी । अहिरावण मर्दन हनुमानकी । भरत प्रबोधक हनुमानकी । गोरखमूर्ति हनुमानकी । शिवरी नारायणकी । राजीवलोचनकी ॥ १५० ॥ अमरकंटक पर्वतकी । कूर्मधाराकी । सहोद्रीनृसिंहकी । पन्नानृसिंहकी । शेषाचलवासीकी । सर्वघटनिवासीकी । वैकुंठविलासीकी । आद्यवाराहस्वामीकी । श्रीवेंकटेशकी । उग्रवेंकटेशकी ॥ १६० ॥ प्रसन्नवेंकटेशकी । वीरवेंकटेशकी । वेंकटेशजी महाराजकी । पुष्करणीगङ्गाकी । झपालीहनुमानकी । पापनाशिनी गङ्गाकी । आकाशगङ्गाकी । पातालगङ्गाकी । संकटमोचनिगङ्गाकी । त्रिपतिनाथकी ॥ १७० ॥ चरणकुंडकी । गोविंदजीमहाराजकी । सीतारामजी महाराजकी । धनुषधारी महाराजकी । चिंतानूरकी । लक्ष्मीजीकी । कुवारस्वामीकी वीरराघवकी । श्रीप्रेमधुरकी । रामानुजस्वामीकी ॥ १८० ॥

विष्णुकांचीकी । कांचीव्रजराजस्वामीकी । वरदराजभगवानकी । श्रीमुष्टिस्वामीकी । पक्षीतीरथकी । श्रीरंगनाथधामकी । श्रीरंगस्वामीकी । श्रीरंगभगवानकी । कावेरीगंगाकी । कावेरीमहाराणीकी॥ १९० ॥ दक्षिणद्वारकाकी । दक्षिणअयोध्याकी । नवपाषाणकी । हरबोलाखाडीकी । श्रीरामनाथधामकी । धनुषतीरथकी । रामझरोखेकी । रामकुण्डकी । लक्ष्मण कुण्डकी । सीताकुण्डकी ॥ २०० ॥ राममहोल्लेकी । द्रव्यसेनभगवानकी । ठीकरनाथस्वामीकी । अलगर्जस्वामीकी । सुंदरबाहु भगवानकी । तोताद्रीनाथकी । लंबेनारायणकी । कुमारी कन्याकी । आदिकेशव भगवानकी । पद्मनाथभगवानकी ॥ २१० ॥ जनार्दन भगवानकी । अडसठ तीरथकी । ब्रह्मयज्ञकी । देवनारायणकी । जंगजीत गोपालकी । हेमगोपालकी । मैलकोटापाटकी । श्रीचलपल स्वामीकी । कल्याणीगंगाकी । पुष्करणीगङ्गाकी ॥ २२० ॥ श्रीनृसिंहस्वामीकी । कार्त्तिकेयस्वामीकी । श्रीपंपापुरीकी । पंपासरोवरकी । पंपापति महादेवकी । अंजनीपरवतकी । अंजनी माताकी । वाली सुग्रीवकी । अंगद हनुमानकी । रामलक्ष्मण महाराजकी ॥ २३० ॥ स्फटिकशिलाकी । गंगातुंगभद्राकी । कृष्णगंगाकी । उडपीकृष्णाकी । शृंगेरीमठकी । गोकर्णमहादेवकी । परशुराम गंगाकी । तुंगनाथकी । पुंडरीकनाथ भगवानकी । चंद्रभागागङ्गाकी ॥ २४० ॥ रामटेककी । अगस्त्यकुंडकी । सर्व-

तीर्थकी । सुकलतीर्थकी । कपिलधाराकी गोदावरीगंगाकी । गंगाद्वारकी । कुशावर्तकी । चक्रतीर्थकी । नासिकपुरीकी ॥ २५० ॥ रामकुण्डकी । पञ्चवटीनाथकी । श्रीसीतारामजी महाराजकी । लक्ष्मणजी महाराजकी । तपोवनकी । लंबेहनुमानकी । दंडकारण्यकी । लक्ष्मणकुंडकी । सीताकुण्डकी। रामशय्याकी ॥ २६० ॥ अठराभुजदेवीकी । तप्तकुण्डकी । उनाई माताकी । तापी गंगाकी। अश्विनीकुमारकी । गुमान देव महाराजकी । नरमदागंगाकी । भृगुक्षेत्रकी । दशाश्वमेधघाटकी । शुकतीर्थकी ॥ २७० ॥ शुकनारायणकी । शेषनारायणकी । ओरिसंगमकी । शुकदेवजीकी । व्यासजीकी। सुरपाणकी । ब्रह्मपुरीकी । ब्रह्मतोडघाटकी । ओंकारनाथकी । ब्रह्मपुरीकी ॥ २८० ॥ अवंतिकापुरीकी । महाकालेश्वरकी । सफरागंगाकी । अंगपातक्षेत्रकी । डाकोरनाथकी । गोमतीतीर्थकी । रणछोडटीकमकी । भीमनाथकी । ब्रह्मकुण्डकी । गुरुचेलाकी । चोकीकी ॥ २९० ॥ माधोभगवानकी । सीतामुद्रीकी । तुलसीश्यामकी । माधोप्राचीकी । आदिप्राचीकी । प्रभासपाटणकी । गिरिनारीध्वजाधारीकी । हनुमानधाराकी । शेषावनकी । पादुका तीर्थकी ॥ ३०० ॥ रामानुजस्वामीकी । गौमुखीधाराकी । अंबिकादेवीकी । दत्तात्रेयभगवानकी । दामोदरकुण्डकी । मृगीकुण्डकी । सुदामापुरीकी । गोमतीसंगमकी । संगमनारायणकी । द्वारकानाथधामकी ॥ ३१० ॥ रण-

छोडटीकमकी । कुंवरकल्याणकी । माधवपुरुषोत्तमकी । रुक्मिणि महाराणीकी । सत्यभामामहाराणीकी । जामवंती-महाराणीकी । शैव्यामहाराणीकी । यमुनामहाराणीकी ॥ ३२० ॥ वृंदामहाराणीकी । शंखनारायणकी । शंखउद्धा-रकी । नारायणसरक्षेत्रकी । आदिनारायणकी । चपलेश्वर महादेवकी । नीलकंठ महादेवकी । कोटेश्वरनाथ महादेवकी । आशापुरीकी । धरणीधर भगवानकी ॥ ३३० ॥ बिंदु-सरोवरकी । कर्दमऋषिकी । सरस्वतीगंगाकी । ज्ञानवापीकी । कपिलदेवजीकी । देवहुतीमाताकी । अहल्याकुंडकी । गोविंदमाधोकी । अंबामाताकी । आबूपर्वतकी ॥ ३४० ॥ आबूके सिद्धोंकी । हृषीकेश भगवानकी । मधुसुदन भग-वानकी । वसिष्ठमुनिकी । ब्रह्मकुंडकी । नखीतलावकी । पुष्करराजक्षेत्रकी । ब्रह्माजीकी । बूढे पुष्करकी । रूपचतु-र्भुज ठाकुरकी ॥ ३५० ॥ लोहागरपुष्करकी । प्रहलादजी-महाराजकी । प्रहलादपुरी की । प्रहलादपर्वतकी । श्रीनृसिंह-स्वामीकी । नृसिंहपहारकी । नृसिंहकटाक्षकी । शिलोदकी गंगाकी । नागार्जुनकी । त्रिकुटादेवीकी ॥ ३६० ॥ मणि-कर्णकी । त्रिलोकीनाथ ठाकुरकी । अम्रतीर्थकी । रेवालसर-तीर्थकी । कुरुक्षेत्रकी । हरिद्वारपुरीकी । गंगाभागीरथीकी हरिकी पेडीकी । कुशावर्तकी । नीलधाराकी ॥ ३७० ॥ हृषीकेश भगानकी । रामजीकी । लक्ष्मणजीकी । भरतजी-

की । शत्रुघ्नजीकी । लक्ष्मण झूलाकी । देवप्रयागकी । रुद्रप्रयागकी । करणप्रयागकी । नंदप्रयागकी ॥ ३८० ॥ विष्णुप्रयागकी । गुप्तकाशीकी । त्रियुगीनारायणकी । केदारनाथकी । मंदाकिनीगंगाकी । ऊखीमठकी । तुंगनाथकी जोशीमठकी । पांडुकेश्वरकी । अमरनाथकी ॥ ३९० ॥ बद्रीनाथधामकी । बद्रीविशाललालकी । योगध्यानीबालाकी। तप्तकुंडकी । नारदकुंडकी । अलकनंदागंगाकी । कूर्मधाराकी। आद्यबद्रीकी । नरनारायणकी । कौशल्यागंगाकी ॥ ४०० ॥ रामगंगाकी। वृंदावनचंद्रकी। वृंदावनविहारीकी । वृंदावनरक्षपालकी । वृंदावनपालनकी । वृंदावनपावनीकी । वृंदावन धीरसमीरकी । यमुना महाराणीकी । कालिंदी महाराणीकी । गोविंदजी महाराजकी ॥ ॥ ४१० ॥ कुंजविहारी भगवानकी । धेनुचारी भगवानकी । राधामाधव भगवानकी । राधारमण भगवानकी । राधाविहारी भगवानकी । राधवल्लभ भगवानकी । राधाविनोदक भगवानकी । राधासुखधाम भगवानकी । राधाअनंद भगवानकी । राधिकापति रमण भगवानकी ॥ ४२० ॥ गोपविहारी भगवानकी । गोपरक्षण भगवानकी । गोक्रीडा भगवानकी । गोपहास्य भगवानकी । गोपीवल्लभ भगवानकी । गोपीरमण भगवानकी । गोपिकानंदनकी । गोपांगनापावन भगवानकी । गोकुलपुरीकी । नंदनंदनकी ॥ ४३० ॥ यशोदानंदनकी । वसुदेवनंदनकी । देवकीनंदनकी । रोहिणीनंदनकी । कृष्णबलदेवकी । वृषभानु-

नंदिनीकी । वृषभानुदुलारीकी। वृषभानुकिशोरीकी। वृषभानु लाडिलीकी । वृषभानुकन्याकी ॥ ४४० ॥ वृषभानुके जमाईकी । माखनचोरकी । दधिचोरकी । नंदकिशोरकी । कालीदमनकी कालीमर्दनकी । कालीनवनकी । मदनमोहन भगवानकी । मदनगोपालकी । वंसीवटकी ॥ ४५० ॥ धीर-समीरकी । गोवर्धनधारीकी । गोवर्धनपर्वतकी । गिरिराज महाराजकी । मानसीगंगाकी । मथुरापुरीकी । मुष्टिकमर्द-नकी । चाणूरमर्दनकी । कंसशत्रुकी ॥४६०॥ कंसमोक्षणकी । केसीमर्दनकी । केसीउद्धारणकी । कुबजापावनकी । बांके-बिहारीकी । छैलबिहारीकी । छैलचिकनियाकी । चिकनिया ठाकुरकी । मोरमुकुटधारीकी । श्रीधर भगवानकी ॥४७०॥ अटलबिहारीकी । लीलापुरुषोत्तम भगवानकी । यदुवंशमणि भगवानकी । यदुवंशभूषण भगवानकी । यदुवंशदीपक भग-वानकी । यदुवंशउजागर भगवानकी ।वासुदेवकी भगवानकी। संकर्षण भगवानकी । प्रद्युम्न भगवानकी। अनिरुद्ध भगवानकी। ॥ ४८० ॥ चतुर्व्यूहक भगवानकी । यमुना महाराणीकी । बामाघाटीकी । कंसनालाकी । ब्रह्मावर्तकी । ब्रह्माघाटकी । बालमीकिजीकी । सोरों घाटकी । नैमिषारण्यकी । मिशि-रिषकी ॥ ४९० ॥ धेनुमतीगंगाकी । गोमतीगंगाकी । कुशावर्तकी । नीलचक्रकी । लंबे हनुमानकी । अठासीहजा-रऋषियोंकी । गयागदाधर भगवानकी। फल्गूगंगाकी । गया-पुरीकी । विष्णुपादकी ॥ ५०० ॥ अक्षयवटकी । झाडखंड महादेवकी । बैजनाथकी । हरिक्षेत्रकी । भृगु-

क्षेत्रकी । बकसरक्षेत्रकी । विश्वामित्रजीकी अहिल्याजीकी । काशीपुरीकी । काशीविश्वेश्वरनाथकी ॥५१०॥ मणिकर्णिकाघाटकी । अन्नपूर्णादेवीकी । गंगाभागीरथीकी । पंचकोसीकी प्रयागराजकी । तीर्थराज महाराजकी । माधवत्रिवेणीकी । सरस्वतीगंगाकी । भरद्वाजमुनिकी । अक्षयवटकी ॥ ५२० ॥ संकटमोचन हनुमानकी । श्रीचित्रकूटनाथकी।कामतानाथकी। मुखारविंदकी । यज्ञदेवीकी । पयसरणीगंगाकी । अनुसूयामाताकी । अनसूयाआश्रमकी । लक्ष्मणटेकरीकी । भरतकूपकी ॥ ५३० ॥ हनुमानधाराकी । देवांगनाकी । दधिकुल्याकी । मधुकुल्याकी । घृतकुल्याकी । सर्वतीर्थकी । श्रीसीतारामआश्रमकी । श्रीसीतारामवनविहारीकी । लक्ष्मणवनविहारीकी । स्फटिकशिलाकी ॥ ५४० ॥ रामशय्याकी । गंगामंदाकिनीकी । राघवेंद्रकी । ध्रुवेंद्रकी । प्रहलादइंद्रकी इंद्रपुरींद्रकी । बलिइंद्रकी । छलीइंद्रकी सरभंगमुनिकी । श्रीनृसिंहदेवकी ॥ ५५० ॥ हनुमानदेवकी । गरुडदेवकी । चारधामकी । चारसंप्रदायकी । बावनद्वारेकी । अनंतकोटिवैष्णवकी । दाताभुक्ताकी । अस्थानपुरुषकी । अपने अपने गुरुगोविंदकी । श्रीरामकृष्णदेवकी । श्रीमहाप्रसादकीजय ॥ ५६० ॥ "श्रीराम कहे सुख ऊपजे, कृष्ण कहे दुख जाय । महिमा महाप्रसादकी, पावो प्रीति लगाय ॥ १ ॥" बोलियो संतो मधुरीसी बानी प्रेमसे श्रीहरे ।

इति श्रीचारों धामकी बड़ी जय संपूर्ण

अथ रविवारकी गौरी

श्रीराघवजीकी आजु बनी छबि भारी ॥ टेक ॥ सहित जानकी रत्नसिंहासन राजत अवधविहारी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृतकुण्डल, तिलक पटल द्युति कारी ॥ वदन मयंक ताप त्रय मोचन, मंद हँसनि अति प्यारी ॥ चंदन चर्चित अंग मनोहर, उर वनमाल सुहाई ॥ बाहु विशाल विभूषण सोहैं, कर गहि सारँग धारी ॥ कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदन निहारी ॥ सुर नर मुनि जन चरणसरोरुह, ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुर सखी मिलि करत आरती, भरि कञ्चनकी थारी ॥ रामसखे प्रभुकी छबि निरखैं, गावत सुरपुर नारी ॥ १ ॥

देखो माई रामजी लला कैसे आवैं ॥ टेक ॥ रघु वंशी बालक सँग लीने राज रथ तुरँग नचावैं ॥ हर्षें देव सुमन बहु वर्षैं बंदी सुजय सुनावैं ॥ क्रीट मुकुट मकरा-कृत राजै, कर गहि कमल फिरावैं ॥ बहु विधि साज बने राजनके, कोउ लिये बाज उडावैं ॥ कोउ लिये हरी छरी फूलनकी, कोउ गले हार पहिरावैं ॥ कोउ कोउ ललित लवंग लता तरु, हर्षि निरखि गुण गावैं ॥ अवधपुरी कुल-वधू निहारैं, निरखि परम सुख पावैं ॥ जानकिवल्लभ आये अवधमें, अग्रदास बलिजावैं ॥ २ ॥

श्रीरघुवर, बंधु सखा लै सिधारे ॥ टेक ॥ संध्यासमय मंजु मंडपमहँ, खेलत आपु सिधारे ॥ सिकरा बाज कुही

सुकरनपर, चपल तुरँग सँवारे ॥ होत कुलाहल सुधि नहिं पावैं, श्रीपति सखा निहारे ॥ भरत शत्रुहन लक्ष्मण राजैं, राघव प्राणपियारे ॥ रघुवरके सिर छत्र विराजै सोहत न्यारे न्यारे ॥ श्रमजल विंदु वदनपर राजै, मनहुँ सघन दिशि तारे ॥ पीतांबर दामिनि द्युति दमकै, क्रीट मुकुट उजियारे ॥ रघुवर मुख निरखत कौशल्या सुंदर रूप निहारे ॥ रामानँद प्रभुकी छबि निरखे आरति साजि उतारे ॥ ३ ॥

देखो माई, आवत अवधविहारी ॥ टेक ॥ पाग सुरंगी पेंच कलंगी, श्रुति कुंडल झलकारी ॥ कंठा कलित ललित हीरनको, उर वनमाल सुहावै ॥ तुरँग नचावत कुँवर मनोहर, आपु गजन असवारी ॥ बहरी बाज कुही निज करमा, चित्ता श्वान सिकारी ॥ तखतन पर नट निरत करत हैं, निरखत पुर नर नारी ॥ अटा चढ़ीं सब छटा निहारैं निरखि परम सुख पावैं ॥ रंगमहल पहुँचे रघुनंदन, शोभा सुखनिधिकारी ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती, सखियन साजि उतारी ॥ कृपा सखी सिय पियमुख निरखैं, बिछुरत तपत नवारी ॥ ४ ॥

श्रीवनसे आवत चारों भाई ॥ टेक ॥ मणिमय हरित विभूषण सुंदर, अंगन ललित सुहाई ॥ गज रथ तुरँग वाहिनी साजे, राजत संग सुहाई ॥ खेलत फिरत सकल सरयूतट, संग सखा समुदाई ॥ जे मृग रामबाणके लागत,

पावत गति सुखदाई ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, छबि वरणी नहिं जाई ॥ चढ़ि विमान सुर कौतुक देखैं, पुष्पमाल झरि लाई ॥ कटि तूणीर बाण कर लीने, अमित काम छबि छाई ॥ नारदादि छबि देखि मगन भये, देह दशा बिसराई ॥ ज्ञान विराग योग जप तप करि नहिं पावत मुनिराई ॥ बालअलीके मनमंदिरमें बिहरत श्रीरघुराई ॥ ५ ॥

श्रीरघुवर लागत है मोहिं प्यारो ॥ टेक ॥ अवधपुरी सरयूतट विहरैं, दशरथ प्राणपियारो ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, पीतांबर पटवारो ॥ नयन विशाल माल मोतियनकी, सखि तुम नेक निहारो ॥ रूप सुरूप अनूप बनो है, चितसे टरत न टारो ॥ माधुरि मूरति निरखो सजनी, कोटि भानु उजियारो ॥ जानकिनायक सब सुखदायक, गुणगण रूप अपारो ॥ अग्रअली प्रभुकी छबि निरखै, जीवनप्राण हमारो ॥ ६ ॥

देखो माई रघुनंदन प्रभु आवैं ॥टेक॥ उपवन बाग सिकार खेलिकै, चपल तुरंग नचावैं ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, उर वनमाल सुहावैं ॥ कटिपर लटपट पीत लपेटे, कर गहि बाज उडावैं ॥ चतुरंगिनी सैन्य सँग सोहै, पँचरँग ध्वजा उडावैं ॥ घुरत निशान भेरि सहनाई, गरद गगन उडि जावैं ॥ बन्दीजन गंध्रव गुण गावैं, गाय गाय नित प्रभुहि रिझावैं ॥ जयजयकार करत ब्रह्मादिक इंद्र पुष्प झरि लावैं॥

अवधपुरी कुलवधू निहारैं, निरखि परम सुख पावैं॥मातु कौशल्या करत आरती, अग्रदास बलि जावैं ॥ ७ ॥

देखो माई यदुनंदन प्रभु आवैं ॥टेक॥ साँझ समय गौवनके पीछे आछे बनि ठनि आवैं ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमान सुहावैं ॥ रुमक झुमक पग नूपुर बाजैं, कर गहि मुरलि बजावैं ॥ उडि उडि गोरज लगत गगनमहँ, गोकुल अति छबि पावैं ॥ चढे विमान देव सुर हर्षैं सुमनमाल वरषावैं ॥ गोपी ग्वाल करत कौतूहल, बाजा विमल बजावैं ॥ कंचनथाल कपूरकी बाती, सजि कर भामिनि धावैं ॥ द्वारे भीर भई अति भारी, राह चलन नहिं पावैं ॥ सूरदास यदुनंदनकी छबि, निरखि परम सुख पावैं ॥ ८ ॥

वनसे आवत चारों भैया ॥ टेक ॥ दोउ श्यामल दोउ गौर मनोहर, नृप दशरथके छैया ॥ वनते आवत तुरँग नचावत, कर गहि कमल फिरैया ॥ अवधपुरी नर नारि निहारैं, द्वौ कर लेत बलैया ॥ विविध भांति आभूषण पहिरे मंद मंद मुसुकैया ॥ रामललाको रूप विलोके, कोटि काम छबि छैया ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, शोभा वरणि न जैया ॥ अग्रदास प्रभुकी छबि निरखत करत आरती मैया ॥ ९ ॥

अयोध्या राजत भूमि कनककी ॥ टेक ॥ रंगभूमि राजत रघुनंदन, सँगमें सुता जनककी ॥ रवि शशि कोटि उदित हम देखे, जोरी बनी है बनतकी

रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, सन्मुख है हनुमान बली ॥ मातु कौशल्या करत आरती, जय जय जय रघुवरकी ॥ ठुमक ठुमक महलनमें बिहरैं, रुमक झुमक पग नूपुरकी ॥ कृपानिवास कहां लगि बरणौं महिमा श्रीअवध नगरकी ॥ १० ॥

आये मेरे राम सीता उपासी ॥ टेक ॥ मुक्तिनाथ हरि जन्म लियो है, पूर्णब्रह्म अविनाशी ॥ भाल तिलक तुलसीकी माला, अवधपुरीके बासी ॥ तीरथ बरत सबै करि आये कोटि गया अरु काशी ॥ चरण धोइ चरणामृत लीनो शीतल हो गइ छाती ॥ रामनाम जाके हृदय बसत हैं, जगमे रहत उदासी ॥ जित चितवें उत अभय करत हैं, काटत यमकी फाँसी ॥ रघुवर छोडि औरको भजि हैं, ते नर यमपुर जासी ॥ तुलसीदास रघुवरजीके शरणै, मिटि गइ लख चौरासी ॥ ११ ॥

हिलमिलि गोविंद गावो आवो साधु ॥ टेक ॥ प्रेमभक्तिकी रीति समझके, हितसों राम रिझावो ॥ सेवा सुमिरण वंदन अरचन, नौधासों चित लावो ॥ ताल पखावज झाँझ मँजीरा, मुरली शंख बजावो ॥ सतसंगतिकी शरण लायके, ममता मदहि बहावो ॥ चरणदास सुखदेव कहत हैं, उर आनंद मनावो ॥ १२ ॥

आये मेरे राधा कृष्ण उपासी ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है, पूर्णब्रह्म अविनासी ॥ भाल तिलक पुष्प-

नकी माला, वृंदावनके वासी ॥ तीरथ बरत सबै करि आये, ब्रजमंडल चौरासी ॥ चरण धोइ चरणामृत लीनो, निर्मल हो गइ छाती ॥ कृष्णनाम जाके हृदय बसत है, जगसे रहत उदासी ॥ जित चितवें उत अभय करत हैं, काटत यमकी फांसी ॥ यदुवर छोडि अवरको भजि हैं, ते नर यमपुर जासी ॥ सूरदास गोपालके शरणे मिटि गइ लख चौरासी ॥ १३ ॥

भजो मन रामचरण सुखदाई ॥ टेक ॥ जिन चरणनसे निकसि सुरसरी, शंकर जटा समाई ॥ जटाशंकरी नाम धरो है, त्रिभुवन तारण आई ॥ जिन चरणनकी चरण पादुका, भरत रहे लवलाई ॥ सो केवट कठरीमें धोई लीनो तब हरि नाव चढ़ाई ॥ दंडकवन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई ॥ सो ठाकुर तीनों लोकके स्वामी, कपट मृगा सँग धाई ॥ कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल, ता शिर छत्र चढ़ाई ॥ रिपुको अनुज बिभीषण भेंटो परसत लंका पाई ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, शेष सहस्र मुख गाई तुलसिदास मारुतसुत महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥ १४ ॥

भजु मन कृष्णचरण सुखदाई ॥ टेक ॥ जिन चरणनकी चरण पादुका, सिंधुसुता मन लाई ॥ जय जय कृष्ण कमलदललोचन, दुखमोचन सुखदाई ॥ जिन चरणनके अरसपरसते, थाह यमुन होइ जाई ॥ नंदभवनमें जाय विराजे,

यशुमतिके सुखदाई ॥ सो पूरण वसुदेव देवको, निरखि परम सुख पाई ॥ छूटे बन्द कपाट उघारे, देव सुमन झरि लाई ॥ पुतना परसि परम मति दीनो, गृहा देखि बिसराई ॥ गोवर्धन व्रज राखि मनोहर, कालिनाग नथिल्याई ॥ कुब्जा तो चंदन घसि ल्याई, परस परम पद पाई ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो, जरासंध सुखदाई ॥ कुंतीपुत्र बंधुभय व्याकुल, ता सिर छत्र चढ़ाई ॥ विप्र सुदामा हरि पद भेंटे कंचनपुरी बसाई ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, निगम नेति यश गाई ॥ चेतनदास संतके शरणै, पुलक नयन जल छाई ॥ १५ ॥

सांचे मनके मीता, रघुवर ॥ टेक ॥ कब सेवरी काशीको धाई, कब पढि आई गीता ॥ जूँठे फल सेवरीके खाये, नेक लाज नहिं कीता ॥ चरण छुवत तरि गई अहल्या, गिद्धराज गति कीता ॥ लंकापतिको गर्व हरो है, राज विभीषण दीता ॥ मित्र सुग्रीव किये रघुनंदन, वानर किये पुनीता ॥ सखा निषाद कंद फल लायो, कीनो अधिक प्रतीता ॥ सुफल यज्ञ मुनि जनकको कीनो, सब भूपन बल जीता ॥ तुलसिदास छबि निरखि जानकी, मन वांछित फल लीता ॥ १६ ॥

राम भजा सोइ जीता जगमें ॥ टेक ॥ हाथ सुमिरनी बगल कतरनी, पढे भागवत गीता ॥ हृदय शुद्ध कीन्हो नहिं अबहूँ, कहत सुनत दिन बीता ॥ आन देवकी लज्जा

कीनी, हरिसे रहा अलीता ॥ धन यौवन तेरो योंही जायगो अंतसमय चल रीता ॥ बावरियाने बावरि लूटी फंदजाल सब कीता ॥ कहत कबीर काल जो मारे ज्यों मिरगाको चीता ॥ १७ ॥

साधो भाई गगन घटा घहरानी ॥ टेक ॥ पश्चिम दिशासे उठी बदरिया पूरब ओरसे पानी ॥ चंद्र सूर्य दोउ ईश बनाई, ज्योति कियो निरबानी ॥ अपनी अपनी ओर सँभारो, बहि न जाय यह पानी ॥ शील संतोषकी करो बावरी, ज्ञानकि बेल लगावो ॥ दूब घास मदुरी उलटावो बोवो हरकी धानी ॥ चिंता चेतन दोउ चौकमें बैठे, चूक न जाय मेरी धानी ॥ भृकुटी बाण हाथ कर राखो, गुरुगम गोलादानी ॥ उपजा खेत रासि घर आई, आनँद मंगलखानी ॥ राजा वासे कबहुँन बोलै, निर्भय भई किसानी ॥ जिनको सतगुरु पूरो मिले हैं, तिन यह मारग जानी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो, रामनाम निज जानी ॥ १८ ॥

बलि छलिकै का कीन्हों, हरि तुम० ॥ टेक ॥ बाँधन गये बँधाये आपहि, बडी सयानी कीनो ॥ लिये लकुटिया द्वारे ठाढे, निशि वासर आधीनो ॥ तीन पैग वसुधाके कारण, बलिको सर्वस दीनो ॥ सूरदास प्रभु बलिकी, बिनती, हरिचरणन चित दीनो ॥ १९ ॥

रुमझुम रुमझुम राघवजी आवैं, हाथ धनुष कर बाण चलावैं ॥ टेक ॥ दूरि खेलत जनि जावो प्यारे ॥ रघुवर, साँझ परी घर आवो प्यारे रघुवर, ॥ कौनके अँगनामें तुलसीको बिरवा कौनके अँगनामें खेलें प्यारे रघुवर ॥ केकयिके अँगनामें तुलसीको बिरवा, कौशल्याके अंगनामें खेलें प्यारे रघुवर ॥ कौनके छैया कौनके भैयां, कौन रायके राम रमैया ॥ कौशल्याके छैया लक्ष्मणजीके भैया, नृप दशरथके राम रमैया ॥ सरयूके नीरे तीरे तुरँग नचावैं, संग सखा लिये बिहरत आवैं ॥ तुलसिदासके अवना भवना, तीन लोक रमि रहे प्यारे रघुवर ॥ २० ॥

रुमझुम रुमझुम गोविंद आवैं हाथ लकुट मुख मुरली बजावैं ॥ टेक ॥ दूरि खेलन जनि जावो प्यारे ललना, साँझ भई घर आवो प्यारे ललना ॥ कौनके अँगनामें तुलसीको बिरवा, कौनके अँगनामें खेलें प्यारे ललना ॥ देवकीके अँगनामें तुलसीको बिरवा यशुदाके अँगनामें खेले प्यारे ललना ॥ कौनके छैया कौनके भैया, कौन महरके कुँवर कन्हैया ॥ देवकीके छैया बलदाऊजीके भैया, नंदमहरके कुँवर कन्हैया ॥ यमुनाके नीर तीरे धेनु चरावैं गौअनके सँग बिहरत आवैं ॥ कहत कबीर मेरे अवना भवना, तीन लोक फिरि आवैं प्यारे ललना ॥ २१ ॥

मन रे, तू चित्रकूट बस भाई ॥ टेक ॥ जहाँ राम सुख धाम जानकी, सँग लक्ष्मण सुखदाई ॥ पयसरणी पापनकी

हरणी, ताको क्यों न नहाई ॥ जो गंगा देवनको दुर्लभ सो अनसूया माई ॥ जो रजको ब्रह्मा शिव नारद, मुनि खोजत मन लाई ॥ जो पद रेणु सुरनको दुर्लभ, ले शिव शीश चढाई ॥ चित्रकूट द्रुम गुहा कंदरा, जहँ बिहरत रघुराई ॥ रामकृपा भजु जानकि वल्लभ, और न आन उपाई ॥ २२ ॥

संत चरण चित लाई मन रे तू संतचरण चित लाई ॥ टेक ॥ कलिमल हरण चरण संतनके सुमिरत होत सहाई ॥ गंगा यमुना और सरस्वति, तीरथ सकल चले अन्हाई ॥ जहँ जहँ चरण परत संतनके तहँ तहँ होत सहाई ॥ संत चरण देखत जी पावै, सात समुद्र फिरि आई ॥ काम क्रोध मद लोभ विषयवश इनसों लेत छोडाई ॥ सब मुनींद्र नारदादि कवीश्वर वेद पुराणन गाई ॥ शेष सहस मुख रटत निरंतर महिमा तिन नहिं पाई ॥ सूर अग्र सब संत आदि ले, तुलसिदास मन लाई ॥ रामदास संतनकी महिमा हारि अपने मुख गाई ॥ २३ ॥

संतनके वश भाई, हरिजी संतनके वश भाई ॥ टेक ॥ जाति वरण कुल जानत नाहीं लोग करैं चतुराई ॥ शबरी जाति भिल्लिनी होती, बेर तोरके लाई प्रीति जानि वाके फल खाये, तीनिउ लोक बड़ाई ॥ कर्मा कौन अचारिन होती, हरिसों प्रीति लगाई ॥ छप्पन भोग अरोगे प्रभु तुम पहिले खिचरी खाई ॥ नामा पीपा औ रैदासा, उनहुँसे

प्रीति लगाई ॥ सैना भक्तको संशय मेटो, आप भये हरि नाई ॥ सहस्र अठासी ऋषि मुनि होते, तबहुँ न शंख बजाई ॥ कहत कबीर श्वपचके आये, शंख मगन होइ गाई ॥ २४ ॥

हरिसों लगे रहो मेरे भाई० ॥ टेक ॥ ऐसो जतन करो मन मेरे, राम बिसरि जनि जाई ॥ लागे ध्रुव प्रहलाद विभीषण, गणिका सदन कसाई ॥ नामदेववर दास कबीरा, पीपा मीरा बाई, ॥ लंका लागे बंका लागे, लागे सैना नाई ॥ कहा कहौं सेवरीकी महिमा मोसे बरणि न जाई ॥ निपट सनेह करो साधुनसे छांडि कपट चतुराई ॥ दया धर्म हिरदयमें राखो सहज मिलैं रघुराई ॥ जो हठ ध्यान धरत घट भीतर, और न आन उपाई ॥ रामकृपा भज जानकिवल्लभ, तीनहुँ लोक बड़ाई ॥ २५ ॥

अब तो रामभजन कर भाई, अ० ॥ टेक ॥ घडी घडियाल बाजि रहे बाजा, पहर पहर सहनाई ॥ रामभजन बिन वृथा जात है, काल निशान बजाई ॥ जाकी आशा करत हो आगे, मनुष देह नर पाई ॥ करनी तो कछु बनि नहिं आवै, अब कर भजन सवाई ॥ जो यह अवसर चूके पामर, फिरिकै नहीं भलाई ॥ लख चौरासी योनिके माहीं, भटकतही मर जाई ॥ बिन हरिभजन भला नहिं तेरा, सत्य कहौं मैं राम दुहाई ॥ रामहिं राम रटो निशि वासर अतिशय प्रीति

लगाई ॥ नानकदास राम भजु भाई हितचितसे लौ लाई ॥ ऐसे संत पुकार कहत हैं दोऊ भुजा उठाई ॥ २६ ॥

रामनाम निसतारै जब तब ॥ टेक ॥ साठ घडीमें एक घडी भज, सोइ सकल अघ जारैं ॥ काशीपुरी बसत गौरीपति, निशिदिन नाम उचारैं ॥ कीट पतँग सुनत गति पावै, रघुकुल यश विस्तारैं ॥ अजामेल गणिका गृहवासी, सुतहित नाम उचारैं ॥ गज औ गिद्ध तरे हरि सुमिरत, महिमा व्यास विचारैं ॥ परम पुनीत नाम रघुवरको, हरि जन हरिरस गावैं ॥ नामदेव सोइ संत शिरोमणि, चितसों क्षण न बिसारैं ॥ २७ ॥

ऐसी भक्ति मोहिं भावै ऊधोजी० ॥ टेक ॥ सरवस त्याग मगन होइ नाचै, जन्म कर्म गुण गावै ॥ कथनी कथै निरंतर मेरी चरणकमल चित लावै ॥ मुख मुरली नयनन जल धारा, करसे ताल बजावै ॥ जहँ जहँ चरण देत जन मेरो, सकल तिरथ चलि आवैं ॥ उनके पदरज अंग लगावैं, कोटि जन्म सुख पावैं ॥ उन मूरति मो हृदय बसतु है, मेरी सुरति लगावै ॥ बलि बलि जाऊँ श्रीमुख बानी, सूरदास बलि जावै ॥ २८ ॥

राजन मानो वचन हमारो ॥ टेक ॥ भीषण द्रोण करण दुर्योधन, सब मिलि मतो विचारो ॥ पाँच गांव पांडुनको दीजै, औ सब राज तुम्हारो ॥ दक्षिण देश द्राविडा

नगरी, गौडदेश बंगालो ॥ गढ गिरनारकी बैठक दीजै, अरु हस्तिनापुर सारो ॥ भूमि न देऊँ सुईके नाको, रण संग्राम बिचारो ॥ क्षत्रीकुलको यही धर्म है, कोइ जीतो कोइ हारो ॥ भारत नाहिं भलो दुर्योधन, मनमें सोचि बिचारो॥ कटि कटि शीश पड़ैं धरणीपर, खाँडा चलै दुधारो ॥ इतनी सुनि बोलो दुर्योधन, कौन कियो उपचारो ॥ राजनीतिको मर्म न जानै, गऊ चरावन हारो ॥ मानत नाहिं अंधको जायो, हरिके वचन न कारो ॥ सूरदास प्रभु भरी सभामें आयो काल तुम्हारो ॥ २९ ॥

इति रविवारकी गौरी समाप्त

अथ सोमवारकी गौरी

विश्वामित्र अवधपुर आये ॥ टेक ॥ आवन सुनि अति आतुर होइकै, श्रवण सुनत उठि धाये ॥ चरण धोय बहु विधि करि पूजा, आदर करि बैठाये ॥ राम लखन मोहिं माँगे दीजै ऐसे वचन सुनाये ॥ बालक जानि कहो तुम कैसे, वेद पार नहिं पाये ॥ विश्वरूप महिभार उतारन, नरस्वरूप धरि आये ॥ कंपित तन गद्गद भइ बाणी, प्राण रहे इक ठाये॥तुलसिदास हरिरूप निहारे, चरणकमल चितलाये॥१॥

राजन राम लखन मोहिं दीजै ॥ टेक ॥ यश रावरो लाभ ढोटानहु, मुनि सनाथ सब कीजै ॥

डरपत अब सांचे सनेह वश, सुत प्रभाव बिन जाने ॥ बूझिय वामदेव अरु कुलगुरु, तुम पुनि परम सयाने ॥ रिपु रण दलि मख राखि कुशल अति अल्प दिनन घर ऐहैं ॥ तुलसिदास रघुवंश तिलककी कविकुल कीरति गैहैं ॥ २ ॥

ऋषिसँग हर्षि चले दोउ भाई ॥ टेक ॥ पितुपद वंदि शीश लियो आयसु, सुनि शिष आयसु पाई ॥ नील पीत पाथोज वरण वपु, वय किशोर बनि आई ॥ शर धनु पाणि पीत पट कटि तट, कसे निषंग बनाई ॥ कलित कंठ मणिमाल कलेवर चंदन खौर सुहाई ॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन मुख छबि वरणि न जाई ॥ पल्लव पक्ष सुमन शिर सोहत, काकहौं रूप लुनाई ॥ मनहुँ मूर्ति धरि उभय भाग भइ, त्रिभुवन सुन्दरताई ॥ पैठत सरनि शिलनि चढि चितवत, खग मृग बन रुचिराई ॥ सादर सभय सप्रेम पुलकित मुनि, पुनि पुनि लेत बलाई ॥ एक तीर तकि हती ताडका, विद्या विप्र पढाई ॥ राख्यो यज्ञ जीती रजनीचर, भै जग विदित बढाई ॥ चरणकमल रज परसि अहल्या, निज पतिलोक सिधाई ॥ तुलसिदास प्रभुके बूझे मुनि सुरसरि कथा सुनाई ॥ ३ ॥

सोहत मग दोउ भाई मुनि सँग ॥ टेक ॥ तरुण तमाल चारु चंपक छबि, कवि सुभाय कहि जाई ॥ भूषण वसन अनुहरत अँगपर ऊगत सुन्दरताई ॥ वदन मनोज सरोरुहलो-

चन शोभा रही लुनाई ॥ अंशनि धनु शर कर कमलन कटि, कसे निषंग बनाई ॥ सकल भुवन शोभा सर्वस लघु, लागत निरखि निकाई ॥ महि मृदु पथ बन छाँह सुमन-सुर, हर्षि पवन सुखदाई ॥ जलथलरुह फल फूल सलिल सब, करत प्रेम पहुनाई ॥ सकुच सभीत विनीत साथ गुरु बोलनि चलनि सुहाई ॥ खग मृग सुभग विलोकत बिच बिच लसत ललित लरिकाई ॥ विद्या दई जनि विद्यानिधि विद्यहु लह्यो बडाई ॥ ख्यालहि दली ताडका लखि मुनि, देत अशीश अघाई ॥ बूझत प्रभु सुरसरि प्रसंग कहि, निज कुलकथा सुनाई ॥ गाधिसुवन सनेह सुख संपति, उर आश्र-मन समाई ॥ वनवासी बटु यति योगीजन, साधु सिद्ध समु-दाई ॥ पूजे पेखि प्रीति पुलके तन नयन लाभ लुट जाई ॥ मख राखे खलदल दलि भुजबल, बाजत विबुध बधाई ॥ पथचरित सहित तुलसी चित, बसत लखन रघुराई ॥ ४ ॥

ये दोउ दशरथके हैं बारे ॥ टेक ॥ नाम राम नाम घनश्याम लषण लघु, नख नख सिख अँग उजियारे ॥ धीर वीर बिरुदैत बाँकुरे, महा बाहुबल भारे ॥ निज हित लागि माँगि आने हैं, धर्म सेतु रखवारे ॥ एक तीर तकि हती ताड़का, किये सुर साधु सुखारे ॥ यज्ञ राखि तोषि ऋषि, निदरि निशाचर मारे, मुनितिय तारि स्वयंवर देखन, आये सुनि वचन तुम्हारे ॥ ये दोउ देखि पिनाक नेक जेहिं नृपति लाज ज्वर जारे ॥ सुनि सानंद सराह सपरिजन, बारहिं बार निहारे ॥ पूजि सप्रेम प्रशंसि कौशिकहिं, भूपति

सदन सिधारे ॥ शोचत अतिसनेह निशि वासर, नृपहिं नखत गये तारे ॥ पठये बोलि भोर गुरुके सँग, रंगभूमि पग धारे ॥ नगर लोक सुधि पाई मुदित सब, निज निज काज बिसारे ॥ मनहुँ मघा जल उमँगि उदधि रुख, चले मिलन नर नारे ॥ ये किशोर धनु घोर बहुत करि बिलखि बिलोक निहारे ॥ टऱ्यो न चाप तिन्हैं जिन्ह सुभटन, कौतुक कुधर उधारे ॥ ये जाने बिनु जनक जानिये, करि प्रण भूप हँकारे ॥ न तरु सुधासागरको परिहरि, कूप खनावत खारे ॥ सुषमा शील सनेहके साने, मानो रूप बिरंचि सँवारे ॥ रोम रोम पर शोभा कामशत, कोटि बार फेरि डारे ॥ कोउ कह तेज प्रतापपुंज ये, चितये न जात निहारे ॥ छुवत शरासन शलभ जरेगो, दिनकरबंश दिया रे ॥ एक कहे कछु होइ सुफल भये, जीवन जन्म हमारे ॥ अवलोके भरि नयन आजु हो, तुलसी प्राण पियारे ॥ ५ ॥

जात चले दोउ भाई जनकपुर ॥ टेक ॥ और श्याम सुंदर तन राजै, कोटिकाम छबि छाई ॥ मंदहास मुसकात जात हैं शोभा वरणि न जाई ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, करमें धनुष सुहाई ॥ जनकपुरी गलियनमें विहरैं, मोहैं नर अरु नारी ॥ बालकवृंद बहुत संग लागे, रचना विविध बनाई ॥ सैना सयन करत आपसमें सांझ भये घर आई ॥ करि परमोद बाल सब फेरे, गुरु चरणन शिर नाई ॥ रामसेवकके प्रभु सुखसागर, तनकी तपन बुझाई ॥ ६ ॥

भुजनपर आवत धनुष धरे, ॥ टेक ॥ कटि तूणीर बाण कर राजै, ये भूभार हरे ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, उर वनमाल धरे ॥ इनके दर्श पर्श पायेते पाप पहार तरे ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल करि गौतमनारि तरे ॥ सुंदर श्याम सलोने ढोटा केसर तिलक करे ॥ जनकस्वयंवर पावन करिकै, सीताराम वरे ॥ तुलसिदास दरबार रामके, मोसे पतित तरे ॥ ७ ॥

देखो सखी, मुनिसँग बालक काके ॥ टेक ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा गौर श्याम तन जाके ॥ लक्ष्मण राम कौशिला जाये, दशरथ नाम पिताके ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, धनुष बाण कर जाके ॥ गौतमऋषिकी नारि अहल्या, तारे चरण छुआके ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो, गृह आये राजाके ॥ सबकी अहमिति हरिहैं रामजी, कारज करन सियाके ॥ चतुर सखी मिलि चलीं जानकी, पूजा करन उमाके ॥ तुलसीदास भजौ भगवानै अंक लिखे विधनाके ॥ ८ ॥

तुम ऋषि सांचे कहो (ऋषि बोले) ॥ टेक ॥ किसके बालक किधरसे आये, जनकनगर ऋषि लाये ॥ जनक नगरकी नारि पुरुष मिलि सबही पूँछन धाये ॥ अवध नगरमें दशरथ राजा, सरयू उतर सुहाई ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, तीन लोकपति राई ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै जगमें कीरति भारी ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सफल करि,

चरण अहल्या तारी ॥ पूरण ब्रह्म सकल घट वासी, राम लखन दोउ भाई ॥ गौर श्याम दोउ संग हमारे, अवध नगर सुखदाई ॥ ९ ॥

सियाजीके संग चतुर सब सखियाँ ॥ टेक ॥ करत प्रकाश फिरत फुलवारी, संग लिये सब सखियाँ ॥ भवन समीप तडाग बागवर, देखनको अभिलषियाँ ॥ राम रमापति कबहुँक आये, दोउ मिलि भई अभिलषियां ॥ कहा भयो गौरीके पूजे, पलक न लागत अँखियां ॥ सुन्दर श्याम राम रघुनंदन हृदयमध्य धारि रखियां ॥ शारद शेष महेशजी गावैं, वेद पार नहिं पावैं ॥ कृपानिवास रामजीकी मूरति, हृदयमाँझ लिखि रखियां ॥ १० ॥

ये दो कुँवर, अयोध्यावारे ॥ टेक ॥ बालकेलि सरयूतट बिहरैं सुंदर राजदुलारे ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल किगो असुर मारि सुर थापे ॥ गौतम नारि अहल्या तारे जनकपुरी पग धारे ॥ राजा जनकके यज्ञमें ठाढे शोभित राजदुलारे ॥ मानहुँ सिंह परे गजदलमें नृपके यूथ बिदारे ॥ लक्ष्मण कहैं सुनहुँ प्रभु मेरे विश्वके पालनहारे कोटि कोटि ब्रह्मांडके कर्ता केतिक धनुष विचारे ॥ बांये चरण चाप गहि लीन्हों खंड खण्ड करि डारे देखतही दुरि गई सभा सब सूर्य उदय जिमि तारे ॥ बाजे बाजे बिना बजाये सोहत न्यारे न्यारे ॥ नाचहिं नवल अप्सरा मुदितमन बंदी वेद उचारे ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक निगम नेति

यश गावैं ॥ तुलसीदास आश रघुवरकी लै संतन उर धारे ॥ ११ ॥

शंभुजीको तोऱ्यो धनुष रघुराई ॥ टेक ॥ रघुवर चले जनकपुर व्याहन लक्ष्मण संग लगाई ॥ देश देशके भूप जुरे हैं बैठे अंगफुलाई जयजयकार भयो त्रिभुवनमें देव सुमन झरि लाई ॥ बडे बडे वीर गजेंद्रसे योधा थकिकै शीश नवाई ॥ परशुराम क्रोधे इतना सुनि जनकनगर चलि आई ॥ देखि डरे नर नारि सभाके जहँ तहँ रहे लुकाई ॥ ऐसे वीर भयो त्रिभुवनमें शिवको चाप चढाई ॥ कहु जड़ जनक धनुष किन तोऱ्यो सो तुव देइ बताई ॥ इतना सुनि लक्ष्मण उठि बोले फरसा लैकै धाई ॥ बालक जानि बधों नहिं तोहीं जाने का प्रभुताई ॥ सहसर भुजा सहस्रार्जुनके काटे वीर कहाई ॥ बहुत दिननको शंभुशरासन छुवते दोष लगाई ॥ हम क्षत्रिय तुम विप्र गोसाई हम तुम कौन लराई॥ जो कोई वीर चढै रण भीतर कोउ नहिं पीठ देखाई ॥ राम वचन सुनि ज्ञान प्रगट भयो धनु सौंपेउ रघुराई तुलसिदास बलिहारि चरणकी तब मुनि गये शिर नाई ॥१२॥

जनकपुर घर घर बजत बधाई ॥ टेक ॥ लक्ष्मण राम संग कौशिक मुनि, रंगभवन हारि आये ॥ सब मंचनते मंच श्रेष्ठ इक रत्नजडाव बनाई, गुरुसमेत सँग तहँ रघुनंदन, ता ऊपर बैठाई ॥ देश देशके भूपति नाना, धनुष यज्ञ सुनि आये ॥ भूप सहसदश एकहि बारा लगे उठावन आई ॥

डिगेउ न शंभु शरासन कैसेउ, अधिक अधिक गरुआई ॥ ताही समय तानि रघुनंदन, खण्ड खण्ड करि डारी ॥ जयजयकार भयो सुरपुरमें देवन दन्दु बजाई ॥ नचहिं अप्सरा नवल मुदित मन, आनंद उर न समाई ॥ करि श्रृंगार सखी लै आई, शोभा बरणि न जाई ॥ करसरोज जयमाल सहाई, रघुवर उर पहिराई ॥ सीता व्याहि अवध हरि आये, मंगलचार बनाई ॥ मातु कौशल्या करत आरती, तुलसिदास गुण गाई ॥ १३ ॥

जनकजीके अँगना भीर भई भारी ॥ टेक ॥ साजि बरात चले नृप दशरथ, हय गजकी असवारी ॥ झँकत झरोखे लागि सुंदरी, आवत अवधबिहारी॥सीता राम युगल मिलि बैठे, देखन आये त्रिपुरारी ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता, जयजयकार उचारी ॥ सिय करकंकण रघुवर छोरे, गाढी गांठ. लगाई ॥ खोलत राम खुलत नहिं कंकण, नारि हँसीं दै तारी ॥ जुरि आयो रनिवास मुदितमन, देत रामको गारी ॥ तुमसे रघुवर छूटत नाहीं, बोलि लेहु महतारी ॥ बोली उमा सनेह मगनमन का सकुचावहु नारी ॥ तोरत धनुष बिलम नहिं कीन्हों, कंकण कहा बिचारी ॥ अंचल ओट सिया मुसकानी, तनकी दशा बिसारी ॥ न्योछावर सबही करि डारे, तुलसिदास बलिहारी ॥ १४ ॥

रामहिं नीके निरखि सुनयनी ॥ टेक ॥ मनमहँ समुझि अगम यह अवसर, करत सकुच पिकबयनी ॥ बड़े भाग्य

मख भूमि प्रगट भई सिया सुमंगल देनी ॥ जो कारण लोचन-गोचर भइ, मूरति सब सुख देनी ॥ कुलगुरु तियके वचन मधुर सुनि, जनकयुवति मतिपयनी ॥ तुलसी शिथिल देह सुधि कर सब, सहज सनेह विषयनी ॥ १५ ॥

जब दोउ दशरथ कुँवर विलोके ॥ टेक ॥ जनकनगर नर नारि मुदित मन, निरखि नयन पल रोंके ॥ वय किशोर घन तडित वरण छबि, नख सिख अंग लुनाई ॥ दै चितके हित लै सब छबिबित विधि निज हाथ सँवारे ॥ संकट नृपहिं शोच अति सीतहिं, भूप शकुच शिर नाये ॥ उठे राम रघुकुल कलकेहरि गुरु अनुशासन पाये ॥ कौतुक-ही कोदंड खंडि प्रभु जय अरु जान कि पाये ॥ तुलसिदास कीरति रघुवरकी मुनिजन तिहुँपुर गाये ॥ १६ ॥

कठिन धनुष कैसे तोर्‍यो श्रीराघवजीने ॥ टेक ॥ बड़े बड़े भूप सप्त द्वीपनके उनहूँ नेक न मोरे ॥ पितु अशीश जब दियो हमारे, विश्वामित्र सहाई ॥ याते जोर भयो जब मेरे तासों लियो उठाई ॥ हाथ चूमि मुख चुमत कौशिला, बाजत अवध बधाई ॥ तुलसिदास रघुवीर वदनपर बार बार बलिजाई ॥ १७ ॥

देखो सखि कोई नवल खिलारी ॥ टेक ॥ खेलत फिरत प्रमोद विपिनमें श्याम वदन तनु हारी ॥ कछनी हरि तरु हरित उपरणा क्रीट मुकुट धनुधारी ॥ हरित लतनकी ओट बने हैं होत लतन अनुहारी ॥ बाननसों मारत मृगराजन

नयननसे नर नारी रामसखे पिया तनक नवलपर, कोटि मदन छबि वारी ॥ १८ ॥

इति सोमवारकी गौरी समाप्त

अथ मंगलवारकी गौरी

कौन दिशासे आये पवनसुत ॥टेक॥ उत्तरखंड अयोध्या नगरी, ऋष्यमूकसे आये ॥ कौनके पुत्र कौनके पायक कवने कुँवर पठाये ॥ कहां छोंडे राम कहां छोंडे लक्ष्मण कहांते मुद्रा लाये ॥ वनहिंमें राम वनहिंमें लक्ष्मण वनहिंसे मुद्रा लाये ॥ कौनके सतसे सागर उतरे कौन सँदेशा लाये ॥ सीता सतसे सागर उतरे राम सँदेसा लाये ॥ सुनि सुनि वचन सिया वनचरके नयन नीर भरि आये ॥ अब जनि सोच करौ मेरि माता राम सहित दल आये ॥ रावण मारि अभी लै जाऊं राम हुक्म नहिं पाये ॥ तुलसिदास हनुमान भरोसे सोवत सिंह जगाये ॥ १ ॥

रघुवर कब करिहैंगे फेरा ॥ टेक ॥ सैना जोरि समुद्रपर पहुँचे, उतरे जाय सुवेला ॥ लाल हैं तँबुआ जरद किनारी राम लषणके डेरा ॥ वानर भालु देइँ किलकारी जाय लंक गढ घेरा ॥ घर घर लंका फूँकि दियो है हनूमान अलबेला ॥ तुलसिदास प्रभु रूप निहारे हरिचरणनके चेरा॥२॥

इक दिन राम हुक्म जो पावों ॥ टेक ॥ सात समुद्र छिनहिंमें सोखों लंकमें धूरि उडावों ॥ लंकाके सब खंभ

उखारों लैकै अवध छवावों ॥ पैठि पताल तोरि यमकातरि कालीनाथि लै आवों ॥ इंद्रहुको इंद्रासन तोरौं सूर्यको रथ बिलमावों ॥ लंका अस कोट समुद्र असि खाई वैद सुषेनहिं ल्यावों ॥ कालनेमिको करों सँहारो मूल सजीवनि ल्यावों ॥ रावणके दश मस्तक छेदों जानकी राम मिलावों ॥ तुलसिदास रघुनाथ भरोसे अंजनिलाल कहावों ॥ ३ ॥

जो मैं रामरजायसु पायो ॥ टेक ॥ गल मेली मुद्रिका मुदितमन, कपिराजहिं शिर नायो ॥ भालुनाथ नल नील साथ चले, बली वालिको जायो ॥ फरकि अंग भये सगुन कहत मनो, मग मुद मंगल छायो ॥ देखि वीर सुधि पाय गृध्रसे, सबनि अपन बल पायो ॥ सुमिरि राम तकि तरकि तोय निधि लंक लूम सो आयो ॥ खोजत घर घर जनु दरिद्र मन फिरत लागि धन धायो ॥ तुलसी सिय विलोकि पुलक्यो तन भूरि भाग भइ भायो ॥ ४ ॥

हरकोदंड कठिन जिन तोरा ॥ टेक ॥ कहत मँदोदरि सुनु पिय रावण वानर भालु बटोरा ॥ सेतु बांधि दल पार उतरि आये सोर भयो चहुँ ओरा ॥ शूर्पणखाको रूप हर्‌यो है खर दूषण मद तोरा ॥ उनसे वैर कबहुँ नहिं कीजै विनय करों कर जोरा ॥ राम लषण दोउ वीर धुरंधर पवनतनय बल जोरा ॥ जामवंत सुग्रीव नील नल काल समान कठोरा ॥ तामें मिलो बिभीषण देवर बंधु लगै पिय तोरा ॥ लंका जरिकै गरद मिली है जस पत्थरके रोरा ॥ दोउ कर

जोरि सिया लै आगे मिलन चलो पिय मोरा ॥ तुलसिदास प्रभु शीलके स्वामी मानुकवच पति मोरा ॥ ५ ॥

देखो पिया जनकसुतापति आये ॥ टेक ॥ डिगै सुमेरु दशौ दिशि हालैं गरद भानुरथ छाये ॥ सिय ले मिलो कि पुरते भाजो सिंधु साजि रथ आये ॥ मिले आन धारन दशरथसुत सोनेको सिंधु बँधाये ॥ अब ले मिलौ मिलबेको अवसर जबलौं पार न आये ॥ अहो पिया तुम मानत नाहीं बहुविधि कहि समझाये ॥ आयो हतो वालिसुत अंगद, काहे न पगहुँ समाये ॥ अरे न खेद डरत हौ अबला काहे भरम गमाये ॥ मोहिं वरदान दियो है शंभू पायो सो काल बँधायो बंदर एक नाम गंधरमा रामदूत सोई आयो ॥ उडि उडि दैत्य दशो दिशि भाजे चहुँ दिशि लव ना छायो ॥ सागर पार सैन्य सब आई गढ लंका नभ छायो ॥ तुलसिदास प्रभु पार उतरि आये बिनय करो कर जोरी ॥ ६ ॥

सब तजि मैं रघुपतिपै जैहौं ॥ टेक ॥ जननी शपथ खात हौं तेरी फिरि नहिं वदन दिखैहौं ॥ तजिहौं राजसमाज लंकको अनुचर जाय कहैहौं ॥ क्षमिहैं सब अपराध रामजी अपने शरण लगैहौं ॥ चरण घाव उर दियो दशानन कैसे शूल मिटैहौं ॥ ऐसो हितू दूसर कोउ नाहिंन जासों खबर जनैहौं ॥ बार बार कहि वचन बिभीषण ऐसो दाँव न पैहौं ॥ तुलसिदास रघुनाथ हाथ अब मैं बिनु दाम बिकैहौं ॥ ७ ॥

कुटुम तजि शरण रामके आये ॥ टेक ॥ तजि गढ लंक महल अरु मंदिर नाम सुनत उठि धाये ॥ भरी सभामें रावण बैठो परहित लात चलाये ॥ मूरख बंधु कहा नहिं मानै बार बार समुझाये ॥ आवतही लंकापति कीनो हरि हँसि कंठ लगाये ॥ जन्म जन्मके मिटे पाप सब राम दरश जब पाये ॥ श्रीरघुनाथ अनाथके बंधू दीन जानि अपनाये ॥ तुलसिदास भजु नवल सियावर भक्ति अभय पद पाये ॥ ८ ॥

तैं मेरो दूध लजायो पवनसुत तै० ॥ टेक ॥ लंका जाय कहा करि आयो बाग मधुर फल पाये ॥ जानकि क्यों न धन्यो शिर ऊपर लंका क्यों नहिं लाये ॥ यह सुनि बात कहत मातासँग राम हुकुम नाहिं पाये ॥ आज्ञाभंग कबहुँ नहिं कीजै यही परन मोहिं भाये ॥ माता रोष करत सुत ऊपर धरणी पर्वत फोन्यो ॥ ऐसो दूधको पीवन हारो रावण क्यों नहिं मान्यो ॥ अंजनीके पुत्र राम जीके पायक शिवजीके लाल कहायो ॥ तुलसिदास लंकापर हंका हनुमत बीरा खायो ॥ ९ ॥

अब गढ फिरि गइ रामदुहाई ॥ टेक ॥ कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण कौन कुमति भरमाई ॥ ओछी बुद्धि कर्म तुम कीन्हों तिरिया हरी पराई ॥ कंचन कोटि देखि मत भूलो औ समुद्र असि खाई ॥ पवनके पुत्र महाबलदाई छिनमें लंक जराई ॥ हम रावण दश मस्तक मेरे कुंभकरण बल भाई ॥ सहस सुभट मेरे रखवारे कहा करें दोउ

भाई ॥ जो रावण तुम हरिसों मिलते देत अयोध्या ठाई ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो लंक विभीषण पाई ॥ १० ॥

जब कर राघव बाण धरैंगे ॥ टेक ॥ सँग रघुनाथ भीर वनचरकी कपिदल कोपि चढैंगे॥श्यामघटा घन झुकी अँधेरी सूर्यहु गगन छिपैंगे ॥ पँच रँग बाण राम लक्ष्मणके सागर तीर रुपैंगे ॥ जो सागरको गर्व करत है, तापर सेतु बँधैंगे ॥ लंकासों कोट समुद्र अस खाई थरहर भूमि परैंगे ॥ जामवंत हनुमान नील नल, महाशोर धुनि गर्ज करैंगे ॥ राति भयानक सपना देखो, लंका कोट लुटैंगे ॥ नाम विभीषण बंधु तुम्हारे, रघुपति जाय मिलैंगे ॥ मेघनादसे पुत्र तुम्हारे, वो नहिं धीर धरैंगे ॥ कुम्भकर्ण बल बंधु तुम्हारे, रणमें जूझि मरैंगे ॥ अहिरावणसे योधा मरिहैं, लंकमें शोक परैंगे ॥ चौंसठि योगिनि मंगल गावैं, खप्पर वीर भरैंगे ॥ दश शिर छेदि बीसभुज तोरे, एकहि बाण हरैंगे ॥ जो नारद मुनि मुखसे भाखी, भारत राम करैंगे ॥ श्रीरघुनाथ अनाथके बंधू, शरणै जाय परोगे ॥ अग्रके स्वामी लै मिलो जानकी कछु दिन राज करोगे ॥ ११ ॥

अब देखो राम ध्वजा फहरानी ॥ टेक ॥ झलकत ढाल फराकत नेजा, गरद उड़ी असमानी ॥ लक्ष्मण वीर बालिसुत अंगद, हनूमान अगवानी ॥ कहत मंदोदरि सुनु पिय रावण, त्रिभुवनपतिसे ठानी ॥ जो सागरको गर्व करत है, तापर शिल उतरानी ॥ तिरिया जाति बुद्धिको ओछी रिपुकी

करत बड़ाई ॥ भुवमंडलसे पकरि मँगावों वे तपसी दोउ भाई ॥ हनूमानसे पायक उनके, लक्ष्मणसे बल भाई ॥ जरत अगिनिमें कूदि परत हैं, कोट गनै नहिं खाई ॥ मेघनादसे पुत्र हमारे, कुम्भकर्ण बल भाई ॥ एक बार सन्मुख होइ लड़िहौं युग युग होत बड़ाई ॥ कहत मँदोदरि सुनु पिय रावण तैं मेरि एक न मानी ॥ रैनको सपनो ऐसो भयो है सोनेकी लंक लुटानी ॥ बंदर एक लंक बिच आयो घर घर धूम मचाई ॥ बाग उखारि समुद्रबिच डारे लंकमें आगि लगाई ॥ गर्वी रावण गर्व न कीजे गर्वहि लंक लुटाई ॥ जाय मिलो रघुनाथ कुँवरसे लंक अचल होइ जाई ॥ इक लख पुत्र सवा लख नाती मौत आपनी ठानी ॥ अग्रके स्वामी गढ लंका घेरे अजहुँ चेत अभिमानी ॥ १२ ॥

जो मैं जानकिनाथ कहावों ॥ टेक ॥ सुनु सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी रावण सहित कुटुंब बहावों ॥ जाम्बवान हनुमान नील नल वालिसुवन लै जावों ॥ बांधों उदधि पद्म अष्टादश लंका कोट ढहाओं ॥ रावणके दश मस्तक छेदों असुर जहां लगि पावों ॥ बाणन मारि बिहाल करौंगो देवन बंदि छुड़ावों ॥ लंका राज बिभीषण देहौं युग युग छत्र फिरावों ॥ तुलसीदास प्रतिज्ञा मेरी सियासहित घर आवों ॥ १३ ॥

इति मंगलवारकी गौरी समाप्त

अथ बुधवारकी गौरी

यशोदा मैया देखत को कान्हो बारो ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है तीन लोक उजियारो ॥ केश पकरि हरि कंस पछारो जीतो मल्ल अखारो ॥ निर्मल जल यमुनाको करिकै नाग नाथि लायो कारो ॥ फणपर नृत्य करत मनमोहन सुंदर श्याम दुलारो ॥ अति सुकुमार कमलहुते कोमल गिरि गोवर्धन धारो ॥ डूबतते व्रज राखि लियो है गर्व इंद्रको मारो ॥ है कोउ बडो देव देवनमें, यशुमति पुत्र तुम्हारो ॥ सूरदास हरिरूप निहारो जीवनप्राण हमारो ॥ १ ॥

यदुवर लागत है मोहिं प्यारो ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुलमें पग धारो ॥ जन्मतही पुतना गति दीनो अधम उधारन हारो ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै ओढे कामरि कारो ॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन पीतांबर पटवारो ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल करमें मुरली धारो ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजें संतनको रखवारो ॥ जल डूबत व्रज राखि लियो है करपर गिरिवर धारो ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर जीवन प्राण हमारो ॥ २ ॥

ग्वालिनी क्यों ठाढी नंदपौरी ॥ टेक ॥ बार बार इत उत फिर आवे विजया खाय है बौरी ॥ नंदनँदनसे कवन काम है हमसे क्यों न कहो री ॥ सुंदर श्याम सलोने ढोटा उन दधि लेन कहो री ॥ हमसे कहैं तुम नेक खड़ी रहो आपुन बैठ रहो री ॥ नव लख धेनु नंदबाबाके तेरोहि

लेन कहो री ॥ यौवन माती फिरति ग्वालिनी तैं मेरी लाल ठगो री ॥ इतनो सुनिकै निकसे मोहन दधिको मोल कहो री ॥ परमानँद स्वामी रूप लुभाने अब दधि भलो बिको री ॥ ३ ॥

मगन भई सुनि बंसीकि टेरी ॥ टेक ॥ पनियाके मिस निकसी अकेली गौउ अचवनकी बेरी ॥ गजकी चाल चलै मृगनयनी चपल नयन चित हेरी॥आजुकी शोभा मोसे वरणि न जाई श्याम घटा घन घेरी ॥ आजु सखी ब्रजराज बचायो शंख घंट घनघोरी॥मुरलीकी धुनि सुनि भई हैं बावरी श्याम मिलनकी बेरी ॥ सासु पूंछे सुनहु बहुरिया कहाँ लगाई देरी॥परमानंद स्वामी मिले गलीमें तासे भई अबेरी ॥ ४ ॥

ग्वालिनि तैं मेरो गेंद चुराई ॥ टेक ॥ खेलत गेंद गिरी तेरे अँगना, अँगिया बीच छिपाई ॥ सांचे लाल झूँठ मति बोलो, अँगिया तकत पराई ॥ जो अँगिया बिच गेंद न निकसे, भूलि जाइ चतुराई ॥ काहे को गेंद काहेको धागा कौनके हाथ बनाई ॥ फूलन गेंद रेशमको धागा यशुमति हाथ बनाई ॥ हँसि हँसि बात करत राधेसे इतमें यशोदा आई ॥ सूरदास प्रभु चतुर कन्हैया एक गये दुइ पाई ॥ ५ ॥

माई मेरो रूठे बालगोविंदा ॥ टेक ॥ कारि कारि अँगुली गगन देखावत खेलन मांगे चंदा ॥ भाजनमें जल मेलि यशोदा प्रभुको चंद दिखावे ॥ रुदन करत ढूंढत जल भीतर

चन्द धरन नहिं आवे ॥ दूध दही माखन घृत रोटी खावे मेरो छौना ॥ मांगिबो हरिको और न टरही यहि विधि खेलै ललना ॥ भक्त उधारन असुर संहारन मेरे प्रभु कंस निकंदा॥ये छबिकी बलिहारी यशोदा वारी परमानंदा॥ ६ ॥

आजु मेरो कहां अटको गिरिधारी ॥ टेक ॥ खोजत खोजत फिरति यशोदा घर घर करत पुछारी ॥ कारन कवन लाल नहिं आयो कंस कालभय भारी ॥ यूथ यूथ सखियां चलि आई देत यशोदै गारी॥ नंदनँदनको जोर जुठौनो खैंचत अंचल सारी ॥ रुमक झुमुक मोहन चलि आये नयन नीर भरि वारी ॥ मुरली मेरी छीन लई है इन सखियन मोहिं मारी ॥ हँसि मुसुकाय कहत राधेजी दूषण नाहिं हमारी ॥ श्यामसुंदर मैं तुम्हरे दरशको, चंद्रसखी बलिहारी ॥ ७ ॥

नेक चलो उहांलगि नँदरानी ॥ टेक ॥ देखो अपने सुत की करनी दूध मिलावत पानी ॥ हमरे शिरकी नई चूनरिया लै गोरसमें सानी ॥ हमरे उनमें कौन बाद है हमैं दिखावै जवानी ॥ तुम्हरे कुलकी ऐसी बतियां सो हमरे सब जानी ॥ पिता तुम्हारि कंस घर बांधे आप कहावत दानी ॥ या ब्रजको बसिबो हम त्यागो आप रहो रजधानी ॥ सूरदास ऊषरकी वर्षा थोरे जल उतरानी ॥ ८ ॥

हरिजीसे कौन दुहावत गैया ॥ टेक॥ कारे आप कामरी कारी आवत चोर कन्हैया ॥ कनक दोहनी सोहै हाथमें दुहन बैठे अधपैया ॥ खन दुहत खन धार चलावत चित-

वनिमें मुसकैया ॥ गोपन छोंडि गहे मेरो अंचल यही सिखायो तेरी मैया ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरण-कमल बलि जैया ॥ ९ ॥

यशोदा मैया काहे न मङ्गल गावैं ॥ टेक ॥ पूरण ब्रह्म अखिल अविनाशी सो तेरी धेनु चरावैं ॥ कोटि कोटि ब्रह्मांडके भर्ता जपत ध्यान नहिं आवैं ॥ ना जानौ यह कौन पुण्यसे यशुमति गोद खिलावैं ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गावैं ॥ शेष सहसमुख रटत निरंतर वाको पार न पावैं ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन गोधनके संग आवैं ॥ मातु यशोदा करत आरती कबिरा दर्शन पावैं ॥ १० ॥

वनहुँसे आवत धेनु चराये ॥ टेक ॥ आगे आगे धेनु पीछे यदुनंदन ब्रजरज मुख लपटाये ॥ मोर मुकुट मकरा-कृत कुंडल उर वनमाल सुहाये ॥ बाहु विशाल विभूषण सोहैं कर गहि कमल फिराये ॥ चंदन चर्चित अंग मनोहर भृगु-लक्षण छबि छाये ॥ शेष सहसमुख रटत निरंतर वाको पार न पाये ॥ कम्बुकंठ कौस्तुभमणि राजै शोभा वरणि न जाये॥ घूँघुरवारे अलक वदनपर मधुकर रहैं लुभाये ॥ चढे विमान देव मुनि हर्षैं पुष्पमाल झरि लाये ॥ कृष्णदास प्रभुकी छबि निरखैं चरणकमल चितलाये ॥ ११ ॥

वनहुँसे आवत गावत गौरी ॥ टेक ॥ आगे आगे धेनु पीछे नँदनंदन लाला यशुमतिको री ॥ अटा चढी ब्रजवधू

निहारैं निरखि परमपद पावैं री ॥ आवत देखे श्याम मनोहर पुष्पमाल लै दौरी ॥ अधरन मुरली धरे मनमोहन सब ब्रजनारि ठगोरी ॥ आजकी शोभा वरणि न जाई ओढे पीत पिछौरी ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहै भाल तिलक शिर खोरी ॥ नन्ददास प्रभुकी छबि निरखैं भाग बड़ो तिनको री ॥ १२ ॥

वनहुँते आवत धेनु चरानी ॥ टेक ॥ संध्यासमय सांवरे मुखपर गोपदरज लपटानी ॥ देही मुकुट शीशपर राजे मधुकर रहे लुभानी ॥ शोभा लालि लाल लटकनकी जो ना उड़त उडानी ॥ विधिवाहन भक्तनकी माला शोभत उर फहरानी ॥ मनहुँ मँदागनि धसी अमलपर जो फूल उड़ानी ॥ बालगोपाल नंदके ढोटा ग्वाल बने इक ठानी ॥ सूरदास प्रभु रसिक मुकुटपर शोभा वरणि न जानी ॥ १३ ॥

है है करत मुरारी गौवनके संग ॥ टेक ॥ जो दर्शनलगि सुर सब ध्यावैं ब्रह्मादिक त्रिपुरारी ॥ सो नंदलाल ग्वालसंग खेलत महिमा नाथ तुम्हारी ॥ जो रजको ब्रह्मादिक नारद खोजि खोजि मुनि हारी ॥ सो रज लै लै ब्रजकी वनिता डारत डगर बुहारी ॥ जो भुजबल सब असुर संहारे रावण रिपुदल भारी ॥ सो भुज पकडि कहत ब्रजबाला दांव देउ गिरिधारी ॥ यहि विधि कौतुक करत कृपानिधि अलख पुरुष तनु धारी ॥ सूरदास सन्तनके सर्वस नाथ भक्त हितकारी ॥ १४ ॥

खरिक बिच क्यों ठाढी राधाप्यारी ॥ टेक ॥ माथे हाथ दिये मन शोचत कहँ लगि तेरी त्यारी ॥ देखेंगे सो कहा कहेंगे सुनि ऋतुराजकुमारी ॥ अबहीं लाल गये गौअनमें अब आवनकी त्यारी ॥ बंशी बाजि रही मोहनकी मोहि लई ब्रजनारी ॥ तीन लोककी रूप लाड़िली कंचनकी अनुहारी ॥ यह शोभा मोपै वरणि न जाई विधिना आप सँवारी ॥ लाल लाडिली मिले खरिकमें हृदय हर्ष ब्रजनारी॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्णछबि तन मन धन बलिहारी॥१५॥

सुनु सखी मोहन वेणु बजावै ॥ टेक ॥ सांझ समय गोधनके पीछे आछे बनि ठनि आवै ॥ कहूं पुष्प कहुं कुसुम मंजरी कहुं तुलसीदल लावै ॥ गुंजमाल वनमाल लाल उर अंग अंग छबि लावै ॥ इंदुबदन अरविंदनयन शिर मुकुट मधुरसुर गावै ॥ कुंजभवन मारग उपवनमें मोर चकोर नचावै ॥ श्रुति कुंडल झलकन अलकनि पर हलकनि नयन सिरावै ॥ पीत दुकूल खौर केसरकी नवल सखी मन भावै ॥ १६ ॥

ब्रजललना दुखमोचन आवै माई शरदकमलदललोचन ॥ टेक ॥ गोधन सँग पुनीत कर मुरली तिलक कियो गोरोचन ॥ आगे आगे धेनु पिछे यदुनंदन कर गहे कमल फिरावैं ॥ बालगोपाल नंदनके ढोटा मधुरी वेणु बजावैं ॥ कटिपर लाल काछनी काछे ओढे पीत पिछौरी ॥ आपुन हँसत हँसावत ग्वालन राग अलापत गौरी ॥ तुलसी पत्र

पुष्पकी माला झुकि ग्वालिनि पहिरावैं ।। मोर मुकुटपर वैजं-
तीमाला कुंडल झलकत आवैं ।। वर्षे पुष्प देव मुनि हर्षे
मोहीं व्रजकी नारी ।। कृष्णदास प्रभु रसिक मुकुटपर लाल
गोवर्धनधारी ॥ १७ ॥

आवै माई हलधर गिरिधर जोरी ॥ टेक ॥ हलधर कह
मेरि कारी कामर गिरिधर कह मेरि धोरी ॥ हलधर कर हल
मूसल धारे गिरिधर क्षत्र धरो री ।। हलधर ओढे नील
नीलांबर गिरिधर पीत पिछौरी ॥ हलधरके सँग ग्वाल बहुत
हैं, गिरिधर झुंड करोरी ॥ परमानंद यह ध्यान धरत है
मांगै मुक्ति कर जोरी ॥ १८ ॥

आज मैं हरिको शस्त्र गहावों ॥ टेक ॥ शपथ मोहिं
गंगाजननीकी शंतनु सुत न कहावों॥ महभारथ पारथके ऊपर
सोइ जाय परण चढाओं ।। शरधनु तोरि महारथि तोरों
कपिध्वज सहित ढहावों ॥ पाँचो पंडा सहित सारथी शोणित
नदी बहावों ॥ अबकी जिवौं तौ करौं सुयश जग विमल
ध्वजा फहरावों ॥ मारौं तौ वेदभानु भव मन्दिर सुरपुर जाय
वसावों ॥ शपथ आज है सत्य कृष्णकी क्षत्रियगति नहि
पावों ॥ सूरदास यहि समर भूमिमें जियत न पीठ दिखावों
॥ १९ ॥ इति बुधवारकी गौरी समाप्त ।

अथ गुरुवारकी गौरी

देवा तेरी भक्ति न छाँडूं मुक्ति न माँगूँ हरियश सुनहुँ
सुनाऊँ ॥ टेक ॥ रामकृष्ण अवतार मनोहर जन्म जन्म

यश गाऊँ ॥ गङ्गाजल असनान कराऊँ पीतांबर पहिराऊँ ॥ तुलसी आनि गोपालहि पूजौं चंदन सरस चढाऊँ ॥ चुनि-चुनि कलियाँ हार बनाऊँ रघुवर उर पहिराऊँ ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती यहि विधि लाड लडाऊँ ॥ हरषि निरखि हरिके गुण गाऊँ हाथन ताल बजाऊँ ॥ भनत नामदेव सुनहु त्रिलोचन यहि विधि दास कहाऊँ ॥ १ ॥

अयोध्या आज सनाथ भई है ॥टेक॥ नृप दशरथ गृह राम जन्म लियो रत्नन भूमि छई है ॥ हीरा लाल लगे पलनामें झूलत राम सही है ॥ कञ्चनमहल बने दशरथके सरयू निकट बही है ॥ राजा दशरथगृह नौबत बाजै लंका खबर भई है ॥ सब सखियन मिलि मङ्गल गाये गावत राग सही है ॥ दशरथजीके चार पुत्र हैं लक्ष्मण रामजी सही है ॥ गुरु वसिष्ठ कुलपूज्य हमारे मांगत दान सही है ॥ तुलसिदास धनि धनि कौशल्या मनसा सुफल भई है ॥२॥

अँगनामें खेलत चारों भाई श्री अ० ॥ टेक ॥ राजा दशरथजीके चारि पुत्र हैं चारों कुँवर कन्हाई ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन शोभा वरणि न जाई ॥ चारि रतनको खेल रच्यो है फूलन गेंद बनाई ॥ तीन लोककी सकल संपदा अवधपुरी चलि आई ॥ ठौर ठौर मुनिजनके आसन बैठे ध्यान लगाई ॥ नृप दशरथगृह नौबत बाजै घर घर बजत बधाई ॥ कल्पवृक्ष तले रत्नसिंहासन जहँ बैठे रघुराई ॥ मात कौशिला करत आरती आनँद उर न

समाई ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई ॥ क्रीटमुकुट कर धनुष विराजै दशरथ सुत रघुराई ॥ सरयू तीर अयोध्या नगरी अपने हाथ बनाई ॥ तुलसीदास धन्य कौशल्या भाग्य बड़े जिन पाई ॥ ३ ॥

अँगनामें खेलत दोनों भाई ॥ टेक ॥ श्रीहलधर जीने खेल रचो है वर्णत शेष लजाई ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता चढि विमान तहँ आई ॥ आस पास सब ग्वालमंडली बीचमें खेल बनाई ॥ एक ओर बलदाऊ भैया इक लँग कुँवर कन्हाई ॥ इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीचमें यमुना आई ॥ स्वर्गलोक पाताल लोककी संपति तहँ चलि आई ॥ नित उत्साह होत ब्रजमंडल निगम नेति यश गाई ॥ गोकुलदास धन्य ब्रज जीवन भाग्य बड़ो जिन पाई ॥ ४ ॥

बोलनकी बलि जैहौं लाल इन बोलनकी ॥ टेक ॥ छोटे २ चरण अधरतल सुंदर ठुमकि २ चलि जैहौं ॥ कटि किंकिणी पग नूपुर बाजैं मधुरे शब्द सुनै हौं ॥ सब बालक रघुवर छबि निरखत प्रेमप्रीति लपटैहौं ॥ घूंघुरवारे अलक वदनपर मंद हसन मुख देहौं ॥ जाको ध्यान धरत ब्रह्मादिक शारद गान करैहौं॥गोद राखि पय पान करावत दशरथ लेत बलैयाहौं ॥ यह छबि देखि मगन भये सुर मुनि रवि शशि कोटि लजै हौं ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गैहौं ॥ अग्रदास भजु दशरथनंदन दिन प्रति दिन अधिकैहौं ॥ ५ ॥

श्रीराघवजीको दूध पियावत रानी ॥ टेक ॥ कौशल्या केकई सुमित्रा ढिग ढिग बैठि सयानी ॥ कौतुक करत ललित सुत चारों बोलत तोतरि बानी ॥ लेत मँगाइ जोइ मन भावै मातु देत हित मानी ॥ अवधनारि स्वारथरत आवैं रघुवररूप लुभानी ॥ रामसेवकके प्रभु सुखसागर गावत सुर पुर वानी ॥ ६ ॥

अयोध्या विमल पुरी हम जानी ॥ टेक ॥ विमला पुरी विमल सरयूजल विमल राम रजधानी ॥ विविध धाम मणि श्याम अरुणसित हेमपंक लपटानी ॥ हरित मणिनके खंभ जगम-गत हेरत दिशा भुलानी ॥ तोरण केतु पताक ध्यजा धन गलियन कोटन बानी ॥ सुरतरु कामधेनु चिंतामणि मनवांछित फलदानी ॥ भूपभवन सब भांति अलौकिक केहि विधि जात बखानी ॥ मरकत मणिमय अजिर सुहावन बिहरत सारँगपानी ॥ फूल फूल सरयूके सोहैं सोहै सरित वर पानी ॥ मानहुँ विपुल बसे सरयूतट हरि रमा शंभु भवानी ॥ गुंजत मधुर रागरसमाते काहे स्वाद बखानी ॥ मानहुँ राम रसिक रस छाके गद्गद रसरति सानी ॥ सर सलिल सुधा शीतल शुचि सकल सुखनकी खानी ॥ मानहुँ भक्ति धार भवतरणी प्रभुपुर निकट बहानी ॥ सहि न सकत तरु भार फूल फल, लूम भूमि नियरानी ॥ देत बुलाय पथिक जनु कर गहि देखत देह भुलानी ॥ केकी हंस कपोत कोकिला मिलि झुंडन हर्षानी ॥ निरखि नारि नर अवध नगरके मोहत रूप

लुभानी ॥ को कहि सकै रूप अति सुंदर उपमा सुर मुनि शेष बखानी ॥ धनि सरयू साकेत नगर अरु धनि सेवक सिवकानी ॥ धन्य धन्य हैं दशरथ राजा धन्य कौशिला रानी ॥ कृपानिवास विमल कंचनपुरि गुंजत सब मनमानी ॥ बिहरत सरयू पुलिन नलिन मिलि लाल लली गहि पानी ॥ ७ ॥

कहन लागे रघुवर मैया मैया ॥ टेक ॥ राजा दशरथ जीको बाबा बाबा लक्ष्मणजीको भैया ॥ मातु कौशल्या भागि सराहै मेरे सुत बलि जैया ॥ दूरि खेलन जनि जावो प्यारे ललना खेलहु घर अँगनैया ॥ रंगमहल चढि टेरै कौशिला ले ले नाम रमैया ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सोहैया ॥ खेलत कौशल्या करत आरती आनँद उर न समैया ॥ खेलत फिरत सकल सरयूतट करलिये बाण धनुहियाँ ॥ राम ललाकी यह छबि ऊपर तुलसिदास बलि जैया ॥ ८ ॥

कहन लागे मोहन मैया मैया ॥ टेक ॥ नंदराय को बाबा बाबा बलदाऊको भैया ॥ मातु यशोदा भागि सराहैं मैं मोहन बलि जैया दूर खेलन जनि जावो प्यारे ललना मारै काहूकी गैया ॥ सिंहपौरि चढि टेरे यशोदा ले ले नाम कन्हैया ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सोहैया ॥ मातु यशोदा करत आरती आनँद उर न समैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया ॥

मदनमोहनकी छबिके ऊपर सूरदास बलि जैया ॥ ९ ॥

देखो सखि राजत अवधविहारी ॥ टेक ॥ मणिमंडपमें रत्न-सिंहासन कोटि भानु उजियारी ॥ रत्नजड़ित शिर क्रीट बिराजै कुंडलकी छबि न्यारी॥ भाल विशाल तिलक अति सोहै तीन लोक उजियारी ॥ भृकुटि विशाल मनोहर नासा चन्द्र वदन द्युतिकारी ॥ राजिव लोचनकी अतिशोभा मन्द हँसनि अति प्यारी ॥ उर मणिमाल हार मुक्ताछबि मन हर्षत उजियारी ॥ बहु विशाल विभूषण सोहैं रुचिर पीतांबर धारी॥ रुमक झुमक पग नूपुर बाजैं मोहत मदन निहारी ॥ कृपानिवास कहाँ लगि वरणौं शोभासिंधु खरारी ॥ १० ॥

बागहुते आवत राजदुलारो ॥ टेक ॥ फूलन कलँगी फूलन जामा फूलन अरु गल हारो ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर धारो ॥ नीले राम सुरँगरँग लक्ष्मण आवत अवध मँझारो ॥ अवधपुरी नर नारि निहारैं झुकि झुकि करत जुहारो ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन कोटि काम छबिवारो ॥ तुलसीदास धन्य कौशल्या आरति साज उतारो ॥ ११ ॥

वनसे आवत अवधबिहारी ॥ टेक ॥ रघुवंशी बालक सँग लीन्हें गज रथकी असवारी॥ चीरा कलित ललित जरकसको कर गहि कंज सँवारी ॥ श्याम वदन द्युति अधिक जगमगे पीतांबर छबि प्यारी ॥ भाथा तूण ललित कटि ऊपर क्रीट मुकुट छबि न्यारी ॥ वनसे आवत तुरंग नचावत मोहैं सुर

नर नारी ॥ बाज कुही बहु जाति संग लिये दारुण जीव सिकारी ।। खेलत फिरत विपिन कुंजन वन संग सखा लिये सारी ।। मात कौशिला करत आरती बाल अली बलिहारी ।। १२ ॥

देखो सखि आवत रासबिहारी ।। टेक ।। सरयूतीर शृंगार विपिनमें अति अनूप छबि भारी ॥ संग सखी सोहैं अलबेली बनी ठनी छबि न्यारी ॥ सुमन शृङ्गार लियो नख शिखलौं निज कर श्याम सँवारी ॥ प्रभु आगे सखि खेलत आवें फूलन गेंद उछारी ।। झुकि झुकि लेत परस्पर फेंकत अति आनँद पिय प्यारी ॥ सीताराम मनोहर जोरी चितवनकी बलिहारी ॥ कुण्डल अलकन झलक बुलाकी दलकत हृदय हमारी ॥ आये दंपति रामचरण सखि भूषण वसन उतारी ॥ नख शिख मणि भूषण शृङ्गार करि सिंहासन बैठारी ।। १३ ॥

श्री राघवजीकी आजु सजी असवारी ।। टेक ॥ दशरथ राजकुमार लाडिले शोभा न्यारी न्यारी ।। सजे तुरंग रंग-राजनके भीर गजेंद्रन भारी ॥ जगमग झूल जरीकी सोहै रतन जडाव अमारी ॥ घूम गरजसे भरतजी आये श्रीरघुनाथ निहारी ॥ होत कुलाहल लखन लालको रिपुसूदन छबि न्यारी ॥ हर्षें देव सुमन बहु वर्षें जयजयकार उचारी ॥ ब्रह्मादिक दर्शनको आये मोहत वदन निहारी ॥ रवि शशि कोटि बदनकी शोभा चन्द्रकला उजियारी ॥ अग्रअली प्रभुकी छबि निरखे चरणकमल बलिहारी ॥ १४ ॥

भजु मन जानकि जीवन रामा ॥ टेक ॥ सुषमा सदन सकल सुखसागर मधुर मनोहर श्यामा ॥ काम कोटि शोभा तनु बिलसै निरखत लाजै कामा ॥ वाम अंग सोहत सिय सुंदरि दक्षिण लखन ललामा ॥ मन क्रम वचन जासु उर अंतर सिय प्रिय प्रेम न जामा ॥ सो शिर धुनि पछिताय निरंतर दुख पावै परिणामा ॥ सोइ मम स्वामी सेवत जेहि हनुमत जासु जपत हरनामा ॥ बीन बजाय गाय यश नारद लहत सकल विश्रामा ॥ कर सरोजको छाँह जो पावै सो सब विधि सुखधामा ॥ सकल पाप त्रयताप नशावै तेहि लागत नहिं धामा ॥ सब लायक सुखदायक मेरो सोइ सुखसागर रामा ॥ रामकृपा निरखत छबि जाकी चेरी भई बिनु दामा ॥ १५ ॥

श्रीरघुनाथ दयानिधि दानी ॥ टेक ॥ सिय पियप्रेम सकल सुखदायक जप तप योग कहानी ॥ कोउ जप योग करत सहि संकट कोइ मुनिवर विज्ञानी ॥ कोउ तप तीरथ करि सुख चाहत कोउ सुकर्म अभिमानी ॥ कारण रहित कृपालु सुयश सुनि रामकृपा सखि स्यानी ॥ सकल भरोस विहाय कपट तजि सिय पिय हाथ बिकानी ॥ १६ ॥

भजु मन सरयू अवधबिहारी ॥ टेक ॥ संग सखा सरयू-तट विहरैं सुंदर अवधबिहारी ॥ नील कलेवर पीत झँगु-लिया बाहु सघन बिसतारे ॥ घूंघरवारे अलक वदनपर मानहुँ भँवर गुँजारे ॥ कम्बुकंठ अति चिबुक सोहाये मुखहि

मदन छबि छाये ॥ कटि किंकिणि नूपुर छबि राजै भृगुलक्षण छबि छाये ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहावै ॥ शेष सहस मुख रटत निरंतर वाको पार न पावैं ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गावैं ॥ रामानँद प्रभुकी छबि निरखैं चरणकमल चित लावैं ॥१७॥

मन रे तू सरयूतीर करु बासा ॥ टेक ॥ मानसरोवर प्रगट बशीटी अवधपुरी परकासा ॥ जहँ बिहरैं रघुनाथ रमापति जगवल्लभ सुखरासा ॥ जाके दर्श पर्श सुख उपजै कलिमल हो सब नासा ॥ निरमल जल अस्नान पान करु मेटत यमके त्रासा ॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावैं सेवत हरिके दासा ॥ रामघाट अस्नान करनको अन्त रामपुर वासा॥श्रीरघुनाथ शरण मोहिं लीजै गावत तुलसीदासा ॥१८॥

कहन लगे रघुवर तोतरि बाता ॥टेक॥ श्रीमहराज कहत दशरथसों कौशल्यासों माता॥ सुनि सुनि वचन प्रेम परिपूरण आनँद उर न समाता ॥ कुंचित केश लसत घुँघुरारे श्याम सुंदर मृदु गाता ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन छबि वरणी नहिं जाता ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत चारों भ्राता ॥ विहरत सरयूतीर सखन सँग भक्तजनन सुख दाता ॥ लख चौरासी जीव चराचर सबके गुरु पितु माता ॥ जन रघुवीर अवधपुर प्रगटे दीनजननके त्राता ॥ १९ ॥

बसी छबि नयनन रामजी ललाकी ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल कोटि भानु छबि जनकललाकी ॥ धनुष

बाण कर कंकण सोहत पीत लसत अति बांकी ॥ लखि लखि श्याम बदनकी शोभा रतिपति गति मति थाकी ॥ कहै रघुवीरदास त्रिभुवनमें उपमा दीजै काकी ॥ २० ॥

रुनझुन रुनझुन रामजी लला आवैं हाथ धनुष कर बाण चलावैं ॥ टेक ॥ कनक चौक बिच खेलत ललना संग सखा बहु बाल सुहावैं ॥ क्रीट मुकुट पर कलँगी राजै मधुर हास मनमोद बढावैं ॥ श्याम बदनपर पीत झँगुलियां अरुणचरण वनमाल सुहावैं ॥ उभय भुजापर शारंग राजै, कटिपर किंकिणि अधिक सुहावै ॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा राम ललाको टेरि बुलावै ॥ भरत शत्रुहन सँग लिये ललना लक्ष्मण कुँव-रजी चँवर ढुरावैं ॥ मातु कौशल्या करत आरती सुर नर मुनि यश गावैं ॥ ब्रह्मदास लला माधुरि मूरति तीन लोकमें नाच नचावैं ॥ २१ ॥

श्री आवत सारंगपाणी श्रीवनहुसे आ० ॥ टेक ॥ संग सखा सब सोहत नीके बहुविधि शोभा खानी ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन रूपराशि गुणखानी ॥ निरखि मधुर लखिये लखिकै कोउ सखि सब परम सयानी ॥ हाथ पात फल फूल लिये सब सुमन गले गुथयानी ॥ होत कोलाहल सुनि न परत कछु बात जात नहिं जानी ॥ तुरंग नचावत आवत छबिसों सैन्य अधिक अभिरामी ॥ संतदास मृगराज पकड़ प्रभु आये बडे समानी ॥ २२ ॥

इति गुरुवारकी गौरी समाप्त

अथ शुक्रवारकी गौरी

भजु मन रामानुज सुखदाई ॥ टेक ॥ श्रीफणिपति पूरण पुरुषोत्तम संतनके सुखदाई ॥ श्री रघुवीर चरण अनुरागी दश-रथ सुवन सुहाई ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल करमें धनुष सुहाई ॥ तरकस कटि पीतांबर राजे मृगमद तिलक सुहाई ॥ अरुण कंज लोचन अति राजैं भृकुटी विकट सुहाई चारु कपोल नासिका सुंदर अलकन भँवर लुभाई ॥ असुर सँहारन भक्त उधारन सुरनर मुनि सुखदाई ॥ युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध श्रीलक्ष्मण मेघनाद गति पाई ॥ जाको नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुखदाई ॥ रामचरणपर करी कृपा अब देहु भक्ति सुखदाई ॥ १ ॥

भजो मन लखन चरण सुखदाई ॥ टेक ॥ श्रीफणपति अवतार लियो है संतनके हित लाई ॥ सूर्यवंश परशंसत सुर मुनि वेद पुराणन गाई ॥ रघुकुलमणि परकाश दिवा-कर तिनके अनुज कहाई ॥ गौर किशोर वदन अति सुंदर भृकुटी विकट सुहाई ॥ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर कांधे धनुष सुहाई ॥ शिरपर क्रीट श्रवण मणिकुण्डल मेचक अधिक बनाई ॥ भाल विशाल तिलक शिर सोहै भृकुटी विकट सुहाई ॥ शारंग धनुष बाण कर राजै शोभा वरणि न जाई॥ फूलनकी वनमाल विराजै सब अंग सुन्दरताई ॥ तीनलोक औ भुवन चतुर्दश जानत सब प्रभुताई ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं नेति नेति कह गाई ॥ असुर निकंदन हो दुख

भंजन है जग विदित बड़ाई ॥ सरयूदास पर किरपा कीजै देहु भक्ति सुखदाई ॥ २ ॥

श्रीबालाजीको आजु बनो रथ नीको श्री० ॥ टेक ॥ चोबा चंदन और अरगज मोतियन चौक पुराये ॥ बंदन-बारे बांधे रुचि रुचि बिच बिच दल तुलसीके ॥ चारौं खंभ बने कंचनके ऊपर काम जरीको ॥ रत्नसिंहासन आपु विराजैं मुकुट धरे तुलसीको ॥ कम्बुकंठ कौस्तुभमणि राजै उर वनमाल सुहाई ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं सन्मुख सुत अंजनीको ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गावैं ॥ जन हाथीराम वेंकटके शरणै मन मोहत सबहीको ॥ ३ ॥

श्रीबालाजीकी आजु बनी छबि भारी ॥ टेक ॥ त्रिप-तीमें सीताराम विराजैं शेषनागकी छाया ॥ लक्ष्मी कमला चरण पलोटैं छबि नहिं जात बखानी ॥ शेषाचलपर आपु विराजैं सनकादिक ऋषि चारी ॥ आस पास गिरिवरकी शोभा बीचमें कोयल भारी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहाई ॥ बाहु विशाल बिभूषण सोहैं कर गहि शारँग धारी ॥ चंदन चर्चित अंग मनोहर भृगुलक्षण छबि छाई ॥ जन हाथीराम वेंकट शरणै गावत सुरपुर नारी ॥ ४ ॥

श्रीलक्ष्मण साँचे दीनदयाला ॥ टेक ॥ शेषाचलपर बनो देवाला कंचन कलश सुहाई ॥ त्रिपतीमें सीताराम विराजैं चौकी लक्ष्मण वाला ॥ रामानुज अवतार मनोहर नृप दशरथके लाला ॥ इजय विजय दोउ पौंरिया विराजैं विजय घंट झनकारा ॥ आठ पहर फूलनके जामा ऊपर मौज दुशाला ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वैजंती-माला ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे बांके नयन विशाला ॥ आशानंद कहै कर जोरे मिटि गये दुःख जंजाला ॥ ५ ॥

देखो माइ नवल कुँवर दशरथको ॥ टेक ॥ मणि मय जटित क्रीट अतिसुंदर शिरमहँ केसर टीको ॥ अम्बुज नयन नासिका सुंदर कुण्डल झलकत नीको ॥ मणिमय जटित हार अति सुंदर हीरा माणिक नीको ॥ कलित ललित जरकसके जामा आभूषण पुष्पनको ॥ उर सोहै मोतिनकी माला भृगुलक्षण छबि नीको ॥ कर कंकण बाजू बँद सोहैं धनुष विराजत नीको ॥ कटि तूणीर बाण कर राजे कमल फिरावत नीको ॥ आशानंद कहै कर जोरे मन मोहत सबहीको ॥ ६ ॥

देखो सखी लखन लला धनुधारी ॥ टेक ॥ दशरथनंदन चढे तुरंगन गज रथकी असवारी ॥ हीरा कलित ललित जर-कसको जामा कर गहि कंज सुधारी ॥ गौर वरण द्युति जोति जगमगी कोटि मदन छबि वारी ॥ भाथा तूण ललित कटि ऊपर पीताम्बर छबि प्यारी ॥ वनहुँसे आवत

तुरंग नचावत मोहे पुर नर नारी ॥ कूही स्वाज श्वान बहु जातिन सँग लिये जीव सिकारी ॥ खेलत फिरत विपिन कुंजनमें संग सखा लिये सारी ॥ मातु कौशल्या करत आरती बाल अली बलिहारी ॥ ७ ॥

देखो सखी दशरथ राजदुलारे ॥ टेक ॥ गोरे बरण वदन अति सुन्दर पीताम्बर पटवारे ॥ हीरा लाल जवाहिर मोती मणिमाला उर डारे ॥ सिर चैतनिया टोपी सोहै कुञ्चित केश सँवारे ।। श्रवणन कुण्डल अति छबि छावै मनहुँ गगन बिच तारे ॥ करमें बाजूबंद विराजैं शारंग बाण सुधारे ॥ नवल सखा तब सँगमें खेलन चले जात हैं सकल सिकारे ॥ चढे तुरंगन चले उमंगन पुर नर नारि निहारे ॥ रामसखा पुर बाहर ठाढे दर्शन दे प्रभु प्यारे ॥ ८ ॥

सुनो मन राम शरण हितकारी ॥ टेक ॥ भजन भरोसा नहिं हिय मोरे पातक बल मोहिं भारी ॥ पाप करत गणिका भइ पावन कहत पुराण पुकारी ॥ चढि विमान गइ गगन अहल्या अस्तुति करत तुम्हारी ॥ व्याध अजामिल गीध तरे सब रहे सकल अघकारी ॥ पतितनकी सब बात सुधारी विदित साखि यह सारी ॥ ज्ञान विराग योग जप साधन मोरी सुरति विसारी ॥ लखि आचरण शोच हिय भारी सब प्रकार मैं हारी ॥ मम हित विनय करत अति पातक भयभव विकल बिचारी ॥ पातक मोर मनावत तोहिं कहँ पातकको बलिहारी ॥ पतित पुनीत शरण सुख दायक रघुपति अवधविहारी ॥ वेदविदित निज विरद सम्हारहु राम कृपा अघ टारी ॥९॥

सुनो मन दीन दुसह दुखहारी ॥ टेक ॥ तनक भरोसा मो हिय नाहीं निज आचरण निहारी ॥ कहत सिराहिं न पातक मोरे मैं अतिदीन दुखारी ॥ दोषकोश अघ अवगुण राजा सबविधि भजन भिखारी ॥ निज अपराध विपति अति दारुण कहों कहा विस्तारी ॥ रघुनंदन उर अंतर-यामी जानत पीर हमारी ॥ आगम निगम पुराण बखानत परम कृपालु खरारी ॥ शरणसुखद प्रणतारत भंजन कहत प्रचारि प्रचारी ॥ त्रिभुवनतारण अधम उधारण निरखहु नयन उघारी ॥ बिरद लाज राखहु करि मोपर करुणा निज अनुहारी ॥ तजि विलंब लखि आरति मोरी सब अपराध बिसारी ॥ तार सकहु तो तारहु रघुवर रामकृपा हिय धारी ॥ १० ॥

सुनु मन शरण सुखद हितकारी ॥ टेक ॥ रघुनं-दन रघुपति रघुराई दशरथ अजिर बिहारी ॥ नाथ हाथ हित अनहित मोरा मोकहँ आस तुम्हारी ॥ तुम तजि अपर देव नहिं जानों पुनि पुनि कहौं पुकारी ॥ तुम बिनु त्रिभुवन कौन कहावत बिनु कारण हितकारी ॥ मोसम कहहु कहा केहि भावत कूर कुटिल कुविचारी ॥ यद्यपि पोच शोच हिय नाहीं सुनहुँ कृपालु खरारी ॥ सिय स्वामिन सिय पिय मम स्वामी सोइ अवलम्ब विचारी ॥ सजि सरोष निज सेन प्रबल अति कठिन कृपाण सम्हारी ॥ कलि कराल चाहत मोहिं घालन दशन पीसि ललकारी ॥ शरण

सुखद करुणानिधि दोऊ रघुपति जनक दुलारी ।। रामकृपा क्षण क्षण गुण गावत कलि भयभीत बिसारी ।। ११ ।।

सुनहु सिय राम विपति अतिमोरी ।। टेक ।। संतनगुण भावत हिय मोरे मैं अब अवगुण बोरी ।। आरत वचन कहौं कर जोरे सत्य शपथ करि तोरी ।। अपर भरोस नहिं हिय मोरे नाथ हाथ गति मोरी ।। सब विधि मैं सिय पिय सियचेरी मम हिय आश न थोरी ।। जानकिजीवन जीवन मोरे जानकि जनककिशोरी ।। रामकृपा माँगत रघुनंदन सजल नयन कर जोरी ।। यह वर देहु विनय बल मोकहँ जन्म जन्म मैं तोरी ।। १२ ।।

आज बनी छबि भारी श्रीबालाजीकी ।। टेक ।। रत्न सिंहासन आप विराजत देत है शोभा प्यारी ।। क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल मुतियन छबि भारी ।। वैजन्तीमाला अति सोहैं पीताम्बर कटि न्यारी ।। किंकिणि देखि अधिक मन मोहैं क्षुद्र घंटिका भारी ।। नूपुरधुनि सुनि मुनिमन मोहै ध्यान धरत त्रिपुरारी ।। यह छबि देखि सुमन सुर वर्षैं कहँ लगि वरणौं प्यारी ।। जयजयकार करत शोभापर हाथीराम बलिहारी ।। १३ ।।

ऐसे राम दीनहितकारी ।।टेक।। अति कोमल करुणानिधान प्रभु बिनुकारण उपकारी ।। साधन हीन दीन निज अघवश शिला भई मुनिनारी ।। गृहते गवनि परसि पद पावन घोर शापते तारी ।। हिंसारत निषाद तामसवश पशु-

समान वनचारी ॥ भेंटो हृदय लगाय प्रेमवश नहिं कुल जाति विचारी ॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपतिसुत कहि न जाय अति भारी ॥ सकल लोक अवलोक कहत सो शरण भये भय टारी ॥ विहँग योनि आमिष अहारवश गिद्ध कवन व्रतधारी ॥ जनकसमान किया ताकी निज कर सब बात सँवारी ॥ अधम जाति शेवरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी॥जानि प्रीति दै दर्श कृपानिधि सो रघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी ॥ सहि न सके दारुण दुख जनको हत्यो बालि सहि गारी ॥ रिपुको बंधु बिभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी ॥ शरण गये आगे होइ लीन्हों भेंट्यो भुजा पसारी ॥ अशुभ होइ जिन्हके सुमिरनते बानर ऋक्ष विकारी ॥ वेदविदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँ लगि कहौं दीन अगणित मैं जिन जिनकी तुम विपति निवारी॥ कलिमल ग्रसि दास तुलसीपर काहे कृपा बिसारी ॥ १४॥

बोलत मधुरी बानी रघुवर बोलत० ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल छबि नहिं जात बखानी ॥ हम सरयू जल भरन जात रहीं बीच राम रससानी ॥ बान कमानके लोचन मारत तकि तकि तीरन तानी ॥ घूंघट मेरो छूट गयो है लाज छोंडि मुसकानी ॥ अपर नारि नर मिले अवधके ये सब फिरत हैं सानी ॥ लोक कुटुम अब मोहिं न भावैं दशरथसुत रससानी ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन

दशरथ राजदुलारी ॥ रामसखे कौशलपुर जीवन रघुवर हाथ बिकानी ॥ १५ ॥

अवधपुरी बस भाई मनरे तू ॥ टेक ॥ सप्तपुरीमें श्रेष्ठ अजोध्या तहँ बैठे रघुराई ॥ सरयू पापनकी है हरनी आये वसिष्ठजी लाई ॥ जाके दर्शन पर्श अघ नाशैं वेद पुराण बखानी ॥ अवधपुरी देवनको दुर्लभ अपने हाथ बनाई ॥ ब्रह्मा शिव सनकादि देवता सेवत तिन मन लाई ॥ वाल्मीकि नारद घटयोनी सीख सुनी मन लाई ॥ कीट पतंग सुनत गति पावैं रामरूप होइ जाई ॥ स्वर्गलोक अपवर्ग बिभूती अवधपुरी चलि आई ॥ सह लक्ष्मण रघुनाथ जानकी तहँ बिहरत सब भाई ॥ अवधपुरीको ध्यान धर-तही भक्ति मुक्ति फल पाई ॥ चारि खानि जगजीव चराचर अवध बसे गति पाई ॥ रामदास भजो नवल सियावर भव सागर मिट जाई ॥ १६ ॥

जिनके प्रिय न राम वैदेही ॥ टेक ॥ तजिये तिनहिं कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥ तजेउ पिता प्रह्लाद विभीषण बन्धु भरत महतारी ॥ बलि गुरु तजेउ कंत ब्रज-वनिता भये जग मंगलकारी ॥ नातो नेह रामसों कीजै शील सनेह जहांलौं ॥ अंजन कहा आंखि जो फूटै बहुतक कही कहांलौं ॥ सोइ सज्जन सोइ हितू हमारो प्राणनहूते प्यारो ॥ जा सँग बढत सनेह रामपद तुलसी मतो हमारो ॥ १७ ॥

भजु मन सरयू अवधविहारी ।। टेक ।। जाको नाम लेत अघ नाशत आवागमन निवारी ।। सरयूतीर कल्पतरु छैयां जहँ सिंहासन भारी ।। लखि प्रकाश रविरथ मग थाको इक-टक रहे निहारी ।। बैठे राम वाम सिय सोहैं अति शृँगार शुभकारी ।। सीताराम मनोहर जोरी चितवनकी बलिहारी ।। कुण्डल झलकत झलक बुलाकनि दमकत हृदय हमारी ।। सुरँगी टोपी शिरपर सोहै कच घुंघरवारी ।। भाल विशाल तिलक शिर सोहै श्रवणन कुण्डल भारी ।। नखशिखसे वनमाल विराजत कौस्तुभमणि शुभकारी ।। ता ऊपर गुंजावलि कंठा भृगु लक्षण शुभकारी ।। क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल कर स्वरूप उपकारी ।। शारँग धनुष बाण कर राजै नरवर छबि वपुधारी ।। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक विनती करत न्यारी न्यारी ।। रामदास युगल छबि निरखत चरण-कमल बलिहारी ।। १८ ।।

इति शुक्रवारकी गौरी समाप्त

अथ शनिवारकी गौरी

ऐसो सिय रघुवीर भरोसो ।। टेक ।। वारि न बोरि सकै प्रह्लादहिं पावक नाहिं जरो सो ।। गिरि ऊपरसे डारि दियो है भूमि परे उबरो सो ।। हिरनाकुश प्रहलाद भक्तसों हठि हठि वैर करो सो ।। मारा चहत दास नरहरिको आपहि दुष्ट मरो सो ।। लंका दह्यो अंजनीनंदन देखत पुर सगरो

सो ॥ ताके मध्य विभीषण को गृह रामकृपा उबरो सो ॥ रावणसभा कठिन प्रण अंगद हिय धरि हरि सुमिरो सो ॥ मेघनादसे कोटिन योधा टारे पग न टरो सो ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन राजसभा पकरो सो ॥ खैंचत भुज बल थाको नेक न अँग उघरो सो ॥ महाभारत भरुहीके अंडा छोहिनि दल बहुरो सो ॥ रामनाम जब पंछी टेरो घंटा टूट परो सो ॥ मीराके मारनेके कारन दीन्हों जहर खरो सो । रामकृपासों अमृत होइ गयो हर्षित पान करो सो ॥ गज अरु ग्राह लड़े जल भीतर गजको ग्राह गहो सो ॥ गरुड छोंडि हरि प्यादे धाये डूबत गज उबरो सो ॥ विप्र सुदामा फिरत दुखित होइ कबहुँ न उदर भरो सो ॥ रामकृपा कंचन गृह पाये हय गज वाजि खरो सो ॥ तुलसिदास विश्वास राम पद जो नर नारि करो सो ॥ और प्रभाव कहांलगि बरणौं जेहि यमराज डरो सो ॥ १ ॥

ऐसो राधा कृष्ण भरोसो ॥ टेक ॥ पाला आनि पऱ्यो व्रज ऊपर इन्द्रने कोप करो सो ॥ सात दिवस गिरि नखपर धारे भूमिको भार हरो सो ॥ दावानलको पान किये है वत्सासुर जारो सो ॥ अघासुर मारि बकासुर माऱ्यो वृषभासुर मारो सो ॥ संग सखा सब कहत कृष्णसों सबको दुःख हरो सो ॥ पैठि पताल कालिया नाथ्यो फण पर नृत्य करो सो ॥ अंतर्ध्यान भये गोपिनमें राधा ध्यान धरो सो ॥ व्रजवनितनको संग छोंड़िकै यदुवर नाम धरो सो ॥

दुःशासन बलवंत जानिकै द्रौपदि चीर गहो सो ।। कृष्ण २ कहि द्रुपदि पुकारै अंबर जात बढो सो ।। गजकी टेर सुनी हरि शरणै वाहन छांडि चलो सो ।। विप्र सुदामा हरिपद भेंटेउ कंचन महल खरो सो ।। पांडवके मुख हरबे कारण कौरव नाश करो सो ।। कहत कबीर सुनो भाई साधो निर्भय ध्यान धरो सो ।। २ ।।

प्रगटे नरहरि जनसुखदायक ।। टेक ।। खंभ फोरि अद्-भुत वपु धारे किये सकल सुर पायक ।। कटकट बाजत उग्र दँतावरि भाजि गये सब पायक।। लियो गोद प्रह्लाद भक्तको भक्तवत्सल खलघायक ।। उदर बिदारि पहिरि अंत्रावलि सिंहनाद करि भारी।। मथत सिंधु शोभित मराल इव दधिके कुण्ड मचावत ।। भव भंजन भंजन महिभारा प्रणतारति भव हंता ।। शांतिस्वरूप गोविंद चरण लखि चारि पदारथ पावत।। सुर गंधर्व यक्ष किन्नर मुनि जयजयकार उचारत ।। तुलसीदास आस नरहरिकी भक्तिदान वर पावत ।। ३ ।।

जिनके राम सदा रखवारे ।। टेक ।। जलसे राखि अन-लहुसे राखे गिरिते गिरत उबारे ।। खंब फारि हिरनाकुश मारे नखसे उदर बिदारे ।। रावण रारि करी हरिजनसे रण चढाय तेहि मारे ।। नहिं राखेउ कुलदीप धरनको तिलक विभीषण सारे ।। पाराशर दुर्वासा ऋषिको चक्र सुदर्शन जारे ।। नहिं राखो हरिजनको द्रोही दासहि चक्र निवारे।। कंस कुमति कीन्हों हरिजनसों कर गहि कंस पछारे ।।

कुंतीपुत्र बंधुभय व्याकुल आपुहि जाय निवारे ।। जहँ जहँ भीर परी संतनके तहँ तहँ आपु सिधारे ।। तुलसीदास आस रघुवरकी दारुण विपति निवारे ।। ४ ।।

श्रीराघवजीकी भक्ति सदा सुखदाई ।। टेक ।। सदा सुलभ सुखहित चिंतामणि वेद पुराण बखानी।।महाराज रघुवर दशरथके जनकसुता महरानी ।। सेवत संत विमल यश गावत अवधपुरी रजधानी ।। सुन्दर श्याम राम रघुनंदन राजत अवध बिहारी ।। क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल कर गहि कमल सुधारी ।। शिव नारद प्रह्लाद बिभीषण हनूमान् उर आनी।। कृपाराम भजु जानकिवल्लभ संत हृदय जेहि आनी ।। ५ ।।

ऐसी भक्ति मोहिं भावे ऊधोजी ।। टेक ।। सर्वस त्यागि मगन होय नाचै जन्म कर्म गुण गावै ।। कथनी कथै निरंतर मेरी चरणकमल चित लावै ।। मुख है मुरली नैन जलधारा करसों ताल बजावै ।। जहँ जहँ चरण देत जन मेरो सकल तीर्थ चलि आवैं ।। उनके पदरज अंग लगावै कोटि जन्म सुख पावै ।। वाकी मूरति मो हृदय बसति है मेरी सुरति लगावै ।। बलि बलि जाऊं श्रीमुखखानी सूरदास बलि जावै ।। ६ ।।

सर्वस भगवद्गीता हमारे धन सर्व० ।। टेक ।। गाय गाय रसनाको रिझाऊँ हरिजन हरिरस पीता ।। जो नरगीता पठन करत हैं जगमें रहत उजीता ।। उनको कहा मुक्तिको संशय तारे कुटुम सहीता ।। श्रीमुख वचन सुनत कुंतीसुत

मन आयो परतीता ।। या गीताके पराक्रमहिंसों दुर्योधन दल जीता ।। तीन लोक अरु भुवन चतुर्दश श्रुति पुराण मत गीता ।। हृषीकेश स्वामी अघमोचन सद्गुरु दियो पलीता ।। ७ ।।

जब तब राम नाम निस्तारे ।। टेक ।। साठि घरीमें एक घरी भज सोउ सकल अघ जारो ।। काशीपुरी वसत गौरी-पति निशि दिन नाम उचारो ।। कीटपतंग सुनत गति पाये रघुकुल यश विस्तारो ।। अजामील गणिका गृहवासी सुतहित नाम उचारो ।। गज अरु गीध तरे हरि सुमिरत महिमा व्यास बखाने ।। परम पुनीत नाम रघुवरको हरिजन हरिव्रत धारे ।। नामदेव सोइ भक्तिशिरोमणि चितसे पल न विसारे ।। ८ ।।

निरखत जात जटायू रथको ।। नि० ।। टेक ।। विप्र रूप जब धरेउ निशाचर भिक्षा माँगन जाई ।। लेकर भिक्षा निकसि जानकी रथपर लेत चढाई ।। करत विलाप जानकी बोली शरण शरण रघुराई ।। है कोइ योधा रामादलमें हमको लेय छुड़ाई ।। इतना सुनि खगपति उठि धाये हाँक देत नियराई ।। काकी तिरिया काह नाम है कौन हरे लिये जाई ।। सूर्यवंश राजा दशरथनन्दन उनके सुत रघुराई ।। तिनकी भार्या नाम जानकी हरे निशाचर जाई ।। इतना सुनत खगपतिहि धायो राख्यो रथ बिलमाई ।। जान न पैहै महाजड़ मूरख जो हरि होत सहाई ।। चोंचन मारि

महायुध कीन्हों रथसे दियो गिराई अग्निबाण जब हनेउ निशाचर धरणि गिरेउ मुरझाई ॥ देत अशीश जानकी माता प्राण राखु घटमाहीं ॥ तुलसिदास रघुवर जब आवैं कह्यो कथा समुझाई ॥ ९ ॥

हरिसों लागि रहो मेरे भाई ॥ टेक ॥ ऐसो यत्न करो मन मेरे राम बिसारि जनि जाई ॥ लागे ध्रुव प्रह्लाद विभीषण गणिक सधन कसाई ॥ नामदेव रयदास कबीरा पीपा मीरा बाई ॥ लंकालागे बंका लागे लागे सैनानाई ॥ कहौं कहा सेवरीकी महिमा मोसे वरणि न जाई निपट सनेह करो साधुनसे छांडि कपट चतुराई ॥ दया धर्म हिरदय बिच राखो सहज मिलें रघुराई ॥ जो हरि ध्यान धरो घट भीतर और न आन उपाई ॥ रामकृपा भजु जानकि वल्लभ तीनों लोक बड़ाई ॥ १० ॥

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीनो ॥ टेक ॥ साधन धाम विबुध दुर्लभ तनु मोहिं कृपा करि दीनो ॥ कोटिहु मुख कहि जाय न प्रभुको एक एक उपकारो ॥ तदपि नाथ कछु और मागि हौं दीजै परम उदारो ॥ विषय वारि मन भिन्न भिन्न नहिं होत तबहुँ पल एक ॥ ताते सहिय विपति अति दारुण जन्मत योनि अनेक ॥ कृपा डोरि बंसी पद अंकुश परम प्रेम मृदु चारो ॥ यहि विधि वेधि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तुम्हारो ॥ है श्रुति विदित उपाय सकल सुर केहि ना दीन निहारो ॥ तुलसिदास इक जीव मोहरजु जोइ बांध्यो सोइ छोरो ॥ ११ ॥

काहे न रसना रामहिं गावहि ॥ टेक निशि दिन पर अपवाद वृथा कित रटि-रटि वाद बढावहि ॥ नर सुख सुन्दर मंदिर पावन बसि जिन नाहिं लजावहि ॥ शशि समीप रहि त्यागि सुधा कत रविकर जलकहँ धावहि ॥ कामकथा कलि कैरव चंदिनि सुनत श्रवण दै भावहि ॥ तिनहिं हटकि कहि हरि कल कीरति करण कलंक नशावहि ॥ जातरूप मति युवति रुचिर मणि रचिरचि हार बनावहि ॥ शरणसुखद रविकुल सरोज रवि राम नृपहिं पहिरावहि ॥ वाद विवाद खेद तजि भजि हरि सरल चरित चित लावहि ॥ तुलसिदास भव तरिहि तिहूँ पुर तेहि पुनीत यश गावहि ॥ १२ ॥

जानकी जीवनकी बलि जैहौं ॥ टेक ॥ चित कहै राम सियापद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं ॥ उपजी उर प्रतीति सपनेहु सुख प्रभुपद बिमुख न ह्वइहौं ॥ मनसमेत ऐहें न तनवासी इहै सिखावन दैहौं ॥ श्रवणनि और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं ॥ रोकि हौं नयन विलोकत औरहिं शीश ईशपद नैहौं ॥ नातो नेह नाथसों करि सब नाते नेह निबैहौं ॥ यह छर भार ताहि तुलसीजग जाको दास कहै हौं ॥ १३ ॥

केशव कहि न जाय का कहिये ॥ टेक ॥ देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये ॥ शून्य भीतिपर चित्र रंग नहिं बिनु कर लिखत

चितेरो ॥ धोये मिटै न मरे भीति दुःख पाइय यह तन हेरो ॥ रविकर निकर बसत अति दारुण मकररूप तेही माहीं ॥ बदनहीन सो ग्रसै चराचर पान करन जेहि जाहीं॥ कोउ कहे सत्य झूँठ कहे कोऊ युगल प्रबल करि मानै ॥ तुलसिदास धरिहरहि तीनि भ्रम तब आपण पहँचानै॥१४॥

मन पछतै हो अवसर बीते ॥ टेक ॥ दुर्लभ देह पाइ नरहरि भजु करम वचन मन हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥ हम हम करि धन धाम सँवारे अंत चले उठि रीते ॥ सुत वनितादि जान स्वारथरत न कर नेह उनहींते ॥ अंतहि तोहि तजैंगे पामर तू न तजै अबहींते अब नाथहिं अनुराग जाग जड़ त्याग दुराशा जीते ॥ बुझहि न काम अग्नि तुलसीके विषय भोग रस घीते ॥ १५ ॥

ऐसो को उदार जगमाहीं ॥ टेक ॥ विन सेवा जो द्रवत दीनपर रामसरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग यत्न करि, नहिं पावत मुनि ज्ञानी ॥ सो गति दीन गिद्ध सेवरीको राम अधिक करि जानी ॥ लंका दश शीश अर्पिकै रावण शिवपहँ लीन्हीं ॥ सो संपदा विभीषण जनको सकुच सहित प्रभु दीनी ॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहै मन मेरो ॥ तौ भज राम कामप्रद पूरण करहिं कृपानिधि तेरो ॥ १६ ॥

कौन कुटिल खल कामी मो सम कौ० ॥ टेक ॥ तुमसे कहां छिपी करुणानिधि घट घट अंतरयामी ॥ भरि भरि

उदर विषयरस पीवत जैसे सूकर ग्रामी ॥ जो तन दियो ताहि बिसरायो ऐसो नमकहरामी ॥ जहँ सत्संग कथा तहँ आलस विषयिन सँग विश्रामी ॥ श्रीहरिचरण छांड़ि और-नकी निशि दिन करत गुलामी ॥ पापी पतित अधम परनिंदक सब पतितनमें नामी ॥ कीजै कृपा दास तुलसी-पर सुनियो श्रीपति स्वामी ॥ १७ ॥

मन रे तू रामचरित सुन काना ॥ टेक ॥ सनक सनंदन सनतकुमार नारद यही बखाना ॥ यही चरित गिरिजापति गायो गुप्त सो प्रगट बखाना ॥ याज्ञवल्क्य कहे भरद्वाजसों तीरथराज सुथाना ॥ बालापनमें गये ध्रुवराजा सुनि नार-दको ज्ञाना ॥ रामनामकी यह प्रभुताई गणिका चढी विमाना ॥ काक भुशुंडि कहे खगपतिसों निश्चय निर्णय ठाना ॥ काम क्रोध मद लोभ निवारण आलस उर नहिं आना ॥ ऋषिकी कृपासे शबरी गायो आगम प्रभुको जाना ॥ प्रेमसहित वाके फल पाये, पहुँचाये निज धामा ॥ येही चरित्र बिभीषण गायो वैर बंधुसों ठाना ॥ लंका तजि भजि सीतापतिको मिल्यो रामसों आना ॥ रामनामकी महिमा मोटी मन मेरे अनुमाना ॥ तुलसीदास धन्य यह साधू गावैं वेद पुराना ॥ १८ ॥

जिनकी रहनि रामसे नाहीं ॥ टेक ॥ ते नर खर कूकर सूकरसम वृथा जियत जगमाहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह महँ भूँख प्यास सबहीको ॥ मानुष तनु सुर साधु सराहत सो

तो नेह सिय पीको ॥ शूर सुजन सुनि पुण्य सुलक्षण गुनियन गुण गुरु आई ॥ बिन हरिभजन न सुनके फूलत जात नाहिं करुवाई॥ कीरति कुल करतूतिहु नीकी शील स्वरूप सलोने ॥ तुलसिदास प्रभु रागरहित ज्यों व्यंजन साग अलोने ॥ १९ ॥

रघुवर मोहिं संग कर लीजे ॥ टेक ॥ बार बार पुर जान नाथ कहि कारण आयसु दीजे ॥ यद्यपि हौं अति अधम कुटिलमति अपराधिनिको जायो ॥ प्रणतपाल कोमल स्वभाव जिय जानि शरण तकि आयो ॥ जो मेरे तजि चरण आन मति कहौं हृदय कछु राखी ॥ तो परिहरहु दयालु दीनहित प्रभु अभ्यंतर साखी ॥ ताते नाथ कहत मैं पुनि पुनि प्रभु पितु मातु गुसाईं ॥ भजन हीन नरदेह वृथा करि श्वानभेषके नाईं ॥ बंधुवचन सुनि स्रवत नयन जल राजिवनैन भरि आये ॥ तुलसिदास प्रभु परम कृपा गहि कर गहि निज उर लाये ॥ २० ॥

हिलमिल गोविंद गावैं आवो साधू हो ॥ टेक ॥ प्रेम भक्तिकी रीति समझिकै हितसों राम रिझावैं ॥ सेवा सुमिरन वंदन अर्चन नवधासों चित लावैं ॥ ताल पखावज झाँझ मँजीरा मुरली शंख बजावैं ॥ सत्संगति निशि वासर करिकै ममता मदहिं बहावैं । चरणदास शुकदेव कहत हैं उर आनंद मनावैं ॥ २१ ॥

इति शनीवारकी एवं सातों वारोंकी गौरी समाप्त ।

अथ नवीन गौरी

गोविंद न गाया तूने गाया क्यारे बावरे । भोगोंमें लुभाना फिरै काकवत सयाना हुआ रामरस न लाया तूने क्यारे बावरे ॥ मायामें लुभाना फिरै बड़ाई दिवाना हुआ निर्भय पद पाया तूने पाया क्यारे बावरे ॥ १ ॥

मन रे तु राम कृष्ण भजु भाई ॥ टेक ॥ राम कृष्ण दोउ नाम मनोहर निशि दिन ध्यान लगाई ॥ पूरणब्रह्म अवधमें प्रगटे दशरथसुत रघुराई ॥ जन्म लियो वसुदेव देवकी नंदके लाल कहाई ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै दशरथ सुत रघुराई ॥ मोर मुकुट तुलसीकी माला कर गहि वेणु बजाई ॥ रामचन्द्र दशकंधर नाश्यो राज्य बिभीषण पाई ॥ कंसको मारि गरद करि डारयो उग्रसेन भये राई ॥ तीन लोक अरु भुवन चतुर्दश महाकठिन भय खाई ॥ नाम विना कोउ थाह न पावैं भटकि भटकि मरि जाई ॥ शारद शेष विमल यश गावैं निगम नेति कहि गाई ॥ ध्रुव प्रह्लाद परमतप कीन्हें नाम सुमिरि तरिजाई ॥ बरसत पुष्प देव मुनि हर्षैं तिहुँ पुर बजत वधाई ॥ गोकुलदास दो नामकी महिमा वेद पुराणन गाई ॥ २ ॥

भजबो श्रीरामनामको नीको ॥ टेक ॥ तीन लोक अरु भुवन चतुर्दश रचना ब्रह्माजीको ॥ वेद पुराण सकल यश गावैं भक्ति बिना सब फीको ॥ योग यज्ञ वैराग्य विविध

विधि साधन मन इन्द्रीको तीरथ वरत सकल करि आवै नाम विना सब फीको ॥ देव दनुज मुनि मनुज सुरासुर चाहत सुख मनहीको ॥ विविध भाँति सब लाड़ लडावैं प्रेम विना सब फीको ॥ शिव सनकादि आदि मुनि नारद, श्रुतिसम्मति सबहीको ॥ व्यास आदि कविपुंग बखानो सुमिरण राघोजीको ॥ विविध भाँति शारद गुण गावैं राम लषण सियजीको ॥ गोकुल दास सब धाम छांडिकै बसबो अवधपुरीको ॥ ३ ॥

गंगा नाम लेत अघ नाशै ॥ टेक ॥ जाको नाम विदित त्रिभुवनमें मुनिजन ध्यान लगाते ॥ जाके दरश परश अति पावन सकल पाप जरि जाते ॥ सेवत मन वचक्रम गंगातट पुनि न भुवन फिर आते ॥ धवल धार परभाव अमित अति छुअत अधम तरि जाते ॥ शारद शेष विमल यश गावैं गणपति गुण गण गाते ॥ शिव विरंचि सनकादि आदि मुनि यम ठाढे पछिताते ॥ जो परसे सो हरिपद पावैं फिर नहिं यमपुर जाते ॥ गोकुलदास गति लखि गंगाकी चरण कमल लपटाते ॥ ४ ॥

सरयू रामरूप जगमाहीं ॥ टेक ॥ पाप ताप जेहि निकट न आवै नाम सुनत भग जाहीं ॥ जाके निकट रामपुर सुन्दर छबि वरनी नहिं जाहीं ॥ चंद्र सूर्य्य दोउ देखि थकित भये आगे चलि नहिं जाहीं ॥ दूध धार परभाव अमित अति राम जन्म रजधानी ॥ नृप दशरथ गृह नौबत बाजै घर घर

बजत बधाई ॥ विविध भाँतिके घाट बने हैं रहैं मुनी जहँ छाई ॥ सरयू दरश परश करि मज्जन रामधाम चलि जाई ॥ रघुवरलक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखा सुखदाई ॥ ठाढे सरयू लहर निहारैं मगन भये रघुराई ॥ महिमा बरनत गिरा निरन्तर निगम नेति यश गाई ॥ शेष सहस मुख रटत निरन्तर तबहूँ पार न पाई ॥ सकल देव सुर सिद्ध निहारैं मज्जन करैं रघुराई ॥ गोकुलदास छबि निरखि रामकी चरण कमल लपटाई ॥ ५ ॥

इति नवीन गौरी समाप्त ।

अथ संध्या समय मंगल गानेके दोहे ।

गुरु मूरति मुख चन्द्रमा, सेवक नैन चकोर ॥
अष्ट पहर निरखत रहै, गुरुमूरतिकी ओर ॥ १ ॥
श्रीगुरुचरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ॥
वरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चारि ॥ २ ॥
मंगलमय मरजादमणि, सकल धर्मवर धीर ॥
रिधिवर सिधिवर मुक्तिवर, सीतावर रघुवीर ॥ ३ ॥
सुमिरन ऐसो चाहिये, जाको धरिये ध्यान ॥
सतयुग त्रेता द्वापर, कलियुगको परिमान ॥ ४ ॥
एक बुन्द सरिता बहै, भिन्न भाव नहिं होय ॥
संत मिलैं भगवानसों, मिलि गावैं सब कोई ॥ ५ ॥
मोमें गुण कछु है नहीं, तुम गुण भरे जहाज ॥
गुण अवगुनन बिसारिये, बाँह गहेकी लाज ॥ ६ ॥

बिन सतसंग न हरिकथा, ता बिन मोह न भाग ॥
मोह गये बिन रामपद, होय न दृढ अनुराग ॥ ७ ॥
कर गहि धनुष चढाइये, चकित भये सब भूप ॥
मगन भई श्रीजानकी, देखि रामको रूप ॥ ८ ॥
अवधधाम धामाधिपति, अवतारण पति राम ॥
सकल सिद्धिपति जानकी, दासनपति हनुमान ॥ ९ ॥
वारि बरोबर वारि है, तापर बहत बयारि ॥
रघुवर पार उतारियो, अपनी ओर निहारि ॥ १० ॥
सीतापति रघुनाथ जू, तुम लगि मेरी दौर ॥
जैसे काग जयन्तको, सूझत और न ठौर ॥ ११ ॥
सीतापति रघुनाथको, नेक नमावै शीश ॥
कहा बिभीषण ले मिले, लंक दई बकशीश ॥ १२ ॥
सीतापतिकी कोठडी, चन्दन जडे किंवार ॥
ताला लागे प्रेमके, खोलो कृष्ण मुरार ॥ १३ ॥
सीतापतिके कारणै, सब धन डार्‍यो खोय ॥
मूरख जाने गिर गयो, दिन दिन दूनों होय ॥ १४ ॥
रामनाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहरै, जो चाहत उजियार ॥ १५ ॥
एकछत्र इक मुकुटमणि, सब वरणनपर जोउ ॥
तुलसी रघुवर नामके, वरण विराजत दोउ ॥ १६ ॥
अपने अपने इष्टको, नमन करत सब कोय ॥
इष्ट बिना जे भृगुपतिहि, नमै सो मूरख होय ॥ १७ ॥

रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह वन, श्रीरघुवीर विहारु ॥ १८ ॥
तुलसी बिरवा बागके, सींचत ही कुम्हलायँ ॥
रामभरोसे जे रहें, परवतपर हरिआयँ ॥ १९ ॥
राम झरोखे बैठिकै, सबको मुजरा लेत ॥
जैसी जाकी चाकरी, तैसो ताको देत ॥ २० ॥
चित्रकूटसे कूट नहिं, अवध धामसे धाम ॥
सुन्दर वनसे वन नहीं, श्रीराम नामसे नाम ॥ २१ ॥
रामचन्द्र मुखचन्द्र छबि, लोचन चन्द्र चकोर ॥
करत पान सादर सकल, प्रेमप्रमोद न थोर ॥ २२ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहिनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर ॥ २३ ॥
राम राम सब कोइ कहै, ठग ठाकुर अरु चोर ॥
बिना प्रेम रीझै नहीं, तुलसी नन्द किशोर ॥ २४ ॥
कहां कहौं छबि आजकी, भले विराजे नाथ ॥
तुलसी मस्तक जब नमै, धनुष बाण लो हाथ ॥ २५ ॥
कित मुरली कित चंद्रिका, कित गोपिनको साथ ॥
अपने जनके कारणै, कृष्ण भये रघुनाथ ॥ २६ ॥
वृन्दावनसे वन नहीं, नंदगामसे गाम ॥
बंशीवटसे वट नहीं, कृष्ण नामसे नाम ॥ २७ ॥
वृन्दावन माणिकभुवन, भँवर करैं गुंजार ॥
दुलहिनि प्यारी राधिका, दूलह नन्दकुमार ॥ २८ ॥

राधे राधे रटत हैं, आक ढाक अरु खैर ॥
तुलसी या ब्रजभूमिमें, कहा रामसे वैर ॥ २९ ॥
बार बार बन माँगहूँ, हरषि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ३० ॥
कोटि कल्प काशी बसे, मथुरा कल्प हजार ॥
एक निमिष सरयू बसे, तुलै न तुलसी वार ॥ ३१ ॥
अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम ॥
दास मलूका यों कहै, सबके दाता राम ॥ ३२ ॥
ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्राण ॥
इनको निमिष न छोडिहौं, नन्दरायकी आन ॥ ३३ ॥
ब्रज तजि अंत जाइहौं, येही मेरी टेक ॥
भूतल भार उतारिहों, धरि धरि रूप अनेक ॥ ३४ ॥
कोटिन तीरथ कामना, कोटि गया सुविलास ॥
रजधानी रघुनाथकी गावत तुलसीदास ॥ ३५ ॥
बांह छोडाये जात हो, निर्बल जानिके मोहिं ॥
हिरदयसे जब जाउगे, तब मैं जानू तोहिं ॥ ३६ ॥
तुलसी मिटै न मोह तम, किये कोटि गुणग्राम ॥
हृदय कमल फूलै नहीं, बिनु रविकुल रवि राम ॥ ३७ ॥
तुलसी यह तन खेत है, मन वच कर्म किसान ॥
पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बोवै लुनै निदान ॥ ३८ ॥
राम राम सब कोइ कहै, दशरथ कहै न कोय ॥
एक बार दशरथ कहै, कोटि यज्ञ फल होय ॥ ३९ ॥

राम भजनको आलसी, भोजनको हुशियार ॥
तुलसी ऐसो जीवको, बार बार धिक्कार ॥ ४० ॥
राम नामको आलसी, भोजनको हुसियार ॥
भेड़िपूँछ भादौ नदी, किस विधि उतरै पार ॥ ४१ ॥
तुलसी हाय गरीबकी, हरिसों सही न जाय ॥
मुई चामकी फूँकसों, लोह भस्म हो जाय ॥ ४२ ॥
नहिं विद्या नहिं बाँहबल, नहिं खर्चनको दाम ॥
मोसे पतित पतंगके, तुम पति राखो राम ॥ ४३ ॥
पडे रहो दरबारमें, धका धनीको खान ॥
कबहुँक दीनदयालके, शब्द परेगा कान ॥ ४४ ॥
संत मिलनको जाइये, तजि माया अभिमान ॥
ज्यों ज्यों पग आगे परै, त्यौं त्यौं यज्ञसमान ॥ ४५ ॥
संत बड़े परमारथी, शीतल उनके अंग ॥
तपन बुझावैं औरकी, दे दे अपना रंग ॥ ४६ ॥
संत संत सब एक हैं, जस अफीमको खेत ॥
कोई कुदरति लाल है, अवर सेतके सेत ॥ ४७ ॥
राम नगरिया रामकी, बसे गंगके तीर ॥
अचल राज महाराजको, चौकी हनुमत वीर ॥ ४८ ॥
चित्रकूट मानिक बन्यो, भँवर करैं गुंजार ॥
दुलहिनि प्यारी जानकी, दुलहा रामकुमार ॥ ४९ ॥
सीताजीके वदनपै, बेंदी शोभा देत ॥
मानो फूली केतकी, भँवर वासना लेत ॥ ५० ॥

चित्रकूट चित रमि रहो, पैसरणीकै तीर ॥
उहाँ कछुक दिन रमि रहे, सिया लखन दोउ वीर ॥ ५१ ॥
चित्रकूटके घाटपै, भइ संतनकी भीर ॥
तुलसिदास चंदन घिसैं, तिलक करैं रघुवीर ॥ ५२ ॥
चित्रकूटके गैलमें, मुक्ति परी बिलखाय ॥
मुक्ति कहै रघुनाथसे, मेरी मुक्ति बताय ॥ ५३ ॥
परी रहौ यह गैलमें, साधु संत चलि जांय ॥
उड़ि उड़ि रज मस्तक परै, सहज मुक्ति हो जाय ॥ ५४ ॥
चित्रकूटके वृक्षको, मर्म न जानै कोइ ॥
एक पत्र सेवा करै, रूप चतुरभुज होइ ॥ ५५ ॥
चित्रकूटके डोमडा, और देशके भूप ॥
उनकी सरबर को करै, बेंचि खात हैं सूप ॥ ५६ ॥
चलो सखी तहँ जाइये जहाँ बसत व्रजराज ॥
गोरस बेंचन हरि मिलउ, एक पंथ दो काज ॥ ५७ ॥
व्रज चौरासी कोशमें, चारि गाम निज धाम ॥
वृंदाबन अरु मधुपुरी, बरसानो नँदगाम ॥ ५८ ॥
राधेजीके वदनपे, बेंदी अति छबि देत ॥
मानो फूली केतकी, भँवर बासना लेत ॥ ५९ ॥
राधे तू बड़ि भागिनी, कौन तपस्या कीन ॥
तीन लोक तारनतरन, सो तेरे आधीन ॥ ६० ॥
वृन्दावनके गैलमें, मुक्ति परी बिलखाय ॥
मुक्ति कहै गोपालसे, मेरी मुक्ति बताय ॥ ६१ ॥

परी रहो यह गैलमें, साधु संत चलि जांय ॥
उडि उडि रज मस्तक परै, सहज मुक्ति ह्वैजाय ॥ ६२ ॥
वृन्दावनके तरुनको, मर्म न जानै कोइ ॥
एक पत्र सेवा करैं, रूप चतुरभुज होइ ॥ ६३ ॥
गोरे मुखपै तिल बन्यो, ताही करो प्रणाम ॥
मानो चन्द्र बिछायकै, पौढे शालिग्राम ॥ ६४ ॥
वृन्दावनके डोमड़ा, और देशके भूप ॥
उनकी सरबर कोकरे, बेंचिखात है सूप ॥ ६५ ॥
सूरा तो सरगुण कथै, निर्गुण कथै कबीर ॥
राम रत्न तुलसी कथै, जय जय सिय रघुबीर ॥ ६६ ॥
यह मंगल बहु ललित है, जो गावत चितलाय ॥
सीय सहित रघुबर कृपा, सो साकेतहि जाय ॥ ६७ ॥
रामरसहि चाख्यो नहीं, भ्रमत भ्रमत जंजार ॥
रामरहित चाख्यो जबै, होय सबेर सखार ॥ ६८ ॥
बाँधे सो बाँधा मिलै, छूटै कौन उपाय ॥
सँग कीजै निरबंधको, पलमें दये छुड़ाय ॥ ६९ ॥
जोबन जीवन माल धन, अचल रह्यो नहिं कोय ॥
जो घड़ि गई अनंदकी, जीवनका फल सोय ॥ ७० ॥
चलौ अवधपुर जाइये, जहाँ बसैं रघुवीर ॥
निर्मल सरयू न्हायके, दरश करो महावीर ॥ ७१ ॥

इति संध्यासमयके मंगल गानेके दोहे संपूर्ण ।

सातों वारकी आरती और धुनि एकत्र

रविवारकी आरती

कहँ लगि आरति दास करेंगे सकल जगत जाके जोति विराजै ॥ टेक ॥ सात समुद्र जाके चरणनि बसे कहा भयो जल कुंभ भरे हो राम ॥ कोटि भानु जाके नखकी शोभा कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम ॥ भार अठारह रोमावलि जाके कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम ॥ छप्पन भोग जाके नित प्रति लागें कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम ॥ अमित कोटि जाके बाजा बाजैं कहा भयो झनकार करे हो राम ॥ चार वेद जाके मुखकी शोभा कहा भयो ब्रह्म वेद पढे हो राम ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम ॥ हिम मंदार जाको पवन झकोरैं कहा भयो शिर चंवर ढुरे हो राम ॥ लखन चौरासी बंद छुड़ाये केवल हरियश नामदेव गाये ॥

इति रविवारकी आरती समाप्त

अथ रविवारकी धुनि

टेरत है रघुवरकी मैया रघुवरजीकी मैया लक्ष्मणजीकी मैया ॥ टेक ॥ ऊँचे ऊँचे सुर लै शब्द उचारै रघुकुल रघुकुल रघुकुलरैया ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन नाहिं आवैं तजि बाल समैया ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल धनुष बाण कर धारे हो रमैया ॥ संग सखा

सरयूतट विहरैं भरत शत्रुहन लक्ष्मण भैया ।। शिव सन-
कादि आदि ब्रह्मादिक नेति नेति गावैं निगमैया ।। ताहि
धरन कौशल्या धाई ठुमक ठुमक पग चलत रमैया ।। धूसरे
धूरि भरे तनु आये विहँसत भूप गोद बैठैया ।। तुलसिदास
प्रभुकी छबि निरखैं हरषि निरखि मा लेत बलैया ।। १ ।।

नमो नमो तुलसी महरानी नमो० ।। टेक ।। जाको नाम
लेत अघ नाशै महिमा वेद पुराण बखानी ।। शाखा पत्र
मंजरी कोमल श्रीपति चरणकमल लपटानी ।। तुम तुलसी पूरण
तप कीन्हो शालग्राम भई पटरानी ।। धूप दीप नैवेद्य आरती
पुष्पनकी वरषा वरषानी ।। छप्पन भोग छतीसों व्यंजन बिन
तुलसी हरि एक न मानी ।। शिव सनकादिक आदि ब्रह्मा-
दिक खोजत फिरत महामुनि ज्ञानी ।। प्रेमभक्ति करि हरि-
वश कीन्हें, साँवर सुरति मो हिय लपटानी ।। साँवरि सखी
मैया तेरो यश गावत भक्तिदान दीजै महरानी ।। २ ।।

नमो नमो तुलसी कर जोरी ।। टेक ।। हेमरत्न मणि
हीररूपमय शाखा पत्र मंजरी तोरी ।। परम सखी सिय
जानकिजीवन सियाराम बिहरैं इक ठौरी ।। चरणशरण
दासी शरणागत प्रेमभक्तिको करत निहोरी ।। सिंहासन
सिय बैठि रामसँग तुलसिदास दरबार रहो री ।। ३ ।।

बसबो अवधपुरीको नीको नीको नाम हरीको ।। टेक ।।
उत्तरखंड अयोध्या नगरी निर्मल जल सरयूको ।। रामघाट
अस्नान करनको दर्शन राघवजीको ।। रघुवर लक्ष्मण भरत

शत्रुहन, ढोटा दशरथजी क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, शिर केसरको टीको ॥ सब भूपनको मान मथन कियो तोरो धनु शिवजीको ॥ अष्ट पहर कर जोरे रहत हैं, हनुमान अँजनीको ॥ तुलसिदास यह ध्यान धरत हैं राम लषण सियजीको ॥ ४ ॥

बसबो श्रीवृन्दावनको नीको ॥ टेक ॥ मध्य देश इक मथुरा नगरी निर्मल जल यमुनाको ॥ चीरघाट अस्नानकरनको दर्शन गोविंदजीको ॥ हलधर गिरिधर मदन मनोहर ढोटा वसुदेवजीको ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गोरोचनको टीको ॥ वृंदावनमें बाग बहुत हैं बिच बिच वन तुलसीको ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिका शब्द सुनत मुरलीको॥ अष्ट पहर कर जोरे रहत हैं गरुड देव बिनतीको ॥ सूरदास यह ध्यान धरत हैं श्याम राम राधाजीको ॥ ५ ॥

भजु रघुवर श्याम युगल चरना ॥ टेक ॥ इतहि अयोध्या निर्मल सरयू उत मथुरा शीतल यमुना ॥ इतमें दशरथ कुँवर कहाये उतै कहाये नंदके ललना ॥ इतहि कौशल्या गोद खेलावै उतमें यशोदा झुलावैं पलना ॥ इतमें क्रीट मुकुट शिर राजै उतमें मोरमुकुट धरना ॥ इतमें धनुष बाण कर राजै उत मुरली मुखपर धरना ॥ इतमें चरण अहल्या तारी उत राधे संग कियो रमना ॥ इतमें जानकी बायें विराजै उत राधे संग कियो रमना ॥ इतमें सागर शील उतराये उत गिरिवर नखपर धरना ॥ इतही राम रावणहिं मारचो उतही

कंस पछारयो ललना ।। इतमें राज बिभीषण दीन्हीं उत उग्रसेनको कियो अपना ॥ इत तुलसी उत सूर कहाये युगल चरणपर चित धरना ।। ६ ।।

रघुवंशी हो राम मेरेमें बसो ॥ टेक सीता मेरी माता पिता मेरे राम लक्ष्मण धनुष चढाये कर बान ॥ गले मेरे तुलसी मुख मेरे राम हृदय विराजैं स्वामी शालग्राम ॥ हथियन ऊपर घुरत निसान सुर नर मुनि चढि आये हैं विमान॥ बाँधे हैं सागर तरे हैं पखान सियाजीकी खबरि पठाये हनुमान ॥ तोडी गढ लंका फिरि गई आन भक्त बिभीषण पायो विश्राम ।। आगे आगे राम लक्ष्मण पीछे हनुमान आये हैं अयोध्या पुष्पविमान ॥ तुम्हारो हि जप तप तुम्हारोहि ध्यान बालाजीको सुमिरन राघवजीको ध्यान ।। क्रीट मुकुट कुंडल वनमाल शोभाको वरणि सकै गुणग्राम ।। पुरी है अयोध्या पूरणधाम रामानंद स्वामी पाये विश्राम ॥ ७ ॥

भजु दशरथ पुत्र धनुष धरना ॥ टेक ।। मातु पिताकी आज्ञा मानी अवध छोंडि वनको चलना ।। वनमें जाय बसे रघुनंदन जनकसुता रावण हरना ॥ कपिदल जोरि चढे रघुनंदन सेतु बाँधि सागर तरना ।। रावणके दश मस्तक छेदे बीस भुजा खंडन करना ।। रावण मारि असुर सब मारे लंका जारि गरद करना ।। अपने भक्तको राजतिलक दियो आय परे हरिके चरना ॥ पुष्पविमान चढे रघुनंदन बाल्मीकि आश्रम अवना ।। सीतासहित अयोध्या आये सुर नर मुनि

जय जय करना ॥ सीतासहित सिंहासन बैठे सब देवन मंगल करना ॥ तुलसिदास रघुवरके शरणै चरण कमल पर चित धरना ॥ ८ ॥

मिलि खेलत आवत राम लला भरत शत्रुहन लखन लला ॥ टेक ॥ वृन्द वृन्द रघुवंशिनके सुत खेलत आवत करत हला ॥ लाडू लिये सकल निज करमें चुगत काग जो परत थला ॥ धावत फिरत उठि चलत अजिरमें करत केलि बहु छिन-छिन पला ॥ काकभुशुण्ड गहन कर बाढे सप्त वरणमें भ्रमत फिरा ॥ नयन मूंदि गयो राम उदरमें देखे बहु ब्रह्मांड कला ॥ खोजत फिरत कल्प शत नाते बाहर उभय घरी बितला ॥ अग्रदास धनि धनि कौशल्या भाग्य उदय भये आजु लला ॥ ९ ॥

भजु रे मन राम सिया चरना ॥ टेक ॥ दशरथनंदन विधि शिव वंदन भक्तजननके भय हरना ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो धनुष तोरिके सिय बरना ॥ नौका सहित कीरकुल तारे चरणके छुवत शिला तरना ॥ वालिहि मारि सुग्रीव राज दियो सप्त ताल छेदन करना ॥ महा अगाध सिंधु शत योजन रघुवर कपि गिरिवर तरना ॥ रावणके मस्तक दश छेदे भक्त विभीषण नृप करना ॥ आये अवध-पुर रंगभवनमें कौशल्या आरति करना ॥ अति कृपालु करुणामय उर धरो चतुरदास राघव शरना ॥ १० ॥

जय जय जय रघुनाथ हरे पूरण करत मनोरथ मनके ॥ टेक ॥ पूर्णब्रह्म त्रेतामें प्रगटे दर्शन देत निहाल करे ॥ उत्तरखंड अयोध्या नगरी निकटहि सरयू नीर बहे ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर धारि रहे ॥ रत्न-सिंहासन आपु बिराजैं धूप दीप नैवेद्य धरे ॥ भरत शत्रुहन चँवर छत्र लिये सनकादिक कर जोरि रहे ॥ माधवदास आश रघुवरकी हमसे पतित अनेक तरे ॥ ११ ॥

जय जय जय जगदीश हरे पूरण करत मनोरथ मनके ॥ टेक ॥ पूर्णब्रह्म द्वापरमें प्रगटे दर्शन देत निहाल करे ॥ जगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा चक्र सुदर्शन निकट धरे ॥ महाप्रसाद देव-नको दुर्लभ सो नर पावत उदय भरे ॥ इंद्रदमन मार्कंडे तीरथ सेतु गंगा अस्नान करे ॥ नील चक्रपर ध्वजा विराजै निकट महोदधि नीर बहे ॥ माधवदास आश चरणनकी भवसागरसे पार करे ॥ १२ ॥

श्री गाइये महासुख पाइये श्री जगन्नाथ जगतगुरु गाइये ॥ टेक ॥ अठारह किनारे चौकी लागै यात्री जान न पाइये ॥ गूदरियाको झारो मांगै नागा लट्ठ बजाइये ॥ सिंहपौरि पर सिंह बिराजै पंडा बेंत लगाइये ॥ इंद्रदमन मार्कंडेतीरथ सेतुगंगा नहाइये ॥ हुकुम भयो बलभद्र बलीको बांह पकरकर छाइये ॥ नीलचक्र पर ध्वजा विराजै निकट महोदधि गाजे ॥ गरुड खंभपर गरुड विराजैं सन्मुख दर्शन पाइये ॥ जगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा इन तजि

अनत न जाये ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती छप्पन भोग लगाइये ॥ महाप्रसादकी अधिक है महिमा वेद पुराणन गाइये ॥ थेइ थेइ करत सब सखियाँ बाजा विमल बजाइये ॥ माधवदास आश चरणनकी आवागमन मिटाइये ॥ १३ ॥

इति रविवारकी धुनि समाप्त

अथ सोमवारकी आरती

आरती करत जनक कर जोरे बडे भाग्य रामजी आये मोरे ॥ टेक ॥ जीति स्वयंवर धनुष चढाये सब भूपनको गर्व मिटाये ॥ तोरि पिनाक किये दुइ खंडा रघुकुल हर्ष रावण भय शंका ॥ आई हैं सीता संग सहेली हरषि निरखि वरमाला मेली ॥ गजमोतियनके चौक पुराये कनक-कलश भरि मंगल गाये ॥ कंचन थार कपूरकी बाती सुर नर मुनि जन आये बराती ॥ फिरत भाँवरि बाजा बाजैं सिया सहित रघुवीर विराजैं धनि धनि राम लषण दोउ भाई धनि दशरथ कौशल्या माई ॥ राजा दशरथ जनक-विदेही भरत शत्रुहन परम सनेही ॥ मिथिलापुरमें बजत बधाई दास मुरारी स्वामी आरति गाई ॥

इति सोमवारकी आरती स०

अथ सोमवारकी धुनि

आजु राजा द्वारे बधैया बाजै ॥टेक॥ मिथिलापुर आये रघुनंदन घर घर युवतिन आरति साजैं ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल भाल तिलक शिर छत्र विराजैं नखशिख सुन्दर अंग मनोहर कोटि भानु रतिपति छबि लाजैं ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखा मिथिलापुर राजैं ॥ युगल प्रिया छबि कहँ लगि वरणौं यह मूरति मेरे हृदय विराजैं ॥ १ ॥

राजत राम श्रीजनक किशोरी ॥ टेक ॥ सिया भई गौर पिया भये सांवर रूप देखि शारद भइ भोरी ॥ मंडपमें दोउ मदनमनोहर दशरथसुत अरु जनककिशोरी ॥ राघवजीके सोहै जरकस जामा सियाजीके सोहै पीत पिछौरी ॥ कनककलश पर फिरत भाँवरी सखियन मंगलाचार करो री ॥ इतमें वसिष्ठ मुनि उतमें शतानन्द वंश प्रशंस करत दोउ ओरी ॥ इतमें अवधपुर उत मिथिलापुर बीचमें सरयू लेत हिलोरी ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे का वरणों रसना यह जोरी ॥ २ ॥

जय जय जय नृप जनक किशोरी ॥ टेक ॥ तेरोई ध्यान धरत निशि वासर नारद शारद शंकर गौरी ॥ लियो उठाय धनुष तिनका ज्यों बालकेलि लीला वपुधारी ॥ कौतुक देखि भूप प्रण कीन्हों धनुष तोरियाको वर सोरी ॥ तेरे यज्ञ भागके कारण सकल भये सुर नर इक

ठौरी ॥ यहि धनुष दशशीश भूप भट पचि पचि हारि चले मुख मोरी ॥ सिंधुर चाल चलै मृगनयनी रामचंद्र मुखचंद्र चकोरी ॥ लाहा रामदास कान्हर भजु युग युग राम सियाकी जोरी ॥ ३ ॥

दूलह राम सिया दुलही री ॥ टेक ॥ घन दामिनि वर वरण हरणमन सुंदरता नख शिखनि बहोरी ॥ व्याह विभूषण वसन विभूषित सखि अवली लखि ठगिसी रही री ॥ जीवन लाहु लोचन फल है इतनो आजु सही री ॥ सुखमा सुरभि शृँगार क्षीर दुहि मयन अमियमय कियो दही री ॥ मथि माखन सिय राम सँवारे सकल भुवन छबि मनहुँ मही री ॥ रूपराशि विरंचि रचि मानो सिलालवन रतीकाल नहीं री ॥ तुलसिदाल देखत ये जोरी शोभा अतुल न जात कही री ॥ ४ ॥

राजत राम जानकी जोरी ॥ टेक ॥ श्याम सरोज जलज सुंदर वर दुलहिनि तड़ित वरण तन गोरी ॥ व्याह समय शोभित वितानतर उपमा कहुँ न लहत मति मोरी ॥ मनहुँ मदन मंजुल मंडपतर छबि शृँगार शोभा इक ठौरी ॥ मंगलमय दोउ अंग मनोहर सुरँग चूनरी पीत पिछौरी ॥ कनक कलशपर देत भाँवरी निरखि रूप शारद भइ भोरी ॥ मुदित जनक रनिवास सहसवश चतुर नारि चितवहिं तृण तोरी ॥ नयननको फल पाय प्रेमवश सकल अशीश हिये साहि होरी ॥ तुलसिदास आनंद मगन मन का वरणौं रसना मति थोरी ॥ ५ ॥

लै लो री भरि लोचन लाहू ॥ टेक ॥ सखी सयानी मिथिलापुरकी घर घर शीख देत सब काहू ॥ कब अब राम जनकपुर ऐहैं कब तुम नारि अयोध्या जाहू ॥ दुर्लभ दरश होय दम्पतिको समुझि समुझि फिरि मन पछिताहू ॥ नहिं कोउ छरी द्वार यहि अवसर नारि पुरुष सब कर निरबाहू ॥ मनोकामना करि भरि पूरन फिरि न रहै उर अंतर दाहू ॥ शेष महेश सकल मनरंजित राम सियाको होत विवाहू ॥ हर्षे देव सुमन बहु वर्षे सकल भुवन भरि रहा उछाहू ॥ प्रेम उजागर सब गुणआगर प्रभुहि विलोकि चकित चित चाऊ ॥ तुलसिदास धनि भाग जनकको, चितवत जात जानकी नाहू ॥ ६ ॥

जनकलली मधुरे सुर गावै ॥ टेक ॥ नइ नइ तान बनाय सहचरी चंद्रकला अलि वेणु बजावै ॥ कोउ सखि ताल मृदंग बजावै कोउ सखि रीझि रीझि गुण गावै ॥ बैठी रंगमहलमें पुत्री बिनु सखियन कोइ जान न पावै ॥ कोइ सखि देत पान मुख बीरी मंद मंद कोइ चँवर ढुरावै कोइ सखि रैन दिवश सुधि बिसरी कोउ सखि बार बार शिर नावै ॥ शूर किशोरि बलैया लैहों कोउ सखि ब्याहकी बात चलावै ॥ ७ ॥

पिया घनश्याम सिया तन गोरी ॥ टेक ॥ रूपसदन विधुवदन मनोहर रघुकुलमणि मिथिलेश किशोरी ॥ का कहुँ शोभा लाल लाडली छविश्रृंगार मनहुँ इक ठोरी ॥

बैठी रंगमहलमें पुत्री निरखत मुखलोचन टक जोरी ॥ कीट मुकुट राघवके सोहै सियाके सोहै सुंदर मौरी ॥ सुभग रूप रति मदन विनिंदति सीता राम सकै कह को री ॥ रामप्रसादके रघुवर स्वामी हृदय बसो यह सुंदर जोरी ॥८॥

ये दोउ चंद्र बसो उर मेरे ॥ टेक ॥ दशरथसुत ॥ अरु जनकनंदिनी अरुण कमल कर कमलन फेरे ॥ बैठे संग कुँजन सरयू तट आस पास ललना घन घेरे ॥ चंद्रवती शिर चँवर ढुरावै चंद्रकला तन हँसि हँसि हेरे ॥ ललित भुजा लिये अरसपरस झुकि रहे हैं कैसे कपोलन नेरे राम सखे अब कहि न परत छबि, पान पीक मुख झुकि झुकि हेरे ॥ ९ ॥

राजा राम जानकी रानी ॥ टेक ॥ खास गुलाम पवन-सुत ठाढे ब्रह्मा विष्णु शंभु दरवानी ॥ सेवरी खास महलकी दासी बाहर उमा रमा ब्रह्मानी ॥ तीन लोक अरुण भुवन चतुर्दश नहिं ऐसे राजा नहिं रानी तुलसीदास रूपको सागर अब मनमें महिमा हम जानी ॥ १० ॥

भजु दशरथनंदन जनकलली ॥ टेक ॥ नृप दशरथघर राम भये हैं राजा जनकके भई है लली ॥ आगे विश्वामित्र महामुनि पीछे लक्ष्मण अतुल बली ॥ ये दोउ कुँवर जनक-पुर आये पुष्प बिछाये गली गली ॥ तोरेउ धनुष भूप सब हारे राय जनकके भै है भली ॥ आई सीता संग सहेली वर-माला पहिराय चली ॥ गजमोतियनके चौक पुराये मंगल गावैं पुरकी अली ॥ पूजत गौरि मनावत शंकर वर पायेउ

रघुनाथ बली ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे यह जोरी मेरे मनमें बसी ॥ ११ ॥

इति सोमवारकी धुनि समाप्त

अथ मंगलवारकी आरती

आरति कीजै हनुमान ललाकी दुष्टदलन रघुनाथकलाकी ॥ टेक ॥ जाके बलसे गिरिवर कांपै रोग दोष जाके निकट न झांपै ॥ अंजनि पुत्र महाबलदाई संतनके प्रभु सदा सहाई ॥ दै बीरा रघुनाथ पठाये लंका जारि सिया सुधि लाये ॥ लंका अस कोट समुद्र असि खाई जात पवनसुत बार न लाई ॥ लंका जारि असुर सब मारे राजा रामके काज सँवारे ॥ लक्ष्मण मूर्छित परे धरणिमें आनि सजीवन प्राण उबारे ॥ पैठि पताल तोरि यमकातर अहिरावणके भुजा उखारे ॥ बायें भुजा सब असुर सँहारे दहिने भुजा सब संत उबारे ॥ आरति करत सकल सुर नर मुनि जय जय जय हनुमान उचारे ॥ कंचन थार कपूरकी बाती आरति करत अंजनी माई ॥ जो हनुमानकी आरति गावैं बसि वैकुंठ बहुरि नहिं आवैं ॥ लंक बिध्वंसि कियो रघुराई तुलसिदास स्वामी आरति गाई ॥ १ ॥

इति मंगलवारकी आरती समाप्त

अथ मंगलवारकी धुनि

कहु कपि कुशल लषण रघुवरके ॥ टेक ॥ बार बार बूझै मातु जानकी बूझत कुशल नयन जल ढरके ॥ जिनके भोग विलास अवधमें सो कस रहत छाँह तरुवरके संग सखा सरयू तट विहरैं बाण चलावें लषण धनु धरके ॥ रत्नसिंहासन आपु विराजैं चँवर छत्र ढुरें रघुवरके ॥ कब रघुपति लंकामें ऐहैं वध करिहैं रावण निशिचरके ॥ रावण मारि अहिरावण मारे नाश कियो निशिचर कुलके ॥ लंका जीति राम घर आये तुलसिदास चरणरज धरिके ॥ १ ॥

सब देवनके राजा हनुमत महराजा ॥ टेक ॥ अंजनि पुत्र रामके पायक सारे रामभूपके काजा ॥ लंकापुरीमें कूदि परें हैं डरप्यो रावण राजा ॥ करि किलकार कूदि गये सागर जात बार नहिं लाया ॥ लंका जाय सियासुधि लीन्हों कीन्हों प्रभुको काजा ॥ शक्ति बाण लागे लक्ष्मणके जात बार नहिं लाया ॥ द्रोणागिरिसे लाये सजीवनि कियो रामके काजा ॥ लंकाजीति राम घर आये सखियन मङ्गल गाया ॥ तुलसिदास अविचल यह जोरी चरणकमल चित लाया ॥ २ ॥

जय श्रीहनुमंता जय श्रीबलवंता तुमको सुर मुनि ध्यावैं ॥ टेक ॥ तव अवतार विदित सब जगमें अरु जानत सब बाता ॥ जन्म लियो है पवनसुत अंजनीगर्भ जाता ॥ मारि फलाँग कूदि गये सागर देखि अरुण ताता ॥ कोटि

अग्निसम देखे मानों फल राता ॥ सीतासुधि रघुनाथ पठाये कूदि गये लंका ॥ सबको भय उपजाये राक्षसकुल हंता ॥ उलटि पलटि लंका कपि जारी राक्षस संघाता ॥ कूदि परे सागरमें सिंधू भय कंपा ॥ पूँछ बुझाय सियापहँ आये नाय चरणनहि माथा ॥ अजर अमर सुत होहु वर दिये जगमाता तुरतहि राम लखनपहं आये नाये तिनपद माथा ॥ हरि हँसि कंठ लगाये कही कुशल बाता ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक पावत नहिं अंता ॥ अनभय दासकी विनती सुनिकै सियपिय कंता ॥ ३ ॥

कृपा करो हनुमान जनपर ॥ टेक ॥ रामके द्वारे तुम रखवारे महावीर बलवान ॥ राम लषण कोशल्याजीके जाये अंजनीके हनुमान ॥ संकट मोचन नाम तुम्हारो धरत संतजन ध्यान ॥ हाथमें सोंटा लाल लंगोटा मुखमें नागर पान ॥ लक्ष्मण मूर्छित परे धरनीमें दियो सजीवनि आन ॥ जनकसुताको शोक निवारयो रघुवर सुयश बखान ॥ पैठि पताल अहिरावण मारे देवीके हर लिये प्रान ॥ मकरध्वजको राजतिलक दियो राख्यो तिनको मान ॥ राम लषणको शोक निवारयो दलमें ले आये हनुमान ॥ तुलसिदासपर किरपा कीजै भक्त आपनो जान ॥ ४ ॥

हमपर किरपा करो महावीर ॥ टेक ॥ रामकाज अवतार लियो है धर्मधुरंधर धीर ॥ सिया खबर रघुनाथ पठाये उतरे सिंधु गँभीर ॥ लंका जारि सिया सुधि लाये आये उतरिकै

तीर ॥ कपिदल सहित रामपहँ आये महातेज रनधीर ॥ लाल लँगोट सिंदूर विराजै सुन्दर गौर शरीर ॥ सरयूदासपै अब किरपा कीजै हरो विषम भवपीर ॥ ५ ॥

अंजनीकुमार पवनसुत मेरी अरज रामजीसों कहियों जी ॥ टेक ॥ भवसागरमें बहो जात हूँ बाहँ पकर गहि लीजो जी यमको दंड सकल जग ऊपर वाहूसे मोहिं बचैहो जी ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन उनसे मोहिं मिलैहो जी ॥ तुम तो पायक रामचन्द्रके सन्मुख होकर रहियो जी ॥ नदिया गहरी नाव पुरानी बेडा पार लगैहो जी ॥ तेल सिंदूर चढ़ै निशि वासर लाडू भोग लगैहो जी ॥ तुलसिदास हनुमान भरोसे भक्तिदान मोहिं दीजो जी ॥ ६ ॥

जय जय हनुमान वीर बंका ॥ टेक ॥ अंजनिके पुत्र महाबल दायक रामकाज पर कियो हंका ॥ करि किलकार कूद गये सागर घर घर ढूंढै गढ लंका ॥ सियकी सुधि रघुनाथ पठाये छिनमें जारी गढ लंका ॥ बाग उखार समुद्रमें डारे पान फूलको कियो फंका पँच रँग बाण राम लक्ष्मणके देखि असुर थरहर कंपा ॥ अक्षकुमार बाण बिच मारे मेघनादपर कियो हंका ॥ रावण मारि अहिरावण मारे, कुम्भकरण पर कियो हंका ॥ तुलसिदास हनुमान भरोसे भक्त बिभीषण पाई लंका ॥ ७ ॥

रघुनाथ तुम्हारे चरित्र मनोहर ललित मनोहर गावत सकल अवधवासी ॥टेक॥ अति उदार अवतार मनुज वपु धन्यो

ब्रह्मवर अविनाशी ।। प्रथम ताडका हनि सुबाहु वधि मख राख्यो द्विजहितकारी ।। देखि दुखित अति शिला शापवश रघुवर विप्रनारि तुम तारी ॥ सब भूपनको गर्व हऱ्यो है भञ्ज्यो शंभु शरासन भारी ।। तात वचन सुनि राजकाज तजि चित्रकूट मुनिवेष धऱ्यो ॥ एक नयन कीन्हों सुरपति सुत वधि विराध ऋषिशोक हऱ्यो ॥ पंचवटी पावन राघव करि शूर्पणखाको रूप हऱ्यो ॥ खर दूषण संहारि कपट मृग गीधरायको गति दीन्हों ॥ हति कबंध सुग्रीव सखा करि वेधो ताड वालि माऱ्यो ॥ बानर ऋष सहाय अनुज सँग सिंधु बाँधि यश विस्ताऱ्यो ॥ सकल पुत्र दल सहित दशानन मारि अखिल सुरदुख टाऱ्यो ॥ परम साधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक साऱ्यो ॥ सीता अरु लक्ष्मण सँग लीन्हें और दास जेते आये ॥ नगर निकट विमान आयो जब नर नारी देखन धाये ॥ शिव सनकादि विरंचि आदि मुनि अस्तुति करत विमल बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हर्षित आये राम रजधानी ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनित दारुण दुख रामचरण देखत बिसरे ॥ वेद पुराण विचारि लग्न शुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान वर माँगि लियो ॥ ८ ॥

भज रे मन सिया रघुनंदको जगवंदनको ॥ टेक ॥ दशरथनंदन आनँदकंद सूर्यवंशकुलमंडनको ॥ सीतानायक सब

सुखदायक संतनके मनरंजनको ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल करि गौतम नारि उधारनको ॥ जनक स्वयंवर पावन कीन्हो कठिन धनुषके भंजनको ॥ पंचवटी पावन राघव करि खरदूषण संहारनको ॥ जांबवंत सुग्रीव नील चरणकमल रज वंदनको ॥ सागर सेतु नामको बांधे कपिदल पार उतारनको ॥ रावणके दश मस्तक छेदे बीसों भुजा उखारनको ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे काटत यमके फंदनको ॥ ९ ॥

पवनतनय संतन हितकारी ॥ टेक ॥ हृदय विराजैं अवधविहारी ॥ मंगलमूरति मारुत नंदन ॥ सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ वरणौं मात पिता गुरु शारद ॥ उमासहित शिव अरु शुक नारद ॥ चरण वंदि विनवों सबकाहू ॥ देहु रामपद भक्ति निबाहू ॥ वरणों अवधपुर नर नारी ॥ जय रघुवर सिय जनकदुलारी ॥ वरणौं राय कौशल्या रानी ॥ करहु कृपा निज सेवक जानी ॥ वालमीकि मुनि व्यास बखानी ॥ सनकादिक ऋषि अंतर जानी ॥ भरत शत्रुहन संग सुहाये ॥ हनुमान अंगद मन भाये ॥ भीर परे कपि सुमिरौं तोहीं ॥ होहु दयालु दरश दो मोहीं ॥ वन्दौं राम लषन वैदेही ॥ जे तुलसीके परम सनेही ॥ १० ॥

गाइये गणपति जगवंदन शंकर सुवन भवानीके नंदन ॥ टेक ॥ सिद्धिसदन गजवदन विनायक ॥ कृपासिंधु सुंदर सब लायक ॥ मोदक प्रिय मुद मंगलदाता विद्यावारिधि

बुद्धि विधाता ॥ माँगत तुलसिदास कर जोरे बसहिं राम सिय मानस मोरे ॥ ११ ॥

इति मंगलवारकी धुनि समाप्त

अथ बुधवारकी आरती

आरति युगलकिशोरकी कीजै तन मन धन न्यौछावर कीजै ॥ टेक ॥ गौर श्याम मुख निरखत लीजै हरिको स्वरूप नयन भरि पीजै ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा ताहि निरखि मेरो मन लोभा ॥ ओढ़े नील पीत पट सारी कुंजविहारी गिरिवर धारी ॥ फूलनकी सेज फूलनकी माला रत्न सिंहासन बैठे नँदलाला ॥ मोरमुकुट मुरली कर सोहै नटवर कला देखि मन मोहै ॥ कंचनथार कपूरकी बाती हरि आये निर्मल भइ छाती ॥ श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी आरती करैं सकल व्रजनारी ॥ नंदनँदन वृषभानुकिशोरी परमानँद स्वामी अविचल जोरी ॥ १ ॥

इति बुधवारकी आरती समाप्त

अथ बुधवारकी धुनि

भजो वृंदावन जय यमुना जय वंशीवट जय फुलना ॥ टेक ॥ कृष्णचरणको ध्यान धरतही छूटि गई मनकी भ्रमना ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुलमें झूले पलना॥ इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीचमें दान चुकावैं ललना ॥

यमुना किनारे धेनु चरावैं मधुरी बेनु बजावै ललना ॥ पैठि पताल कालिया नाथे फणपर नृत्य किये ललना ॥ इंद्र कोपि चढ़े व्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारे ललना ॥ वृंदावनमें रास रचो है गोपी ग्वाल नचावैं ललना ॥ सेवरीके बेर सुदामाके तण्डुल रुचि रुचि भोग लगाये ललना ॥ दुर्योधन घर मेवा त्यागे साग बिदुर घर खाये ललना ॥ जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन धारे ललना केशी मारे कंस पछारे यमुना मारिबहाये ललना ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो उनके वंश बढ़ाये ललना ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिके चरण पर चित धरना ॥ १ ॥

नाचै नँदलाल नचावै मैया ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुलमें पग धारो री कन्हैया ॥ रुमक झुमक पग नूपुर बाजैं ठुमक ठुमक पग धरो री कन्हैया ॥ दूध न पीवै लला दहिया न खावै माखनको लाला बड़ो री खवैया ॥ साल दुसाला मनहुँ न भावैं कारी कमरी लाला बड़ो री ओढैया ॥ मोरमुकुट पीताम्बर सोहैं बंशीको लाला बड़ो री बजैया ॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमें सहस गोपी इक भयो री कन्हैया ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणकमलकी लेउँ बलैया ॥ २ ॥

मथुरामें हो रहि सर्व मई ॥ टेक ॥ हम दधि बेंचन जात वृंदावन मारगमें मेरी बांह गही ॥ मेरो री कन्हैया

पाँच बरसको सो कैसे तेरी बांह गही जिन गलियन मेरो फिरै री कन्हैया उन गलियन राधे काहेको गई ॥ यमुनाके तीर कदमके छहियां मोहन मुरली बाजि रही ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणकमल चित लाय रही ॥ ३ ॥

नंदभवनको भूषण माई ॥ टेक ॥ यशुदाको लाल बीर हलधरको राधाको रमण परम सुखदाई ॥ इंद्रको इंद्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ कालको काल ईश ईशनको अतुलित बल तउलो नहिं जाई ॥ जाको निगम नेति यश गावें महिमा वेद पुराणन गाई ॥ नंददासके जीवन गिरिधर गोकुलनायक कुँवर कन्हाई ॥ ४ ॥

कुँवरि छबीली राधे प्यारी व्रजवनिता सब रूप लाड़िली ॥ टेक ॥ कलिमलहरनी वेदन धरनी प्रभुवश करनी श्रीराधे ॥ हरिगुण माला प्रेम रसाला रूप विशाला श्रीराधे ॥ छप्पन भोग छतीसौ व्यंजन लाडूमें कछु कियो राधे ॥ कोरो कोरी मटकीमें दही जमायो माखनमें कछु कियो राधे ॥ कत्था चूना लौंग सुपारी बिडियनमें कछु कियो राधे ॥ चुनि चुनि कलियाँ हार बनायो गजरामें कछु कियो राधे ॥ श्रीभेंटको प्रभु दिया है अभय पद अविचल राज करो राधे ॥ ५ ॥

बाजैं बाजैं लाल तेरी पैंजनियां २ हो रुनझुनियां बाजैं ॥ टेक ॥ पैंजनिया जे अधिक सोहावैं मोहि

लिये सुर नर मुनियाँ ॥ नील अंग पर पीत झँगुलिया रत्न जड़ावकी पैंजनियाँ ॥ चंदन चर्चित अंग मनोहर शिरपर सोहत चौतनियाँ यशुमति सुतको चलन सिखावैं अंगुली पकरि लिये दोउ जनियाँ ॥ छोटे छोटे चरण चतुर्भुज मूरति अलक झलक रही नागिनियाँ ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं ताहि नचावैं ग्वालिनियाँ ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि तीन लोकके तुम धनियाँ ॥ ६ ॥

बाजैं बाजैं रामजीकी पैंजनियाँ ॥ टेक ॥ पैंजनि बाजैं अधिक सुहावैं मोहि लिये सुर नर मुनियाँ ॥ जरकस पाग केसरिया जामा रत्नजड़ावकी पैंजनियां ॥ सुंदर वदन कमल-दललोचन शिरपर सोहत चौतनियाँ ॥ मातु कौशल्या चलन सिखावै अंगुलि पकरि लिये दोउ जनियाँ ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहावनियाँ ॥ पीतांबरकी कछनी काछे धनुष बाण कर धारनियाँ ॥ रुमक झुमक पग नूपुर बाजैं अलक झलक रहीं नागिनियाँ ॥ शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं दशरथजीके ललनियाँ ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे तीन लोकके तुम धनियाँ ॥ ७ ॥

भजु गोविंद गोविंद गोपाला ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुलमें ले नँदलाला ॥ पुतनाको जननी गति दीनी अधम उधारन नँदलाला ॥ मातु यशोदा दही बिलोवै माखन खावैं नँदलाला ॥ गोकुलसे हरि मथुरा आये संग लिये सब ब्रजबाला ॥ मथुरा आये रजक लुटाये

संग लिये सब व्रजबाला ॥ कुब्जा तो चंदन घिसि ल्याई मालिनि लाई फूलनमाला ॥ अघसुर मारि बकासुर मारे यमलार्जुन तारे नँदलाला केश पकरिकै कंस पछारे नंद-भवन आये नँदलाला ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो किये मथुराके भूपाला ॥ वनमाली हरि शरणै आये प्रेमभक्तिकी फेरी माला॥ ८ ॥

भजु राधावर सुंदर गिरिधारी गिरिवरधारी ॥ टेक ॥ नंदनँदन आनंद मनोहर प्रथम पूतनाको तारी मोरमुकुट शिर धरे साँवरो संग लिये व्रजकी नारी ॥ यमुनाके निकट कदमकी छहियाँ बिहरत हैं प्रीतम प्यारी ॥ अघासुर मारि बकासुर मारे जरासंधको मदहारी ॥ असुरन कुल निर्वंश कियो हैं केशी कंस हते भारी ॥ यशुमति लाल गोपाल चरणपर चतुरदासकी बलिहारी ॥ ९ ॥

तेरे बांके मुकुटकी छबि न्यारी शोभा भारी ॥ ॥ टेक ॥ यमुनाके नीर तीरे धेनु चरावै कांधे कामरि कारी ॥ वृंदावनमें रास रचो है सहस गोपिका इक गिरिधारी ॥ पीतांबरकी कछनी काछे मुरली बजावै गिरिधारी ॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमें बिहरत हैं प्रीतम प्यारी ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणकमलकी बलिहारी ॥ १० ॥

वृषभानु लली साँवलियासे नेह लगाय चली ॥ टेक ॥ आवो रे अहीरके हमारी गली चंदन छिरकौं तेरी पगरी ॥

हाथमें गजरा गुलाबकी छड़ी ठाढे रहियो लालजी मैं कबकी खड़ी ॥ नयनमें सुरमा मुख भारी पान छोटीसी उमिरिया राधे बड़ो है गुमान ॥ छोटी मोटी मटुकी दधिसे भरि रंगमहलमें राधेजी खड़ी ॥ वृन्दावनमें रासविलास यह धुनि गावै स्वामी कान्हरदास ॥ ११ ॥

मेरे अँगनामें मुरली बजाय गयो रे ॥ टेक ॥ छोटे-छोटे चरण बड़े बड़े नयना वृन्दावनकी कुंजगलिनमें मारि गयो सैना ॥ मेरी आली मेरी आली कहो कित जाऊँ मुरलीमें गावै लै लै मेरो नाम ॥ ऊँची नीची घाटी मोसे चढउ न जाय मुरलीकी धुन सुनि रहउ न जाय ॥ कित गईं गैयां कित गये ग्वाल कित गये वंशी बजावनहार ॥ गोकुल गईं गैयां वृन्दावन ग्वाल मथुरामें वंशी बजावनहार घर आईं गइयां घर आये ग्वाल अजहुँ न आये मेरे मदन-गोपाल ॥ मीराके प्रभु गिरिधरलाल पाये हैं दर्शन भई है निहाल ॥ १२ ॥

गिरि न परै गोपाल गिरिवर ॥ टेक ॥ व्रजकी सखी सब पूजन निकसीं भरि भरि मुतियन थार ॥ इंद्रहु कोपि चढेउ व्रज ऊपर वर्षत मूसल धार सात दिवस मेघवा झारि लाये व्रजमें परो न फुवार ॥ शंखचक्र गदा पद्म विराजैं बांके नयन विशाल ॥ ग्वालबाल सब गिरिवर नीचे मुरली बजावै नंदको लाल ॥ पीतांबरकी कछनी काछे नखपर

गिरिवर धार ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल तिलक विराजै भाल ॥ चंद्रमुखी भजु बालकृष्ण छबि निरखत-मुख नँदलाल ॥ १३ ॥

अँखियामें लागि रहे गोपाल ॥ टेक ॥ मैं यमुना जल भरन जात रही, फैलायो जंजाल ॥ रुनुक झुनुक पग नूपुर बाजैं चाल चलत गजराज ॥ यमुनाके नीरे तीरे चरावै संग सखा व्रजराज ॥ बिन देखे मोहिं कल न परत है निशि दिशि रहत बिहाल ॥ लोक लाज कुलकी मरियादा निपट सुभ्रमका जाल ॥ वृंदावनमें रास रच्यो है सहस गोपी इक लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै गल वैजंती माल ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजैं बांके नयन विशाल ॥ चन्द्रमुखी भजु बाल कृष्ण छबि चिरजीवहु नंदलाल ॥ १४ ॥

भजो सुन्दर श्याम मुकुटधारी ॥ टेक ॥ वदनकमलपर कुण्डल झलकैं अलकैं सोहैं घूँघुरवारी ॥ उर वैजंतीमाल विराजै वनमाला सोहैं गुंजनवारी ॥ केशर भाल तिलक शिर सोहै मुरलीकी छबि है न्यारी ॥ पांयनमें पैंजनियां सोहैं झूमझूम आवत गिरिधारी ॥ वंशीवट तट रास रचो है संग लिये राधा प्यारी ॥ वृन्दावनमें खेलत डोलत विहार करत हैं वनमाली ॥ चन्द्रमुखी भजु राधावल्लभ चरण-कमलकी बलिहारी ॥ १५ ॥

मन अटकी मेरो दिल अटकी हो मुकुट लटक मेरो मन अटकी ॥ टेक ॥ माथे मुकुट और चन्दनकी शोभा है पीरे

पटकी ॥ शंख चक्र गदा पद्म बिराजै गुंजमालमें रहिये अटकी ॥ अंतरध्यान भये गोपियनमें सुध न रही यमुनातटकी ॥ पात पात वृंदावन ढूंढे कुंज २ राधे भटकी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावैं सुरत रही वंशीवटकी ॥ फूलनके जामा कदमकी छैयां गोपियनकी मड़की पटकी मीराके प्रभु गिरिधरनागर वे जानैं सबके घटकी ॥ १६ ॥

कैसे आवौं हो लाल तेरी व्रजनगरी गोकुल नगरी ॥ टेक ॥ इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीच बहै यमुना गहिरी ॥ पाँव धरो मेरी पायल भीजै कूदि परौं बहि जाउँ सगरी ॥ मैं दधि बेंचन जात वृंदावन मारगमें मोहन झगरी॥ बरजो यशोदा अपने लालको छीनि लियो मेरी नथ लेरी ॥ रहु रहु ग्वालिनि झूँठ न बोलो कान्ह अकेला तुम सगरी॥ हमरो कन्हैया पाँच वरसको तुम ग्वालिनि अलमस्त भई जाय पुकारों कंसराजासे न्याय नहीं मथुरा नगरी ॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमें, बांह पकर राधे झगरी ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर साधु संग करि हम सुधरी ॥ १७ ॥

मोको चाकर राखो जी सांवलिया गिरिधारी लाल ॥ टेक ॥ चाकर रहती बाग लगाती नित उठि दर्शन पाती ॥ वृन्दावनकी कुन्जगलिनमें, गोविंदलीला गाती ॥ चाकरीमें मैं दर्शन पावों सुमिरन पावों खरची ॥ भावभक्ति जागीरी पावों तीन लोककी खरची ॥ मोदी पूछे मदनमोहनसों कहा महिमा पायो ॥ तीन लोक जागीरी पायों

निर्भय पटो लिखायो ॥ योगी आये योग करनको तप करने संन्यासी ॥ राजभजनको साधू आये वृंदावनके वासी ॥ ऊंचे ऊंचे महल बनायो बिच २ राखों बारी ॥ सांवलियाके आगे नाचूं ओढि पीतांबर सारी ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै गल वैजंतीमाला ॥ वृन्दावनमें धेनु चरावै मोहन मुरली-वाला ॥ चौका देउँगी झाडू देउँगी गोबर उठाऊं बासी ॥ सांझ सबेरे जल भरि लाऊं सब संतनकी दासी ॥ मीराके प्रभु गिरिधरलाल ग्वालिनिको प्रभु दर्शन दीनो यमुना-जीके तीर ॥ १८ ॥

जय जय यशोदानंदनकी जगवंदनकी ॥ टेक ॥ भाल विशाल माल मोतियनकी खौर विराजै चंदनकी ॥ पैठि पताल कालि नाग नाथो फण पर निरत करावनकी ॥ यमु-नाके नीरे तीरे धेनु चरावैं हाथ लकुटिया चंदनकी ॥ इंद्रन कोप किये व्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारनकी ॥ केसी मारे कंस पछारे असुरनके दलभंजनकी ॥ उग्रसेनको राज-तिलक दियो रक्षा करि सब संतनकी ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजैं भक्तवत्सल भवभंजनकी ॥ घंटा ताल पखावज बाजैं गहरी धुनि सब संतनकी ॥ आपन जाय द्वारका छाये पल पल लहर तरंगनकी ॥ आस पास रत्नाकर सागर गोमति करत किलोलनकी ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छवि चरण कमलरज वंदनकी ॥ १९ ॥

घर आवोगे पनघटपर मुरली बजावोगे ॥ टेक ॥ साधो पहिली प्रीति जानोगे हरिको कहां पहिंचानोगे ॥ साधो

गौर श्याम मुख राची है प्रभु पूरणब्रह्म अविनाशी है
साधो गिरिवर धेनु चरावोगे सब गोपी ग्वाल नचावोगे ॥
साधो राह घाट मोहिं रोकत है कान्हा दही मेरो लूटत है ॥
साधो मोरमुकुट वनमाला हैं अच्छे सुंदर नयन विशाला हैं॥
साधो पीत वसन कर मुरली है बाजूबंद मुद्रिका पहुँची है ॥
साधो औरको जप तप काशी है हम तो वृंदावनवासी हैं ॥
साधो राम कृष्णगुण गावोगे भवसागर फेर न आवोगे ॥
राघवदास आनंदपद पवोगे हरिचरणन नेह लगावोगे॥ २०॥

बलिहारी लाल तेरे आवनको मनभावनकी ॥ ॥ टेक ॥ इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीचमें रास रमावनकी ॥ चुनि चुनि कलियाँ मैं हार बनाऊँ यदुवर उर पहिरावनकी ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहै मधुर मधुर मुसकावनकी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावैं मधुरीसी वेणु बजावनकी पैठि पताल कालिया नाथे फणपर निरत करावनकी ॥ इंद्र कोप चढे व्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारनकी॥ केश पकारि हरि कंस पछारे यमुना मार बहावनकी ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो उनहूँके वंश बढावनकी ॥ वृंदावनमें रास रचो है सहस गोपी इक कान्हाकी ॥ जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन धारनकी दुर्योधन घर मेवा त्यागी साग विदुर घर पावनकी ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिके चरण चित लावनकी ॥ २१ ॥

इति बुधवारकी धुनि समाप्त

अथ गुरुवारकी आरती

जय जय आरति राम तुम्हारी राम दयालु भक्तहितकारी ॥ टेक ॥ जनहित प्रगटे हरि व्रतधारी जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली ॥ द्रुपदसुताको चीर बढायो गजके काज पयादे धायो ॥ दश शिर छेदि बीस भुज तोरे तेंतिस कोटि देव बँदि छोरे ॥ छत्र लिये कर लक्ष्मण भ्राता आरति करत कौशिला माता ॥ शुक शारद नारद मुनि ध्यावैं भरत शत्रुहन चँवर ढुरावैं ॥ रामके चरण गहे महावीरा ध्रुव प्रह्लाद वालिसुत वीरा ॥ लंका जीति अवध हरि आये सब संतन मिलि मंगल गाये ॥ सीतासहित सिंहासन बैठे रामानंद स्वामी आरती गाये ॥ १ ॥

इति गुरुवारकी आरती समाप्त

अथ गुरुवारकी धुनि

निरखत रूप सिया रघुवरको छबि नहिं जात बखानी ॥ टेक ॥ कनकथार गजमाणिक मोती आरति करत कौशल्या रानी ॥ मान्यो है मान सकल भूपनको महिमा वेद बखानी ॥ तोरन धनुष यज्ञ पूरण करि जनकरायकी लज्जा राखी ॥ परशुरामको हितकर मानी सुरपुर नारि अवधपुरवासी ॥ नाचत नवल अप्सरा मुदितमन वर्षि सुमन मुसकानी ॥ रत्नसिंहासन रघुवर बैठे आरति करत कौशिला माता हर्षि निरखि सुख मानी ॥ दशरथ सहित अवधपुरी-

वासी ॥ तुलसिदास अविचल यह जोरी भक्ति अभयपद दानी ॥ १ ॥

भजो अवधपुर सिय रघुवीर ॥ टेक ॥ अवधपुरीको ध्यान धरतही जरा मरण छूटै भवभीर ॥ नृप दशरथके चारि पुत्र हैं तिनमें रघुवर श्याम शरीर ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन बिहरत हैं सरयूके तीर ॥ रुमुक झुमुक पग नूपर बाजैं गज जिमि चाल चलैं रणधीर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गले विराजैं मुक्ताहीर ॥ शारँगधनुष बाण कर राजै पीतांबर पहिरे पटचीर ॥ बाम अंग सिय जनक नंदिनी दहिने विराजैं लक्ष्मण बीर ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सेवत हैं नारद मुनि धीर तुलसिदास हरिरूप निहारैं नित उठि गावैं गुणगंभीर ॥ २ ॥

जय रघुवरस्वामी हरि अंतर्यामी आरती उतारों प्रभु अन्तरयामी ॥ टेक ॥ भाल विशाल तिलक शिर सोहै क्रीट मुकुट धारी ॥ श्रवणन कुण्डल झलके अद्भुत छबि न्यारी ॥ लोचन ललित वदन अति सुंदर कंठे वनमाला ॥ भृगुलक्षण उर राजै दशरथ सुत लाला ॥ रत्नसिंहासन आपु विराजैं हरि रघुकुलकेतू ॥ अधम उधारन नाथ भवसागर-सेतू ॥ जनकसुता सिय जनकनंदिनी सोहत बायें अंगा ॥ सन्मुख पवनकुमार लक्ष्मण दहिने अंगा ॥ पीत वसन कर धनुष विराजै हरि बहुविधि सोहैं ॥ सुंदर रूप निहार कोटि मदन मोहैं ॥ चरण कमल कोमल अति सुंदर छबि वरणी

नहिं जाय ॥ मुख मकरंद मधुप मुनि मन लोभ लुभाय ॥ शारद शेष विमल यश गावैं सनकादिक ध्यावैं ॥ सोइ चरणन उर राखि शिव निशिदिन ध्यावैं ॥ आगम निगम पुराण बखाने अतिदुर्लभ नरदेहु ॥ तुलसी भजु रघुनाथ जन्म सुफल करि लेहु ॥ ३ ॥

जय यदुवरस्वामी हरि अन्तरयामी आरति उतारों प्रभु अन्तरयामी ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है दुष्टन क्षयकारी पृथ्वीभार उतारन नरदेही धारी ॥ मथुरासे हरि गोकुल आये कंस खबर पाई ॥ मौत आपनी जानि पूतना पहुँचाई ॥ यमलार्जुन ये वृक्ष उपारे शोभा अति प्यारी ॥ नंद यशोदा निरखैं आनंद उर धारी ॥ रास रचो वृन्दावन मोहन शोभा अति भारी ॥ मुरली अधर बजावैं मोहैं व्रजनारी ॥ रुमक झुमक पग नूपर बाजै ठुमक चाल भावै ॥ कटि पीतांबर राजै शोभा अति पावै ॥ कुंडल लोल कपोल विराजै कंठे वनमाला ॥ भृगुलक्षण उर राजै संग लिये व्रजबाला ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल लीलावपुधारी ॥ सूरदास है शरण पल पल बलिहारी ॥ ४ ॥

जय श्रीरघुनाथा जय जानकिनाथा दोउ कर जोरे बिनवों प्रभु मेरी सुनु बाता ॥ टेक ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुम हो सजन सँगाती, भक्ति मुक्तिदाता चौरासी प्रभु बंदि छोड़ावो मेटो यमत्रासा ॥ निशि दिन प्रभु मोहि राखो अपने सँग साथा ॥ रघुवर लक्ष्मण

भरत शत्रुहन सँग चारों भैया ॥ जगमग जोति विराजै शोभा अति रैया ॥ हनुमत नाद बजावैं नूपुर ठुमठैया ॥ सुवर्णथाल आरती करत कौशल्या मैया ॥ राम कबीर कृपा करि बोले बोले उपकारी ॥ उन हरि हमहिं बतावो सीता राम धनुषधारी ॥ ब्रह्मा विष्णु महादेव सायर सुखदाता ॥ धन्य तुम्हारो दर्शन करि हो प्रति पाला ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल शोभा अति भारी ॥ मनीराम दर्शनको पल पल बलिहारी ॥ ५ ॥

जय श्रीयदुनाथा जय लाडिलिनाथा श्यामसुंदर राधा-मोहन मेटो यमत्रासा ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुल पग धारी ॥ झूलत हैं पलनामें पूतना प्राणहारी यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावैं वंशी अति बाजी ॥ गौवनके संग बिहरें मोर मुकुटधारी ॥ पैठि पताल काली नाथ नाथे फणपर नृत्य धारी ॥ ताताथेई ताताथेई उचरे नट-वर वपुधारी ॥ इंद्र कोप चढ्यो ब्रजके ऊपर वर्षा अति भारी ॥ नखपर गिरिवर धरि गौवन हितकारी ॥ नारद बेनु बजावैं नूपुर ठुमकैया ॥ कंचनथार आरती करत यशोदा मैया ॥ दीनानाथ दया करि बोले बोले हितकारी ॥ उन हरि हमहिं बताओ मोरमुकुटधारी ॥ जगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा शोभा अति भारी ॥ सुर नर चँवर ढुरावैं अद्भुत छबि न्यारी ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजैं शोभा अति भारी सूरदास दर्शनको पल पल बलिहारी ॥ ६ ॥

जय श्रीरघुनंदा जय जानकिनंदा आरती उतारो जय श्रीरघुनंदा ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट श्रुति कुंडल सोहैं चक्रावली राजै ॥ केसर तिलक विराजै लखि दामिनि लाजै भृकुटी कोटिकाम छबि निंदति दृग अंजन सोहै ॥ चितवन ललित उदार सियाकंत मन मोहै ॥ नाक बुलाक लाल अति सोहै सुन्दर मुसुकानी ॥ दशन अधर छबि देखि मोहैं मुनि ज्ञानी ॥ कंठा कंठ युगल कुंजर मणि कौस्तुभ उर भ्राजै ॥ पदिकहार वनमाल सुंदर छबि राजै ॥ बहु विशाल विभूषण पहिरे कर शर धनु सोहै ॥ सुन्दर रूपनिहारि कोटि मदन मोहै ॥ पीत वसन कटि किंकिणि राजे पटको छबि भारी दुहुं छोरन मणि मोती लागत अति प्यारी सुभग घुँघुरू पाँयन राजैं, नूपर रवकारी ॥ चरणकमल मृदु सुन्दर, आरत भयहारी संग सखा सरयूतट बिहरैं, हनुमत सँग कीन्हों ॥ भरत लषण रिपुसूदन संग सखा लीन्हों ॥ पुष्पसिंहासन परम मनोहर राजत सुखकारी ॥ जनकसुता बायें अंग शोभित सुकुमारी अनुचर झुंड चहुं दिशि राजे शोभा अति भारी ॥ तुलसिदास छबि देखि पल पल बलिहारी ॥ ७ ॥

जय नटवरवेषा हरि नटवरवेषा आरती उतारों यदुवर जगदीशा ॥ टेक ॥ मोरमुकुट मस्तकपर राजै कंठे वनमाला ॥ श्रवणन कुंडल झलकैं संग लिये व्रजबाला ॥ रास रचो नारायणस्वामी वृन्दावन राधे॥ताल पखावज बाजैं मधुरे सुर गावैं ॥ ताथेइ ताथेइ शब्द उचारैं ताता पुरराजे॥ सुन्दर भृकुटि विराजे कोटि मदन लाजे घुमकर २ घुंघुरू घुमकै

घुमक घुमक घुमकै ॥ नाचत राधा मोहन पाँयन ठुमठुमकै ॥ ऊंचे स्वरसे शब्द उचारो मधुरे स्वर गावै ॥ राधा मोहन जोरी मनमें मोहिं भावै ॥ निरत करैं गोपाललालजी शोभा ताथेई ॥ केशव हरिमुख निरखैं केवल निरछेई ॥ ८ ॥

जय सियमहारानी जय जानकिरानी सुररंजनि अघगंजनि सेवत मुनि ज्ञानी ॥ टेक ॥ कुंद रदनि शशिवदनी दामिनि द्युति गाता ॥ भूषण वसन सँवारे कर लिये जलजाता ॥ बंदी भाल विशाल विराजै सुंदर मुसुकानी ॥ गजगमनी चित रमनी रघुवर मनमानी ॥ मृगलोचनि अघमोचनि सखियन संग सोहैं ॥ विहरत सरयूतीर लखि सुरत्रिय मोहैं ॥ विधि हरि हर तोहिं ध्यावैं निज निज पद पावैं उमा रमा ब्रह्माणी तुहिं निशि दिन ध्यावैं ॥ संतन सुख दरसावैं रघुवर रुख लीने ॥ सुखसागर दोउ विहरैं रामसेवक हिये ॥ ९ ॥

जय राधे रमनी हरि राधे रमनी दुखहरनी सुखकरनी गोविंदवशकरनी ॥ टेक ॥ वृंदावनमे रास रचो हैं को कहि सकै बखानी ॥ सब गोपियनके मध्य राधे शशिवदनी ॥ वृंदावनकी कुंजगलिनमें लीला सुखकरनी ॥ मोहन नाच नचायो जनकलमलकरनी ॥ राधा हरि विज्ञाता गोपुर निज धरनी ॥ इंद्र चंद्र ब्रह्मादिक सकत न गुण वरनी ॥ सनकादिकके वचन सत्य करि प्रगटी व्रजधानी ॥ लीला अद्भुत कीन्हों दुष्टन दल हीनी ॥ राधा राधा रटन करतही बाधा भ्रम हरनी ॥ पांच सखी मिलि वरनी राधे जगजननी ॥ १० ॥

प्रगटे सीताराम अवधपुरमें ॥ टेक ॥ राजा दशरथ गृह राम जन्म लियो नौ निधि आई उनके घरमें ॥ बाजा बाजे इंद्र गाजे जयजयकार भयो पुरमें ॥ वर्षत पुष्प देव मुनि हर्षत आनँद भयो तीनों पुरमें ॥ संग सखा सरयूतट बिहरैं धनुष बाण धरे करमें ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सफल करि खल मारे एकहि क्षणमें ॥ जनकस्वयंवर पावन कीन्हों तोरयो धनुष जनकपुरमें ॥ सिया विवाहि अवधपुर आये आनँद भयो नारी नरमें ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल जन तुलसी धारे उरमें ॥ ११ ॥

रामलला शिर टोपी देखो सखि० ॥ टेक ॥ छोटे छोटे लरिकन संग खेलैं हाथ लिये घृत रोटी ॥ हाथमें ललित पहुँचिया सोहैं कानन कुण्डल रविकी जोती ॥ पग पैंजनियाँ अधिक सोहावैं गले बिच उज्ज्वल मोती ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारो भैय-नकी जोटी ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर मात कौशल्या हँसि लोटी ॥ १२ ॥

अच्छे रामजी लला तुम्हारे वदनपर अनंत कला ॥टेक॥ मुखमें बीरा नयन विशाला, जित चितवें तित करत निहाला ॥ क्रीट मुकुट कुण्डल वनमाला भाल तिलक सोहैं नयन विशाला ॥ छोटी मोटी नदिया गहिर गँभीर कल्प-वृक्षतर सिय रघुवीर ॥ संग सखनकी सोहै भीर भरत शत्रु-हन लक्ष्मण वीर ॥ छोटीसी धनुहियाँ रामजी छोटे मोटे

तीर खेलत है सरयूके तीर ॥ जहँ तहँ परे संतनके भीर हर्षित आवें सिया रघुवीर ॥ भागदास गये सरयूके तीर बीचमें मिलि गये सिया रघुवीर ॥ १३ ॥

अँखियाँमें लागि रहे रघुवीर ॥ टेक ॥ निशिवासर मन लाग रहत है नयन धरत नहिं धीर रुमकझुमक पग नूपुर बाजैं चाल चलैं रणधीर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडलगल बिच मुक्ताहीर ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखनकी भीर ॥ पीतांबर कर धनुष विराजै शोभित श्याम शरीर ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारैं हरत संतकी पीर ॥ १४ ॥

हँसि हँसि मन मोहैं रघुवीर ॥ टेक ॥ मैं सरयू जल भरन जात थी भरत बिसर गइ नीर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गल बिच मुक्ताहीर ॥ संगसखा सरयूतट बिहरत राम लखन दोउ वीर ॥ शारंगधनुष बाण कर राजै पहिरे पीतांबर चीर ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारे हरत संतकी पीर ॥ १५ ॥

मोहिं भावै हो श्रीराम लला ॥ टेक ॥ चारों भैया रामजी चतुर सुजान मैया गोद खिलावै हो ॥ कनक कटोरा अतर फुलेल मर्दन अधिक सोहावै हो शिर सोहै जरकसकी पाग कानन कुण्डल झलकावै हो ॥ पीत झुँगुलिया सुर सोहै हरिके हाथ हरषि निरखि पहिरावै हो ॥ उर सोहै मोतियनकी माला बाजूबंद अधिक सोहावै हो लाल खरउवां सुंदर सोहैं हरिके पांव अवध नगर फिरि आवै हो ॥ भागदासके सिय रघुवीर नयन नेह लगावै हो ॥ १६ ॥

भरत राम मोहिं भावें हो सुभग चाल सुंदर अतिप्यारी ॥ टेक ॥ नृप दशरथके चार पुत्र हैं शोभा वरणि नजावैं हो ॥ सरयूके तीरे खेल रचो है सुंदर बाण चलावें हो ॥ सरयू न्हान चले रघुनंदन चपल तुरंग नचावें हो ॥ अवधपुरीकी वधू अटा चाढि निरखि परम पद पावें हो ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर चारि वेद यश गावें हो ॥ १७ ॥

राग आशावरी—रामजन्म सुनि अपने पतिसों हँसि ढाढिनि यों बोली हो ॥ जाहु कंत राजा दशरथके दानकोठरी खोली हो ॥ टेक ॥ तुमको देइँ अंगको बागो और दक्षिणा भर झोरी हो हमको लीजो नखको गहनो पटरसुधाकी चोली हो ॥ साजसहित इक घोडा लीजो गैया दूध अचोली हो ॥ सहित अम्बारी हाथी लीजो हथिनी अधिक अमोली हो ॥ लीजो कंत कहार सहित इक हमहिं चढनको डोली हो ॥ सोलह वर्षकी सुन्दरि लीजो टहल करनको गोरी हो ॥ सेजसहित इक पलँगा लीजो औ पाननकी ढोली हो ॥ बीरी कारि करि हमहिं खवावे लीजो सुघर समोली हो जन्म जन्म काहूके आगे बहुरि न माडो बोली हो ॥ जन गोविंद रघुवीर याचिकै भये हैं अयाचक ढोली हो ॥ १८ ॥

इति गुरुवारकी धुनि समाप्त

अथ शुक्रवारकी आरती

आरति लक्ष्मण बालजतीकी असुरसँहारन प्राणपतीकी ॥ टेक ॥ जगमग जोति अवधपुर राजैं शेषाचलपै आप विराजैं ॥ घंटा ताल पखावज बाजैं कोटि देव मुनि आरति साजैं ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजैं तीन लोक जाकी शोभा राजैं कंचनथार कपूर सुहाई आरति करत सुमित्रा माई ॥ आरति कीजे हरिकी तैसी ध्रुव प्रह्लाद बिभीषण जैसी ॥ प्रेम मगन होय आरति गावै बसि वैकुंठ बहुरि नहि आवै ॥ भक्तिहेतु हरि लाड लडावै जन घनश्याम परम पद पावै ॥ ७ ॥

इति शुक्रवारकी आरती समाप्त

अथ शुक्रवारकी धुनि

आरति कीजै रामचंद्रजीकी हरिभक्ति करो यमत्रास न दीजै ॥ टेक ॥ पहिली आरति पुष्पकी माला कालीनाग नाथि लाये मदनगोपाला ॥ दूसरि आरति देवकीनन्दन भक्त उधारन कंसनिकंदन ॥ तीसरि आरति त्रिभुवन मोहै रत्न-सिंहासन सीता रामको सोहै ॥ चौथी आरति चहुँ युग पूजा देव निरंजन स्वामी और न दूजा ॥ पाँचवीं आरति रामजीको भावे रामजीको यश नामदेव गावै ॥ १ ॥

मेरे मन बसि गये सीताराम सीताराम सीताराम सीता-राम ॥ टेक ॥ गौर वरन सिय जनकनंदिनी रघुवर हैं घन

सुन्दर श्याम ॥ दशरथपुत्र अयोध्या नायक तिनपर चँवर ढुरावें हनुमान॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो गौतमनारि पठाये निजधाम ॥ जटामुकुट मुनिवेष धरो है कठिन धनुष लिये शारँगबाण ॥ तुम जनि बिसरि जाउ तन मनसे तुम बिनु निकसि जायँ मो प्राण ॥ सरयू तीर अयोध्या नगरी जहँ बिहरैं सिय लक्ष्मण राम ॥ आशानंद कहै करजोरे चौंसठि घरी भजु आठौं याम ॥ २ ॥

आवनकी मनभावनकी बलिहारी रामके आवनकी॥टेक॥ रघुबर लक्ष्मण भरत शत्रुहन श्याम सुरति मनभावनकी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर बनमाल सुहावनकी ॥ पीतांबरकी कछनी काछे धनुष बाण कर धारणकी ॥ रुम-झुमक पग नूपुर बाजैं ठुमक चाल मन भावनकी ॥ सँग सखा सरयूतट बिहरैं चपल तुरंग नचावनकी ॥ रामप्रसाद भक्तिवर मांगै चरणकमल चितलावनकी ॥ ३ ॥

जय वेंकट रमना हरिवेंकट रमना आरति उतारों संतन हित करना ॥ टेक ॥ सुन्दर शैल शिखर शेषाचल मुनिजन मन हरना ॥ अति उत्तम अस्थान अगम निगम भवना ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजे कुंडलछबि रचना ॥ सुन्दर नयन विशान चितवनि मन हरना ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजै वनमाला धरना ॥ कटि किंकिणि अति राजे अरु-णकमल रचना ॥ दीनानाथ दयालु दयानिधि दीनन हित करना ॥ अग्रदास चरणनपर पल पल चित धरना ॥ ४ ॥

रघुवर महाराजा तुम सब देवनके राजा ॥ टेक ॥ अवधपुरीमें जन्म लियो है कल्पवृक्षकी छाया ॥ रत्नसिंहासन आपु विराजे ॥ दशरथके सुत लाला ॥ शेष लिये कर छत्र विराजैं भरतने चँवर ढुराया ॥ हनूमान कर जोरे ठाढे ब्रह्मा वेद सुनाया ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहाया ॥ शारँग धनुष बाण कर राजै पीतांबर छबि छाया ॥ पाँयन ललित पैंजनियां बाजैं शोभा वरणि न जाया ॥ मातु कौशल्या करत आरती सखियन मंगल गाया ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गाया ॥ तुलसीदास आस रघुवरकी चरण ॥ कमल चित लाया ॥ ५ ॥

टीकम महाराजा तेरो वेद विमल यश गावैं ॥ टेक ॥ तृण सुमेरु रज कर सुमेरु कहँ रंकको राज बनावैं ॥ अविनाशी अरु अन्तरयामी रवि शशि नयन लजावैं ॥ सुरपति शेष विमल यश गावैं शारद चँवर ढुराया ॥ निशि वासर शिव भृकुटि विलोकैं ब्रह्मा वेद सुनाया ॥ नामखंभ तिहुँ लोक खडे हैं अंडकटाह कहावैं ॥ गिनि गिनि मुनिजन पार न पावैं कुन्नस्काल बजावैं ॥ नामकला अति कोटि विराजे सुर नर ध्यान लगावैं ॥ इंद्र कुबेर नारद सनकादिक हरिजन हरियश गावैं ॥ अवधर धरणि तुम्हारि कृपानिधि कुदरत जानि न जावैं ॥ सरयूदास करुणाके सागर पंछी मंगल गावैं ॥ ६ ॥

तेरे बाजैं अनहद बाजा लक्ष्मण महाराजा० ॥ टेक ॥ त्रिपतीमें सीताराम विराजैं शेषनागकी छाया ॥ शेषाचलपर आप विराजैं तीन लोकके राया ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै गले वैजंतीमाला ॥ कमल नयन करुणाके सागर बडे बडे भुजा विशाला ॥ ब्रह्मा जाको वेद सुनावें सुर नर ध्यान लगाया ॥ शेष सहसमुख रटत निरंतर वाको पार न पाया ॥ सप्त द्वीप पानीके ऊपर लीला अजब बनाया ॥ विना खंभ असमान खड़ा है नौ लख तारा छाया ॥ भक्त-वत्सल संतनके हेतू हरि हैं सुखके दाया ॥ चरण दास चर-णनकी महिमा चरणकमल चित लाया ॥ ७ ॥

दाऊ महाराजा तेरे बाजें नौबत बाजा ॥ टेक ॥ मथुरामें हरि जन्म लियो है गोवर्द्धनकी छाया ॥ व्रजमंडलमें आय विराजे गऊलोकके राया हल मूसल हथियार विराजैं गले विराजै पटुका ॥ गल बिच हीरा अधिक सोहावै शिरपर कलँगी चीरा ॥ गऊलोक तीनों लोक ऊपर है कृष्णचन्द्रकी माया शेष सहसमुख रटत निरंतर वाको पार न पाया ॥ सर्व तीर्थ मथुरामें आये चारि धामकी माया ॥ यमुनाके निकट कदमकी छैयां तहां करें विश्रामा ॥ सनकादिक जाकी विनय करत हैं नारद ध्यान लगाया ॥ इंद्रहु जाकी करत आरती ब्रह्मा वेद सुनाया ॥ भक्तवत्सल संतनके हैं रे हरि हैं सुखके दाया ॥ श्रीभट दान इहै प्रभु दीजै चरण-कमल चितलाया ॥ ८ ॥

दर्शन दे वेंकटरैया तेरे दर्शनको मेरो मन ललचैया ॥ टेक ॥ त्रिपतीमें सीताराम विराजैं चौकी है लक्ष्मण रैया॥ शेषाचलपर आप विराजैं चौकी हनुमतरैया ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं विजयघंट धुनि होरैया ॥ आठ पहर फूलनके जामा ऊपर चँवर ढुरावै रैया ॥ शंख चक्र गदापद्म विराजैं क्रीट मुकुट कुंडल रैया ॥ भोगमढीमें भोग लगत हैं वेदनकी धुनि होरैया ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यंजन ऊपर तुलसी रमि रैया ॥ आसपास गिरिवरकी शोभा बिचमें कोयल झूकैया ॥ जन हाथीरामजी वेंकटजीके शरणे आवागमन निवारे रैया ॥ ९ ॥

सूर्यवंश उजागर नागर जय जग लक्ष्मण बालजती ॥ टेक ॥ जय अनंत जय जय भुवनेश्वर जय जय फणी पतालपती ॥ चौदह भुवन शीशपर राजैं भार न लागै एक रती ॥ दशरथ पुत्र सुमित्रानंदन कुँवरि उर्मिला प्राणपती क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल शिर चंदनकी खौर खँची शारंग धनुष बाण कर राजै पीतांबरसे कमर कसी ॥ पच रँग बाण राम लक्ष्मणके देखि असुरकी फाटी छाती ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक पार न पावैं यती सती ॥ तुलसिदास यह ध्यान धरत हैं राम लखन अरु सिया सती ॥ १० ॥

जय वेंकट हरना चरणकमलको दर्शन दीजै ॥ टेक ॥ भवसागरमें बहा जात हौं बांह पकरि झटपट धरना ॥

गहिरी नदिया नाव झाँझरी सेवक जानि दया करना ॥ जप तप नियम धर्म नहिं जानों एक उदर भरना ॥ शंख चक्र गदापद्म बिराजैं पीतांबर कछनी कछना ॥ जन हाथी रामजी वेंकट शरणै निशि दिन नाम यही रटना ॥ ११ ॥

जय जय बोलो साधो लक्ष्मणबालाकी ॥ टेक ॥ दक्षिणदेश सवा लख पर्वत जगमग ज्योति दिवालाकी ॥ त्रिपतीमें सीताराम विराजैं चौकी लक्ष्मण बालाकी शेषाचलपर आप विराजैं चौकी हनुमत लालाकी ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं गहिरी चोप नगाराकी ॥ आठ पहर फूलनको जामा ऊपर मौज दुशालाकी ॥ बालाजीके रथपर रत्नसिंहासन मुकुट बन्यो मोतीमालाकी ॥ देश देशके यात्री आये मार परै मृग छालाकी ॥ आशानंद कहै कर जोरी पति राखो कंठीमालाकी ॥ १२ ॥

गालियां मत देउ तिलंगा रंगा ॥ टेक ॥ तुम हो तिलंगारंगा हम परदेसी चंगा तुम्हारो हमारो सतसंगा ॥ त्रिपतीमें सीताराम विराजैं लक्ष्मी विराजैं दहिने अंगा ॥ शेषाचलपर आप विराजैं सन्मुख हैं बजरंगा ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल रूप धरे बहु रंगा ॥ अष्ट पहर फूलनके जामा पीतांबर पचरंगा ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं ढिग पुष्करिणी गंगा ॥ शंख चक्र गदापद्म विराजैं रूप बनो बहु रंगा ॥ आस पास गिरिवरकी शोभा बीचमें कोयल

है चंगा ॥ जन हाथीरामको वेंकट शरणै नित उठि होय सत्संगा ॥ १३ ॥

इति शुक्रवारकी धुनि समाप्त

अथ शनिवारकी आरती

आरती कीजै नरसिंह कुँवरकी वेद विमल यश गाऊं मेरे प्रभुजीके ॥ टेक ॥ पहिली आरति प्रह्लाद उबारे हिरनाकुश नख उदर बिदारे ॥ दुसरी आरति वामन सेवा बलिके द्वारे पधारे हरिदेवा ॥ तिसरी आरती ब्रह्म पधारे सहसबाहुके भुजा उखारे ॥ चौथी आरति असुर संहारे भक्त बिभीषण लंक पधारे ॥ पांचवीं आरति कंस पछारे गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले ॥ तुलसीको पत्र कंठ मणिहीरा हरषि निरखि गावैं दास कबीरा ॥ ६ ॥

इति शनिवारकी आरती समाप्त

अथ शनिवारकी धुनि

नाचौंगी रँग राचौंगी रघुनंदन आगे मैं नचौंगी ॥टेक॥
करि शृंगार हार तुलसीको भाल तिलक शिर राखोंगी ॥
प्रेम प्रीतिकी बांधि घूँघुरू सुरतिकी कछनी मैं काछोंगी ॥
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन सांवलि सुरति उर राखोंगी ॥
चुनि चुनि कलियाँ मैं हार बनैहों रघुवर उर पहिरावोंगी ॥
नाचि नाचि रघुनाथ रिझावों भक्तिरसीली मैं याचोंगी ॥
लोकलाज कुलकी मर्यादा इनमें एकौ न राखोंगी ॥ सरयूके तीर अयोध्या नगरी बैठि झरोखा मैं झाँकोंगी ॥ १ ॥

श्रीमन् नारायण नारायण सुमिरि सुमिरि भये पारायण ॥ टेक ॥ जाको नाम लेत अघ नाशैं काम क्रोध भये पारायण ॥ शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक सुमिरि सुमिरि भये पारायण ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल शंख चक्र गदा धारायण ॥ शबरीके फल रुचि रुचि पाये भक्त सुदामा तारायण ॥ अजामील सुत हेतु पुकार्‍यो नाम लेत भयो पारायण ॥ दुर्योधन घर मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पारायण ॥ जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन धारायण ॥ डूबतसे व्रज राखि लियो है करपर गिरिवर धारायण ॥ चार वेद औ भगवद्गीता वाल्मीकिजीकी रामायण ॥ माधवदास आन चरणनकी भवसागर भये पारायण ॥ २ ॥

हम चाकर रघुनाथ कुँवरके ॥ टेक ॥ माथे तिलक मनोहर बाना द्वादश तिलक देखि यम डरपे ॥ द्वारी बंद सदा प्रभु तेरे भये गुलाम रावरे घरके ॥ गुरुके वचन सत्य करि राखों सुमिरन करत सिया रघुवरके ॥ तुमहिं याचि याचों नहिं औरहि नहिं भरोस कोउ नारी नरके ॥ अग्रदास यह पटा लिखायो दसखत दशरथ सुत निज करके ॥ ३ ॥

कब मिलि हैं रघुनाथ हमारे ॥ टेक ॥ जैसे मिले प्रभु बलि राजाको चारि मास हरि द्वारे ठाढ़े ॥ जैसे मिले प्रह्लाद भक्तको खंभ फोरि हिरनाकुश मारे ॥ जैसे मिले प्रभु द्रुपदसुताको खैंचत चीर दुशासन हारे ॥ जैसे मिले प्रभु जनकसुताको तोरे धनुष भूप सब

हारे ॥ तुलसीदास आस पतितनकी प्रभु मोसो पतित अनेक उधारे ॥ ४ ॥

अपनो जन प्रह्लाद उबारो ॥ टेक ॥ जलहुसे राखि अगिनिहुँसे राखे लियो गिरिवरहुसे डारो ॥ लक्ष्मी प्रभुके निकट न आवैं ऐसो रूप प्रभु कबहुँ न धारो ॥ अपने भक्तको राजतिलक दियो हस्तकमल मस्तकपै धारो ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक हस्तकमल मस्तकपै धारो ॥ लै प्रह्लाद खंभसे बांधे अबको है तेरो राखनहारो ॥ खंभ फोरि प्रगटे नरहरि प्रभु हिरनाकुश नख उदर बिदारो ॥ कौतुक देखि देव मुनि हर्षे गण गंधर्व गुण वेद उचारो ॥ श्रीभटको प्रभु दियो अभय पद भक्तहेतु दानवकुल तारो ॥ ५ ॥

धाय गोविंद गजेंद्र उबारो महाग्राहको मारो ॥ टेक ॥ खैंचत ग्राह गजाहि नेकौ बल न भयो तब हरिनाम उचारो ॥ फहर फहर फहरात पितांबर चरण गमन कियो गरुड बिसारो ॥ जौभरि सूंढ रही जल ऊपर कमलपुष्प लै श्यामको चढायो ॥ काटे फंद चक्रधारासों अघमोचन हरि नाम तुम्हारो देवन हर्षि दुंदुभी बजाई पुष्प वर्षि जय जयति उचारो ॥ अग्रदास सब पतितनको प्रभु इंद्रदमन वैकुंठ सिधारो ॥ ६ ॥

जय जय जय नरसिंह सही महाराज सही ॥ टेक ॥ खंभ फोरि हिरनाकुश माऱ्यो राखि लियो प्रह्लाद सही ॥ योंहि रामने

रावण मारो भक्त बिभीषण लंक दई योहीं कृष्णजीने कंस पछारौ उग्रसेनको राज दई ॥ उदर फारि मुख झोर कियो है तीन लोक जाका गरज भई ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निकट न आवे लक्ष्मी सही ॥ तुलसिदास हरिरूप निहारैं भक्तवत्सलकी टेक गही ॥ ७ ॥

नरहरिया प्रभु गिरिधरिया प्रह्लाद उबारे नरहरिया ॥ टेक ॥ राम कृष्ण दोउ नाम बड़े हैं तारण तरण अभय करिया ॥ वामनरूप छले बलि राजा तीन पैर वसुधा करिया॥ खंभ फोरि हिरनाकुश मारे जन प्रह्लाद अभय करिया॥रावणके दश मस्तक छेदे बीस भुजा खंडन करिया ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावैं कर मुरली बन बन फिरिया ॥ केशी मारे कंस पछारे उग्रसेन शिर छत्र धरिया ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अधम उधारन नरहरिया ॥ ८ ॥

श्रीराम जाने गूदरिया गलतान ॥ टेक ॥ पांच तत्त्वकी बनी गूदरी पड़ी रहत चौगान ॥ सुरत निरतको टोप बनो है धागा पद निर्बान ॥ नादै बेदै होड पड़ी है अनहद चढी कमान ॥ हमारो रहना रूख वृक्षतर अलख पुरुषको ध्यान ॥ प्रेमके बदरा वर्षन लागे भीजत संत सुजान ॥ कहत कबीरा मेरो अलखा योगी मिट गयो आवन जान ॥ ९ ॥

मुझे न दिलसे भूलैं प्यारे राम मुझे० ॥ टेक ॥ स्याही गई सफेदी आई चलना है बड़ि दूर ॥ डार डारमें पात पातमें

तुमहिं रँगीले फूल ॥ है हजूर हरि नाहिं न दूर दिलकी दुर्मति भूल ॥ गोपीचंद भरथरी राजा शिरमें डारे धूल ॥ सेखफरीद कुआमें लटके गिरे तो चकनाचूर ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हरिचरणन मति भूल ॥ १० ॥

रामजी रतनधन पाया माया रा० ॥ टेक ॥ वस्तु अमोलक दियो है गुरुने माथे तिलक कराया ॥ राम नामकी भई विभूती जगमें साह कहाया ॥ देत लेत औ खावत खरचत दिन दिन होत सवाया ॥ राज न दंडै चोर न लूटै धरणी धरै न जाया ॥ ले प्रह्लाद खंभमें बांधे अब तेरो कौन सहाया ॥ कहाँ तेरो राम बतावो मोहीं हाथ खड्ग झटकाया ॥ तोमें मोमें खड्ग खंभमें व्याप रहे रघुराया ॥ खंभ फोरि हिरनाकुश मारे नामदेवके राम सहाया ॥११॥

बाबा झूंठी माया दुर्मतिमें दिन खोया ॥ टेक ॥ श्यामसुन्दर सुमिरो नहिं पलमें अंतकालमें रोया ॥ पहिरि पीतांबर पुष्प बिछाया हीरा मोती पोया ॥ हरिभक्ती बिन मुक्ति न होगी कहा भयो तन धोया ॥ हाथी घोडा माल खजाना नयनन भर भर जोया ॥ अब तो मूरख भयो बिराना लंबी चादर सोया ॥ यह संसार जहरकी बारी झूँठी साँची गाया ॥ गाय ॥ विराम संतनके शरणै मनका धोखा खोया ॥ १२ ॥

इति शनिवारकी धुनि वा सातों वारोंकी
आरती धुनि समाप्त

अथ शयनसमयका ब्यारू

आनि करो कछु ब्यारु रामजी टेरत है महतारी ॥टेक॥ रजनी बहुत गई मेरो प्यारे आनि करो कछु ब्यारी ॥ रंग-महल चढ़ि टेरैं कौशिला कहि कहि अवधबिहारी ॥ खाजा खुरमा तपत जलेबी सीरा सरस सुहारी ॥ भाँति भांतिके धरे अथाने नानाविधि तरकारी ॥ हित करि दूध जानकी लाई मेवा मिसिरि मिलाई आपन जेवें भरतजीसों बूझैं कैसी भई भया ब्यारी ॥ चारों भैया मिलि जेंवन बैठे परसत जनक दुलारी ॥ रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन दशरथ अजित बिहारी ॥ निरमल जल सरयूको अँचवत रतन जडावकी झारी ॥ तुलसिदास प्रभु द्वार ठाढे जूँठनकी अधिकारी ॥१॥

करत बियारू मोहन हँसि हँसि करत बियारू मोहन ॥ टेक ॥ चितवनमें चित चोरि लेत हैं नख शिख सुंदर रूप सगोहन ॥ औटौ दूध कनक बेला भरि ले ललिता आई है गोहन ॥ फूँकत पिवत सेरात साँवरौ अंचल देदे मात जसोहन ॥ देखत बनै कहत नहिं आवै सुधि भूली है सोहन मोहन ॥ कृष्णदास गिरिधरन लाडिली चित चोराय है मृदु मुसकोहन ॥ २ ॥

भली भाँतिसों कीन्हों भोजन भली भाँतिसो कीन्हों ॥ टेक ॥ षटरस व्यंजन बरा सलोने माँगि माँगि हरि लीन्हों ॥ हँसत लसत परसैं नंदरानी बालकेलि रसभीनो ॥ परमानंद बड्यो पनवारो बाँटि सखनको दीन्हों ॥ ३ ॥

सुखनिधि रघुवर करत बियारी ॥ टेक ॥ मधु मेवा पकवान सरस हैं प्रेमसहित परसै महतारी ॥ गूझा लाडू उजरी फेनी पूरी सीरा पुआ सुहारी ॥ घेवर पापर तम जलेबी मिश्री खाजा सरस सभारी ॥ सूरन आम करोंदा जेंवत आदा निंबू अति रुचिकारी ॥ औटचो दूध धरो लै आगे पियो लाल जननी बलिहारी ॥ अतिसुगंध सरयूजल सिथरो रत्नजटित भरि लाई झारी ॥ भोजन कियो लियो प्रभु अचमन राजिवनयन वयन बलिहारी ॥ बीरी देत सियाकर अपने गरी इलाची लौंग सुपारी ॥ गोकुलदास द्वार यश गावैं पावें जूंठ रहै कछु थारी ॥ ४ ॥

मोहनलाल बियारू कीजै ॥ टेक ॥ व्यंजन मीठे खाटे खारे रुचिसों मांगि जननिसों लीजे ॥ खोवा मिसरी और बासुंदी ता ऊपर तातो पय पीजैं ॥ जोर मंडली भोजन कीजे जूंठन आशकरनको दीजे ॥ ५ ॥

राम जिवनार चले हो उनीदे नयन रतनारे राम जिव-नार चले ॥ टेक ॥ ब्रह्मा आदिक थारी लाये नारद लाये झारी ॥ दूध भात कौशल्या लाई रघुबर कियो बियारी ॥ खाजा खुरमा तम जलेबी अजब बनी तरकारी ॥ राम लषण सँग जेंवन बैठे परसत जनक दुलारी ॥ खाला मलमल औ दरियाई फूलन सेज बनाई ॥ ॥ राम लषण पौढनको लागे भरत जी चँवर दुराई ॥ सब देउता मिलि चौकी आये बीर

आसन हनुमान ।। तुलसिदास प्रभु द्वारे ठाढे कनक डवा भरि पान ॥ ६ ।।

करत भावती जोरी ब्यारू ।। टेक ।। षटरस व्यंजन विविध बनाये सखी कहत परसोरी ।। राजिवलोचन पंकजनयनी पायो श्याम सिया गोरी ।। जेंवत राम जनक-मंदिरमें होत परस्पर गोरी ॥ जलरंध्र निरखत युवतीजन बाढ़ी प्रीति न थोरी ॥ तुलसिदास प्रभु जन तृण तोरे देत है प्राण आकोरी ।। ७ ।।

ब्यारू कीजै दूध मिठाई ॥ टेक ॥ दाख बदाम अरु सेव सिंघाडा जो जो रुचि रुचि भाई ।। खीरनि खजूर खोपरा कलाकँद घूजा खारक मधू सुहाई ।। मधुसूदन पीले पकवाना ललिता विशाखा लाई ॥ मालपुआ अरु अमृत लड्डुवा छप्पन भोग ले आई ॥ करमाबाईपर किरपा कीजो लालजी भोग लगाई ॥ ८ ॥

पियो पय लाड़िले रघुराई ।। टेक ।। रत्नजटितको बनो कटोरो कौशल्या ले आई ।। आछो नीको औटि बनाओ मेवा मिश्री मिलाई ।। जननी हेतु पियो क्यों न रुचिसे सखा बडे अधिराई ।। राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सँग राजे चारों भाई ।। विठ्ठलके प्रभु होत भोर ही मेवा दूध मिठाई ॥९॥

ब्यारू करन हेतु रघुवरको मैया बोलि पठायेजी ॥टेक॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन राजत अवधविहारी जी॥ चारों भैया मिलि जेंवन बैठे परसत है महतारी जी ॥ खाजा

खुरमा तम जलेबी सीरा सरस सुहारी जी ॥ भाँति भाँतिको धऱ्यो है अथनो नाना विधि तरकारी जी ॥ दूध जानकी हितकारी औट्यो मेवा मिसरि मिलाई जी आपन जेंवैं भरतसों पूँछैं कहा परस्यो महतारी जी ॥ निर्मल जल सरयूको अचवन रत्नजटित भरि झारी जी तुलसिदास हरि झारे ठाढे जूँठनके अधिकारी जी ॥ १० ॥

कौशल्या कुँवर बियारू कीजे प्रेमसहित बोली कौशल्या जगतईश जननी सुख दीजे ॥ टेक ॥ मीठा पाक जलेबी पेडा मोतीलाडू मगद बनाये ॥ दलपूरी सोहारी गुटका खाजा खुरमा राम मन भाये ॥ रायतो दही मिसरीमें घोरचो विविध भाँतिके बना बनाये ॥ आदी नींबू और अथानों कचरी करोंदाकेर मँगाये ॥ औटो दूध खोवा भरि आन्यो बारी जाय मात ग्रास दुइ लीजे ॥ बीरी आरोगि पलंग पधारो जूँठन ज्ञानदेवको दीजे ॥ ११ ॥

रघुनाथ ब्यारू कीजे जी महाराज ब्यारू कीजे जी ॥टेक॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, हिलिमिलि भोजन कीजे ॥ छप्पन भोग छतीसों व्यंजन मन भावे सोइ लीजे ॥ बहु पकवान मिठाई सीथ बचे सोइ दीजे जी ॥ कनककटोरा अमृत भरिया, दूध पियो सोइ पीजे जी ॥ अचवन करि सिंहासन बैठे, अभय देव सब कीजे जी ॥ मात कौशिला करत आरती संतन दरशन दीजे जी ॥ गोकुलदास रामके शरनै चरणकमल रज दीजे जी ॥१२॥

इति शयन समयकी ब्यारू संपूर्ण ।

अथ दूध पीवन

दूध पियो मन मोहन प्यारे ॥ बलि बलि जाउँ जनि करिया कमल नयन अँखियनके तारे ॥ टेक ॥ भर बेला पीजै सुख दीजै, और पियो बलभद्र पियारे ॥ परमानंद दासके ठाकुर, भोर उठत करो भैया रे ॥ १ ॥

एरी दूध लाई यशोमति मैया ॥ दूध पियो मेरे कुँवर लाडिले तेरी चोटी बढैगी भैया ॥ टेक ॥ आछो नीको औटि सिरायो, तामें मधुर मिठैया परमानंद प्रभु अब पीजै भोर उठके देउँगी भैया ॥ २ ॥

हँसि हँसि दूध पीवै गोपीनाथ मधुर कोमल वचन कहि कहि प्राणप्यारी साथ ।। टेक ।। कनक कटोरा भर्‍यो अमृतके लियो है ललिता हाथ ॥ लाडिलीको अँचवाये पहिले पाछे आप अघात ॥ चिंतामणि चित बसो री सज्जन निरखि पिया मुसकात ॥ श्यामा श्यामकी युगुल छबी पर रसिक अली बलि जात ॥ ३ ॥

श्रीराघोजीको दूध पियावत रानी ॥ टेक ॥ कौशल्या केकई सुमित्रा ढिग ढिग बैठि सयानी कौतुक करत ललित सुत चारौं बोलत तोतरी बानी ।। लेत मँगाय जोई मन भावै मातु हेतु हित मानी ॥ अवध नारि स्वारथ रत आवैं रघुवर रूप लुभानी ॥ रामसेवकके प्रभु सुखसागर गावत सुर पुर बानी ॥ ४ ॥

इति दूध पीवन समाप्त

अथ शयनकी आरती

शीतल करत आरती मैया ॥ टेक) चार रतनके चारि सिंहासन रवि शशि कोटि उदैया ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन नृप दशरथके छैया ॥ रतन जटितको पलंग बन्यो है ऊपर लाल डुलैया ।। मातु कोशल्या करत आरती दोउ कर लेत बलैया ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुण्डल कर सोहै बान धनुहियाँ ॥ मानदासके तन मन वारो सुन्दर राम रमैया ।। ६ ।।

इति शयनकी आरती समाप्त

अथ शयन (पौढनी)

जगन्नाथ दयाल पोढे श्रीजगन्नाथ दयाल ॥ टेक ॥ ज्येष्ठ हलधर रानि सुभद्रा चक्र असुरन काल ॥ रत्नभवन विचित्र पुतली लसत हीरा लाल ॥ व्याल-मणि शशि कोटि वारौं रविको बाल ॥ जरीचंदवे चंद निंदहिं तारन्ह मोतिनमाल ॥ अमिय तिनते झरत झिमि झिमि अखिल तिन्हमें ख्याल ॥ सेज बनके अनूप आभा रति देखि बिहाल ॥ कनकपत्रन घनन वस्तु लिये युवती जाल ॥ राम आरति करत मोहीं करत कंचनथाल ॥ वल्ल-भीजन मुदित देखत वारि वारि निहाल ॥ १ ॥

बलभद्र देव अनंत पौढे बलभद्र देव अनंत ।। टेक ॥ देवी सुभद्रा चक्र सुदर्शन सहित कमलाकंत ॥ धोय मंदिर चले पंडा पलंग बिछे गजदंत ॥ जगदीश रात बहुत गइ

सोये सकल जीव अरु जंत ॥ शयन आरति देख सुर मुनि वंदत जय जय संत ॥ धन्य हलधर धन्य माधो माधो-दास भनंत ॥ २ ॥

भवन गवन प्रभु कीजे सेज बिछी भवन गवन प्रभु कीजै ॥ टेक ॥ परिश्रम भये सभा सब बैठे सबको आयसु दीजै॥ रामदूत हनुमान पवनसुत संग चौकिको लीजै ॥ कमलमुखी कमला मग हेरें प्रेम प्रीतिरस भीजै ॥ मन क्रम वचन प्रभु तुम सेवैं चपला अचल करीजै ॥ मंद मंद मुसकात छबीले बोलत वचन रसीले ॥ बालानंदको देहै किंकरी श्रीपति ऐसे सुशीले ॥ ३ ॥

बैठे सुखपाल लाल आवत महलमें जू ॥ टेक ॥ आलस भरे उनींदे सुलोचन अति अलसाने कछु मदन महलमें जू ॥ चुनि चुनि कलियाँ मैं सेज बनाई चोवा चंदन चरचूँ महलमें जू ॥ पौढे श्रीदशरथ राजकुँवर वर अग्रहली जहँ दासी टहलमें जू ॥ ४ ॥

मुजरो मानिदे महाराज ॥ टेक ॥ सब साधुनकी बीनती प्रभु हमरी तुमको लाज ॥ जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी खंभ-माहिं अवाज ॥ डूबतसे गजराज उबारे ध्रुवको अविचल राज ॥ द्रोपदीकी लाज राखी चीरकेरे काज ॥ बिभीषणको लंक बक्सी सागर बाँधी पाज ॥ नवरंग तकिया पलंग राजे रंगमहल अवास ॥ सूरके प्रभु श्याम पौढे कीजै भोग विलास ॥ ५ ॥

रंगमहल गोविंद पौढे माई रंगमहल गोविंद ॥ टेक ॥ संग राधे शरदरजनी उचित पूरणचंद ॥ चित्र विचित्र अनेक चित्त लिये कोटि कौतुक फंद ॥ हर्षि निरखि विलास विलसत दंपती रसकंप ॥ चोवा चन्दन अगर कुमकुमा उठत लहर सुगंध ॥ पुष्प व्यंजन चँवर ढोरे सजनि परमानंद ॥ ६ ॥

सुख पौढे हरि कुँवर कन्याई ॥ टेक ॥ नूतन वसन विविध कुसुमावलि मैं अपने कर सेज बनाई ॥ नाहिन समय सखी काहूको ग्वाल मंडली सँग बहुराई ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर नागरिको ललिता ले आई॥७॥

तुम पौढो मैं चँवर डुरावौं ॥ टेक ॥ चरण रहौ पाथि उर निर्मल यश मधुरे स्वर गावौं ॥ सहचरि चतुरी अबै आवत है दंपति छबि नयना देखि लावौं ॥ आसकरण प्रभु मोहन नागर ये सुख श्याम सदा मैं पावौं ॥ ८ ॥

जगन्नाथ अलसाने सलोने जगन्नाथ अलसाने ॥ टेक ॥ लोचन कमल श्याम शिथिलाने सुघर अधिक अरुनाने श्रीभुज दक्षिण श्रीके कंधधरी प्रभु अगिराने अजवाने ॥ औघत झुकत चौंकि तकिया धरैं प्यारी हँसि मुसकाने अद्भुत रूप स्वरूप श्यामके रतिपति कोटि लजाने ॥ वल्लभि विहँसत सेज रचावै दासी सुलभ बखाने ॥ ९ ॥

पौढे श्रीरघुवर प्राण अधारा जू ॥ टेक ॥ जनककुवँरि वर चरण पलोटत शारद गावन राग केदारा जू ॥ चुनि

चुनि कलियाँ मैं सेज बनाई सौंधे अरगजा चरच चहलमें जू ॥ जन देव प्रभुको बिरिया खवावत सीता राम नित प्रति करत विहरे जू ॥ १० ॥

नयनन माहिं अरुणता छाई लालके नयनन माहिं अरुणता छाई ॥ टेक ॥ छिटकि छिटकि कर पल्लव मुख पर ओढे लेत जोहाई ॥ सखियाँ सब मिलि सेज बनाई श्री मंदर सुखदाई ॥ पुष्प सुवास व्यास लिये ठाढे पौढौ श्रीयदुराई ॥ ११ ॥

सेज सुंदरि बनी हरिकी सेज सुंदरि बनी ॥ टेक ॥ हस्तीदंत अनूप पाया जडित माणिक मनी ॥ हेम सीरो सोन पाटी लसत नाना कनी ॥ दिव्य रेशम देव दुर्लभ नीके नीके तनी ॥ पलँग ऊपर अनुप अंबर तुला तामें छनी ॥ विविध तापर वसन सोहै मोहैं तिय मोहनी ॥ सेज वृन्द जडाव झब्बो तकियाँ बहु अनगनी ॥ सेज शीतल सुभग कोमल मानो रवि शशि जनी ॥ भली सेज अनूप आभा सुभद्रा छबि घनी ॥ अमित शोभा ईश शय्या जगतपति जाधनी ॥ चोवा चंदन कपूर कस्तूरी पुण्यगंधो सुनी ॥ चरचि रचि रचि अखिन फूलन वल्लभी कछु भनी ॥ १२ ॥

सखी री तू पुष्प सेज बनाय जानकी श्रीराम नृप पौढिये प्रभु आय ॥ टेक ॥ कनक पलँगा रत्न जडिया अगर चंदन लाय ॥ केतकी कमल गुलाब पाडर गाहिरि चंपा जाय ॥ पान नागर परम सुंदर लीजिये रघुराय ॥ लौंग सहित

कपूर बोरी लेहो रुचि उपजाय ।। शरण चापत रहौं निशि दिन रावरो यश गाय ॥ दास तुलसी शरण आये लेहो प्रभु अपनाय ॥ १३ ॥

अब प्रभु कीजिये उठि शैन ।। लटक आई चाँदनी प्रभु बहुत बीती रैन ॥टेक॥ उठे राजसमाजते प्रभु सुनि सखीके बैन ॥ प्राणनाथ प्रवीन हैं प्रभु जानकी सुख दैन ॥ १४ ॥

पौढे सुख सेज सीता राम ।। टेक ।। आनँदकंद अयोध्यानायक जानकी भुज वाम ।। कनक मंदिर पुष्प शय्या कोटि उदय भये भान देवता सब चौकि आये सन्मुख आये हनुमान ।। राम राजा गरव गंजन सकल पूरण काम ।। चोवा चंदन और अरगजा कनक डबा भरि पान तुलसिदास प्रभु लिये ठाढे मेवा दाख बदाम ॥ १५ ॥

हनुमानजीको चौकी आई साधु भाई कपिकी चौकी ॥ टेक ॥ बड़े बड़े जोधा हैं कपि दलमें रहत महल पर छाई ना काहूको करिये भरोसा ना काहू पतिआई ।। बेगी आव विलंब नहिं कीजै सिख सरवन सुनि पाई तुलसिदास हनुमान भरोसे सुख पोढे रघुराई ॥ १६ ॥

सैन करो नारायण देवा चरण पलोटौं करौं हरि सेवा ॥ टेक ॥ सैन करो तुम अंतरयामी मनसा वाचा करूं गुलामी ।। फूलन गेंडा मुक्का सोहैं देखत पलंग नामदेव मोहैं ॥ १७ ॥

सोये अवधकिशोर चलो सखि ॥ टेक ॥ रतनजटितको पलँग मनोहर ताको छबि अति जोर ॥ जनकनंदिनी चरण पलोटै रसभर भये घनघोर ॥ रामसखे पिया दरशन कारण आईये उठि भोर ॥ १८ ॥

पौढो पौढो शारँगपानी नैनोंमें नींद घुलानी ॥ टेक ॥ प्रभु सुख सुवाये आवै हरिको कौशल्या समझावै ॥ लक्ष्मीजीको आज्ञा दीजै महलनमें आवन कीजै ॥ प्रभु सीता सखी सुकुमारी जिन सुध हरि सेज सँवारी ॥ प्रभु धनुष बाण कर मेलो सेजपै ओढो दुशालो ॥ प्रभु धरिकै आलस समेटो पीत पटुका कमरते छोरो ॥ प्रभु कहत मलुकबिलजानी सो इतनी अरज मेरी मानो ॥ १९ ॥

मंदिरमांहीं दोउ मिलि पौढे ॥ टेक ॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदिनी डारे गल बाँहै ॥ हास विनोद सुधारस सींचत सुख उपजो मनमांहीं ॥ बालअली हरिके चरण पलोटै चरणकमल बलि जाई ॥ २० ॥

बतियाँ करत लाग गये नैन ॥ टेक ॥ दशरथसुत अरु जनकनंदिनी रूपशील गुण ऐन ॥ मधुर बीन मृदंगकी धुनि राग उठे घन चैन ॥ मधुर अली मधुरे स्वर गावै बोलत अमृत बैन ॥ २१ ॥

मंदिर पौढिये रघुराई ॥ टेक ॥ काहेको पलँग काहेके पाये काहेके बान बुनाई ॥ सोनेको पलँग रूपेके पाये रेशम बान बुनाई ॥ काहेकी सेज काहेके गेडुवा काहेकी

ओढे रजाई ॥ फूलन सेज फूलनके गेडुवा फूलन ओढे रजाई ॥ सीताराम दोउ मिलि पौढ़े गावैं मीराबाई ॥२२॥

पौढ़े स्वामी द्वारका रणछोर ॥ टेक ॥ मंदिर मंदिर झालर बाजे शंखनकी घनघोर ॥ गोमति जाके चरण पलोटै सागर करत कलोल कनकके मंदिर पुष्पन शय्या कोटि उदय भये भान रुक्मिणि अपने रंगमहलमें विनती करत कर जोर॥ रणछोर टीकमसाधव पुरुषोत्तम कुँवरकल्याण किशोर ॥ चोवा चंदन और अरगजा कनक डबा भरि पान॥ शेष सुमिरन करत निशिदिन धरत शंकर ध्यान ॥ दास पीपा द्वार ठाढ़े दरशन दिये भगवान् ॥ २३ ॥

अथ हरि नारायण

श्रीराम कृष्ण गोपाल दामोदर हरि माधो मधुसूदना ॥ कालीमर्दन कंसनिकंदन देवनिकंदन तुव शरना ॥ मच्छ कच्छ बाराह महीधर जलशायी मंगल करना इह हरिनाम जपो निशिवासर जन्म जन्मके भय हरना ॥ जय गोविंदे परमानंदे भजु गोविंदे रामा ॥ नागर नवल किशोर मनोहर मूरति सुंदर श्यामा वृंदावनमें रास रच्यो है सहस गोपि इक कान्हा ॥ मोरमुकुट पीताम्बर सोहै कुण्डल झलके कान्हा ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजै गल वैजंतीमाला ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै मोहन मुरली वाला ॥ वंशी बजाई मन हरि लीन्हो लगे प्रेमके बाना ॥ केशवराव कमल दल लोचन अगम अगोचर भव हरना ॥ श्रीपुरुषोत्तम श्रीअ-

विनाशी भक्तवत्सल अभिरामा ॥ सरयूतीर अयोध्या नगरी चित्रकूट विश्रामा ॥ मथुरा नगरी यमुना तीरथ वृंदावन विश्रामा ॥ उज्जैननगरी छिप्रा तीरथ अंगपात विश्रामा ॥ नासिक नगरी गोदावरि तीरथ पंचवटी विश्रामा ॥ गुरुपरताप साधुकी संगति नामदेवजी आये हरिशरना ॥ ब्रह्मा जाको पार न पावैं गावत सनक सनंदना ॥ बोलो सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन हनुमान् हरि नमो नमः ॥ जगन्नाथ बलभद्र सुभद्रा चक्र सुदर्शन नमो नमः ॥ राजिवलोचन सब दुखमोचन सेवरी नारायण नमो नमः ॥ रामनाथ रामानुज स्वामी परम भागवत नमो नमः श्रीद्वारिकामें रणछोड विराजैं गोमतीसंगम नमोनमः ॥ उत्तरखंड बद्रीनाथ विराजैं गरुडसिंहासन नमो नमः ॥ हरिद्वारमें हरी विराजे हरिकी पैडी नमो नमः ॥ मथुरामें केशवराय विराजैं चौरघाट नमो नमः ॥ नीमषार नीमानुज स्वामी परम भागवत नमो नमः ॥ महापवित्र माधवचारी विष्णुस्वामी हरि नमो नमः ॥ कहै प्रहलाद सुनो भाई साधो हमहुँ पढे सो तुमहुँ पढो ॥ श्रीजानकीजीवन पतित पावन दशरथनंदन जय सियाराम ॥ श्रीहरि नारायण दुष्टनिवारण परमानंद परम पुरुषोत्तम ॥ भक्तवत्सल पंकजलोचन नारायण प्रभु वासुदेव हरे ॥ रामानंद मुकुंद मुरारी वामन माधवगोविंद ॥ श्रीधरकेशव राधे कृष्ण लक्ष्मीनायक नरसिंह ॥ अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं

वासुदेवं हरे ॥ श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचंद्रं भजे ॥

इति हरिनारायण समाप्त

अथ स्तुति

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभयदारुणम् ॥ नव-कंजलोचन कंजमुख कर कंजपद कंजारुणम् ॥ कंदर्प अगणित अमित छबि नवनीलनीरजसुंदरम् ॥ पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुता वरं ॥ भजु दीन-बंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनम् ॥ रघुनाथ आनँदकंद कौशल चन्द्रदशरथनंदनम् ॥ शिरमुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ॥ आजानुभुज शर चाप धर संग्राम-जित खर दूषणम् ॥ भजु दीनबंधु दिनेश दानव दलन दुष्ट-निकंदनम् ॥ रघुनाथ आनँदकंद कौशल चंद दशरथनंद-नम् ॥ इति वदत तुलसीदासशंकर शेष मुनि मनरंजनम् ॥ मम हृदयकंज निवास करु कामादि खलदल गंजनम् ॥ मन जाहि राचहु मिलिहि सो वर सहज सुंदर साँवरो ॥ करुणा-निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥ यहि भांति गौरी अशीश सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ॥ तुलसी भवानी पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जाय कहि ॥
मंजुल मंगलमूल, वाम अंग फरकन लगे ॥

सिया वर रामचंद्रकी जय ॥ १ ॥

हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा ॥ गोविंदा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥ हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ॥ वैकुंठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ॥ २ ॥ आदौ रामतपोवनाधिगमनं हत्वा मृगं कांचनम् ॥ वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीव संभाषणम् वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम् ॥ पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननमेतद्धि रामायणम् ॥ ३ ॥ आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम् ॥ मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम् ॥ कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुंतीसुतापालनम् ॥ एतद्भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥४॥ हे रामानुज हे जगत्रयगुरो हे पुंडरीकाक्ष माम् ॥ हे गोपीजननाथ पालनपर जानामि न त्वां विना ॥ ५ ॥ हे गोपालक हे कृपाजलनिधे हे सिंधुकन्यापते ॥ हे कंसांतक हे गजेंद्रकरुणापारीण हे माधव ॥ ६ ॥ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम् ॥ नासाग्रे गजमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् सर्वांगे हरिचंदनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिः ॥ गोपस्त्रीपरि वेष्टितो विजयते श्रीगोपालचूडामणिः ॥ ७ ॥ श्रीरंगं करशैलमज्जनगिरौ शेषाद्रिसिंहासनम् ॥ श्रीकूर्मं पुरुषोत्तमं च बदरीनारायणं नैमिषम् ॥ श्रीमद्द्वारवतीप्रयागमथुराऽयोध्यागयापुष्करम् ॥ शालिग्रामनिवासिनोविजयते रामानुजोऽयं मुनिः ॥ ८ ॥ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता ॥ नारायणेन स्वयम्॥ व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना

मध्येमहाभारतम् ॥ अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्टादशाध्यायिनीम् ॥ अंब त्वा मनसा दधामि भगवद्गीते भवद्वेषिणीम् ॥ ९ ॥ हे राधे वृषभानुभूपतनये गांधर्विके राधिके ॥ हे कृष्णाननपंकजभ्रमरिके कृष्णप्रिये माधवि ॥ हे वृंदावननागरीगुणग्रहे दामोदरप्रेयसि ॥ हे हे श्रीललितादिकप्रियसखि प्राणांतिके पाहि माम् ॥ १० ॥ विष्णोः पाद अवंतिकां गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरीम् ॥ नाभौ द्वारवतीं तथा च हृदये मायापुरीं पुण्यदाम् ॥ ग्रीवामूलमुदाहरंति मथुरां नासाग्रवाराणसीम् ॥ एतत् वेद वदंति ब्रह्ममुनयोऽयोध्यापुरीं मस्तके ॥ ११ ॥

इति स्तुति समाप्त

अथ रामचन्द्रके वसंत

वसंत बधावा चलो अवध जहाँ सुभग सिंहासन बैठे राम ॥टेक॥ सुर नर मुनिजन सकल देवता विश्वामित्र विराजैं ॥ बाजे विविध भांति बहु बाजैं घन दामिनि ज्यौं गाजैं ॥ हाथ लिये पिचकारी प्यारी सोंधेसो भरि लाई ॥ पंच सखी मिलि कलश बनायो भली भांति बनि आई ॥ मधुर मधुर सुर गान करत हैं देत होरिनकी गारी ॥ सब सखि मिलि गुलाल उडावत भरि भरि कंचन थारी ॥ चोवा चंदन और अरगजा कीच मची अति भारी ॥ उडत गुलाल अरुण भए अंबर सोधें भीनी सारी ॥ प्रथम पंचमी बैठि

सिंहासन कौतूहल सब कीजै ॥ अग्रदासकी यही वीनती भक्तिदान मोहिं दीजै ॥ १ ॥

वसंत बधावा चलो अयोध्या जहँ रतनसिंहासन बैठे राम ॥ टेक ॥ अतिपवित्र उदार नाम लावण्य कलेवर कोटि-काम ॥ रघुवंशसरोवर हंस चारि जहँ हरि बिहरत रूप धारि सजी कनककलश जब आंब मोर वनितावृंद जहां नव-लकिशोर गृह गृह रमनी करि करि शृंगार जहां कंठ-विलोक मुक्ताहार ॥ बाजै मृदंग डफ झांझ ताल जहां गन गंधर्व गावैं गुण रसाल ॥ अवतार शिरोमणि धर्मधाम कहे तुलसिदास प्रभु सीताराम ॥ २ ॥

खेलत वसंत कौशलकुमार राजीवनैन सुखमा अपार ॥ टेक ॥ लिये भरत लषन रिपुसूदन संग छबि सुभग निरखि मोह्यो अनंग ॥ गोदनि भरि लीन्हे लाल गुलाल करमें पिचकारी तिलक भाल ॥ कानन कुंडल चपल नैन हाल बोलै सब मीठे बैन ॥ सजी बरन बरन बाजै अनूप नर नारी थकित भई देखि रूप ॥ शिर ललिता पाग जर-कसी लाल कलँगी जडाव तापर रसाल ॥ प्रभु बनि ठनि आये सिंहपौरि तब सखा मिले सब दौरि दौरि ॥ खेल मच्यो कछु कही न जाय अवनि अकाश रंग रह्यो छाय ॥ पिचकारी जित तित छुटैं अपार भीजहिं पुकारहिं देहिं डारि ॥ मुख मोरे छोडे बहु नचाय मुसकात मनहिं मन रामराय ॥ सुरवर सखा सुमन करि जय जयकार चिरंजीवैं

कोशलकुमार ॥ मुख निरखि अशीशैं सकल मात आनंद भरे विहरो हे तात ॥ रससिंधु बढ्यो न समात गात बलिहारी रघुवरदास जात ॥ ३ ॥

खेलत बसंत राजाधिराज देखत नभ कौतुक सुरसमाज ॥ टेक ॥ सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ झोलिन अबीर पिचकारि हाथ ॥ बाजहिं मृदंग डफ ताल बेनु छिरकहिं सुगंध भरैं मलय रेनु ॥ उत युवतियूथ जानकी संग पहिरे पट भूषण सरस रंग लिये छरी बेत सोंधें विभाग चांचरि झूमक गवहीं सरस राग ॥ चढि खरनि विदूषण स्वांग साजि करैं कूट निपट गई लाज भाजि ॥ नर नारि परस्पर गारि देत सुनि हँसत राम भाइन समेत ॥ नूपुर किंकिनि ध्वनि अति सुहाय ललनागन जब जेहि धरहिं धाइ ॥ लोचन आंज फगुवा मनाय छांडहिं नचाय हाहा कराय ॥ वरषत प्रसून वर विबुधवृंद जय जय दिनकरकुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास गावत कल कीरति तुलसिदास ॥ ४ ॥

रस होरी खेलैं श्रीजानराय सब कुँवरि झरोखें झाँकैं आय ॥ टेक ॥ महादेव बजावैं साजि मृदंग ऋषि नारद नाचैं लिये उपंग ॥ ताल लिये गावैं श्रीजयदेव जहाँ पीपाजी अरु नामदेव ॥ रैदास बजावें बीना विराग आशा टोडी वसंत राग ॥ सनकादिक खेलैं सबही झार जहां निगम उचारैं जय जयकार ॥ कुंकुम केसरसे भरे मांस जहँ सेनभक्त

देव बांट बाँट ॥ पिचकारी श्रीबलभद्र हाथ प्रहलाद बिभीषण विदुर साथ ॥ उडत गुलाल सब अरुण आस जहँ अनंतानंद ध्रुव कृष्णदास ॥ अग्रकील चरचै अबीर जहँ अंबरीष शुकदेव धीर ॥ तहँ रंका बंका अरु कालुकेवलदास जहँ दासदेव कर बहु प्रकास ॥ खोजी नरसीके स्वामी आसपास जहँ प्रेमसहित गावै मीरादास ॥ श्रीरामानंद कथै जहँ ब्रह्मज्ञान तहँ कबीरा चलावैं शब्दबान ॥ नीमानंद अरु हैं विष्णुश्याम जहँ माधवाचारी करें बहु राम ॥ होरी खेलत मन बहु बढ्यो रंग जहँ अनंतकोटि लिये साधु संग ॥ अबकी बेर मेरो राखो मान जन नाभाको दीजै भक्तिदान ॥ ५ ॥

रागवसंत—वंदो रघुपति करुणानिधान जाते छुटि जाय भवभेद ज्ञान॥ टेक ॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रद सेवहिं पदपंकज अज महेश ॥ अतिप्रबल मोहतम मारतंड अज्ञान दहन पावक प्रचंड ॥ रागादि सर्पगण पन्नगारि कंदर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ अभिमान सिंधुको भज उदार सुररंजन भंजन भूमिभार॥ भव जलधि पोत चरणारविंद जानकी रमन आनंदकंद ॥ निजभक्ति हृदय पाथोज भृंग लावण्यवपुष अगणित अनंग ॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल निष्काम कामधुक गोदयाल ॥ त्रैलोक तिलक गणगहन राम भज तुलसिदास विश्रामधाम ॥ ६ ॥

जानकी होरी खेलन आई ॥ टेक ॥ श्रुतिकीरति उरमिला मांडवी संग सहेलि सुहाई ॥ केसर रंग भरे घटकंचन

चंदन गंध मिलाई प्रीतमकूं छिरकन आई ॥ इत रघुनाथ संग सखा लिये भरत शत्रुहन भाई ॥ कर कंकन कंचन पिचकारी लक्ष्मण करसों चलाई ॥ किशोरको शयन बुझाई॥ धाइ गही लक्ष्मणको लीने पीतांबर पट छोरी ॥ फगुवा लिये मन भावत अंजन अंजन दृग अंजवाई ॥ बहुविधि विनति कराई ॥ अरसपरस परमोद भयो है प्रेमप्रीति उर छाई ॥ ऊंचि अँटारी ऊँचे झरोखा जननी फगुवा देवाई ॥ हीरा मणि माल लुटाई ॥ सनकादिक नारद सारद वेद पुराणन गाई ॥ सुर नर मुनि जन कौतुक देखैं ऐसी छबि उर छाई॥ रामदास बलि जाई ॥ ७ ॥

राग सारंग—अवधपुरीकी नारि सबै मिलि खेलन आई होरी हो ॥ नखशिख रूप अनूप किशोरी बनी मनोहर जोरी हो ॥ टेक ॥ फागुन फाग सुहायो आय सहित झुम-कडा बोले हो ॥ कुलवधु लाज काज नहिं मान असन वसन पट खोले हो ॥ इक मौचँग उपँग वेनु डफ इक करताल बजावै हो ॥ एक एकसों छैल छबीली अति अद्भुत सुर गावै हो ॥ मीठी ध्वनी सुनि आये रघुवर जगमंगल हितकारी हो ॥ तन नव घन पीतांबर भूषण भूषित अवधबिहारी हो ॥ लछमन भरत बुलायो शत्रुहन जनकसुता सुधि पाई हो ॥ श्रुतिकीरति उरमिला मांडवी बनि ठनि ये सब आई हो ॥ इंदुवदनि सब कंठ कोकिला वयसमान मृगनयनी हो ॥ गजगामिनि भामिनि सीतासँग गान करत पिकबैनी हो ॥

भरि भरि लेई कनक पिचकारी छबिसों छैल छबीली हो ॥ मानो हेमकोटते उतरी भारी रंग रंगीली हो ॥ बूका सुरंग गुलाल उडावत अबिर भरे भरि झोरी हो ॥ अरस परस मिलि भरत भरावत गिनती न काहु कियो री हो ॥ रघुवर धाय धरी वैदेही सहचरि संग अपारी हो ॥ दामिनिसी फिरि गइ चहुँदिशि पकरे राजकुमारी हो ॥ करसों कर जब गह्यो लडैती काजर आँखि अंजाई हो ॥ मुख मीड्यो नीके करि नागरि बन्यो मनोरथ भारी हो ॥ फगुवा गोद भराइ परम रुचि पट भूषण पहिराई हो ॥ तन मन प्राण करत न्यौछावर बांटत बहुत बधाई हो सरयूजल क्रीडत सिय रघुवर संतजनन सुखदाई हो ॥ तुलसिदास जावै बलिहारी जनकसुता रघुराई हो ॥ ८ ॥

इति रामचंद्रके वसंत समाप्त

अथ कृष्णचन्द्रके वसंत

राग वसंत–प्रथम समाज आज वृन्दावन बिहरत लालबिहारी ॥ पंचमी नवल वसंत बधावन उमँगि चली व्रजनारी ॥टेक॥ कंचन थार लिये व्रजसुंदरि बिच वृषभानु दुलारी ॥ फल दलजवन उत्तम मंजरि कनक कलश शुभकारी ॥ गावत गीत बजावत बाजे मैनसेन उनहारी॥दरस परस मनमोद बढावतराजत छबि अतिभारी॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा भरि केशर पिचकारी ॥ छिरकत फिरत छबीली गातन रंग अनूप

अपारी विपिन विलास हास रस बरषत उत प्रीतम इत प्यारी ॥ हित हरिवंश निरखि यह शोभा अंखियाँ टरत न टारी ॥ १ ॥

वसंत बधावा चलो व्रजकी नारि सखी नंदपौरि ठाढे मुरारि ॥ टेक ॥ राधा चंद्रभागा चंद्रावलि भामा ललित सुसीले ॥ संज्यावलि कनकघट शिर धरि आव मोर जव-लीले ॥ नये नये चीर कुसुमी सारी वसंत अभरन साजिये हो ॥ नये नये केलि करत मोहन संग नवल लाल पिय भजिये हो ।। चोवा चंदन बूका बंदन उडत गुलाल अबीरे ॥ खेलें फाग भाग्य बड गोपी छिरकत श्याम शरीरे ।। ताल मृदंग ढोल डफ महुवर बीना जंत्र रसाला ॥ कृष्णके प्रभु गिरिधर नागर हाँसि कराय गोपाला ॥ २ ॥

सांवरे रंग डारि हो डारी ।। टेक ॥ सहज स्वभाव जाति यमुनाकूं पहिरि जरकसी सारी ॥ बहुरे ठाढे कदमकी छैयाँ करहि कनक पिचकारी ॥ लाल मेरे सनमुख डारी ॥ सासु बुरी घर ननद हठीली झुकि झुकि दे मोहिं गारी ॥ सेरन आंशु चुवावे सखि री उनकी रीति है न्यारी ॥ मोहिं डर लागत भारी ॥ अबिर गुलाल मो मुखपर डारत तनक न सकै बिचारी ।। नवलदास अचरज है भारी आपही दीठ विहारी ॥ लाल चितवनपर वारी ॥ ३ ॥

साँवरेसे कहियो मोरी ॥ टेक शीश नवाय चरण गहि लीजो करि बिनती कर जोरी ॥ ऐसी चूक कहा परि मोसौं

प्रीति पाछिली तोरी सुरति नाहिं लीनी मोरी ॥ भूषण वसन सबै हम त्यागे खान पान बिसऱ्यो री ॥ विभूति लगाइ जोगिन ह्वै बैठी तेरोहि ध्यान धरो री ॥ बेगि चलि आवो किशोरी ॥ निशिदिन व्याकुल फिरत राधिका विरहव्यथा उन घेरी ॥ श्याम तुम्हें ढूँढत कुंजनमें शीश जटा कर जोरी ॥ कहैं हरि हेरे होरी ॥ रोम रोम मद छाय रह्यो है मधु मेरे वैर परो री ॥ मोर करेजा जराय दियो री अब मैं कैसे करौं री धीरज नहीं जात धरो री ॥ सूरदास प्रभुको जाय कहियो अवधि आस रहि थोरी ॥ प्राणदान दीजै नँदनंदन गावत कीरति तोरी ॥ सुरत तुम करियो बहोरी ॥ ४ ॥

इति कृष्णचन्द्रके वसंत समाप्त

प्रह्लादके वसंत

नहीं छांडु बाबा रामनाम मेरे और पढनसों कौन काम ॥ टेक ॥ प्रहलाद पधारे पढन शाल जहँ संग सखा लिये बहुत बाल ॥ कहा पढावे पांडे आलजाल मेरी पाटीमें लिखदे श्रीगोपाल ॥ तब पांडे मूरख कहै जाइ प्रह्लाद बंधावो वेगि आय ॥ राम कहनकी छोड बान तोहिं अबहिं छुडाऊं मेरो कह्यो मान ॥ कहा रे डरावे पांडे बराबर मोहिं जल थल गिरिसों लियो उबार ॥ मारि डारिकै मोको देहु जारि हरिनाम न छोडूँ एही रार ॥

काढि खड्ग कोप्यो रिसाइ तेरो राखनहारो मोहिं बताय ॥ तब खंभ फारि प्रगटे मुरारि हिरणाकुश मारे नख बिदार ॥ १ ॥

इति प्रह्लादके वसंत समाप्त

अथ रामचंद्रकी होरी

राग धनाश्री–खेलें नगर अयोध्या फाग रघुवर जानकी ॥ कस्तूरीको तिलक विराजै मैं बलि बलि मुख पानकी ॥टेक॥ इतते आई जनकनंदिनी कीन्हें सर्व श्रृँगार ॥ उतते आये लाडिले हो दशरथराजकुमार ॥ सीता सैन दई सखियनको रघुवर पकरे धाय ॥ कै तुम बोल देउ लक्ष्मणको फगुवा देइँ मँगाय ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ बाजत खंजरी गानकी ॥ तुलसिदास प्रभु तुम्हरे मिलनको मोहिं गति नहिं आनकी ॥ १ ॥

राग सारंग–रघुवर खेलत होरी ॥ संग लिये जनककिशोरी ॥ टेक ॥ अनुज सहित पिचकारी कर गहे ठाढे अवधबिहारी ॥ उतै सखी समागम लीन्हे निकसी जनकदुलारी ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ अरु बाजत करतारी ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा भारि केसर पिचकारी ॥ अंगना आई धाइ दुहुँ लीन्हें खेलनको हुलसाने ॥ लाज भाजि दुर गई भवनमें शंक न कोऊ आने ॥ मनहुँ दुरदमहे अति गर्वित

एड भरे अडराने ॥ छबिके भरे छबीले दोउ छके रहत नहि छाने ॥ लिये लुकाइ अरगजा लालन सिया शिरपर ढोरी ॥ तारी दै हँसि कहे पियारे हो हो हो हो होरी ॥ मृगमद मलय कपूर सुवाकी कंचन घट बहु घोरे ॥ मान खेलमें रहत जु कैसे भनत परस्पर हो रे ॥ एक सखी सियासे बोली मंत्रजु अद्भुत ठान्यो ॥ कछु ललचाई लालके ढिगसो भरत आपमें आन्यो ॥ अब हम कहैं सोई तुम करिहो कह्यो जु हमरो मानो ॥ तुम अग्रज जैसे तैसे कर हमरे निकट जु आनो ॥ भरत चतुर चितचोर लालको कछु एक रुचि उपाई ॥ वे रंगको लिये नारि रंगीली झुमकि पिया पै आई॥ धाई उर्मिला गह्यो पीत पट अंजन आँखि अंजाई ॥ रारि करि मुख मंडन कीन्हों जनकसुता मुसुकाई ॥ सिया नयनकी सैन दई जब लक्ष्मणको पकरायो ॥ अरि ये सबहीमें महा ढीठ है कीजे सखि मन भायो ॥ शत्रु जीत छलसों गहि आन्यो वाके ढिग बैठायो ॥ राज कुँवरि दौरि धरो भरतने दाव भलो बनि आयो ॥ चहुँ भाइनको अब मुख मांडो सखि री पकरि नचावो ॥ कै तुम जाय कहो लडैती संग हमारे गावो ॥ कै तुम जाय कहो महरानी तुमको आन छुडावो ॥ कै हाहा करि पांय परो सियाके मंत्रजू भलो बतावौ ॥ मानो घन दामिनी दमके नवल लाल ढिग डोले ॥ छाँडत नहीं छबीली पियको कामिनि करत किलोले ॥ अब यह वानिक बनत न काहूं परे आन वशि

भोले ॥ करत कटाक्ष परस्पर युवती हँसि हँसि प्रतिमा बोले ।। बीच कियो कौशल्या रानी फाग लोगको दियावै भूषण वसन मँगाइ भवनसों सकलवधू पहिरावै ।। श्रीनरहरि-वपु धारि अवनिपर अवधपुरी चलि आवैं ॥ चिर जीवहु कौशल्यानंदन विष्णुदास गुण गावैं ॥ २ ॥

राग सारंग–खेलत राम अवधपुर होरी जोड़ी परम सुहाई हो ॥ इत सखियन मधि सिया विराजै उतहि सखा सुखदाई हो ॥ टेक ।। बाजत ढोल दुंदुभी भेरी महुअरि अरु सह-नाई हो ॥ गावत गीत पुनीत फगुवाके बहुविधि सब हरषाई हो ।। गजगामिनि भामिनि दामिनिसी हो हो करि करि धाई हो ॥ उत दौरे रघुवीर लषणजी भरत शत्रुहन भाई हो ॥ अबीर गुलाल कुमकुमा भरि भरि पोटनि मार मचाई हो ॥ इतहि जयति जय जनकललीकी उत दशरथसुत धाई हो ॥ उड़त गुलाल लाल भये अंबर धुंध चहूँ दिशि छाई हो ॥ मृगमद केसर भरि भरि छोडत यंत्रन युक्ति लगाई हो ॥ एक सखी पीछेते लक्ष्मण गहे अचानक जाई हो ॥ दौरी बाल ताल दै हँसिके गहि लालनको ल्याई हो ॥ अब सब भयो भावतो मनको राखौंगी उर लपटाइ हो ॥ अब सब करिहैं हम मनको भायो ह्यां न चलै चतुराई हो ॥ तुम जिन जानो हम छुटि जैहैं छांडौ बहुत रिझाई हो ॥ व्यंग वचन सुनि गये कूदिकै सबै रहीं खिसियाई हो ॥ जानकि वल्लभ फगुवा दीन्हों मेवा सरस मिठाई हो ॥ चली किशोरी भरि भरि झोरी संतदास बलि जाई हो ॥ ३ ॥

राग सारंग–खेलत राम रघुपुरी रुचिसों भाँति न सुखदाई हो ॥ इत है जानकी युवतियूथ उत सोहै संग भाई हो ॥ टेक ॥ चँवर छत्र वर ध्वजा पताका रचना रुचिर बनाई हो ॥ सकल फागको साज सज्यो है कबहूँ निकट न जाई हो ॥ बाजे बजन लगे चहुँ दिशितें गावत गाइ सुहाई हो ॥ मानो द्विरद छूटे मदमाते धरत परस्पर धाई हो केसर घोरि कुमकुमा भरि भरि छूटत छबि पिचकारी हो ॥ प्रेरित पवन मनहुँ पावस ऋतु घन वरषत इक वारी हो ॥ मृगदल मलय अबीर सखा सब अरगन कीच मचाई हो ॥ उमंग चले अरगजा पनारे वीथिन नदी बहाई हो ॥ केसर रंगसों भरे चौबचा धूम धूम छबि छाई हो ॥ सोंधे लहर महोदधि मानो पुरजन प्रीति बढाई हो ॥ चोवा चंदन छलबल करिकै प्रीतम मुख लपटाई हो राजिवनयन लेत जब बदलो तब सिय देत दुहाई हो श्रुतिकीरति ऊर्मिला मांडवी रघुवर घेरें जाई हो ॥ हा हा किये तबै भल छुढ़िहो कै सिय शीश नवाई हो भरत भरावत कुँवरि कुँवरपै होले दे किलकाई हो ॥ मानो घनध्वनि व्यापि रही है उठत महल मझाई हो ॥ खंभ खंभ प्रतिबिंब रामको जहँ तहँ देत दिखाई हो ॥ कुशधुज कुँवरि भरत भ्रांतिसों हाँसि करत खिसियाई हो ॥ पटा के पकरे जाय शत्रुहन काजर आंखि अँजाई हो ॥ करत सकल भामिनि मन भायो बंधु तो लेहुँ छुड़ाई हो ॥ पकरो तो वीरन मैं पक्षी मिस करि हाथ दिवाई हो ॥ खेलन

लगे उड़ि गये चिरैया हरि हँसि ताल बजाई हो ॥ जालरंध्र मुख निरखत जननी आनँद उर न समाई हो तन मन प्राण करत नौछावरि बांटत बहुत बजाई हो ॥ रंग रंगे डोलत राय अंगनमें जनकसुता रघुराई हो ॥ रीझि सुमन वर्षत सुरसंघट दिव्य दुंदुभी बधाई हो ॥ बीच कियो कौशल्या रानी फगुवा गोद भराई हो ॥ सीताराम विनोद फागुपर अग्रअली बलि जाई हो ॥ ४ ॥

राग काफी—खेलत रघुवर रंग भरे हो हो मेरे प्यारे अवधपुरीके प्राण ॥ घर घर तोरण ध्वजा पताका मुक्ता वंदनवार ॥ दुवदनि मृगशावकनयनी गावत गीत रसाल॥बाजे बहुविधि साज बजावें मधुर मधुर सुर गान ॥ देखन आये देवसमूहा चढि चढि व्योम विमान ॥ उत रघुवर भूषण बहु भूषित पीतांबर छबि देत ॥ लछमन भरत शत्रुहन सुन्दर बोलि सखा सब लेत ॥ नख शिख कियो शृंगार लाडिली चली है सहचरि ओट श्रुतिकीरति उर्मिला मांडवी बनी छबीली जोट ॥ चोवा चंदन और कुमकुमा अरगजा माट भराये ॥ बूका चंदन कुमकुम केशर कुँवरि लिये अपनाये ॥ भरि भरि लई कनक पिचकारी अपने अपने हाथ ॥ मानो छुटी घन धारा चहुँ दिशि रँग्यो सियाको साथ ॥ रघुवर भर्यो जब प्राणपियारी बहुविधि रंगके सार ॥ मानो सांवर गिरते उतरी रंग रंगीली धार ॥ वारी बहुविधि लई सामग्री दुरो अनुहारी ओर ॥ उड़ै गुलाल छये अरुणाई मानहुँ

उगेऊ भोर ॥ खेलत मगन भये नर नारी देत अरगज डारी॥ जहां तहां छूटि चले पनारे मानो पावसवारी ॥ करसों कर जब गह्यो लडैती काजर आंखि अँजाई ॥ जो ये रघुवर तुम्हरे प्यारे हैं अब क्यों ना लेहु छुडाई ॥ अहिवेली भोजन लियो रघुवर दियो सहचरी हाथ ॥ जनि छीयो यों कहे लड़ैती छल कीन्हों रघुनाथ ॥ सजल अमी हँसि आँजे लोचन हँसी कराई दीन ॥ खंजन खरे कहाते निकसैं जावक भीने मीन ॥ सुखसागर पिय नागरि झूलत बाढेउ रंग अपार ॥ गहो अँचरा गोरी कहै हरिसे फगुवा देदेहुँ कुँवार॥ फगुवा दिये मँगाइ सबन्हको अँग वनिता अनुकूल ॥ जय जय सिया राम धुनि उचरै सुरगण वर्षे फूल ॥ इन्द्रादिक यौं कहैं परस्पर धन्य अयोध्यावास ॥ क्यों न कियो विधना हम निजपुर कहुँ रघुवरके दास ॥ सुन्दरदास चले गुण गावत सरयू करि स्नान ॥ मणिभूषण अवधेश युगलपर वार देत हैं दान ॥ ५ ॥

राग काफी–रघुवंशी सुन्दर अति बने हो बने हो दशरथराजकुमार ॥ टेक ॥ सरयूतीर अयोध्या नगरी अधिक राज बड़ भाग ॥ सुर नर मुनि अरु देव तेतीसों खेलत आये फाग ॥ कनक खंभ मिलि डोल रच्यो है झूलत सीताराम ॥ मानो सिंधुकि उठत तरंगे वर्षत कुसुम विमान॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन राजत कुँवर किशोर ॥ खेलत फिरत सबै रँग भीने इंद्र रह्यो कर जोर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल

अलक भ्रमर भ्रम भूल ॥ मृगमद तिलक माल मुक्ताहाल पीत बसन अनुकूल ॥ ढोल झांझ सहनाई बाजै यंत्र पखावत ताल ॥ मृदंग भेरि अरु राय गिडगडी बिच बिच वेणु रसाल ॥ चोवा चंदन और अरगजा केसर बहुत सुवास ॥ रंग भग खेलत रघुवंशी मानो बर्षत भादों मास ॥ सब सखियन मिलि रच्यो उपायो लक्ष्मण पकरे धाय ॥ आंजे नयन कपोल करन गहे लियो है धनुष छिनाय ॥ रघुवर रीझि देत पीतांबर मेवा बहुत मँगाय ॥ वर्ण वर्ण पहिराय पाटंबर आनँद उर न समाय ॥ धनि धनि आज अयोध्यानगरी धनि पुरवासी लोग ॥ लघुहरिदास धन्य दशरथसुत वारौं कोटि इंद्र भोग ॥ ६ ॥

राग काफी–अविनाशी दूलह कब मिलिहैं हो मेरे प्यारे मिलिहैं तो जान न देहूं ॥ टेक ॥ जल उपजी उपजी जलसे नहीं नेहो रटत पियास पियास ॥ मैं विरहिन ठाढी मग जोऊं राम मिलनकी आस ॥ दिवस न भूँख रैनि नहिं निद्रा गृह अंगना न सुहाय ॥ सेजरिया वैरन भइ मोको जागत रैनि विहाय ॥ छोंडो गृह नेह जोडो तुम सो भइ चरण लवलीन ॥ तलफि तलफि मैं प्रेमकी फांसी जैसे हों जल विन मीन ॥ हम तो तुम्हरी दासी मोहन तुम हमरे शिरताज ॥ दीन दयालु दयाकर माधो कर लीजो मन काज ॥ कै हम प्राण तजत हूं हो मोहन कै अपनी कर

लेहु ॥ दास कबीर बिरह अति बाढ्यो हमहिं कै दरशन देहु ॥ ७ ॥

इति रामचन्द्रकी होरी समाप्त

अथ कृष्णचन्द्रकी होरी

राग गूजरी—श्रीराधे नवनकिशोर ढोले गूजरी कनक मथनियां शिर धरि बाबा नंदके द्वार खरी ॥टेक॥ हरिये कुसमको घाँघरो ओढनको चुनरी अँगिया बनी है कटावकि मानौ फूली चंपकली ॥ अनवट बिछुवा घुंघुरु हो जेवर अजब बनी ॥ चाल चलै मदहस्तिकि मानो यौवन गर्व भरी हार हिये हरिकी चौकी बनी खंगुवारि दुलारी ॥ बिंदा बन्यो है जडावको मानो मोतियन मांग भरी॥ बिया-तप मैं वर्णौं कहांलौं अंग अंग सुघरी ॥ १ ॥

राग सारंग—वाघंबर ओढे साँवरो हो हो मेरी आली इनमें योगीको लक्षण कौन ॥ टेक ॥ शंख शब्द ध्वनि सुनि जित तिततें जुरि आई व्रजनारि ॥ वदन विलोकि कुँवर राधेको बैठे हैं आसन मारि ॥ कौन दिशासों आये हो रावर कहां तेरी मंसा जाई ॥ आपन मौन गहे मनमोहन दक्षिण दियो बताई ॥ हँसत बझत वृषभानुनंदिनी रावर उत्तर देहु ॥ कारण कवन भेष तपसीको बन तजि आये गेहु ॥ झोली न पात्र विभूति न बडवा मुद्रा नाहिं न कान॥ योगी नाहीं कोऊ बडो है वियोगी भोगी है परम निधान ॥

सिंगि न नाद न दंड कमंडलु शिर चंदनकी खौरि ॥ मेरे मन अनुमान सखी री कंत विसारे गौरि ॥ चुटकी विभूति दई राधेकूं चलै है बाघंबर झार ॥ तनक चितवनमें मन हरि लीन्हों मोहन लगि है कुवार ॥ नगर नगर योगी डगरमें निशिदिन फिरत उदास ॥ नयन चकोर भये राधेके हरि मिलनेकी आस ॥ तीन लोक ब्रह्मांडखंडमें घट घट रहै सभाय ॥ सो योगी वृषभानु कुँवरिके ठाढे हैं पौरजू आय ॥ तनक तनक करि मन हरि लीन्हों निरखि नयनकी कोर ॥ श्रीजगन्नाथ जीवनधन माधो प्रीति बढी दोउ ओर ॥ २ ॥

राग सारंग–मोहन खेलत होरी श्रीवृषभानुगोपकी पौरी ॥ टेक ॥ वंशीवट यमुनातट कुंजन तर ठाढे बनवारी ॥ इत सखियनको मंडल जोरे उत वृषभानु दुलारी ॥ होडाहोडी होत परस्पर देत आनँदकी गारी ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा केसर कर कंचन पिचकारी ॥ बाजत वेणु बांसुरीकी गर अरु महुअर मुरचंग ॥ अमृतकुंडलि सरमंडलमें सबते सरस उपंग ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ सुरके उठत तरंग ॥ नाचत हँसत करत कौतूहल केसर छिरकत रंग ॥ तबहिं श्याम सब सखा बुलाये सबको मतो सुनायो ॥ भैया रे तुम चौकस रहियो मत कोउ देहु गहायो ॥ जो वे तुमको पकरि पावहीं करि हैं मनको भायो ताते सावधान होय रहियो हम तुमको समुझायो ॥ सबै किशोरी राधा गोरी मनमें

मतो जु कीन्हो ॥ सखी एक बोलाय अपनी भेष ग्वालको दीन्हों ॥ ताको मिलन चले मनमोहन सखा न काहू चीन्हों ॥ एकन बात लगाय लालको पाछेसों गहि लीन्हों ॥ आई समिट सकल व्रजवनिता मोहन पकरे जबहीं ॥ हम माँगत हैं यों विधिनापै दाँव परेगो कबहीं ॥ जब तुम चीर हरे जु हमारे हाहा खाय हम सबही॥ अब हम वसन छीन सब लेहैं हाहा खाइ हो तुमहीं ॥ एक सखी तहँ औचक आई मोरपिच्छ गहि लीनो ॥ एक सखी पीछेते आई पीतांबर गहि छीनो ॥ इकने आँख आंजि मांडे ऊपर गुलचा दीनो ॥ मानत कौन फागमें प्रभुता मन मानो सो कीनो ॥ इक सखि दूर भई ठाढी घूंघटपर मुख ढाँके ॥ एक सखी मधुरे सुर गावै मुखसों गारिन भाके ॥ एक सखी हरिको मुख निरखै तनुकी दशा न ताके ॥ गिरिधर चरित कोउ नहिं जाने सबहुनकी दिशि ताके ॥ एक कहै वाको वदन उघारो हमहूं दर्शन पावैं ॥ ॥ श्रीमुख कमलनयन मो मधुकर तनकी तपन बुझावैं ॥ एक कहैं याकी वेणी गूंथो रुचि कर माँग बनावैं ॥ एक कहैं बोलो बलभद्रको वे तुमैं भले छुडावैं ॥ सखा एक तुम घरे पठावो यशुमतिहूं ले आवै ॥ जाय न हो छलबल कर छूटे गहो न छूटन पावै ॥ पाँयन परो कुंवरि राधेके वो तुम्हें भले छुड़ावै ॥ दूरहिते बल आवत देखो सबै सखी उठ जाई।।छलबल कारि जैसे अरु तैसे उनहूंको गहि लाई ॥ आन किये एक ठोर ठाढ़े हरि

हलधर दोउ भाई ॥ वाहुकि आँखि आँजि मुख मांडो राधे जु सयन बताई ॥ हँसि हँसि कहत मोहन प्रीतमसों मानो सुखकी भीजै ॥ छांड़ो हमैं जायँ घर अपने पीतांबर मो दीजै ॥ कर जोरे हरि हलधर जू ठाढ़े आज्ञा हमको दीजै ॥ जोइ जोइ इच्छा होई तुम्हारी सोइ सोइ फगुवा लीजै॥ तब देखी ब्रह्मा शिव नारद मनही मन पछताई ॥ बढ़ो भाग्य है व्रजवनितनको हम सुख कह्यो न जाई ॥ जा कारण हम ध्यान धरत हैं ध्यान हुँ आवत नाई ॥ सो देखे व्रजयुवतिन आगे जोरे ठाढे वाई ॥ तबै श्याम सब सखा बुलाये फगुवा बहुत मँगायो ॥ जो जाके जैसो मन भायो सोइ सोइ तेहि पहिरायो ॥ जगन्नाथराय चिर जीवहु जोडी सबको भलो मनायो ॥ बाढ़ो वंश नंदबाबाको माधोदास गुण गायो ॥ ३ ॥

राग सारंग—मेरे नयनमें जिन मारो पिचकारी ॥ झीने बसन अंग लपटाने, भीज रही तनु सारी ॥टेक॥ खंजन मीन मराल दधीसुत मानो कनक कुँवारी ॥ मृगरिपु मगर पपैया कोकिल मानो विधि सांचे ढारी ॥ दर्पण कुँवरी कर अपने मोतियन मांग सँवारी ॥ तीन लोकको रूप राधिका रसवश कियो बिहारी ॥ केसरसों मेरि अंगिया सानी सोंधे भीनी सारी ॥ कनककी नकवेसर भीनी मुतियनकी लर न्यारी ॥ केसर घोरि मँगाय लाडिली नवल लालपर डारी गोरेसे वदन भये नँदनंदन हँसत त्रिया दे तारी ॥

मृगमद घोर भरे हरि श्यामा अंग अंग भये कारी ॥ अरस-परस दोऊ लाल लाडिली रँग उपज्यो रस भारी ॥ ललना धाय गहे मनमोहन नयन सयन दे प्यारी ॥ फगुवा देहो तबै भल छुटि हो कहे वृषभानुदुलारी ॥ फगुवा बहुत मंगाय लाडिले हँसि हँसि दे गिरिधारी ॥ यह सुखसिंधु कहांलों वर्णौं लीला मंगलकारी ॥ धनि धनि भाग्य भूमि व्रजवनिता जा सँग रमत मुरारी ॥ लाल लाडिलीकी छबि ऊपर अग्रदास बलिहारी ॥ ४ ॥

राग सारंग--सर होरी खेले सांवरो हो अहो मेरो आली तट यमुनाके तीर ॥ टेक ॥ लाल गगन भये लाल मगन भये वृक्ष लता भये लाल ॥ फल पात लाल हि लाल बनी व्रज वनिता लालहि लालहिको साथ ॥ कंचनकेर कटोरा केसर घिसि ललिता लिये हाथ ॥ अंचल दे वृषभानुनंदिनी छिरकत हरिके गात ॥ भारि पिचकारी सुघर सुदामा दई कृष्णको ओर ॥ चितवत चोट करत मनमोहन भीज गई मृगमद खोर ॥ इत भये ग्वाल उतै व्रजवनिता गये नंद दरबार बांसन मार परत अति भारी जीते नंद-कुमार ॥ विद्यापति प्रभु फगुवा दीन्हों मेवा सरस मँगाय ॥ दे आशीश चलीं व्रजवनिता चिर जीवो नँदलाल ॥ ५ ॥

इति कृष्णचन्द्रकी होरी समाप्त

शेषाचल होरी

शेषाचल धाम सुहावनो हो मेरे प्यारे जहाँ खेलत निकट फाग ॥ टेक ॥ गिरि पर्वतकी का छबि वर्णौं विकटहि बैठे आय ॥ पुष्करणीजी निकट विराजैं कोटिक तीरथ माँझ कंचनमंडप छाय रह्यो है सन्मुख हैं हनुमान ॥ इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं भीर भई घन घोर ॥ वाहन गरुड़ सवारी निकसी भई दुंदुभी बंब ॥ रत्नजटित शिर मुकुट विराजै शोभा वरणि न जाय मारि फलांग रथोपर बैठे इन्द्र रह्यो घनघोर ॥ ब्रह्मादिक स्तुति करत हैं धनि पुर-वासी लोग ॥ केसरिया बागो जो बान्यो है लक्ष्मी रहै लव-लाय ॥ दास हाथीरामको दरश भयो है चितवत संत आय ॥ ५ ॥

इति शेषाचल होरी संपूर्ण

गिरि होरी

नवरङ्गी केशर हम बोइहैं ॥ अहो मेरी आली अपने बालमजीके काज ॥टेक॥ गिरि पर्वत पर केसर बोई मिरगा चुगि चुगि जाय ॥ क्यौं रे मृगा तू मानत नाहीं मारौं धनुष चढाय आसपास हम केसर बोई बिच बिच बोयो गुलाब ॥ बाको वास सुबास उड़त है गूथूंगी नव सुन्दर हार ॥ कनक कटोरा केसर घोरो अरु यमुनाको नीर ॥ कृष्णजिवन जीनो बागो अरु रँगोंगी राधेजीको चीर ॥ वृंदावन वंशी बजी मोहन

ध्वनि सुनि रह्यो न जाय ॥ वेगि मिलो हरिवंशके स्वामी रूठेको लेहु मनाय ॥ १ ॥

गिरिलाल विहारी होरी खेलै हो ॥ अहो मेरी आली खेलत सन्तसमाज ॥टेक॥ निकट महोदधि रतनसिंहासन रथपर श्रीजगन्नाथ ॥ पुष्प विमान चढे बलदाऊ देवी सुभद्रा है साथ ॥ दौना मरुवा अधिक विराजै पहिरे पुष्प अपार ॥ सखिन सहित लक्ष्मी सङ्ग राजै पहिरे उत्तम चीर ॥ जग-जीवन खेलनहिं पधारे इन्द्रदमन दरबार ॥ गोपरूप सोहैं रङ्ग भीने चले हैं भरि भरि थार ॥ महिमा अधिक जात नहिं वरणी सब देवनके देव ॥ आये शरण दास जन माधो प्रभु अपनो करि लेय ॥ २ ॥

इति गिरि होरी संपूर्ण

अथ रामडोल

राम धनाश्री—बैठे डोल विराजैं आजु श्रीरघुवर जानकी॥ नर अरु नारि सबै मिलि गावत राग रागनी तानकी॥टेक॥ पुरटजटित पटनी पट सोहै रचना रची वितानकी ॥ झलकि रही कहि जात न झलरी झुमकनि गजमुकतानकी ॥ सखी सखी मिलि झुमकि झुलावत बीरी खवावत पानकी ॥ सिय पिय पर हँसि चोट चलावत लोचन कोयल वानकी॥ अबीर गुलाल अरगजासों छवि छकि है भानुकुल भानुकी ॥ युगल विलोकि वदन विधु सुन्दर गति गइ मदन गुमानकी ॥१॥

राग धनाश्री-खेलैं अरस परस मिलि फाग नागर नगरी॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदिनी इनको परम सुहाग री ॥टेक॥ चोवा चंदन और अरगजा भरि भरि केसर गागरी ॥ पिय प्यारी प्यारी पिय ऊपर बाढ्यो अति अनुराग री ॥ पकरि लालके गाल लपेटे धोयो छुटे तन दाग री ॥ हो हो बोल होरी खेलैं तोन्यो लाजको ताग री ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मच्यो धनाश्री राग री ॥ दोउ मिलि फगुवा रीझ देत हैं लघु मोहनकी भाग री ॥ २ ॥

राग सारंग-झूलत डोलत अवधविहारी ॥ अरुण बसन अलबेली बनिता गावत कोकिल कारी ॥ टेक ॥ सबहिं सखी दामिनि ज्यौं दमकहिं पहिरे अनुपम सारी ॥ अपनो २ माट धरे सब मृगमद केसरि गारी ॥ आप आपके झूमके चालत देत परस्पर तारी ॥ लाज न कोउ काहूकी मानत प्रेमभरी मतवारी ॥ झूकि चलत हैं तट सरयूके गावत राग धमारी ॥ अलबेली हटक्यो नहिं मानत सिया निरखि रति-हारी॥ और ख्यालको कौन गनि सकै जाहिमदन रतिहारी ॥ कहि न परत कछु छबि राधोकी शोभत रूप अपारी ॥ फूलन हीकी पाग विराजै फूलन पेच सँवारी ॥ फूलनकी माला विराजै फूली फिरैं पुरनारी ॥ फूलहि फूल बने पुलि-ननमें फूलनकी पिचकारी ॥ फूलन हीकी अलक गुहाई फूलन मांग सँवारी॥फूलनहीकी अँगिया विराजै फूलनहीकी सारी ॥ फूलनहीको बन्यो घांघरो फूलन छरी सँवारी ॥ फूलनहीको

अटार कटारी फूलन फूल सँवारी ॥ फूलनहीको बन्यो झरोखा फूलनहीकी बारी ॥ फूलनहीकी रौस बनाई फूलनकी चिकडारी ॥ सकल फूलकी छाति बनाई अरुण फूल डंडकारी ॥ पीत फूलकी झाँकी राखी फूल कुसुंभा जारी ॥ नील फूलके पडदा डारे झूलति जनकदुलारी ॥ फूलनहीकी भूमि विराजै फूल लता लटकारी ॥ फूलनहीके खंभ विराजैं फूलन तनी सँवारी ॥ फूली नारि अद्भुत अति गावहिं मानों मनोज लजाई ॥ दशरथनंदन जनकदुलारी झूलत हैं भुज जोरी ॥ घनदामिनि द्युति राजत दोऊ कहि न परत छबि भोरी ॥ अनँग लज्यो रघुवर छबि देखत सीया निरखि तिहारी ॥ निशिदिन सुख ब्रह्मादिक बांछित संशय रहत सुरनारी ॥ बिन पुरवासी कोउ नहिं पावै अवध आन सुखकारी ॥ सीता राम अभय पद मोको दीजै भक्ति सुभारी ॥ निशि दिन ध्यान धरों हिरदैमें तुलसी छबि पर वारी ॥ ३ ॥

इति रामडोल समाप्त

अथ कृष्णडोल

रागधनाश्री—चलो सखी देखन जइये डोल सुहावनो ॥ ऋतु वसंत फूले पति पतनी गृह गृह आनंद वधावनो ॥ टेक ॥ नव वृंदावन नव वंशीवट बेलि सघन वन फूले ॥ धीर समीर कुन्ज जहँ यमुना देखि महामुनि

भूले ।। तेहि मध डोलरच्यो विश्वकर्मा अद्भुत चित्र बनाई ।। वर्णौं कहां एक मुख रसना शेषपै वरणि न जाई।। कनकखंभ नग जटित पिरोजा लगे हैं लाल मणि मोती ।। हीरा नगन बनी चिन्तामणि शशि उडुगण सम ज्योती ।। रेसमडोरी लूंमख तूलन्हि नवल लाल लपटावै ।। झूलत श्रीराधे आनँदवन गौतम नारि झुलावै ।। लहँगा लाल कुसुंभी अँगिया पहिरि वसंती सारी ।। चंद्रवदनि मृगलोचनि राधे श्रीवृषभानु दुलारी ।। चोवा चंदन अरगजा कुमकुम अबिर गुलाल उडावै ।। खेलत ब्रजवनिता मोहन संग अमर पुष्प वरषावै ।। ताल मृदंग झांझ डफ बाजे रंग रह्यो रस भारी ।। लाल लाडिलीकी छबि ऊपर जन केशव बलिहारी ।। ७ ।।

इति कृष्णडोल समाप्त

अथ अन्य विशेष होरी

दशरथके द्वार मची होरी ।। टेक ।। आये वशिष्ठ संग द्विज सोहें केशर तिलक अबिर झोरी ।। पुत्रन सहित उठे नृप दशरथ शीश नाय कहें कर जोरी ।। हिलमिल फाग परसपर खेलैं दान दिये भई मति भोरी ।। ब्रह्मा खेलैं महादेव खेलैं सुरपति खेलैं रंग बोरी ।। कौतुक देखि पतंग भुलाने शारदकी भइ मति भोरी ।। तुलसीदास आश रघुवरकी चितवत मोर रामकी ओरी ।। ३ ।।

होरी खेलत राम अवधवासी ॥ टेक ॥ कितसे आये राम रँगीले कितते आई सिय सुखरासी ।। अवधसे आये राम रँगीले मिथिलापुरी सिया सुखरासी ॥ कितने वरषके राम रंगीले कितने वरषकी सिय सुखरासी बारह वरषके राम रंगीले सात बरसकी सिय सुखरासी ॥ उड़त गुलाल लाल भये बादर रंग बरसत केसर खासी ॥ रामसेवकके प्रभु सुखसागर अचल बसै तेरि अविनासी ॥ २ ॥

होरी खेलत राम अवध खोरी ॥ टेक ॥ लखन राम दोउ भरत शत्रुहन अबिर गुलाल भरे झोरी ॥ चारों वरण घर-नकी युवती सकल युवा मद बोरी ॥ चाल भलि विधि फागुनकी महिमा कुशल बड़ी सबके ओरी ॥ बाजे विविध बजावत गावत होत शोर चहुँ दिशि ओरी ॥ मनमहँ मदन रति सैनापति कीन्हों चोपन थोरी थोरी ॥ चंदन केसर मृगमद भाजन लिये भरे सबकर घोरी ॥ लाज काज मर-जाद लोककी सकल तजी यह मद बोरी ॥ इत रघुवंशी छैलछबीले उत अलबेली बेलोरी खेलहिं फाग अबीर दोउ दिशिते बाढ्यो अनंद भोरी ॥ अबीर गुलाल लगाई भली विधि रंगनते अंगन बोरी ॥ रामसेवक एक राम पर-सपर धरत करत बरजोरी ।। ३ ॥

होरी खेलत राम अवधपुरमें ।। टेक ।। क्रीट मुकुट मक-राकृत कुंडल मुतियन माल बनी उरमें ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ हनुमत नाचै डफ कमरमें ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर यह जोरी बसो मेरे उरमें ।। ४ ।।

सरयूतट आजु मची होरी ॥ टेक ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलन हैं जोरी जोरी ॥ अबीर गुलाल कुमकुमा घोरी केसरकीच मची रोरी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल शिर सोहै सुन्दर सारी॥सुन्दरसुन्दर श्याम राम छबि राजत पीतांबर कटि केश्वर रोरी ॥ उड़त गुलाल लाल भये बादर धनुष बानको रंग बोरी हिलिमिलि फाग परस्पर खेलैं अबिर गुलाल भरे झोरी ॥ रामसेवक रसरसिक शिरोमणि चितवत सो श्यामल मोरी ॥ ५ ॥

होरी रचि रहि छैल छबीलेकी ॥टेक॥ रोके घाट बाट जल ओरी मिलि २ जूथ रंगीलेकी ॥ सरयूतीर नीर भरि-बेको जिन जैहो रंग भीनेकी ॥ मिलि मिलि जूथ अटारी नाचहिं चढि देखहिं फाग रसीलेकी ॥ कुमकुम माट हाथ सरयूरज दै दै मार अबीरोंकी ॥ रामसेवक रति रामचरण सिय अद्भुत ख्याल फनूसोंकी ॥ ६ ॥

दशरथके लाल खेलैं होरी ॥ टेक ॥ कौनके हाथ झाँझ डफ बाजे कौनके हाथ मंजीरा जोरी ॥ लक्ष्मण हाथ झाँझ डफ बाजै शत्रुहन हाथ मँजीरा जोरी ॥ कौनके हाथ कनक पिचकारी कौनके हाथ अबिर झोरी ॥ रामके हाथ कनक पिचकारी भरतके हाथ अबिर झोरी ॥ हिलिमिलि फाग परस्पर खेलैं आनन्द उमँग कौनको री ॥ तुलसिदास छबि देख मगन भये चिरजीवहु जुगल जोरी ॥ ७ ॥

होरी खेलत फिरत अवधवासी ॥ टेक ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ नौबत चोप घोररासी ॥ अतर अबीर भरे केसर घट फेंकि गुलाल करें हाँसी ॥ सुररंजन भंजन महिभारा करत चरित्र लगै हाँसी ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन अंशन सहित सिंधुरासी ॥ तुलसिदास छबि देखि मगन भये देखत परे प्रेम फांसी ॥ ८ ॥

दशरथ सुत चारौं खेलैं होरी ॥टेक॥ उडत गुलाल लाल भये बादर घटा उमँगि आये दौरी ॥ कौनके हाथ रंग पिचकारी कौनके हाथ अबिरझोरी ॥ लक्ष्मण हाथ रंग पिचकारी रघुवर हाथ अबिरझोरी ॥ इत रघुनाथ सखा सँग लीन्हे जनकसुता सखियन ओरी ॥ नौतम नारि अयोध्यापुरकी सुभग चाल उमँग न थोरी ॥ चोवा चन्दन और अरगजा मटुकीमें केसर घोरी ॥ सीता सैन दियो सखियनको झुंड झुंड उठि धाईं सगरी ॥ फगुवा देव मंगाय लालजू बहु मेवा भरि देव झोरी ॥ तुलसिदास छबि देखि मगन भये गौर श्याम सुंदर जोरी ॥ ९ ॥

तुमको हरि होरी खिलावों ॥ टेक ॥ आजु तुमैं धरिकै रघुनंदन मुख भरि रंग लगावों ॥ छीनि लेउं करसे पिचकारी तब सिय सखिय कहावों ॥ अनुज सहित धरि राम लषनको सुन्दर रूप बनावों ॥ लै जैहों मिथिलेश ललीपहँ सीता पायँ परावों ॥ तुलसिदास हँसि लषन कहैं प्रभु सब सखियन धरि ल्यावों ॥ छीनि लेउं पट अंग विभूषण रंगनसे नहवावों ॥ १० ॥

खेलत रसिया सँग होरी ॥ टेक ॥ पिचकारी छोडी छबि छलसों चितवत चंद्रसखी चहुँ ओरी ॥ चोवा चन्दन और अरगजा केसर माट भरि धरि घोरी ॥ पिय पियारी प्यारेके ऊपर भरत परसपर कुँवरि किशोरी ॥ तब महरानी अति अकुलानी साज लिये सन्मुख दौरी ॥ देत निकंद शंक नहिं मानत दीयो है दाँव यों बरजोरी ॥ इतहि राम उत सिया सुंदरी नयन सैन करत इक सोरी ॥ अति आनंद निरखि यह शोभा तुलसिदास शरणागत तोरी ॥ ११ ॥

होरी खेलत अवधनगरमें ॥ टेक ॥ संग सखा लीन्हें रघुवंशी सिय समाज महलनमें ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ अरु बाजे महलनमें ॥ रंग भरे ठाढे रघुवंशी सिय ठाडी आंगनमें ॥ अबीर गुलालकी धूम मची है पिचकारी हाथनमें ॥ सखियन मिलि पीतांबर पकरी रोरी लगाइ मुखनमें ॥ जगजीवन प्रभुकी छबि निरखै यह जोरी मेरे मनमें ॥ १२ ॥

होरी खेलत राम लखन प्यारे ॥ टेक ॥ रवि शशि कोटि बदनकी शोभा कोटि काम ऊपर वारे ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल शोभा श्याम राम प्यारे पीतांबर पग नूपुर बाजै चरणकमल मुनिमन धारे ॥ तीन लोक अरु भुवन चतुर्दश रामनाम महिमा भारे ॥ तुलसीदास कहैं कर जोरी राम नाम चित धरु प्यारे ॥ १३ ॥

होरी खेलोंगी दशरथलालासे ॥ टेक ॥ मेरे फाग फागु-ऋतु आई मेलहुँगी उर मालासे ॥ केसर घोरि अंग छिरकूंगी मारौंगी लाल गुलालनसे रामसेवक गहि बांह लेउंगी फगुवा कौशलपालनसे ॥ १४ ॥

राम खेलत अनोखी होरी ॥ टेक ॥ अबीर गुलाल आंखिनमें मसलत बांह पकरि झकझोरी ॥ हमें लाज तुमें लाज न आवति करत फिरत बरजोरी ॥ अवध गलिनमें छैल छके फिरे सखियाँ सब रंग बोरी ॥ तुलसिदास प्रभु रूप निरखिकै डारत है तृण तोरी ॥ १५ ॥

होरी खेलन राम लषण आये ॥ टेक ॥ लगे वसंत बौरि गये आमा चंपा केशर रंग छाये ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग सखा हनुमत आये ॥ फेंट गुलाल हाथ पिचकारी केशर कलश भरे आये ॥ हिलिमिलि फाग परसपर खेले राम लखन सखियन भाये ॥ तुलसिदास छबि देखि मगन भये चरण कमल पर चित लाये ॥ १६ ॥

मिथिलापुर आजु मची होरी ॥ टेक ॥ इत कौशलपति उत मिथिलापति खेलत हैं जोरी जोरी ॥ फेंट गुलाल हाथ पिचकारी अबिर गुलाल भरी झोरी ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन झुंड झुंड उठि धाई गोरी ॥ उड़त गुलाल लाल भये बादर कीच मची खोरी खोरी ॥ मिलि मिलि फाग परसपर खेलत फेंकत हैं झोरी झोरी ॥ तुलसिदास छबि देखि मगन भये चितवनि मोर राम ओरी ॥ १७ ॥

अंजनीसुत हरि मन भाये ॥ टेक ॥ लाल लंगोट बनो अति सुन्दर तेल सिंदूर चढाये ॥ एक हाथ गदा दुजे द्रोण-गिरि भरत जी बाण चलाये ॥ लागे बान गिरे धरनीमें रामनाम मुख आये ॥ अचरज भयो भरतजीके मनमें है कोइ दूत पठाये ॥ कौनके पुत्र कौनके पायक कौनहि लेन पठाये॥ अंजनि पुत्र रामजीके पायक लक्ष्मण लेन पठाये ॥ किस राजाकी करत चाकरी कहँवांसे तुम आये ॥ राम राजाकी करत चाकरी लंकापुरीसे आये ॥ आउ पवनसुत बैठ बानपर बान विमान बनाये ॥ पर्वतसहित पवनसुत बैठे बान अकाश चढ़ाये ॥ तुलसिदास हनुमान भरोसे हरि अपने मुख गाये ॥ १८ ॥

श्रीठाकुर कलँगी आपु धरे ॥ टेक ॥ कवन मासमें बनी कलंगी कवन मास हरि शीश धरी ॥ माघमासमें बनी कलंगी फागुनमें हरि शीश धरी ॥ काहेकी तेरी बनी कलंगी काहे रत्न जड़ाव जड़ी ॥ मोरपंखकी बनी कलंगी हीरारत्न जड़ाव जडी ॥ सूरदास छबि देखि मगन भये हरिके चरणपर शीश धरी ॥ १९ ॥

शिवमठ पर सोहै लाल ध्वजा ॥ टेक ॥ किसके सोहैं हरि पिरि चुरियाँ किसके सोहै भसमगोला ॥ गौरिके सोहैं हरि पिरि चुरियाँ शिवके सोहै भसमगोला ॥ कौन शिखर पर गौरि विराजैं कौन शिखरपर बंभोला ॥ उत्तर शिखर पर गौरि विराजैं दखिन शिखरपर बंभोला ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर हरिके चरणपर चित मोरा ॥ २० ॥

गति होइगी रामगुण गायेसे ॥ टेक ॥ अवधपुरी परिकरमा करिके सरयूगंग नहायेसे ॥ जगन्नाथ परिकरमा देके सेतगंगजू नहायेसे ॥ रामेश्वर परिकरमा देके तीरथ धनुष नहायेसे ॥ द्वारिकाधीश परिकरमा देके गोमती गंग नहायेसे ॥ बद्रीनाथ परिकरमा देके तपतकुंड नहायेसे ॥ वृन्दावन परिकरमा देके यमुनागंग नहायेसे ॥ माधोदास आस रघुवरकी हरिके चरण चित लायेसे ॥ २१ ॥

उठि मिलिले भरत राम आये ॥ टेक ॥ मकुनाहाथी जरद अंबारी ऊपर चँवर ढुरत आये ॥ पीतांबरके परे बिछौना तापर चरण धरत आये रामजीहू आये लक्ष्मण आये सखियन संग सीता आये ॥ भुज पसारि मिले चारौं भैया नयन नीर झरत आये ॥ तुलसीदास आश रघुवरके चरण-कमल पर चितलाये ॥ २२ ॥

शिवके मनमाहिं बसी काशी ॥ टेक ॥ आधी काशी ब्राह्मण बनियाँ आधी काशी संन्यासी ॥ कहा करनको ब्राह्मण बनियां कहा करनको संन्यासी ॥ नेम धरमको ब्राह्मण बनियां तप करनेको संन्यासी ॥ कौन शिखरपर गौरि विराजैं कौन शिखरपर अविनाशी ॥ उत्तर शिखरपर गौरि विराजैं दखिन शिखरपर अविनाशी ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर हरिके चरणकी मैं दासी ॥२३॥

प्रभु खेलत फाग मची होरी ॥ टेक ॥ माघ उतारि पुनि फागुन आये घर घर श्याम करत फेरी ॥ फेंट गुलाल हाथ

पिचकारी केसरिके सुरँग बोरी ।। ब्रह्मा खेलैं सदाशिव खेलैं सुरपति खेलैं बरजोरी सूरदास छबि देखि मगन भये हरिके चरण लगी डोरी ॥ २४ ॥

बेदरदी बांसुरी बाजी ॥ टेक ॥ राधे सोवैं अपने महलमें कछु सोवैं कछु जागैं ॥ कौन दिशामें बजी बांसुरी कौन दिशामें गाजै पूरबदिशामें बाजी बाँसुरी पश्चिम दिशामें गाजै ।। इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीचमें यमुना गाजै ॥ वृंदावनमें रास रच्यो है राधे मोहन नाचैं ॥ सूरश्याम तुमरे मिलनको चरणकमल चित राचै ॥ २५ ॥

मेरे आयो री श्याम नटवर बनिकै ॥ टेक ॥ गाढो बांस ढोल ढमकावो चढि गयो बांस पकरिकै ॥ पीतांबरकी कीन्हीं धोती लाल काछनी कछिकै ॥ हाथमें थार गुलाल फेंटमें मारत मुट्ठी भरिकै ॥ अबीर गुलालकी धूम मची है केसर-रंग वरषकै सूरश्याम हरि फगुवा खेलें दोउ दोउ मूठ सबनपै ॥ २६ ॥

रसिया बन्यो मदनमोहन प्यारो ॥ टेक ॥ फेंट गुलाल हाथ पिचकारी युवतीजन मोहनवारो ॥ पीतांबरकी कछनी काछे क्रीट मुकुट कुण्डलवारो ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ बीना उपंग चंग न्यारो ॥ चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि तन मन धन तोपे वारों ॥ २७ ॥

उडि जा रे भँवर तोहि मारौंगी ॥ टेक ॥ उडि भँवरा वाकी छतियन बैठो तेरे कैसे बोझ सम्हारौंगी ॥ एक भँव-

रसे लगन हमारी दूजै कैसे और निहारौंगी ॥ दया सखी धनि भँवर हमारी कोटि भँवर तोपै वारौंगी ॥ २८ ॥

नेक ठाढे रहो रसिया रंग डारौं ॥ टेक ॥ अबीर गुलाल मलौं मुख तेरे गुलचा गालन मारौं ॥ चोवा चन्दन और अरगजा घिसि घिसि तोपैं डारौं ॥ चंद्रसखी भजु बाल-कृष्ण छबि तन मन धन तोपै वारौं ॥ २९ ॥

व्रजमें हरि होरी मचाई ॥ टेक ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर रहत सकल व्रज छाई ॥ इतते आई सुघर राधिका उतसे कुँवर कन्हाई ॥ हिलि मिलि फाग परसपर खेलत शोभा वरणि न जाई ॥ राधे सैन दियो सखियनको झुंड २ उठि धाई ॥ लपटि झपटि गइँ श्याम सुन्दरको वरवश पकडि मँगाई ॥ छीनि लियो मुख मुरलि पितांबर सिरपै चुनरि उढाई ॥ बेंदी भाल नयन बिच काजर नकवेसर पहिराई ॥ सुसुकत हो मुख मोरिकै कहां गई चतुराई ॥ कहां गये तेरे नंदबबाजू कहां यशोमति माई ॥ फगुवा लिये विन जान न दैहैं करिहौं कोटि उपाई ॥ लैहों चुकाय कसर सब दिनकी तुम हो चोर कन्हाई ॥ सूरदास प्रभु चतुर कन्हैया श्यामने राधे मनाई ॥ ३० ॥

सांवरो कहां होरी मचाई ॥ टेक ॥ मैं यमुना जल भरन जात रही मिलि गये कुँवर कन्हाई ॥ सनमुख आय गुला-लन डारो वंशीकी चोरी लगाई ॥ पाँय पकरि ग्वालिनि जब

बोली गुलचा चार लगाई ॥ कंसरायपै पकरि मँगावौं तो वृषभानकी जाई ॥ हरि मुसकाय चले मनमोहन छतियन हाथ चलाई ॥ नंदरायके कान्ह कहत हो जिनके कुँवर कन्हाई गिरिधर ऐसी होरी खिलाई लूटे आनँद अघाई ॥ ३१ ॥

वृन्दावन श्याम रची होरी ॥ टेक ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ वरषत रंग उड़त रोरी ॥ कितसे आये कुँवर कन्हैया कितसे राधा गोरी ।। वृंदावनसे कुँवर कन्हैया वरषानेसे गोरी॥ कौनके हाथ कनक पिचकारी कौन हाथ अबिर झोरी ॥ कृष्णके हाथ कनक पिचकारी राधे हाथ अबिर झोरी ॥ अबीर गुलालकी धूम मची है फेंकत हैं भर भर झोरी ॥ सूरदास छबि देखि मगन भये राधे श्याम युगल जोरी ॥ ३२ ॥

डफ बाजो छैल मतवारेको ॥ टेक ॥ डफके धूमसे सब गवर हाल्यो हाल्यो खंभ तिबारेको ॥ बाजूबंद खहेला सोहै गले सोहै खगबारेको मैं बरजों जनि जाहु अकेली ठाढो छैल नंदबारेको ॥ सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको तन मन धन चहुँवारेको ॥ ३३ ॥

कान्हा धरे रे मुकुट खेले होरी ॥ टेक ॥ कितसे आये कुँवर कन्हैया कितसे राधे गोरी ॥ इतसे आये कुँवर कन्हैया उतसे राधे गोरी ॥ कितने बरसके कुँवर कन्हैया कितने राधा गोरी॥ बारै बरसके कुँवर कन्हैया सात वरषकी गोरी॥ हिलिमिल फाग परसपर खेलत अबिर गुलाल भरे झोरी ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि युगल चरणपर चित मोरी॥ ३४॥

मृगनयनी नारि नवल रसिया ॥ टेक ॥ अतलसको जाको लहँगा सोहै झूमक सारी मखमल रसिया या ॥ पीयरी गोरी पियरोई रसिया लाल पलंग पचरंग तकिया ॥ बाह बरा बाजूबन्द सोहै हिये हमेल दिपै छतिया ॥ छोटि छोटि अंगुरीमें मुँदरी सोहै झलकै अरसी अद्भुतिया ॥ सूरदास हरिको रूप निहारे चरणकमल पर चित बसिया ॥ ३५ ॥

व्रजमें सखि रंग मच्यो री ॥ टेक ॥ जाति रही बंशी-वट यमुना बीचमें रंग उड्यो री ॥ काहूके बसन केसरसों भीजै काहूके छींट पर्‍यो री ॥ एक कहै मैं तो सगरी भीजि गई अब मैं कैसि करों री ॥ सब सखियन मिलि मतो कियो है कृष्णको जा पकरों री ॥ फेंट पकरि रँग छिटकन लागीं राधे हँसी मुख मोरी ॥ दामिनिसी दमकै द्युति यमुना पूरण चंद्र उगो री ॥ रामप्रसाद अनोखो रूप लखि मानो मरा-लकी जोरी ॥ ३६ ॥

यमुनातट आजु मची होरी ॥ टेक ॥ हलधर गिरिधर मदन मनोहर खेलत हैं जोरी जोरी ॥ अबिर गुलाल कुम-कुमा केसर कीच मची खोरी खोरी ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल सोहत है सुन्दर जोरी ॥ फेंट गुलाल हाथ पिचकारी अबिर गुलाल भरे झोरी ॥ सुन्दर श्याम काम छबि लाजत सिर सोहै सुन्दर सारी ॥ हिलि मिलि फाग परसपर खेलत फेंकत हैं झोरी झोरी ॥ उड़त गुलाल लाल भये बादर कर

मुरली रंग मैं बोरी ॥ सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि चितवन मोर श्याम ओरी ॥ ३ ॥

राधे फूलन मथुरा छाई ॥ टेक ॥ कितने फूल सरगसों उतरे कितने मालिनि लाई ॥ नहिं तो फूल सरगसों उतरे नहिं तो मालिनि लाई ॥ उड़ि उड़ि फूल परे यमुनामें राधे बीनन ॥ आई चुनि चुनि कलिया मैं हार बनाये श्यामके ऊपर पहिराई ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिके चरण चितलाई ॥ ३८ ॥

बरसानेमें महल लाडिलीके ॥ टेक ॥ ऐ बरसानेमें बाग बहुत है बिच बिच पेड़ मालतीके ॥ ऐ बरसानेमें महल बहुत हैं बिच बिच चौक चांदनीके ॥ ऐ बरसानेमें नारि बहुत हैं बिच बिच झुंड ग्वालिनीके ॥ बसो रे आली ऐ बरसानेमें पीयर राधे ऐ गोरीके ॥ श्याम कन्हैया निशदिन विहरैं जबसे दिन आये होरीके ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणकमल चित चोरीके ॥ ३९ ॥

दधि पीले श्याम सलोना ॥ टेक ॥ काहेकी तेरी बनी है मथनियाँ कौन पत्रके दोना ॥ आठ काठकी बनी मथनियाँ कदमपत्रके दोना ॥ कौन घाटपर ग्वाल जुरे हैं कौन घाटपर कान्हा ॥ चीरघाट पर ग्वाल जुरे हैं कालिन्दीपर कान्हा ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिके चरण चित होना ॥ ४० ॥

वृंदावन मोहन दधि लूटी ॥ टेक ॥ कहां तेरे हार कहां नकवेसर कौन गलीमें लर टूटी ॥ मथुरा हार गोकुल नकबेसर कुंजगलिनमें लर टूटी ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि हरिके चरण ग्वालिनि लूटी ॥ ४१ ॥

मथुरा जनि जाहु कान्ह प्यारे ॥ टेक ॥ यह मथुराकी गैल बुरी है औघट घाट नदी नारे ॥ ये मथुराके लोग बुरे हैं टेढि टेढि पाग पेच न्यारे ॥ ये मथुराकी नारि बुरी हैं लंबे केश भँवर कारे ॥ या मथुराकी गली बुरी है बड़े बड़े कुलुफ जडे तारे ॥ सूरदास मथुराके वासी राखे नारि प्रेम प्यारे ॥ ४२ ॥

क०-गोकुलको ग्वाल एक चौमुहँकी ग्वालिनिसो चाचरि रचाय अति धूमहि मचायगो ॥ हियो हुलसाय रसखान तान गाय वाके सहज सुभाय सब गांव ललचायगो ॥ पिचका चलाय सब युवती भिजाय लोल लोचन नचाय उरपुरमें समायगो ॥ सासहि तचाय गोरी नन्दहि नचाय गोरी बैरिन सँचाय गोरी मोहि सकुचायगो ॥ ४३ ॥

स०-वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुरको तजि डारों । आठहु सिद्धि नवों निधिको सुख नंदकी गाय चराय बिसारों ॥ रसखान कबै इन नैननसे ब्रजके वन बाग तडाग निहारों ॥ कोटिनहू कलधौतके धाम करीलकी कुंजन ऊपर वारों ॥ ४४ ॥

राग रामकली

मांगिये गिरिजापति काशी जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे, सकत न देखि दीन कर जोरे ॥ सुख संपति मति सुगति सुहाई, सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ गये जे शरण आरतको लीने, निरखि निहाल निमिषमहँ कीने ॥ तुलसिदास याचक यश गावै, विमल भक्ति रघुवरकी पावै ॥ ४५ ॥

इति अन्य विशेष होरी समाप्त

अथ हिंडोरा झूलन

राग मलार–युगल वर झूलत फूल हिंडोरे ॥ श्रीवृषभानु सुता नँदनंदन फूले लेतमचोरे ॥ युग० ॥ टेक ॥ फूलन-के खंभ फूलनकी डांडी फूलनके गुहि डोरे ॥ फूलनकी पटुली अति सुंदर तामधि फूल किरोरे ॥ युग० ॥ बेलन मरुवा अपार फूलनके फूलन साज सब धोरे ॥ फूलनके फहरात मका सौरभ उड़त झकोरे ॥ युगल० ॥ फूलनको लहँगा फूलनकी सारी फूलनकी कंचुकी कोरे ॥ फूलनकी पाग जामा फूलनको फूलनको पटका मरोरे ॥ युगल० ॥ नख शिखलौं आभूषण फूलनके शोभा होत न थोरे ॥ अहो सुख जात कवनपै वरण्यो शारदहू मति भोरे ॥ युगल० ॥ १ ॥

राग मलार–हिंडोरे माई झूलत राधा गोपाल ॥ नवयौवनी रूप गुण सुन्दरि जुरि आई बाल ॥ हिंडोरे० ॥ टेक॥ तैसेहि हरित भूमि है खनि द्रुम तैसेहि बने तमाल ॥ तैसेहि घटा घुमड़ि छायाकी तैसे बनी वरमाल॥ हिंडोरे० ॥ तैसेहि वन कुसुमित प्रफुलित तैसेही खगरवजाल ॥ तैसे मंद सुगंध शीतयुत पवन बहत तेहि काल ॥ हिंडोरे० ॥ तैसेहि मणिकंचन आभूषण तैसे बसन सब लाल ॥ झूलि झुलाय मन पूरण जन पर होहिं दयाल ॥ हिंडोरे० ॥ २ ॥

राग मलार–सरस हिंडोरना वृषभानुजूके द्वार ॥ टेक ॥ दोउ खंभ कनक जड़ाव कि डांडी लागे रतन अपार ॥ हीरा पन्ना मरुवा मनोहर कलशा राजत चार ॥ सर० ॥ पटुली जुही गलु हंम चर्चित इंद्रकी धज सुधार ॥ झूलत श्रीराधा मदनमोहन बढ्यो रंग अपार ॥ सरस० ॥ सावन सोहाई तीज आई सखियन कियो श्रृंगार ॥ तन उबटनसों बसत भामिनी सजि पैहेरे वनहार ॥ सरस० ॥ गुण रूप शील सुहाग सुन्दर नवल जोबन भार ॥ गावत श्रीश्यामा श्याम गुणगण जम्यो राग मलार ॥ सरस० सुरपुर नरपुर नागपूरकी तुक बनी टरनारि ॥ शब्द जय जय होत चहुँ दिशि पुष्प अंजुलि डार ॥ सरस० ॥ ३ ॥

राग मलार–सुरँग हिंडोरना आली झूलत नंद कुमार ॥ टेक ॥ मृगनयनी मृदुवयनी सजे सकल श्रृंगार ॥ सरस खंभ कदंबके बने मलय मरुवे सुढार ॥ सुरंग ॥ लाल डांडी

डहडही पचिपची है सुतहार ॥ जड़ित पट्ली कनक कीले गढी सरस सोनार ॥ सुरँग० ॥ चहूँ ओर तरु अरुण बसनी किंकिणी झनकार ॥ रंग भरे उतंग उरजनि कंठ छलकत हार ॥ सुरँग ॥ चलत चक फहरात अंचल लगत लंबे बार ॥ मृगमद अगर कपूर कुंकुम बासकी उरगार ॥ सुरँग०॥ मुख भरे पानन्न श्याम श्यामा दोऊ परम उदार ॥ गीत गावत सुखदके रसरीतिकी टकसार ॥ सुरँग० ॥ ग्राम सुर-घट श्वास सीधे तान ताल अपार ॥ रीझि रीझे जलहिं भीजे जम्यो राग मलार ॥ सुरँग० ॥ मोर चकोर कोकिला सब सुरन परी हठताल ॥ मेघ गरजत रसभरे बरसत अखंडित धार ॥ सुरँग लाज तजे लपटात लालहिं तजे वेद विचार ॥ छबि रही फबि मधु सूदनहिं बलिहारि कोटिक बार ॥ चिर जीवो पर्वत प्राणपति सब जगत् प्राण अधार ॥सुरँग० ॥ ४ ॥

रेखता–आयो है मास सावन इक मान कह्यो प्यारी ॥ जल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी ॥ यमुनाके तीर बंशीवट कैसे छबि छाई ॥ शीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई ॥ करती है शोर यमुना उठते तरंग भारी ॥ प्रति कुंज कुन्ज छाय रह्यो है पराग री ॥ लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी ॥ फूली लता द्रुमनकी धरणी झुकी हैं डारी ॥ जापै मलिंद घूमें मकरंद हेत छाये ॥ नाचत हैं मोर बनमें लागत परम सुहाये ॥ माती कोयल पुकारैं बैठी कदमकी डारी ॥ कालिंदियाके तटपै झूलत हैं

सब सहेली ॥ नव सत श्रृंगार साजे इक इकते नवेली ॥ तुमहूं प्रिया सिधारो कीजे न अब अबेरी ॥ झूलैं निकुन्ज अपनी अबहीं चलो पियारे ॥ कीजे विहार हमसों तुम नंदके दुलारे ॥ तब संग ले पियाको सुनि कुन्जमें सिधारी ॥ बैठो कुँवरि हिंढोरे अब मैं तुम्हैं झुलाऊं ॥ गाऊं तुम्हैं रिझाऊँ छबि देख दृग सिराऊं ॥ बैठो सुरंग पटली डोरी गहो सँभारी ॥ बाढे न रमक मोहन इक मंदही झुलाओ ॥ डरपै हियो हमारो पिया रमक ना बढाओ ॥ यह बात सुन प्रियाकी उरसों लई लगाई ॥ भीजेगी लाल सारी कारी घटा जो आई ॥ लीजे उड़ाय मोकों कामर कुँवर कन्हाई ॥ तब हंस रसिकविहारी कामर उढ़ाई कारी ॥ चल० ॥ ५ ॥

राग मलार—आजु कछु कुंजनमें वर्षासी । बादर गणमें देख सखी री चमकत है चपलासी ॥ नान्ही नान्हीं बूंदन कछु धुरवासी पवन बहत सुखरासी । मंद मंद गर्जनसी सुनियत नाचत मोरसभासी ॥ इंद्रधनुषमें बग मिल डोलत बोलत कोककलासी । इंद्रवधू छबि छाय रही है गिरिपर श्यामघटासी ॥ उमँग महीरुहसे महि कंपत फूली मृगमालासी ॥ रटत व्यास चातककी रसना रस पीवत हौं प्यासी ॥ ६ ॥

राग मलार—तेरी झमक झुलन कटि लचक जात प्यारी रमक रँगोली अति सोहै ॥ तू गुण रूप यौवन रँगरस भरी तेरी उपमाको को है ॥ हाथन चूरी महाउर मेंहदी चटक

चौगुनी सोहै ॥ रसिकगोविंद अभिराम श्यामघन तू दामिनि मन मोहै ॥ ७ ॥

राग मलार—व्रजपर नीकी आज घटा ॥ नान्ही नान्ही बून्द सुहावनि लागत चमकत बिज्जुछटा ॥ गरजत गगन मृंदग बजावत नाचत मोर नटा ॥ गावत सुरहिं देत चातक पिक प्रगट्यो मदनभटा ॥ सब मिलि भेंट देत नँदलालहिं बैठे ऊंची अटा ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल शिर कुसुमी पीत पटा ॥ ८ ॥

राग मलार—आई बदरिया बरसनहारी ॥ गरज गरज दामिनि दमकावे ज्यों चुँदरीमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल वन बोलै भवन भवन गावत व्रजनारी चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी ॥ ९ ॥

राग मलार—हर्ष झुलाइये मनभावन ॥ उधर पऱ्यो हित हेत गहगह्यो झोंक दियो चितचावन ॥ यह जो कल्पतरु यह रविजातट वह बन घन झुक आवन ॥ वृंदावन हित रूप बलि गई हरियाली सावन ॥ १० ॥

राग मलार—देख युगल छबि सावन लाजै ॥ उत घन इति घनश्याम लाडिलो उत दामिनि इत प्रिया सँगराजै ॥ उत वर्षत बून्दनकी लरियां इत गल मुतियन हार विराजै ॥ उत दादुर इत बाजत बांसुरी उत गरजत इत नूपुर बाजै ॥ उत रंगके बादर इत बागे उतै धनुष वनमाल इत साजै॥उत घन घुमड़ इतै दृग धूमत नारायण वर्षा सुख आजै ॥११॥

राग मलार—श्याम सुन नियरही आयो मेह ॥ भीजैगी मेरीसुरँग चूनरिया ओढ़ पीतांबर लेह ॥ दामिनिसों मैं डर-पत हौं मोहन निकट आपने लेह ॥ कुंभनदास लाल गिरि-धनसों बाढ़ो अधिक सनेह ॥ १२ ॥

राग देश मलार—सावन घन गरजैं घूम घूम बरसत शीतल जल झूम झूम ॥ कोयल कीर कोकिला बोलैं, हंस चकोर चहूं दिशि डोलैं ॥ नाचत बन अतिकरत कलोलैं, मोर मोरनी चूम चूम ॥ गावें राग रागिनी भामिनि, दहक रही मानो छबि दामिन ॥ झोंका देत रपट गजगामिनि, पायल गाजै छूम छूम ॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत, इंद्र निशान बजावत हर्षत, दास गणेश छबि निरखत छाय रह्यो सुर रूम रूम ॥ १३ ॥

राग सोरठ—कौन समय रूठनको प्यारी, झूलो ललिता-हिंडोरे रंग विरंग घटानभ छाई, बिच बिच चपला चमक सुहाई ॥ परत फुहार परम सुखदाई चलत समीर झकोरे॥ विविध भांति पक्षी वन बोलैं मृगिन सहित मृग बिहरत डोलैं ॥ जलजंतुहु मिलि करत कलोलैं, येही अचरज मन मोरे ॥ कुशुम चीर पहिरे व्रजनारी साज समाज आज है भारी ॥ नारायण वलिजाऊँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे ॥ १४ ॥

राग सोरठ—धवल महल चढ़ रत्नबँगला झूलो सुरंग हिंडोरे ॥ नवकिशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भजु जोर॥ सुरंग कुसुंभी सारी प्यारी हारत जंगाली कोर ॥ हित अलि रूप लाल रुच औरहि पिया छबि उठत हिलोर ॥ १५ ॥

राग सोरठ—झूलो मेरी राधा प्यारी रंगीलो हिंडोरना ॥ डांडी चारु सुदेश बनाई हीरा खम्भन झुम्मक लाई॥ जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना ॥ उमँगि घटा घुमर घिर आई रिमझिम रिमझिम बूंद सुहाई ॥ दमक दमक दामिनियाँ दमकै बोले मोरना॥गावत राग मलार अघाई शीतल मंद सुगंध सुहाई॥ तान तरंगत ललित भान तृण तोरना ॥१६॥

राग खेमटा—युगल वर झूलत डाल गलबाहीं ॥ रत्न जटितको बन्यो हिंडोरा सघन कुन्जके माहीं॥रेशम डोर पवन पुरवैया लखि रति काम लजाहीं ॥ सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाहीं ।। मध्य श्याम श्यामा दोउ हिलमिल पुनि पुनि हिय हर्षाहीं ।। ऊँची डार तोर कलियन दोउ निज निज कलिन सराहीं ।। या छबि निरखि प्रियाकी प्रीतम मोहन मन न अघाहीं ॥ १७ ॥

राग खेमटा—झूलन चलो हिंडोरने वृषभानुनंदिनी ॥ सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परे बूंद मेदिनी ॥ सुंदर कदमकि डारी झूला पर्‍यो है प्यारी देखो कुँवर हहांरी ॥ सब दुखनिकंदिनी ॥ पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुखचन्द्रकी उजारीमृदुहासफंदिनी॥ममबात सीख लीजै सुंदर न देर कीजै हम तो विलोक कीजतु है गति गयंदिनी ।। शोभा लखो विपिनकी फूली लता हैं वनकी सुन अरज रसिक जनकी करों चरण वंदिनी ॥ १८ ॥

राग खेमटा–हिंडोरे आज झूलत रंग रह्यो ॥ अचल सुहाग सुभग श्यामाको दिन प्रति होत नयो ॥ हरित भूमि वंशीवट यमुना सो सुख दृगन लह्यो ॥ रसिक प्रीतम मिल गावत भावत व्रज सब रीझ रह्यो ॥ १९ ॥

राग खेमटा–युगल वर झूलत दे गरबाहीं ॥ बादर बरसै चपला चपके सघन कदमकी छाहीं इत उत पैग बढावत सुन्दर मदन उमँग मनमाहीं ॥ ललितकिशोरी हिंडोरा झूलें बढ यमुनालौं जाहीं ॥ २० ॥

राग रेखता–झूलन युगल किशोरकी दिलमें मेरे बसी ॥ बैठे हैं रँग हिंडोरना करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोरहार॥ शिरपै सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी ॥ बेसर बुलाक बेनी दीने जो भालपै ॥ हीरोंका हार उरपै कटि काछनी कसी ॥ जोबनके जोर शोरसों रमकें बढावती ॥ ललिता किशोरी श्यामकी छबि देखके हँसी ॥ २१ ॥

राग रेखता-प्यारी प्रीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना ॥ दो खंभ हैं जड़ाऊ जड़े चितके चोरना ॥ डांड़ी मरुवे लगन लगी बेलन अमोलना ॥ पटुली संदलकी साफ देखो खूब बनी ॥ लागे हैं उसके बीचमें हीरा चुन्नी मनी ॥ चुंदरी घूंघटकी ओटमें नयना विशाल हैं खंजन भुलावनेके घेरनको जाल हैं मुझको रसिक गोविंदकी छबिहीमें झूलना ॥ प्यारी अनूप रूपको दिलसे न भूलना ॥ २२ ॥

राग झिंझोटी—श्यामाजी झूलैं पीरी पोखरपार ॥ गावत हैं ऊंचे स्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमनकी दमकन नगभूषण शोभा विपिन निहार ॥ चोकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥ थरकत हैं अतरस अतरोटा शिरपर सूही सार ॥ खूबै बनी उर पीत कंचुकी मुखपर श्रमकणवार ॥ सजनी रीझके साँवरी आई झूलनको रिझवार ॥ ताके संग झूलत है प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारो कहिये रूपा विचार ॥ तरुणनमें अति सुन्दर प्यारी चतुरनमें वरनार ॥ ललिता कहे बोल री सांवर ना तर देहौं उतार ॥ राजसुता संग झूलन आई दियो ढीठ डरडार ॥ डोरी गहि लीनी ललिताने दोऊ दिये उतार ॥ चितवनि चपल बलैया लेवें कोउ पीवत जलवार ॥ सैननमें समझावत मुखसे वचन न सकै उचार ॥ नंदगामकी ओर बतावैं ऊंचे हाथ पसार ॥ अचराकी सरकनमें कौस्तुभ मणिकी परी चिन्हार ॥ हर हर हँसत सकल व्रजसुंदरि यह वोही खिलवार ॥ नई पाहुनी आई झूलन बैठी घूंघट मार ॥ वृंदावन हित रूप बलि गई छद्म न सकत उघार ॥ २३ ॥

राग झिंझोटी—बांकी छबिसों झूलत प्यारी ॥ बांकी आप विहारी बांके बांकी सँग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूकी न्यारी ॥ ललिता किशोरी बांकी मुसकन बंक पैंगपर वारी ॥ २४ ॥

राग ईमन—झूलत को श्यामाजूके संग सखी साँवारि प्यारी है ।। कजरे नयन सैनसों बतियाँ अँखियन कोर कटारी है जोबन जोर मरोर भौंहकी ललित किशोरी वारी है ।। ललिता कर परिहास करी यह नागरनंद दुलारी है ।। २५ ।।

राग ईमन—झोंका दीजो सम्हार मेरी सारी न लटके ।। सघन कुंज द्रुमडार कँटीली काहु छोर जिन अटके ।। उन बातन अब भेंट नहीं कछु और धोखे जिन भटके ।। ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चटमटके ।। २६ ।।

राग पीलू—सो तू राख ले री झोंका तर भये ।। इत नव कुंज कदमलौं परसत उत यमुनालों गये ।। आवत जात लता निर्वारतकुसुम बितान छये ।। कल्याणक प्रभु रीझि विवश भये झूलत नये नये ।। २७ ।।

राग पीलू—मेरो छांड दे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी ।। झोंकनके मिस मोहन लँगरिया अजहूं टटोलत ना भूलोंगी ।। ललिता सँग रँगीले झूलें झूल मनहिमन फूलोंगी ।। ललित-किशोरी तरलपैंगकर लालन तो सँग तूलोंगी ।। २८ ।।

राग पीलू खेमटेकी राहमें—कौन चढ़े पहले सुरँग हिंडोरे ।। सोई करत मनोहर हियहित रमक देत जोराजोरे ।। गावत राग तान मधुरे सुरकोटि काम चित चोरे ।। रसिक प्रीतम यह होड़ पिया परी रीझ देत तृण तोरे ।। २९ ।।

राग पीलू—चलो पिया वाही कदमतर झूलें झुकि हैं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिंदीके कूलैं ।। बोलत मोर

चकोर कोकिला अलिगण गुंजत भूलैं ॥ ललितकिशोरी मग बतलावैं कहकह बतियां फूलैं ॥ ३० ॥

राग देश—चल झूलिये हिंडोरे श्रीवृषभानुकी लली ॥ तेरे काज आज इक मैंने विरची कुंज भली ॥ रत्नजटितको बन्यो हिंडोरो कैसी डला झली ॥ ब्रजवनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली ॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर बली ॥ रसिकबिहारीकी सुन बानी तुरतहिं कुँवरि चली ॥ ३१ ॥

राग देश--आज बन्यो रसरंग हिंडोरो कदम तरे ॥ सघन लता झुक सुमन सुगंधन अलिगण गुंज करें ॥ वर्ण वर्ण तनु भूषण चुनरी श्यामाजू पहरे ॥ लाल लड़ाय चाय हित चितसों रूप समुद्र भरे ॥ ३२ ॥

राग देश--झूलो प्यारी आज निकुंज हिंडोरना ॥ बोलत चातक मोर पवन झकझोरना ॥ सघन लता निधि वनकी आजु सुहाई है ॥ श्याम घटनसों परत बून्द सुखदाई है ॥ तैसीही दामिनी चमक चमक छबि छाई है ॥ मानो डरत तुअ तेज लाज दरशाई है ॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जानके मनो बिछौवना कियो मदनमद भानके ॥ ३३ ॥

राग देश--चलो अकेले झूलें वनमें प्यारी मेरे प्रान ॥ तुम नई नागर रूप उजागर सुखसागर छबि खान ॥ वर्ण वर्णके बादल छाये मानो गगन वितान ॥ वर्षत बून्द सोई मोतियनकी झालर शोभावान ॥ बोलत खग मृग डोलत इत

उत सो नहिं जात बखान ॥ रंग रंगके फूल खिले हैं भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिनसुख विलसै ए री परम सुजान ॥ नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान॥ ३४॥

राग देश--झूलत श्यामा श्याम संग ॥ अति तरंग शोभाके मानो हत यमुना गंग ॥ झलकत भूषण चित चोरत श्याम गौरै अंग ॥ ललित किशोरी हिंडोरनेपै आज बरसत रंग ॥ ३५ ॥

राग खेमटा--आज दोऊ झूलत रंग भरे ॥ झोंका खरे लेत कबहुँक सखि कबहूं हरे हरे ॥ कर्णफूल कुण्डल मिलि भेंटत मानो शशि मीन लरे ॥ चंद्रमा हरकत उर राधे हरि वनमाल गरे ॥ विहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे ॥ ललितकिशोरी टरत न लखि छवि दृग शिशु अरन अरे ॥ ३६ ॥

राग दादरा-सुन सखि आज झुलन नहिं जैहौं ॥ श्याम सुन्दर पिया रसलंपट है अतिही ढीठ यों देत ॥ झोंका तरल करे पाछेते धाय भुजन भर लेत ॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमैं जनावत नेह ॥ रसिक गोविंद अभिरामश्यामसँग क्यों न जाय रस लेह ॥ ३७ ॥

राग जंगला सिंधु-बलि बलि जांदियां झूलनपर ॥ प्यारी पहरे कुसमल सारी प्यारेके मन भाँदियाँ ॥ चहूँ ओर सब सखी झुलावें झुक झुक झूठे खाँदियां ॥

पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन नयन सरादियां ॥ ३८ ॥

कवित्त-फूलनकी चंद्रकला शीश फूल फूलनको फूलनके झूमका श्रवण सुकुमारीके ॥ फूलनकी वंदनी विशाल नथ फूलनकी, फूलनको बिंदा भाल राजत दुलारीके ॥ फूलनकी चंपकली हार गले फूलनके, फूलनके गजरा ललित कर प्यारीके ॥ फूलनकी पगमें पाय नारायण फूले फूले सुभाग सदा लाड़ली हमारीके ॥ ३९ ॥

राग सारंग-फूलनके बँगलेमें राजै पिया प्यारी हो ॥ फूलनके भूषण विचित्र सोहैं अँग अँग फूलनके वसन बदन छबि न्यारी हो ॥ फूलसे मुखारबिंद वचन हैं फूलन सम फूली सखी तन मन शोभा लखभारी हो ॥ जैसोही समाज साज आज नारायण माना कुन्जभवनमें फूली फुलवारी हो ॥ ४० ॥

राग आसावरी-झुकि झुकि झमकि कदंबविटपतर सखी सियावर झूले ॥ टेक ॥ जन दुखदमनी मन प्रिय-पूरणि श्रीसरयू कूले ॥ वन प्रमोद उर मोद देव सखि नाना तरु फूले ॥ चंदन चंपक कुन्द चमेली लखि रतिपति भूले ॥ गुलाबास गुलाब कदंब सुगंधे सुरतरु नहिं तूले ॥ उमड़ि उमड़ि घन गरजत सुन्दर वरषत अनुकूले ॥ मणिन जटित वर कनक हिंडोले झूलत मन झूले ॥ कुसुमश्रृंगार कलित श्रीसिय पिय हँसत अधर मूले ॥ गाय झुलावे

झुमकि झुकि सजनी लखि मुनि मन डूले ।। लर आनन्द भरी सब सजनी सुधि बुधि सब भूले ।। को वर्णै छबि छबिपर सजनी नहिं त्रिभुवन तूले ।। रामनारायण स्वामी साँवरो सबके मन फूले ।। ४१ ।।

रतिमददवनी कदंब तरुणि बिच सोहत सिय सजनी ।। टेक ।। शिव सखि श्रृंगार अनूपम मोहे श्याम घनी ।। कुसुम कलीवर ग्रथित कचन बिच अरुणी मांग बनी ।। चंद्रिक कलित शीशपर सुंदर शोभा सुभग बनी ।। बेंदी ललित ललाट लसत चंदनखोर बनी ।। भृकुटि कामको दंड नयन शर कज्जल ललित बनी ।। कनककिंकिणी जटित मोतियुत श्रवणफूलसजनी ।। ललित कपोल लसत अलकेवर मानहु छौन फनी ।। दशन कुन्द सरसाधर पल्लव सोहत शशि वदनी ।। चिबुक बीच अति चारु सहज सखि श्यामल बिंदु कनी ।। ग्रीवा कनकमाल राजत अति हांस कंठ किरनी ।। भुजमणि कनक जटित कंकणयुत परस सरस श्रवणि ।। कुच कंचुकी कलित जरतारिणि प्रीतम मनरँजनी ।। पद अंबुज जावक युत नूपुर विहरत वर करिणी ।। शुभ षोडश श्रृंगार सहित घृत सारी शुभ अरुणी ।। को वर्णै छबि छबिली माधुरि सीमा रूप बनी ।। रामनारायण जय श्रीस्वामिनि कीरति विशद घनी ।। गावत सुनत सुखाकर पावनि जन भव भयहरणी ।। ४२ ।।

स्मरमद मदन कदंब कुँवर बिच सखि सीता वर सोहै ॥ टेक ॥ नख शिखलों अंग अनूप माधुरी लखि मुनि मन मोहैं ॥ रुचिर चौतनी चमक शीशमहुँ कुसुम कली गोहैं ॥ चिक्कन कच घुँघुवारे लसत वर अलिगण मिलि सोहैं ॥ केशर तिलक कलित अति भाले कुटिल सुभग भौहैं ॥ मानहु कामकोदंड सहित वर हाटक शर सोहै ॥ कुण्डल कलित जडाउ करणयुग नासामणि सोहै रदन कुन्द अरुणाधर पल्लव हास्य मधुर मोहै ॥ उरवर कनकमाल राजत अति मणिमुक्ता पोहै ॥ भुजयुग अनंत जटित घृत सुंदर कर धनु शर सोहै ॥ नाभी गहर गंभीर उपरवर मालपदिक सोहै कटि पट पीत कनक किंकिणियुत लखि रतिपति मोहै ॥ चरण चारु नूपुरयुत राजत जहां मुनियन मोहै ॥ को वर्णै छबि ललित लालकी अंत रूपको है ॥ रामनारायण जय श्रीस्वामिनिकी वर जग यश गोहै ॥ गावत सुनत सुखाकर पावन चित चिंतित दो है ॥ ४३ ॥

लावनी शरद विहार

दो०–शिरी शिवा शिव वंदिकै, वर्णौं शरद विहार ॥
उर आनँद उमँगै अति, निर्मल शशी निहार

लखो सखि सरस शरद आई ॥ विगत घन निर्मल नभ छाई ॥ चलो सखि चलिये चित चाई ॥ जहां सिय श्याम सहित राई ॥ बोलि एक अपर सखि धाई ॥ कही नीकी नागरि मन भाई ॥ १ ॥

दो०-उठि आतुर आनंदमें आइ जोरी जोहारि ॥
शुचि सुभगा बैठीं सबै, प्यारी रूप निहारि ॥

विहारिणि सुनिये बलि जाई ।। चलो अली सब बोलि उठीं प्यारी ।। लखोने लाडिली बलिहारी ॥ शरदऋतु सबको सुखकारी ॥ आई अति निर्मल मनहारी ॥ २ ॥

दो०-रतन मणिन मय पावती, सोहत सरयू तीर ॥
श्वेत कुमुद फूली कली, लखि मोहे मन वीर ॥

सरस समीर बहै सुखदाई ॥ लखो० विविध फूल फूले तरु सोहैं ललित लता बलि तन गोहैं ।। शरद शशी सकल कला सोहैं लखि शुभ शोभा सुर मोहैं ।। ३ ।।

दो०-सिय हियकी प्रभु जानिकै, जनहित पूरणहार ॥
रामनरायण परसपर, कीन्हों शुभ श्रृंगार ॥

रह्यो भरि आनंद उर छाई ।। लखो० ।। लखो सखि सिय शोभाको रे ॥ रचे कच चिक्कन चित चोरे ॥ गुही कलि कुसुमनकी कोरे ॥ माँग रची मुक्तावलि सो रे पुहे वर जलज मणि दोरे ॥ दिये शिर चन्द्रिकके जोरे ॥ ४ ॥

दो०बेंदी ललित ललाट दिय, शोभा वरणि न जाय ।
पंकजलोचन बीच वर, कज्जल रेख बनाय ॥

कर्णफूल झुमका झलको री ॥ लखो० ।। सरस मणिन नकवेसर सोहै ॥ अधर वर हास्य मधुर मोहै ।। कनक लर मणि मोतिन पोहै ॥ कलित वर कंठे रुचिर सोहै ॥ ५ ॥

दो०-भुज युग बाजूबंद वर, कर कंकण कर जाल।
कुच कंचुकी कलित अति, पदिक सहित हिय माल॥
शोभा ये सुरवधु मद मोरी ॥ लखो० ॥ जावकयुत नूपुर मनहारी दिये युग चरण कमल नारी ॥ धरे तन सरस धवल सारी रचे वर पल्लव जरतारी ॥ ६ ॥

दो०-को वर्णै छवि माधुरी, कोटि मदन रति वारि।
रामनरायण स्वामिनी, जन भव भंजनिहारि ॥
सोहै महा सिय पियकी जोरी ॥ लखो० ॥ लखो सखि श्रीसियावरको रे ॥ दिये शिर चौतनी चितचोरे मंजुमणि मुक्तावलिको रे ॥ गुही कलि कुसुमनकी जोरे॥ लखत अलि अलकावलि भोरे ॥ मनो ललि अलि मिलि इक ठोरे ॥७॥

दो०-ललित ललाटे तिलक दिये, शोभा वरणि न जाय।
रतन जडित सुन्दर युगल, कुंडल कर्ण सुहाय ॥
शोभा ये मन्मथ मद मोरी ॥ लखो० ॥
श्वेत शुभ नासा जलज मणि मोहै मन मधुर मधुर हँसनी ॥ चिबुक बिच बिंदु कनक बनी ॥ ग्रीवा वरमाला मंजुमणी ॥ ८ ॥

दोहा-श्वेतपटूका कंध पर, लगि जरतारि किनारि भुज
अंगद दोउ कर पहुँची, कर लिये कमल विहारि॥
सोहै वर श्याम छबीलो री ॥ लखो० ॥ झलकत जरि जामा अति सोहै ॥ धवल द्युति सुंदर सखि मोहै ॥ युगल पद नूपुर वर सोहै ॥ जेहि चरणन मुनि मन मोहै ॥९॥

दो० को बर्णै छबि माधुरी, सीयारूप अपार ।
रामनारायण रसिक प्रभु, जन भव भंजनहार ॥
सोहै संग सुंदर सिय गोरी ॥ लखो० ॥

चले सुख सागर रघुराई ॥ सोहैं सँग सीय दिये गल बाँई ॥ सखी चहुँ ओर बनि आई ॥ चंद्रकला छत्र लिये छाई ॥ सुधामुखी कमला हरषाई ॥ लिये कर चमर करे चाई ॥ १० ॥

दो०—हंस प्रसंशी चंद्रमुखि, दोउ लिय छरी सुहाति ।
अपर सेवा लिये अपर अली, चली सखी सब गाति ॥
भरी उर आनंद अधिकाई ॥ चले० ॥

लखत सरयूतट सुखकारी ॥ लगे वर उपवन मनहारी ॥ सरस फूल फूलीं लता सारी ॥ सुरभि शीतल मंद बहे व्यारी ॥ ११ ॥

दो०—विहरत संग सखी सिया, कुंजन कुंज विहारि ॥
वन प्रमोद आये प्रभू, सुंदर सुखद निहारि ॥
शोभा ये सुंदर मनभाई ॥ चले० ॥ फटिकमणि वेदी बनी सारी ॥ ऊपर लगी चाँदनि चमकारी ॥ मंजुमणि चोप बने चारी ॥ सपेती सरस बनी भारी ॥ १२ ॥

दो०—मंजु गुल्म ऊपर पुनि, मलमल फरस बिछाइ ।
रामनरायण प्रभुप्रिया, सहित विराजे आइ ॥
शोभा लखि सुरवधू लजवाई ॥ चले० ॥

सोहै महासुंदर सखि जोरी ॥ धरे फूलमाला उर धोरी ॥

स्वभावै सुन्दर सखियो री ॥ धरे वर भूषण बसनो री ॥ पूरण शशि सुन्दर झलको री ॥ सरस बनि शोभा चहुँ ओरी ॥ १३ ॥

दोहा०—श्वेत युगल अरुश्वेत सखि, श्वेत निशा सुखदाइ ।
श्वेत बिछौना श्वेतपर, चंद्र मरीची छाइ ॥
रच्यो वर रास रसनको री ॥ सोहे० ॥

नटत बर नागरि गति सारी ॥ मधुर स्वर गान करे नारी ॥ नूपुर धुनि छुम छुम छमकारी सुनि मुनि ध्यान छुटे भारी ॥ १४ ॥

दोहा—०सारँगि मृदँ मँजीरकी, स्वरगति एकहि तार ।
सुनके मधुर ध्वनि साजकी, मोहे कोटिन मार ॥
छायो उर आनंद भई भोरी ॥ सोहे० ॥

विलास रसनमें सीय सांई ॥ विगत निशि जानी मन भाई ॥ पायो विश्राम सबै जाई ॥ यथामति मोरी शरद गाई ॥१५॥

दोहा—०गावै प्रीतिसों सुने जेई, पावन शरद विहार ।
रामनारायणके प्रभू, चित चिंतित दातार ॥
बसो ताके उर दोऊ जोरी ॥ सोहे० ॥

मनहर छंद—जैसी श्रीजनक राजलाडिली ललित आज, कोटि रति लखि लाज रूपकी सीमाई हैं ॥ तैसे घनश्याम राम सुघर सुशील धाम, लाजे लखि कोटि काम उपमा न पाई हैं ॥ रूपसे अनूप दोउ वयसो विशेष सोउ, कुलसे

कुलीन दोउ सखि सुखधाम हैं ॥ रामनारायण कहि सखिने विचारो सहि, दुलहिनि लाय कहि दूलह श्रीराम हैं ॥ १६॥

गजल–जिन प्रेमरस चाखा नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ ॥ जिन इश्कमें शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हुआ पंथमें साबित न किया आपको॥ आलिम और फाजिल बना दाना हुआ तो क्या हुआ ॥ दिलमें दरद नहिं पियाको बैठा मुशाइख होयके ॥ दिलका रहट फिरता नहीं तसवी फिरी तो क्या हुआ ॥ और नसी-हत तू करे आप अमल करता नहीं ॥ दिलका कुफर टूटा नहीं हाजिर हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्कके दरियावमें गर्काब तू होता नहीं ॥ गंगा यमुना गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारत है यही पी पी जो करते नादिया ॥ मतलब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ १७ ॥

काफी–ना जानूँ मेरा राम कैसा है ॥ मुल्ला होके बाँग जो देवैं तेरा साहिब बहिरा है ॥ कीडीके पग नूपुर बाजै सोभी साहिब सुनता है ॥ माला पहिरी तिलक लगाया लंबीजटा बढाता है ॥ अंतर तेरे कुफर कटारी यूं नहिं साहिब मिलता है ॥ कौडी कौडी माया जोडी जोड जमीं पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी हो गइ हाथ पसारे चलता है ॥ हीरा होवै परख दिखावा कौडी परखन तैसा है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि जैसोको तैसा है ॥ १८ ॥

राग सोरठ–गाय चरायके गिरि धन्यो तुम्हें झूलन समझ कहा है ।। अति सुकुमार प्रिया गौरांगी तासँग झूलो चाहै ।। हम जो सिखावैं तैसे सीखो कहत फिरत हो भरे ऊमँग है ।। वृंदावन हित रूप बलि गई ह्यां पायो के वां है ।। १९ ।।

राग बडहंस मलार–हिंडोलनामें कांई छै झूलो राज ।। म्हारा झूलत हियरा लरजै, रत्नजटितके खंब जड़ाये अगर चन्दनके पटा ।। रेशम डोरा पवन पुरवैया जुर आई सावनकी घटा ।। श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिंदीके तटा ।। उड़ उड़ अँचरा परत भुजनपर निरखत नागरनटा ।। २० ।।

राग गौरी--झूलनहार नई कौन है ।। श्यामके सँग रँग भरी सोहत सखा नवेल ।। अति सुन्दर तनु साँवरी मनो नीलमणिनकी बेल ।। श्वेत कंप रोमांच हो जान परत कछु और ।। झुक झुक झोंकनमें मिले हंस कुँवर जोई होत ।। निरखो झूलन नेहकी सखी चतुर शिरमौर ।। हम जानी जानी सभी सखी यह झूलन कछु और ।। सभी छकाई नागरी दृगन सुधारस प्याय ।। कपटरूप धर मोहनी प्रगट भई व्रज आय ।। २१ ।।

राग बरवा सारंग--तेरी झूलन अति रससानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडिले ।। गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सब मिल आव रे ।। सब श्रृंगार हार फूलनके

प्यारीको पहरावत मनमें चाव रे ॥ राधा वर कृष्ण याही कृपा कर विपिन बसावो अनत न जाव रे ॥ २२ ॥

कवित्त--फूलन चंदोवा तने फूलनकी फरश बिछी फूलनकी सेज और फूलछबि छै रही ॥ फूलनकी गरे माल फूलन करनफूल, फूलनको टीको मांग फूलन भरै रही ॥ फूलनके वस्त्र और शृंगार सब फूलनके, विक्रम मृगेश मनु उपमा बनै रही ॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी अहै, देखत वसंत या वसंतऋतु ह्वै रही ॥ २३ ॥

फूलनको चन्द्रकला शीशफूल फूलनको फूलनके झूमका श्रवण सुकुमारीके ॥ फूलनकी बंदनी विशाल नथ फूलनकी, फूलनकी बिंदी भाल राजत दुलारीके ॥ फूलनकी चंपाकली हार गले फूलनके, फूलनके गजरा ललित कर प्यारीके ॥ फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले, फूले हैं सुभाग सदा लाड़िली हमारीके ॥ २४ ॥

फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी, फूलनके फूँदने फँदे हैं लाल डोरेमें ॥ कहै पदमाकर वितान तने फूलनके, फूलनकी झालरें सुझूलत झकोरेमें ॥ फूल रही फूलन सुफूल फूलवारी तहां, और फूलहीके फर्श फबे कुंज कोरेमें ॥ झूल झरी फूल भरी फूलझरी फूलनमें, फूलहीसी फूल रही फूलके हिंडोरेमें ॥ २५ ॥

इति हिंडोराझूलन समाप्त

अथ गुरुमहिमाके दोहे

सद्‌गुरु चरणहि सेवते, टलैं त्रिविध सब ताप ॥
परम पदहिं पावे पुनि, मिटैं सकल परिताप ॥ १ ॥
गुरु सम दाता कोउ नहिं, गुरुही परम कृपाल ॥
गुरु गोविंदसे अधिक हैं, गुरुकी मती विशाल ॥ २ ॥
गुरुके चरणन जो नमै, पाप होत हैं नाश ॥
सेवासे सुकृतहु बढै, गुरुगोविंद प्रकाश ॥ ३ ॥
गुरुदर्शनसे जात हैं, सकल पाप अरु दोष ॥
सद्‌गुरुकी किरपा बढै, काव्य बनै निर्दोष ॥ ४ ॥
सद्‌गुरुकी निंदा सुनै, जाय नरकके द्वार ॥
जो निंदा मुखसे करै, कभी नहीं उद्धार ॥ ५ ॥
सद्‌गुरु शय्या पांवहीं, धरत कोउ अज्ञान ॥
नर नरकै सीधावगे, करै कोटि गोदान ॥ ६ ॥
देखहिं नारि कुदृष्टि जे, निरखे सद्‌गुरु आप ॥
अन्ध होयगी यूवती, बहुत परै परिताप ॥ ७ ॥
गुरु नारायण रूप है, गुरू ज्ञानको घाट ॥
सद्‌गुरु वचन प्रतापसे, मनके मिटैं उचाट ॥ ८ ॥
गुरु भवसागर तारहीं, गुरूवचन निर्बान ॥
गुरुके शब्दै जो चढ़ै, प्रगट मिलैं भगवान ॥ ९ ॥
गुरुसेवा सुन्दर भुमी, दर्शन बारंबार ॥
ओही मगु प्रभु मतु थके, सत्संगति सुखकार ॥ १० ॥

गुरु ब्रह्मा गुरु सरस्वती, गुरु गंगा गुरु ज्ञान ॥
सद्गुरुके सेवन थकी, टले देह अभिमान ॥ ११ ॥
गुरुके गुणहु अथाह हैं, मुखसे कहे न जाँय ॥
शेष रटैं निशिदिन पुनी, कबहूं पार न पाय ॥ १२ ॥
गुरुमहिमा गिनती किये, थाके शेष महेश ॥
शारद नारद अमरहू, प्रेम करैं परवेश ॥ १३ ॥
मुनि जन गुरुके चरणमें, झूँकैं शीश नरेश ॥
सद्गुरु नाम सुधासमैं, चाखत चतुर हमेश ॥ १४ ॥
सद्गुरुकेरे चरणको, परस चरणको रज्ज ॥
चढहिं अखिल ब्रह्मांडमें, सबसे होत है ध्वज्ज ॥ १५ ॥
गुरुगुण विनती होत नहिं, सकल गुनी अभिराम ॥
पावन पदरज गुरु तरणि, कहत हैं परभाराम ॥ १६ ॥

इति गुरुमहिमा समाप्त

अथ होलीरंचकं

होरी खेलत संत सुजान आत्मारामसों ॥ टेक ॥ कर्मी लोग खेलैं सब कर्मनसों खरच किये बहु दानसों ॥ होरी० ॥ भक्त लोग खेलैं शंभु रूपसों ध्यानी खेलैं सब ध्यानसों ॥ होरी० ॥ भिक्षु अहर्निश ब्रह्म विचारैं ख्याल नहीं दूजे कामसों ॥ होरी० ॥ नारायण भिक्षू अलख निरंजन मगन भये पूरण ज्ञानसों ॥ होरी खेलत संत सुजान आत्मारामसों ॥ १ ॥

ऐसी संतोंने धूम मचाई बुर्ज भर्मकी उड़ाई ॥ टेक ॥ काम क्रोध ये इसहि नगरमें सब दिन हैं दुखदाई ॥ लोभ मोह ये पायक इनके निशि दिन करत लड़ाई ॥ धर्मसों ठहराई ॥ ऐसी संतों० ॥ इसही नगरके दश दर्वाजे सब दिन ठाढ़े सिपाही ॥ दयाधर्मका लगाव नहीं है नीचोंने धूम मचाई ॥ नाथ विसराई ॥ ऐसी संतोंने० ॥ भर्म बुरजके पांच कोट हैं अपनि भूल है खांई ॥ लडनेवाला कैसे लडेगा होवेंगे नाथ सहाई ॥ करो ना चढ़ाई ॥ ऐसी संतों धूम० ॥ शम दम साधन बारूद बनायां धर्मकि तोप बनाई ॥ जप तप गोला भीतर डारा सतके तखत चढ़ाई ॥ सुधि मैंने गढकी लगाई ॥ ऐसी संतों० ॥ गुरू शरण होइ वाक्य सुनावैं ज्ञानकी बाती जराई फूंक पलीता दियो वही क्षण ध्यानकी शिस्टि लगाई ॥ बुरज मैंने जड़सों उड़ाई ॥ ऐसी सं० ॥ तत्त्वविचार किया सब दिनमें युक्ति करी है सहाई ॥ खोजत खोज निजानन्द पाया मनकी तपन बुझाई ॥ शांति मैंने अबहीं पाई ॥ ऐसी सं० ॥ जीव ब्रह्मको एक समझकर एकहि सुरत लगाई ॥ जन्म मरण ये दोनोंहि मेटे भेदकि ग्रंथि उड़ाई ॥ नाथने रहे समाई ॥ ऐसी सं० ॥ नारायण भिक्षुक अलख निरंजन एकहि देत दिखाई ॥ अपने रूपमें सदा मगन हैं मुक्ति परमपद पाई ॥ वेद सब चारोंने गाई ऐसी संतोंने धूम मचाई बुर्ज भर्मकी उड़ाई ॥ २ ॥

होली खेलन जानी खिलारी उमर योंही बीती सारी ॥ फीको गुलाल रंग अति फीको मैल भरी पिचकारी ॥ रंग रँगीली मेरी पँच रँग चूनरि खेलत फाग बिगारी ॥ ऐसो मूढ अनारी ॥ होली० ॥ बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झाँझ डफ भारी ॥ मतिको हीन सुनत कछु नाहीं होत शब्द धुन प्यारी ॥ सुरत नहिं जात सँभारी ॥ होली० ॥ नाचत नाच भाव बतलावत गावत तान दै तारी ॥ अन्तर छबि निरखै नहिं मूरख चेतन तत्त्व विचारी ॥ फूली अद्भुत फुलवारी ॥ होली० ॥ विषय भोगहि सेवत ॥ २ ॥ निर्मल बुद्धि बिसारी ॥ नाम अमियरस चखत नाहीं देत नई नित गारी ॥ कठिन निर्भय संसारी ॥ होली० ॥ ३ ॥

इति होलीरंचक समाप्त

भजन विलास

शंकर ध्यान धरा जब मनसे डूबत नाव उबारी है जी ॥ टेक भवसागर ये गहिर बहुत है लहरी याकी भारी है जी ॥ नाव पुरानी कोई नहिं केवट अब गति कवन हमारी है जी शंकर ध्यान० ॥ गल हमरेमें बहुत बखेड़ा पोट धरी शिर भारी है जी ॥ तुम बिन स्वामी कौन उतारै अब यही अर्ज हमारी है जी ॥ शंकर० ॥ ध्रुव उतरे प्रह्लाद उतारे गौतमनारि उतारी है जी ॥ गरीब कहैं

कर जोरे स्वामी अबकी बार हमारी है जी ।। शंकर० ।। काम क्रोध ये सबही छोंडे शंकर ओर सँभारी है जी ।। रटत रटत शिव शंकर जागे ममता ठगनी मारी है जी ।। शंकर० ।। एक निरंजन घट घट राजै अद्भुत जोत उजारी है जी ।। जिन जान सोइ पार भया है ग्रंथीभेद बिदारी है जी ।। शंकर ।। चिदाकाश आनन्द आप तू आपहि खेल खिलारी है जी ।। नारायण जब ऐसे जाना कवन गती तब न्यारी है जी ।। शंकर ।। १ ।।

इति भजनविलास समाप्त

अथ चेतावनी

सवैया--छोंडि सबै भ्रमजाल कुचाल, सुकाम और क्रोधको दीजै बड़ाई ।। वृषभानु कुमारिको नाम जपौ तुमको सब ठौर जे होत सहाई ।। पुत्र औ दारा सबै परिवार सो, स्वारथ हेत रहे लपटाई ।। प्रियादास गोपालकी भक्ति गहौ, नरदेह धरेको यहै फल भाई ।। १ ।।

राग बिलावल--सब तजि भजो कृष्ण सुखदाई आगे होहिं सहाई ।। आस्ताई ।। नरतनुको अब सुकृत यही है भजो श्याम सब काम बिहाई ।। रसिकनकी सेवा चित धारौ जो कछु बनै बनाई ।। विषयिनको अब संग छोंड यो बैठो रसिकनके ढिग जाई ।। काम क्रोध मद लोभ मोह तजि हरिके चरण चितलाई ।। नित प्रति चरित श्याम श्यामाके

सुनो सुप्रीति बढाई ।। भक्ष्याभक्ष्य खानको त्यागौ हरिप्र-साद लोपाई ।। जिन जिन सुमिऱ्यो नाम श्यामको तिनको गयो दुख द्वंद्व नशाई ।। प्रियादास तुम श्यामनाम गहौ अरु सब देव बिहाई ॥ २ ॥

रागगौरी--अब मन काहे फिरत भुलाना काहेको देखि लुभाना ।। आस्ताई ।। भाई बंधु कुटुँब नर नारी सो तू आप न जाना ।। इनकी प्रीति तबै लगि तुमपर जब लगि लाय खवाना ॥ धूति धूति धन इन्है खवावत अपना और बिराना ॥ ताको ज्वाब कहा तू देहै जाके आगे जाना ॥ वृद्धापनकी खबर नहीं तोहिं ज्वानीमें बना दिवाना ॥ काल बली सँगही सँग डोलै उससे कठिन बिच जाना ।। करु कछु धर्म संग रसिकनको तौ तू बड़ो सयाना ।। प्रियादास तू युगलचरण गहु छोड़ दे अपन बिराना ।। ३ ॥

राग रामकली--मन तोहिं सूझत नाहिं अगारी पग क्यों धरत पिछारी ॥ आस्ताई ॥ जहँ सतसंग तहां अति आलस परनिंदा अति प्यारी ।। विषय कर्ममें प्रीति बढावत ताहीमें रुचि भारी ।। कर्म धर्म हरिभजन भाव तजि सोवत पांव पसारी ॥ यह भवनिधिको कैसे तरिहौ सोउ कछु लेव बिचारी ॥ देहैं दुख यमराज मूढ सुन तिनसों कहि है का मुखते उचारी ॥ प्रियादास व्रज वास करौ अब कुमतिको उरते टारी ॥ ना तरु ह्वै हौ खराब जगतमें नर हँसि देहैं तारी ॥ ४ ॥

राग भैरवी–सब तजि युगुल नाम चित धारो झूँठ जगत व्योहारो ॥ आस्ताई ॥ मातु पिता भ्राता सुत नारी इनमें कोइ न तिहारो ॥ धूति धूति धन ग्राम देशते नाहक इनमें डारो ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह अरि इतने करौ किनारो ॥ करि कछु धर्म रसिकजन सेवा ये नरतनुको तारो ॥ माया मोहमें फँसो रहत है जन्म पायके तूने बिगारो ॥ तजु परपंच झूँठके झगड़े सबसे करो किनारो ॥ भवसागर यक कठिन मार्ग है ताको उरहिं सँभारो ॥ प्रियादास तजि आश जगतकी व्रजमंडलहि सिधारो ॥ ५ ॥

राग श्यामकल्यान–जो कछु रही सो ताहि सँभारो ॥ आस्ताई ॥ ना तर जात जात नहिं जानत पीछे ह्वैहै बिगारो ॥ श्यामा श्यामसों नेह लगावो सबसे करौ किनारो ॥ प्रियादास व्रज वास करौ चलि अब विलंब जनि धारौ ॥ ६ ॥

सवैया–प्रात समय उठिकै मन रे, वृषभानुसुतापद नेह लगावो ॥ छोंडि सबै छलछंदनको, नँदनंदनकी शरणागत जावो ॥ ऐहैं न काम कोऊ तुम्हरे, जिनके लिये रात दिना तुम धावो ॥ प्रियादास विचार करौ उरमें हरिभक्ति विना सब काल गँवावो ॥ ७ ॥

राग परज–मन तुममें सब भरी खोटाई ॥ आस्ताई ऐसो कपट भर्‍यो हैगो तू ज्यों मेंहदीके पत्र ललाई ॥ कबहूं नाम न श्यामको लीन्हों नहिं रसिकन सेवकाई ॥

विषयनसों यों धाय मिलतु है जैसे सगी लुगाई ॥ परनिंदा तोहिं अति प्रिय लागत जैसे दूध मलाई ॥ लीलाचरित श्याम श्यामाको सुनत महा करुआई ॥ प्रियादास कछु समुझि बूझिकै ऐसी कुमतिको देउ बहाई ॥ ८ ॥

गजल—छोंडि सब भ्रमजालको नँदलाल पद ध्याया करो ॥ औरहू इनकी प्राणप्यारीका चरित गाया करो ॥ दूरि कर विषयनकी सोहबत ख्याल करके देखलो ॥ जे रसिक राधानामके तिनके निकट जाया करो ॥ जो करै उपदेश वे सो तुम सुनो चित लायकै ॥ उन सभोंके सारको हिरदेमें बसाया करो ॥ जे कुटुंबी देहके तिनके निकट तुम मत रहो ॥ मोहकी फुसकार इससे तोभी डेराया करो ॥ खाते पीते सोते चलते ऐश और आराममें ॥ नाम राधेश्यामको मत भूलमें लाया करो ॥ प्यारी लगें हैं तुझे जो सूरतें इन्सानकी ॥ तो प्रिया प्रीतम की सूरतको भी लख आया करो ॥ आस कर ब्रज वासकी वृंदाविपिनकी कुंजमें ॥ तो सुनो प्रियादास तुम विनतीको सुनाया करौ ॥ ९ ॥

सवैया—श्यामा रु श्याम सहाय लखौ, प्रियादास सुनो सब भांति तिहारे ॥ दीखत नहिं तुम्हैं कछुहू निज, संकटते तुम्हैं वेई उबारे ताहू पै तू तजि भक्ति गोपालकी, औरनपै शठ हाथ पसारे ॥ नेह करौ प्रिया प्रीतमके पद, होउ सबै परिवारसों न्यारे ॥ १० ॥

राग जैजवंती–यह धन मति मोहिं देव कन्हाई ॥ ॥ आस्ताई ॥ या धनके बाधक बहु दीखत, विश्व चोर गृह लोग लुगाई ॥ वैरभाव सबसे ह्वैजैहै, करिहैं अधिक लराई ॥ धर्म कर्म सबही छुटि जैहैं, जब यह धन गृह आई ॥ उर बिच शोक सँताप अधिक अति, रक्षा हितसों कोटि उपाई ॥ नाम प्रभूकी याद न ऐहै, नेम प्रेम सब जैहैं भुलाई ॥ यह आपदा देख दुख लागत, बार बार मन मेरो डराई ॥ ऐसो धन लै काह करौं प्रभु, जामें बहु संताप दिखाई ॥ प्रियादास धननाम श्यामको बाधक नहिं कोउ चोर चवाई ॥ ११ ॥

राग सहानो जौनपुरी–मन सुन कृष्णनाम धन भारी सो क्यों नहिं धरत सुधारी ॥ आस्ताई ॥ या धनको कोउ चोर नहीं है, चहौ तहां दे धारी ॥ राति व्यतीत प्रात उठि जल्दी, सो मन लेहो सम्हारी ॥ वा धन को तो बांटि लेत हैं, लोग कुटुम नर नारी ॥ या धनको तौ बिरलो ग्राहक, जापै कृपा करत बनवारी ॥ ताते कृष्णनाम मणि करमें, गहिले कांचै दे तू डारी ॥ वा धनके तोहिं चोर बताऊं, सुजन रसिक अति भारी ॥ तिन सज्जनके पास बैठिहौ, तौ मिलिहै धन भारी ॥ प्रियादास तोहिं बहु समझायो, आगे खुशी तिहारी ॥ १२ ॥

सवैया–श्यामा रु श्यामसों नेह लग्यो फिरि देहकी लालसों काज कहा री ॥ पारस पाय अकिंचन ज्यों, फिरि

राज औ पाटकी चाह विसारी ॥ त्यों प्रियादास गोपालकी भक्ति, गही जिनने तिननेही सम्हारी ॥ ना तर कालके गालमें जाय, बिलाय जैहै यह देह तुम्हारी ॥ १३ ॥

इति चेतावनी समाप्त

उपदेश

राग खेमटा- जो कोउ राधानामको ध्यावै ॥ आस्ताई ॥ योग यज्ञ जप तप व्रतको फल, विन प्रयास सो पावै ॥ जीवन्मुक्त सोई यहि जगमें, चरित कुँवरिके गावै ॥ छूटि जाय सत असत भावना, वास कुँजमें पावै ॥ प्रियादास रसिकन सुख वानी, भेद ये वेद बतावै ॥ १ ॥

राग परज-लाडिली परमकृपाकी खान ॥ आस्ताई ॥ भक्तनहित व्रजमें सो प्रगटी, गावत वेद पुरान ॥ रसिक अन न्यनको बिन श्रमही, देती पद निरबान ॥ निज निकुंजमें सदा सखिन सँग, करत युगल यश गान ॥ प्रियादास तब शरण कुवँरिकी, फिरि चाहत कल्यान ॥ ताते बसौ बेगि श्रीवनमें, तजि कुलको अभिमान ॥ २ ॥

राग भैरवी-प्रेम पाय फिरि गृह तजि जइये ॥ आस्ताई ॥ आंखी मीचि निकसि घरते रे, राधा राधा गइये ॥ करिये वास विपिन गह्वरमें, यमुना नित्य नहाइये ॥ अनुभव करौ युगुल लीलाको, सो रस हृदय वसइये ॥ प्रिया-दास गृहकी को चालै, ग्रामदेश ना अइये ॥ ३ ॥

खेमटा–विन ब्रजवास दुःख अतिभाई ॥ आस्ताई ॥ रसिकनको तो ऐसो हैगो सो नहिं सकत बताई ॥ स्वप्नेहुँ दंपतिकी लीलाको होत जो अनुभव आई ॥ तो फिरि ऐसी दसा पिंजरामें जैसे खग अकुलाई ॥ नहिं संगत रसिकनकी स्वपनेहुँ यहौ महा दुखदाई ॥ स्वपनेहुँ दंपति चरित श्रवण नहिं कीजै कौन उपाई ॥ प्रियादास ताते रसिकन हित वृन्दावन है परम सुखदाई ॥ ४ ॥

राग भैरवी--संगति रसिकनकी सुखदाई ॥ आस्ताई ॥ काम क्रोध मद लोभ न व्यापत और मोहकी कौन चलाई ॥ अनुभव प्रगट होत लीलाको जब वे कहत सुनाई॥ कुंजमहलको चरितामृत जो श्रवण मार्ग है देत पियाई ॥ औरहु लखि जिज्ञासु आरती दंपति छबि दे दृगन बसाई ॥ प्रियादास कहै हम अधमनको तिनके दर्शन दुर्लभ भाई ॥५॥

राग भैरवी–कीजै रसिकनको सहवास ॥ आस्ताई ॥ जे नित चरित युगलके गावत प्रेमानंद हुलास ॥ औरहु गुप्त केलिरसको यश अनुभव हित है तोहि प्रकाश ॥ निशि बासर आनँदमें बीतत दुख नहिं आवत पास ॥ प्रियादास कहैं येई दृगनसों निरखोगे फिरि युगल विलास ॥ ६ ॥

राग देश–प्रिया प्रीतमको दूरि निवास ॥ आस्ताई ॥ ऐसे जाय सकत न कोऊ वृथा करत है आस संग करत हौ डोमनकेरो फिरि राजा सहवास ॥ विष्ठा कोट

बैठि ढूँढत हौ केंवड़ा केरि सुवास ॥ प्रियादास दिनकर रसिकन बिन होइ न मोह तम नास ॥ ७ ॥

राग पूर्वी–हमें इन बातनसों का काज ॥ आस्ताई ॥ भलेही शील समुद्रमें डूबो परै लाजपै गाज ॥ बनी रहै इक प्रीति अचल मेरी जासे मिलै व्रजराज ॥ प्रियादास उन बिन सब अटकी रसिकनके शिरताज ॥ ८ ॥

राग ईमन कली–एते गुण जामें सोई रसिक कहावै ॥ आस्ताई ॥ एक नाम प्रिया प्रीतमको ही अष्ट याम जो गावै ॥ सुनि लीला अनुभव ताको करि, दृगनसो नीर बहावै ॥ चरित विशद वृषभानु कुँवरिके, विमल विमल जो गावै ॥ प्रियादास संगति रसिकनकी औरहिं देखि डरावै॥९॥

सवैया–होत प्रभातते साँझ समय लगि, खोवत हौ तुम काल वृथाहीं ॥ बूझे बिना तुम काहूसे बात, कहौ हितसों कोउ मानिहै नाहीं ॥ राधिका नामकी जाप करौ, अहै ठीक सबै विधि वेद बताहीं ॥ भावै तुम्हारे करौ, कुछु कोऊ, सो मौन गहौ प्रियादास मनाहीं ॥ १० ॥

कुंडलिया–करि निश्चयको अनन्य व्रत, साधो चतुर सुजान॥श्रीराधाकी शरण विन, अंत नहीं कल्यान॥अंत नहीं कल्यान वृथा भरमत हौ भाई, नाहक देखत शास्त्र कलेश करि दृष्टि लगाई ॥ प्रियादास प्रियानाम-सुधाको मुखै लगावो ॥ जप तप व्रत सब नेम इन्हैं अब माथ नवावो ॥११॥

अबहूँ करु कछु प्रीतिको, प्रिय प्रीतमके माहिं ॥ ह्वैहै सुख दुख छूटि है, संशय यामें नाहिं ॥ संशय यामें नाहिं प्रेमसों जोपै गैहो, यह सुख राधानाम छोंडि कुछ और न कैहौ ॥ तौ पैहौ ब्रजवास मध्य वृंदावन केरो ॥ प्रियादास सुख भयो तहाँ रसिकनको चेरो ॥ १२ ॥

रसिक अनन्यनकी चलन, का जानै मतिमंद ॥ श्रीराधाके शरण तजि, श्याम चौथको चन्द ॥ श्याम चौथको चंद और कहुँ लेखेमाहीं ॥ तजि वृंदावन वास और तीरथ जे जाहीं ॥ करते अमृत छोंड़ि वारिको घर घर धाहीं ॥ प्रियादास कवि रसिक हमें तो दीखत नाहीं ॥ यह सुख राधा नाम और स्वपनेहु नहिं काहीं ॥ १३ ॥

राग ईमन कली—सोइ अनन्य जेहिं मति असि भाई ॥ आस्ताई ॥ श्रीराधाको चरित मनोहर गावत मोद बढाई ॥ वास करत वृंदावन भीतर भूलि न बाहर जाई ॥ अन्य ग्रंथ मति चरित विलोकत दूरिहिते सकुचाई ॥ प्रियादास ऐसेनकी संगति, कीन्हें बहुत भलाई ॥ १४ ॥

राग ईमन—वा छबि कब मम दृग दरसैहौ ॥ आस्ताई ॥ ह्वै त्रिभंग वंशीवट नटवर, मुरली मधुर बजैहौ ॥ गोपिन यूथ मध्य निरतौगे राग अनेकन गैहौ ॥ प्रियादास प्रभु भानु कुँवरि कर पागके पेंच कसैहौ ॥ १५ ॥

राग ईमन देश–करौ कृपा वृषभानु नंदिनी हरो दुःख सब मेरे ॥ आस्ताई ॥ निशि वासर विशयन वश भरमत होत लोभके चेरे ॥ निज स्वारथ हित कहँलौं कहौं मैं, रचत उपाय घनेरे ॥ जो अनुभव लीलाको करन चहौं, बाधा कोटिन घेरे ॥ प्रियादास सो छूटि जायँगे कोर नैनकी हेरे ॥ १६ ॥

राग परज–कुँवरि कछु सुनिये अर्ज हमारी ॥ आस्ताई ॥ जो तुम सुनो कहौं तो मुखते, नहीं रहौ चुप धारी ॥ जानि गई वाकी हमहिं कहैं फिर, अपने मुखहिं उचारी धन संपति सुत सुख नाहिं माँगत, कुन्जमहलकी टहल दुलारी ॥ प्रियादासके उर अन्तरकी, मनसा पूजहु भानुकुमारी ॥ १७ ॥

कुन्डलिया–व्रत अनन्य सबते कठिन ज्यों खाँडेकी धार ॥ ताते जो बचि जायगो, लखै सो युगुल विहार ॥ लखै सो युगुल विहार कुन्जमहलोंमें जाई ॥ और गोपिनको संग महामंगल सुखदाई ॥ प्रियादासते अली सबै कुछ देत सिखाई, केलि कुन्जकी टहल और दर्शन अधिकाई ॥ १८ ॥

राग बिलावल–मनकी पीर मनहिं पहिचाने ॥ आस्ताई ॥ जो मैं कहौं यत्न कोटिनते तौ कोउ साँच न माने ॥ ताते मौन भये हम बैठे दुखके हाथ बिकाने ॥ बिना कृपा भये कुँवरिलालके टरि हैं न दुःख सयाने ॥ हैं अति गुरु भाव जो चाहत तापै बजत दिवाने ॥ प्रियादास कहैं पीर प्रसूती बाँझ ताहि का जाने ॥ १९ ॥

राग कल्याण--याते मोहिं राधाको नाम प्रिय भाई ॥ आस्ताई ॥ जप तप योग तीर्थ नहिं कीन्हें नाहिं समाधि लगाई ॥ दान पुण्य स्वपने नहिं कीन्हों जागतकी तौ कौन चलाई ॥ परनिंदा परदारा ताकी परधन हन्यो कारि कोटि उपाई ॥ ऐसेन पै निरहेतु कृपाकारि लियो हमैं अपनाई ॥ लीलाकुंज महलकी अद्भुत सो सब दिये दरसाई ॥ गूढ चरित जे युगल केलिके सो सब उरमें दिये बसाई ॥ ताको अनुभव करत सदाही आनँद प्रेम बढ़ाई ॥ प्रियादास ये नाम स्वप्नमें धर्‍यो अलिनकी आज्ञा पाई ॥ तबते जपत रहत निशि वासर उर अंतर हर्षाई ॥ २० ॥

गजल–रसिकोंकी सोहबतके असरकी अब मजा आने लगी ॥ लीला सु श्यामा श्यामकी वो अब हमें भाने लगी ॥ छोड़के परपंच बातैं ये जबाँ मेरी जो हैं खूब मजे औ प्यारसे घनश्याम गुन गाने लगी ॥ सब तरफसे खींच दिलको लाके अपने काबूमें ॥ लाडिली औ लालकी सूरतपै ललचाने लगी ॥ चलते फिरते खाते पीते ऐश औ आराममें ॥ सब तरफ सब याममें अब नेह सरसाने लगी ॥ आँखें भी ये उदास हो कहती हैं प्रियादाससों ॥ प्रेमके उमड़े हैं बादर पानी वर्षाने लगीं ॥ २१ ॥

राग खेमटा--अब डर नाहिं निर्भय हम भाई ॥ आस्ताई ॥ भलेही हँसैं लोग सब मोको, कहि कहि चोर चवाई ॥ कहि कहि भ्रष्ट तजैं सब मोकों, भलेही लोग लुगाई ॥ तज

न एक रसिकजन मोको, अंतसमय लगि जे सुखदाई ॥ जे चरित्र देवनको दुर्लभ सो सब कहत सुनाई ॥ प्रियादास ब्रज-वास होनकी तिनने युक्ति बताई ॥ २२ ॥

राग जिला--एक नहिं मानैंगे किसीकी वृंदावन जाते हैं ॥ आस्ताई ॥ तोड़ ताड़ दुनियाँके झगडे और सभीसे नाते हैं ॥ कहने दो कुछ डर नहिं हमको भलेही पागल बनाते हैं ॥ भलेही पागल और दिवाने पै श्यामागुण गाते हैं ॥ प्रियादास कुछ दिनके तुम्हरे फिर तो जिनके कहाते हैं ॥ उन्हींके धाममें जाय बसैंगे वे हमैं खुदी बुलाते हैं ॥ २३ ॥

राग–आसावरी जोगिया–भैया मैं तो वर्षानेको जैहों ॥ आस्ताई ॥ करिहौं निवास निकट गहरव वन भानुसुताको नहैहौं ॥ जूँठ टूक ब्रजवासिनके लै खायकै दिवस बितैहौं ॥ सिंहपवँरिकी झाडू देहौं रज लै अंग चढैहौं ॥ प्रियादास वृष भानु नगर तजि अन्त कहूं ना रैहौं ॥ २४ ॥

राग परज--हमते नाहक नेह बढावत ॥ आस्ताई ॥ स्वपनेहु काम तिहारे नाहीं वृथा मोह सरसावत ॥ एक नाम राधाको तजिकै और न कछू सुहावत ॥ प्रियादास बांधे नहिं रैहैं यह निश्चय उर आवत ॥ २५ ॥

राग ईमन–देहसंबंधिनते परनाम ॥ आस्ताई ॥ अब लगि रहि सुख पायों तुममें वसि तुम्हरेही धाम ॥ भई मिज वानी बहुत दिननकी अब जैबै निज गाम ॥ वृंदावन अरु

रसिक कुटुंबी जिन मुख राधानाम ॥ प्रियादास ढिग रहिकै अनुभव करि करिबे बिसराम ॥ २६ ॥

सवैया–रोज ढिगै मति काहूके जाव, भली विधि बात ये है सुविचारी ॥ मानली हानी नितै प्रति होत सो प्रीतिकी रीतहू होत है न्यारी ॥ तातै रहौ प्रियादासजू दूरि ये, बात सबै विधि मानि हमारी ॥ मूरख जानत हैं मनमें, अकि आवत स्वारथके हितकारी ॥ २७ ॥

गजल–फिदा हम उसपै हैं यारों जो गायोंको चराता है ॥ अजब क्या खूब सूरत है, गजब बंशी बजाता है ॥ लिये सँग ग्वाल बालोंको, विपिनमें घूमता हरदम ॥ मजाकी मस्करी हाँसीके, खेलोंको खिलाता है ॥ दगामें भूल गर गोपी बगर उसमें जो आ निकली ॥ मगर झट धायकै मोहन, झगर दधि लूटि खाता है ॥ लुटा सबही दही उनका खड़ा हो दूर फिर जाके ॥ लगाके ग्वाल बालोंको औं गाली खूब दिवाता है ॥ कभी इकले हुए वनमें तो क्याही खूब कहना है ॥ चरित्तर लाड़िलीजीके विविध मुरलीमें गाता है ॥ लगाके ध्यान दंपतिका दृगोंसे जल बहाता है ॥ लखी जब ख्वाबमें मूरत मुझे अब कुछ न भाता है कहै प्रिया दास बस क्या है गरज हमें रोय आता है ॥ २८ ॥

युगुल दरबारमें हमने भी अर्जी इक लगाई है ॥ वजा क्या है कहो कोई कि अबतक ना सुनाई है ॥ नहीं कुछ भूल है उनकी कि जिनसे मैं लिखाई है ॥ वाकिफकार

कामोंके वकालत उनकी आई है ॥ मिहतानेकी एवजमें चरणकी सेवकाई है ॥ नाहिं कुछ दोष है उनका ये किस्मतकी बुराई है ॥ करते हैं जो दुश्मन ये बड़ा लोभ जिनका भाई है ॥ भजन और भावमें हमसे मजाकी करते आई है ॥ रसिकजन ग्वाल हैं मेरे कुटुंबी उन सहाई है ॥ बुलाके पूँछा रसिकोंसे कि किसकी ये बुराई है ॥ अजी प्रियादास को दीखत न श्यामा करमें पाई है ॥ नहीं तो पढके सब बातें बुलाती मैं गवाई है ॥ २९ ॥

जागी है किस्मत मेरी दिन नीके अब आने लगे ॥ हर तरहसे नीकेपनकी सूरतको दिखलाने लगे ॥ देखके मुख फेरते थे जो रसिकजन ए मुझे ॥ बडे अब प्यारसे निज तीर बैठाने लगे ॥ करते थे हाँसी मजाकी ऐशको विषयोंके घर घर जाने लगे ॥ उन सबोंको दूरकर रसिकोंके घर जाने लगे ॥ रात दिन खाना कमाना ऐशबाजीके लिये ॥ खैर तबसे अब कुछ दिन भजनमें जाने लगे ॥ भाते थे ठुमरी और टप्पा ख्यालबाजोंके कहीं ॥ अब तो करके प्यारको श्यामा श्याम यश गाने ल़गे ।। देखके नारी सूरत उसपै हम होते फिदा ।। अब तो श्यामा श्याम सूरतपै ललचाने लगे ।। सूंघते थे शौकसे केवड़ा गुलाबोंका अतर ।। बतो कुछ खुशबू रसिकताके भी हैं आने लगे ।। मैं कहातक अब सुनाऊं है हवारत ये बड़ी ।। प्रियादासकी आँखोंमें श्यामा श्याम झलकाने लगे ।। ३० ॥

स०—ध्यानमें मेरे श्रीराधिका नाम है, गगनमें राधिका नामको गाऊं ।। आननते कढे राधिकानाम सो बार अनेक यही वर पाऊं ॥ तीरथ मेरे श्रीराधिका नाम है, राधिका नामहिको मैं नाऊं ।। प्रियादासकी आस यहै बिसवास, सो कुंजके बासपै चित्त रमाऊँ ॥ ३१ ॥

इति उपदेश समाप्त

अथ सुन्दरदास कृत सवैया

प्रेत भयो कि पिशाच भयो कि निशाचरसों जितही तित डोलै ॥ तू अपनी सुधि भूलि गयो मुखते कछु और कि औरहि बोलै ॥ सोइ उपाय करै जु सरै, पचि बंधन तो कबहू नहिं खोलै ।। सुंदर जा तनुमें हरि पावत, सो तनु नाश भयो मटि मोलै ।। १ ॥

पेटते बाहेर होतहि बालक, आय जु मातु पयोधर पीनो ॥ मोह बँध्यो दिनही दिन और, तरून भयो तियके रस भीनो ॥ पुत्र प्रपुत्र बँध्यो परिवारसों ऐसेहि भाँति गये पन तीनो ॥ सुन्दर रामको नाम बिसारि सु, आपहि आपको बंधन कीन्हों ॥ २ ॥

देह सनेह न छांडत है, नर, जानत है थिर है यह देहा ।। छीजत जात घटै दिनहीं दिन दीसत है घटको नित छेहा ॥ काल अचानक आइ गहै कर, ठाह गिराय करै तन खेहा ॥ सुन्दर जानि यहै निहचै धरि एक निरंजनसों करु नेहा ॥ ३ ॥

तू कछु और विचारत है नर, तोर विचार धरोही रहैगो ॥ कोटि उपाय करै धनके हित, भाग लिख्यो तित नोही लहैगो ॥ भोरकि साँझ घरी पलमांझ सो काल अचा नक आइ गहैगो ॥ राम भज्यो न कियो कछु पुण्य, सो सुन्दर यों पछितात रहैगो ॥ ४ ॥

मात पिता युवती सुत बांधव, लागत हैं सबको अति प्यारो॥ लोक कुटुंब खरो हित राखत, होय नहीं हमते कहुँ न्यारो ॥ देह सनेह जहां लगि जानहु बोलत है मुख शब्द उचारो ॥ सुन्दर चेतनशक्ति गई तब, वेगि कहैं घर बार निकारो॥५॥

वै श्रवना रसना मुख वैसहि, वैसहि नासिका वैसहि आंखी ॥ वे कर वे पग वे सब द्वार, सबै नख शीशहि रोम असंखी ॥ वैशहि देह परी पुनि दीसत एक बिना सब लागत खंखी ॥ सुंदर कोउ न जानि सकै यह, बोलत है सु कहाँ गयो पंखी ॥ ६ ॥

होय निचिंत करै मति चिंतहि, चोंच दई वही चिंत करैगो ॥ पाँव पसारि पर्‍यो किन सोवत, पेट दियो वहि पेट भरैगो ॥ जीव जिते जलके थलके, पुनिपाहनमें पहुँ चाय धरैगो ॥ भूँखहि भूँख पुकारत हे नर सुन्दर तू कह भूँखो मरैगो ॥ ७ ॥

पाँव दिये चलने फिरने कहँ हाथ दिये हरि कृत्य करायो॥ कान दिये सुनिये हरिको यश, नैन दिये तनु मार्ग दिखायो ॥ नाक दई मुख शोभित ताकरि, जीभ दई हरिको

गुण गायो ॥ सुन्दर साज दिये परमेश्वर, पेट दियो बडो पाप लगायो ॥ ८ ॥

बिन गोपाल वैरन भईं कुंजैं ॥ तब ये लता लगत अति शीतल, अब भईं विषम ज्वालकी पूंजैं ॥ वृथा बहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलि गुंजैं ॥ सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियाँ अरुण भईं ज्यों गुंजैं ॥ ९ ॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये ॥ काली घटा देख बादलकी नयन नीर भरि आये ॥ पालागों तुम बीर बटाऊ, कौन देशते आये ॥ इतनी पतिया मोरी दीजो जहाँ श्याम घन छायें ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाये ॥ सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ १० ॥

इति सुंदरदास कृत सवैया समाप्त

अथ जगन्नाथजीके भजन

ठाकुर भले विराजी जो ओडीसा जगन्नाथपुरीमें भले विराजो जी ॥ बलभद्रजीके भैया० ॥ टेक ॥ कबसे छोडी मथुरा नगरी कबसे छोडी काशी ॥ झार खंडमें आय विराजै वृन्दावनके वासी ॥ सत युग छोडी मथुरा नगरी द्वापर छोडी काशी ॥ कलियुग तो आय विराजे वृन्दावनके वासी ॥ उडिया मांगैं नित-नित खिचडी बंगाली मागैं भात ॥ साधू माँग नितहीं दर्शन दीजै महाप्रसाद ॥ दाल राँधू भात राँधू परवरकी तरकारी ॥ मीन मारिकै भोग लगावैं अधम जाति

बंगाली ॥ गाँव गाँवमें बाग बगीचा गली गली फुलवारी ॥ घर घर देखो केला नरियल घर घर ठाकुरवारी ॥ दो दो कोसपर हाट लगायी पाँचकोसपर चट्टी ॥ चलते चलते पांव पिराने देह होगई मट्टी ॥ चट्टी चट्टी बनियाँ लूटैं, रक्षा करैं फिरंगी ॥ सिंहदरवाजे पंडा लूटैं जात्री भये उदासी ॥ सोला हाथकी साडी पहिरे ऊपर धरे किनारी ॥ सास ससुरकी लाज न राखैं अरधी टांग उघारी ॥ बंगाली बेटी परम सुन्दरी, उनकी लंबी चोटी ॥ भावभक्तिको मर्म न जानैं उनकी गरदन मोटी ॥ नील चक्रपर ध्वजा विराजै, मस्तक सोहै हीरा ॥ ठाकुर आगे दासी नाचै, गावै दास कबीरा ॥ १ ॥

श्रीप्रयागकुंभ--मकरे च दिवानाथे ह्यजगे च बृहस्पतौ ॥ कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभः ॥ १ ॥

श्रीहरिद्वारकुंभ—पद्मिनीनायके मेषे कुंभराशिगते गुरौ ॥ गंगाद्वारे भवेद्योगः कुंभपर्वस्ततौ मतः ॥ २ ॥ कुंभराशिगते जीवे यद्दिने मेषगे रवौ ॥ हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम् ॥ ३ ॥ श्रीगोदावरी कुम्भ—सिंहराशिगते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ ॥ गोदावर्यां भवेत्कुम्भः पुनरावृत्तिवर्जनः ॥४॥ श्री उज्जयिनीकुंभ—मेषराशिगते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ ॥ उज्जयिन्यां भवेत्कुंभः सर्वसौख्यविवर्द्धनः ॥ ५ ॥ माघे मेष

गते जीव मकरे चन्द्रभास्करौ ॥ अमावास्या ततो योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके ॥ ६ ॥

श्रीप्रयागकुंभ १.	श्रीहरिद्वारकुंभ २.	श्रीगोदावरी कुंभ ३.	श्रीउज्जयिनीकुंभ ४
मेषके बृहस्पति और मकरके सूर्य हों तब प्रयागका कुंभ होता है.	कुंभके बृहस्पति और मेषके सूर्य हों तब हरिद्वारका कुंभ होता है.	सिंहके बृहस्पति और सिंहके सूर्य हों तब गोदावरीका कुंभ होता है.	सिंहके बृहस्पति और मेषके सूर्य हों तब उज्जयिनीका कुंभ होता है.

अथ जानकी मंगल

चौपैया -प्रथम सुमिरि गुरुदेव गणेश मनाइये ॥ शारदको शिर नाइ रामगुण गाइये ॥ प्रभुगुण सिंधु समान कौन वर्णन करे ॥ जैसी जाकी बुद्धि तैसी सो हिरदय धरै ॥ तब बोले ऋषिराय अवधपुर जाइये ॥ राम भये अवतार यज्ञ हित लाइये ॥ करि सरयू असनान नृपतिगृह आइये ॥ बहु विधि पूजाकरी सिंहासन बैठाइये ॥ छंद ॥ कहत तपोधन अवधपति दोउ कुँवर हमको दीजिये ॥ यज्ञ पूरण होइ हमरो विप्रको यश लीजिये ॥ चौपैया ॥ सुनि ऋषिके वचन नृप शोच कीनो घनी ॥ कीजे कौन उपाय बात गाढी बनी ॥ तब बोले गुरु वशिष्ठ नृपति शोच नहिं कीजिये ॥ ये पूरण अवतार यज्ञ हित दीजिये ॥ छन्द ॥ प्रेमको उपकार कर, नृप सुत दोऊ गोदी लिये ॥ महामुनिनकी भेंट लै, श्रीराम अरु, लक्ष्मण किये से चौपैया ॥ रत्नजटित पट बाँध, धनुष लियो हाथसों ॥ कीनों बहुत प्रणाम, पिता अरु मातसों ॥ नयन रहे जल पूरि, पिता अरु मातके ॥ इनको नीके राखियो

ये पुत्र अनाथके ।। छंद ।। आगे आगे विश्वामित्र महामुनि, पीछे लक्ष्मण रामजी ।। सजल तन घनश्याम सुन्दर, सकल पूरणकामजी ॥ चौपैया ।। राजत वदन विशाल, बाँके दृग सोहना ॥ नासा परम सुढार, मदन मन मोहना ॥ यह छबि विविध प्रकाश रामगुण गाय हैं ।। गौर श्याम दोउ भ्रात, मुनिके मन भाय हैं ।। छंद ।। उठि राक्षसी घोर महाप्रभु बाण एकैसों हनी ॥ विप्रको यज्ञ कियो पूरण कृपा करि कोशलधनी ।। चौपैया ।। मारो गर्व गुमान ध्यान हरिसों धरो ।। चौंकि परी जियमांझ रामशरसों डरो ।। ब्रह्म अस्त्र कर धारि मारीच सुमारियो ।। सौ योजन तनु परचो सुरति विसराइयो ॥ छंद ।। मारीच मारि सुबाहु मारे मुनिनके मंगल भये ।। सुर विमान पुष्प वर्षे हर्ष जैजैजै किये ।। चौपैया ।। रच्यो है स्वयंवर जनक राम चलि देखिये ।। आये हैं बहु भूप सबै मिलि पेखिये ।। भली कही ऋषिराय जनकपुर जाइये ।। शिवधनु कठिन कठोर दरश दिखाइये ।।छंद।। चरणकी रज लागि अहल्या तुरतही छबीसों भरी ।। कर जोरीअंजलि भई ठाढ़ी श्रीरामकी अस्तुति करी।। चौपैया ।। चरण परशि कुल तारि तुरत पतिपुरको गई ।। ऐसो कौतुक देखि केवट नौका गही ।। टेरत है रघुनाथ तीर नौका ल्याउ रे ।। वेगि उतारौ जु पार डरो जिन बावरे ॥ छंद ।। कर जोरि केवट यों कहै प्रभु बाहनपै पार उतारि हौं ।। शिला ज्यौ उड़ि जाय नौका कुटुम्ब किस विधि

पालिहौं ।। चौपैया ।। जो नौका उड़ि जाय धूरि लगि पायँको ।। ताते दूनी देहुँ गढाई नावकी ।। केवट चरण प्रक्षालि श्रीराम बैठाइयो ।। क्षणमहँ नौका खेयकै पार लगाइयो ।। छन्द ।। करुणासिंधुदयालु रघुवर तारि दास आपनो कियो ।। जो योगीश्वरनको होत दुर्लभ सोइ पद केवटको दियो ।। चौपैया ।। नौका उतरे पार श्रीराम जनकपुरको चले ।। तोरेंगे शिवधनुष सगुन भेंटे भले ।। वन उपवन बहु बाग विविध बैठक बनी ।। कञ्चनहूमें जटित हेम रचना बनी ।। छंद ।। ठौर ठौर बहु भूप उपमा जनकपुर अति सोहना ।। बसे जनकपुर लोग सुन्दर मदनको मन मोहना ।। चौपैया ।। जनकसभाके मध्य भूप लखि छकि रहे ।। ठगके लाडू खाय मनो सब थकि रहे ।। पूँछत हैं मिथिलेश कुँवर ऋषि कौनके ।। पूरण जिनके भाग्य दोऊ सुत जौनके ।। महासुभट रणधीर दोऊ गुण लायकै ।। रघुवंशी महाराज श्रीदशरथरायके ।। नरनारी यों कहैं ये दोऊ वय किशोर हैं ।। शिवधनु कठिन कठोर कैसे करि तोरि हैं ।। छन्द ।। ये छबि श्यामल गौर हरखि निरखि कर लीजिये ।। वारे काम कोटि स्वरूप सुन्दर नयन भरि भरि पीजिये ।। अष्ट सो मल कष्ट करिकै धनु सभामधि आनियो ।। लागे हैं बड़े बड़े भूप योधा धनुष काहु न तानियो ।। चौपैया ।। कहत सिया सुनु तात धनुषप्रण जिन करौ ।। ना तर तजिहौं प्राण कि एक वर मैं वरौं करुणासागर राम जानकी जानिये ।। पीतांबर कटि बांधि धनुष लै तानिये ।।छन्द।। जयजयकार भई तिहुँ लोक

भूप सबै मुरझाइये ।। श्रीरामचन्द्र मुख निरखि सियहि सुमनमाल पहिराइये ।। चौपैया ।। सोहत सीता राम कनक मण्डप तर ।। शिर सोनेको मुकुट मंजु मुक्ता गर ।। राजत अमल कपोल कि मुक्ता मोलके ।। सुन्दर लोचन लोल कमल जनु भोरके ।। सुरंग चूनरी निपट पीत तट छारही ।। मानौ अरुण घनश्याम चपलता ह्वै रही ।। यह भूषण प्रतिबिंब राम छवि उर धरैं ।। मानो यमुनाजल मध्य दीख दीपक करैं ।। रामभुजाके निकट सिया भुज यों लसे ।। मरकतमणिके खम्भ मनो कञ्चन कसे ।। राम भये तनु गौर सिया भई साँवरी ।। सादर सो बुधिवन्त वधू भईं बावरी ।। राम भये घनश्याम सियभईं दामिनी ।। मुनि भये चन्द्र चकोर भई भामिनी ।। पुष्पन वर्षत मेघ मुनि सब थरहरैं ।। होत जनकपुर ब्याह राम भँवरी फिरैं ।। राम सियाको ध्यान सदा शंकर धरैं ।। ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करैं ।। सुर नर मुनि आनंद सुमन वर्षा करैं ।। ब्रह्मा आदि सब देव मुदित जयजय करैं ।। तुलसी सीता राम सहित उर आनिये ।। रामभजन विनु जन्म सुमिथ्याकरि जानिये ।।

इति श्रीजानकीमङ्गल समाप्त

अथ राममंगल

जन्मे श्रीरघुनाथ अवधपुर आयकै ।। आये हैं सब देव दरश हित धायकै ।। तिथि नौमी गुरुवार पुनर्वसु शुभ घरी ।। शुक्ल पक्ष मधुमास दिवाकर नौ घरी ।। निरमल

अमल अनंद महा मङ्गल भरी करुणा पूरण राम जन्म लियो शुभ घरी ॥ ब्रह्मादिक सब देव दरश हित आवहीं ॥ निरखि रामको रूप शुमन झारि लावहीं ॥ विविध भांति रस धारि परस्पर परखहीं ॥ कुंकुम अगर कपूर नारि नर वरषहीं ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ अरु बांकुरे ॥ बीणा शंख उपंग अवधपुर माधुरे ॥ अवधपुरी अति धन्य जहाँ प्रभु अवतरे ॥ विश्वामित्र वसिष्ठ करत मंगल खरे ॥ दश-रथके बड़े भाग्य कहे शिव आयकै ॥ विप्रन दिये हैं अशीश दान बहु पायक ॥ कौशल्यादि मातु महा मंगल भरीं ॥ विप्रन दिये हैं दान जानिकै शुभ घरी ॥ अवधपुरी नर नारि अमित छबिसों भरीं ॥ मंगल करत अपार भूपगृह पग धरी ॥ पीतांबर वनमाल कमर गाढी कसे ॥ धनुषबाण लिये हाथ मुकुट शिरपै लसे ॥ सोहत चवँर शिर छत्र कुण्डल झिलमिल करैं ॥ नूपुर बाजूबन्द जननके मन हरैं ॥ महिमा अगम अपार भक्त दुःख खंडिनी ॥ सोहै वामे अंग जनकजीकी नंदिनी ॥ भरत शत्रुहन लखन सखा संग सोहहीं ॥ बिहरत सरयूतीर मुनिन मन मोहहीं ॥ पवन सरयू नीर नित्य मज्जन करैं ॥ उपवन बिहरत राम धनुष शर कर धरैं ॥ वनके खग मृग जीव दरश पावैं भले ॥ पाये चतुर भुज रूप देवपुरको चले ॥ सुन्दरवदन विलोकि ध्यान उर लावहिं ॥ नाचहिं गावहिं गीत परम सुख पावहीं ॥ यह मंगल नर नारि सुनैं अरु गावहीं ॥ धरैं रघुवरजीको

ध्यान परम सुख पावहीं ॥ मंगल गावहिं संत परम पद पावहीं ॥ जन मुकुन्द कर जोरि यथामति गावहीं ॥ १ ॥

इति श्रीराममंगल सम्पूर्ण

अथ रामाष्टक

अवधपुरी निज धाम कहिये निकट सरयू गंग हैं ॥ दशरथनंदन असुर भंजन सिया रामजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ सती रामजी पूरण ब्रह्म हैं ॥ सती सीता भ्रात लक्ष्मण धनुष धारी सीतारामजी हैं ॥ चित्रकूट तप लोक कहिये ॥ सिया० ॥ राघो० ॥ भाल तिलक विशाल लोचन आनंदकारी सीता रामजी हैं ॥ सांवली सूरति मधुरी मूरति सीया० ॥ राघो॥ लंकापुरी छिनमाहिं जारे आज्ञाकारी हनुमानजी हैं ॥ रावण मारि बिभीषण थाप्यो ॥ सीया० राघो० ॥ अष्टसिद्धि नव निधिके दाता भक्ति मुक्ति वरदायकं ज्ञान जोग स्वरूप सुन्दर ॥ सीया० राघो० ब्रह्मा शेष महेश नारद कोटि अट्ठासी मुनिदेवता ॥ इंद्रादिक सनकादिक ध्यावैं ॥ सीया० ॥ राघो ॥ अनंतकला युग चार प्रगटे सप्त द्वीप नव खण्ड हैं ॥ आदि अंत मध्य खोजि देखो ॥ सीया० ॥ राघो० श्रीराम अष्टक पठत निशि दिन विष्णुलोकं स गच्छति ॥ श्रीरामानंद अवतार अद्भुत ॥ सीया० ॥ राघो० ॥ ८ ॥

इति श्रीरामाष्टक सम्पूर्ण

अथ कृष्णमंगल

छन्द–जनमें श्रीकृष्ण मुरारी भक्तहित कारने ॥ मथुरा लियो अवतार गोकुल झूलैं पालने ॥ तिथि अष्टमी बुधवार भादौं वदिकी करी ॥ रोहिणी नक्षत्र आधीरात जनम लियो शुभ घरी ॥ धनि देवकी वसुदेव जहां प्रभु अवतरे ॥ धन्य यशोदा नन्द महरघर पग धरे ॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सकल जय जय करैं ॥ दुंदुभि बजत अकाश सुमन वर्षा करैं ॥ व्रजवासी गोरस भारि भारि कारि ल्यावहीं ॥ दधिकांदौ बाबा नन्द सुकीच मचावहीं ॥ बाजत ताल मृदंग बीन अरु बाँसुरी ॥ निरतत गोपी ग्वाल चरण चित चाव री ॥ यशुमति चीर पहिराय नौरँग भई ग्वालिनी ॥ सुन्दर वदन निहारि चकित भई भामिनी ॥ श्रीबलभद्रजीके वीर असुरदल खंडना ॥ भक्तवत्सल महाराज यादवकुलमण्डना ॥ शंकर धरत हैं ध्यान सुगोद खिलावहीं ॥ सो मुख चूमति माइ सुपलना झुलावहीं ॥ श्रीनंद यशोदासे नेह चरण चित ल्यावहीं ॥ हरिगुण मंगल गाय गोविंद गुण गावहीं ॥

इति श्रीकृष्ण मंगल सम्पूर्ण

अथ हनुमानाष्टक

चरचित चंदन सिंदुर भूषण नख शिख रूप अखंडितम् ॥ अपर बल भुजदंड बाहु श्रीहनुमंत देव महाबलम् ॥ श्रीरामदूतमहाबलम् ॥ श्रीरामतेज प्रताप राजत राघवं कुलसेवितम् ॥ पवननंदन वीरबाहु श्रीह० ॥ उदित दिनकर देव सुरपति कंपते सब दुर्जनम् ॥ अग्रमुख श्रीराम पूजा ॥ श्रीहनु० ॥ युद्धमध्ये हते दावन शैल वृक्ष उखाडितम् ॥ देव सुरपति करत जय जय ॥ श्रीहनु० ॥ रामदूत प्रचंड योधा सागर शैल उल्लंघनम् ॥ लंक प्रजारि सिया सुधि लाये ॥ श्रीहनु० ॥ नील नल रणधीर योधा सुग्रीव राज्य कपीश्वरम् ॥ जामवंत अरु वालि नंदन ॥ श्रीहनु० ॥ सिंहरूप निशंक गर्जंत डगमगे महि भूधरम् ॥ हाँक देत दिगपाल कंपैं ॥ श्रीहनु० ॥ वीररूप निशंक गरजत दुष्ट दानव मर्दनम् ॥ भूत प्रेत पिशाच कंपैं ॥ श्रीहनु० ॥ द्विविद मयन्द अशंक योधा केसरी अति बहुबलम् ॥ देव अंश अवतार धारे ॥ श्रीहनुमन्त० ॥ हनुमान अष्टक पढ़त निशि दिन विष्णुलोकं स गच्छति ॥ दास तुलसी शरण आये ॥ श्रीह० ॥ १० ॥

इति श्रीहनुमानाष्टक समाप्त

अथ कृष्णाष्टक

नंदनन्दन जगतवंदन चरणरज कुबजा तरी ।। युग चारौं पूरण ब्रह्म कहिये श्रीकृष्ण राजत मधुपुरी, श्रीगोपालजी राजत मधुपुरी ।। वंशीवट तट निकट यमुना, साँवरे मुरली धरी ॥ मुरलीकी धुनि सुनि, तीन लोक मोहै ॥ श्रीकृष्ण रा० ।। मुकुट लटपट पीत पट रस खोर चन्दनकी बनी ॥ बनवारी लालजी गोपालजी कहिये ॥ श्रीकृष्ण रा० ॥ रासरमनी शेष शंकर, रटत हैं छिन छिन घरी ।। इंद्र चन्द्र कुबेर ब्रह्मा श्रीकृष्ण रा० ।। वृन्दावनमें मदनमोहन अष्ट सिद्धि नव निधि भरी ॥ काली नाग घनश्याम नाथ्यो ॥ श्रीकृष्ण रा० ।। गोप गोपी संग लीन्हें कुञ्जवन क्रीडा करी ॥ रच्यो वसुदेव नंदन ।। श्रीकृष्ण रा० कंशवंश विध्वंस मोहन, व्रजवधू पावन करी ।। उग्रसेनको राज दीन्हों ॥ श्रीकृष्ण रा० श्रीकृष्ण अष्टक पढ़त निशि दिन विष्णु लोक सिधारही ।। श्रीनिमानुज अवतार अदभुत श्रीकृष्ण राजत मधुपुरी ।। श्री गोपालजी राजत मधुपुरी ।। ८ ॥

इति कृष्णाष्टक समाप्त

अथ बदरीनाथाष्टक प्रारंभ

पवन मंद सुगंध शीतल, हेममंदिर शोभितम् ॥ निकट गंगा बहत निरमल श्रीबद्रीनाथ विश्वंभरं ।। शेष सुमिरन करत निशि दिन, धरत ध्यान महेश्वरं ॥ वेद ब्रह्मा करत

अस्तुति ।। श्रीबद्रिनाथ० ।। इंद्र चंद्र कुबेर दिनकर, धूप दीप प्रकाशितं ।। सकल मुनिजन करत जय जय ।। श्रीबद्रिनाथ० ।। दक्षके नल करत कौतुक, ज्ञान ध्यान प्रकाशितं ।। श्रीलक्ष्मी कमला चँवर ढोरैं ।। श्रीबद्रि० ।। शक्ति गौरि गणेश शारद, नारदमुनि ध्वनि उच्चरे ।। योग ध्यान अपार लीला ।। श्रीबद्रि० ।। कैलासमें इक देव निरञ्जन, शैलशिखर महेश्वरं ।। राजा युधिष्ठिर करत अस्तुति ।। श्रीबद्रि० ।। श्रीबद्रिनाथजीके पञ्चरतनं पठत पाप विनाशनं ।। कोटि तीरथ भये पुण्यं प्राप्यते फलदायकं ।। श्रीबद्रि० ।। श्रीबद्रि अष्टक पढत निशि दिन विष्णुलोकं स गच्छति ।। श्रीदयाराम सिद्ध कहिये ।। श्रीबद्रिनाथ विश्वंभरं ।।

इति बदरीनाथाष्टक समाप्त

पद

व्रजनव तरुणि कदंब मुकुटमणि श्यामा आज बनी ।। नख शिखलों अँग अँग माधुरी मोहे श्यामघनी ।। यों राजत कबरी गूंथत कच कनककंज वदनी ।। चीकुर चन्द्रिकन मध्य अरध विधु मानों ग्रसत फनी ।। सौभग रस शिर स्रवत पनारी पिय सीमन्त ठनी ।। भृकुटी कामकोदंड नयन शर कज्जल रेख अनी ।। तरल तिलक ताटंक गंडपर नासा जल

जमनी ॥ दशनकुन्द सरसाधर पल्लव प्रीतम मन शमनी ॥ चिबुकमध्य अति चारु सहज सखि श्यामल बिन्दु कनी ॥ प्रीतम प्राणरतन संपुट कुच कंचुकि कसी तनी ॥ भुज मृणाल बल हरत वलययुत तरल सरस श्रवनी ॥ श्याम शीश तरु मनो मिडवारी रची रुचिर रमनी ॥ नाभि गँभीर मीन मोहन मन खेलनको ह्रदनी ॥ कृशकटि पृथु नितंब किंकिणि मृत कदलिखंभ जघनी पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी ॥ नव २ भाव विलोकि भाम इव विहरत वर किरिनी ॥ हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी ॥ गावत श्रवण न सुनत सुखाकर विश्वदुरित दमनी ॥

पद-मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ॥ वित्तीभर जमीन नाहिं वस्त्रमें कोपीन नाहिं महा कंगाल नाहिं कौड़ीको सहारो ॥ मित्र कलत्र तात मात दारा सुत भगिनी भ्रात सबते छोंड़ दियो साथ कोई ना हमारो ॥ बलकी कुछ गती नाहिं विद्याहीन मती नाहिं होनहार प्रबल योंही होत है गुजारो ॥ धर्म कर्म बनत नाहिं भक्तिभाव सधत नाहिं निश्चय कछु परत नाहिं सोच २ हारो ॥ अक्षरका ज्ञान हो अर्थका ध्यान हो निर्भय निर्वाण हो भेदबुद्धि टारो ॥

अथ चार धामकी महिमा

चलो हो साधो चलो हो संतो सेत गंगा नहाइये ॥ दर्शन करैं जगन्नाथस्वामी बहुरि जन्म न पाइये ॥ चलो हो साधो चलो हो संतो धनुषतीरथ नहाइये ॥ दर्शन करें राम नाथस्वामी॥ बहुरि० ॥ चलो हो साधो चलो हो संतो गोमती संगम नहाइये ।। दर्शन करें रणछोरटीकम बहुरि जन्म न पाइये ॥ चलो हो साधो चलो हो संतो तपतकुंड नहाइये ॥ दर्शन करैं बद्रीनाथ स्वामी बहुरि जन्म न पाइये ।। कौन दिशा जगन्नाथ स्वामी कौन दिशा रामनाथ हैं ।। कौन दिशा रणछोर टीकम कौन दिशा बद्रिनाथ हैं ।। पूर्वदिशा जगन्नाथ स्वामी दखिन दिशा रामनाथ हैं ।। पश्चिम दिशा रणछोर टीकम उत्तराखंड बद्रिनाथ हैं ।। कहा करन जगन्नाथ स्वामी कहा करन रामनाथ हैं ॥ कहा करन रणछोर टीकम कहा करन बद्रिनाथ हैं ।। भोग करन जगन्नाथ स्वामी जोग करन रामनाथ हैं ।। राज करन रणछोर टीकम तप करन बद्रिनाथ हैं ।। कहा चढत जगन्नाथ स्वामी कहा चढत रामनाथ हैं ॥ कहा चढत रणछोर टीकम कहा चढत बद्रिनाथ हैं ॥ ९ ॥ अटका चढ़त जगन्नाथ स्वामी जल चढ़त रामनाथ हैं ।। माखन मिसरी चढ़त रणछोर टीकम दाल चढ़त बद्रिनाथ हैं चार धामकी अधिक महिमा शेष

महेशन गाइये ॥ दास माधो शरण आयो आवागमन मिटाइये ॥ ११ ॥

इति चार धामकी महिमा समाप्त

सोरठा

करहु कृपा घनश्याम, विनय हमारी कानि करि ।
बारंबार प्रणाम, भक्ति दान दीजै हमहिं ॥ १ ॥
चोर जार सिरताज, कालिन्दीके कूल तुम ।
विहरत नित महराज, गइयनके अनुचर बने ॥ २ ॥
दान बिहारी छैल, रसिकशिरोमणि व्रजरतन ।
हमहिं बतावहु गैल, सरस भक्ति हित चलन हित ॥ ३ ॥
हमहुँ गहे पग आय, गोपवधू पटचोर प्रभु ।
तुमहिं छोड़ि कहँ जाय, दीनबन्धु यह दीन जन ॥ ४ ॥
पग नूपुर खनकाय, मुरली अधरन धारि प्रभु ।
एक बार दरशाय, दीजै रासविलास पुनि ॥ ५ ॥
करहु चपल चित प्रेम, नारायण पद कमल मधि ।
रट रसना नित नेम, श्रीवल्लभ केशव प्रभुहि ॥ ६ ॥
कर कृपाकी कोर, कालियमर्दन नन्दसुत ।
विश्वंभर चितचोर, श्रीव्रजनन्दन व्रजरतन ॥ ७ ॥

दोहा

पद मनमोहन कृष्णके, शान्तिरूप सुख दान।
भक्तनके आह्लादप्रद, द्रवहु सो निज जन जान ॥ १ ॥
नैनन अरु मनके सुखद, गुणागार सुकुमार।
करहु नरोत्तम! दासके, नित उरमाहिं बिहार ॥ २ ॥
मोह मलिनता दूर करि, पापपुंज विनशाय।
जगके पालनहार प्रभु, करिये विष्णु! सहाय ॥ ३ ॥
रवीन्द्रचन्द्रप्रभृति जे, पुण्य प्राण सुरवृन्द।
तिनके पदपंकज सुमिरि, होत सकल आनन्द ॥ ४ ॥
गलबाहींकी लटकमें, अटक रह्यो मनमोर।
जय जय जय श्रीराधिका, जय जय नंदकिशोर ॥ ५ ॥

इति श्रीबृहद्भजनरत्नावली समाप्त

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS